बौद्ध पर्यटन साहित्य का हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण
(‘बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया’ के विशेष संदर्भ में)

Bauddha Paryatan Sahitya Ka Hindi Anuvad Aur Vishleshan
(‘Buddhist Tourism In India’ Ke Vishesh Sandarbh Mein)

Hindi Translation and Analysis of the Buddhist Tourism Literature

(With Special Reference to ‘Buddhist Tourism in India’)

पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

शोध-निर्देशक
डॉ. गंगा सहाय मीणा

शोधार्थी
सुरेन्द्र

भारतीय भाषा केन्द्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली- 110067

(2022)

Dated: 08 /12 /2022

Declaration

I hereby declare that the Ph.D. thesis entitled **Bauddha Paryatan Sahitya Ka Hindi Anuvad Aur Vishleshan ('Buddhist Tourism In India' Ke Vishesh Sandarbh Mein) Hindi Translation and Analysis of the Buddhist Tourism Literature (with special reference to 'Buddhist Tourism in India')** submitted by me is the original research work.It has not been previously submitted for any other degree in this or any other University/ Institution to the best of my knowledge.

I further declare that no plagiarism has been committed in my work. If anything is found plagiarised in my Thesis, I will be solely responsible for the act.

Surender

Surender

Name of Student

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
JAWAHARLAL NEHRU UNIVERSITY
भारतीय भाषा केन्द्र
Centre of Indian Languages
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
School of Language, Literature & Culture Studies
नई दिल्ली–110067, भारत NEW DELHI-110067, INDIA

Dated: 08 /12 /2022

Certificate

This is to certify that the Mr. SURENDER, a bona-fide Research Scholar of Centre of Indian Languages, SLL&CS has fulfilled all the requirements as per the University Ordinance for the submission of Ph.D. thesis entitled **Bauddha Paryatan Sahitya Ka Hindi Anuvad Aur Vishleshan ('Buddhist Tourism In India' Ke Vishesh Sandarbh Mein) Hindi Translation and Analysis of the Buddhist Tourism Literature (with special reference to 'Buddhist Tourism in India')**

This may be placed before the examiners for evaluation for the award of the degree of Ph.D.

Dr. Ganga Sahay Meena
(Supervisor)
CIL/SLL&CS/JNU

Dr. Ganga Sahay Meena
Associate Professor
Centre for Indian Languages
SLL&CS
Jawaharlal Nehru University
New Delhi-110067

Prof. Omprakash Singh
(Chairperson)
CIL/SLL&CS/JNU

अध्यक्ष / Chairperson
भारतीय भाषा केंद्र / CIL
भा. सा. एवं सं. अ. सं. / SLL & CS
ज. ने. वि. / J.N.U
नई दिल्ली / New Delhi-110067

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
भूमिका		i-ii
पहला अध्याय :	बौद्ध पर्यटन साहित्य की अनुवाद परम्परा	1-21
दूसरा अध्याय :	समतुल्य पाठों से भिन्नता और शोध कार्य की उपादेयता	22-41
तीसरा अध्याय :	*बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* का हिन्दी अनुवाद	42-311
चौथा अध्याय :	*बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* के हिन्दी अनुवाद का विश्लेषण	312-339
उपसंहार		340-342
संदर्भ-ग्रंथ सूची		343-347

भूमिका

अनुवाद अध्ययन से मेरा पहला परिचय इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ (स्कूल) में हुआ था जहाँ से मैंने अनुवाद अध्ययन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की थी। वहाँ अनुवाद के सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्षों का अध्ययन किया। अध्ययन के दौरान अनुवाद की प्रक्रिया, रूप, प्रकार और महत्व का पता चला। इसके क्षेत्र में साहित्य, बैंक, पत्रकारिता, कार्यालय, संसद, वाणिज्य, पर्यटन, विधि आदि शामिल हैं।

स्नातकोत्तर के अंतिम सत्र में परियोजना कार्य अनिवार्य था। प्रो. अवधेश कुमार सिंह मेरे परियोजना निर्देशक थे और सर ने मुझे आनंद के. कुमारस्वामी की कृति *Buddha and the Gospel of Buddhism* का सुझाव दिया। यहीं से मेरी रूचि बौद्ध धर्म में पैदा हुई जो मेरे पीएच.डी. शोध प्रबंध का आधार बनी। सर अब इस दुनिया में नहीं हैं। सर को पुनः नमन। प्रस्तुत शोध प्रबंध चार अध्यायों में विभक्त है-

पहला अध्याय- बौद्ध पर्यटन साहित्य की अनुवाद परंपरा पर आधारित है। इसमें बौद्ध पर्यटन स्थलों एवं उनके आकर्षण के विभिन्न रूपों उल्लेख किया गया है जिसमें विहार, गुफा, विश्वविद्यालय, संग्रहालय, त्यौहार आदि शामिल हैं। इसमें बौद्ध पर्यटन पर लिखित पुस्तकों, गाइड पुस्तिकाओं तथा यात्रावृत्तांतों के अनुवाद की परंपरा का वर्णन किया गया है।

दूसरे अध्याय में आधार ग्रन्थ *बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* की अन्य पाठों से तुलना की गई है। अन्य पाठ बौद्ध पर्यटन के किसी एक पक्ष का वर्णन करते हैं जैसे- *अजंता एवं एलोरा की गुफाएं* । इनमें से अधिकतर पाठ प्रमुख बौद्ध स्थलों या किसी एक पक्ष या स्थल पर केंद्रित हैं। जबकि आधार ग्रन्थ में बौद्ध मठ, स्तूप, गुफा, त्यौहार आदि का वर्णन किया गया।

पाठ का हिन्दी अनुवाद पाठकों एवं पर्यटकों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बौद्ध पर्यटन के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत करता है। पर्यटक इसे पढ़ने के बाद, बौद्ध पर्यटन स्थलों की यात्रा की योजना बनाते समय प्रमुख और अन्य बौद्ध स्थलों को यात्रा में शामिल करेगा ताकि बौद्ध धर्म को समग्र रूप में समझ सके।

तीसरे अध्याय में *बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। मूल पाठ के हिन्दी अनुवाद के दौरान अनेक तकनीकों का प्रयोग किया गया है। जिनमें शब्दानुवाद, भावानुवाद, लिप्यंतरण तथा पाद टिप्पणी आदि शामिल हैं।

चौथे अध्याय में *बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* के हिन्दी अनुवाद का विश्लेषण किया गया है। इसमें सबसे पहले पाठ की प्रकृति का वर्णन किया गया है। पाठ सूचना प्रधान एवं अंतर्विषयक प्रकृति का है क्योंकि इसमें बौद्ध स्थलों की कला, वास्तुकला, इतिहास, संस्कृति, भूगोल इत्यादि की सूचना दी गई है।

इसमें मूल पाठ के हिन्दी अनुवाद में प्रयुक्त पद्धति का वर्णन किया गया है। अनुवाद कार्य समतुल्यता का सिद्धांत और संप्रेषणपरक सिद्धांत के आधार पर किया है। अनुवाद कार्य के दौरान अनेक उपकरणों (शब्दकोशों) की सहायता ली गई है, जिनमें फादर कामिल बुल्के कृत *अँगरेजी-हिंदी कोश* प्रमुख है।

पाठ के हिन्दी अनुवाद के दौरान अनेक भाषिक एवं सांस्कृतिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा जैसे- नामपरक शब्द, पारिभाषिक शब्द, जटिल वाक्य एवं शीर्षक। इन चुनौतियों के समाधान के लिए शब्दानुवाद तथा भावानुवाद के अलावा लिप्यंतरण तथा पाद टिप्पणी जैसी युक्तियों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य को पूरा करने में मुझे डॉ. गंगा सहाय मीणा का पूर्ण सहयोग मिला तथा भारतीय भाषा केन्द्र में कार्यरत रावत सर, रमेश भाई का भी सहयोग मिला। डॉ. गंगा सहाय मीणा मेरे एम.फिल शोध कार्य के भी निर्देशक थे। सर के साथ विश्वविद्यालय में आरंभ से लेकर अब तक अच्छा अनुभव रहा है। शोध कार्य की सामग्री संचय के लिए अनेक संस्थाओं की यात्रा की तथा वहाँ के शैक्षिक एवं अन्य स्टाफ का पूर्ण सहयोग मिला जैसे-इग्नू, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा राष्ट्रीय अभिलेखागार। शोध कार्य में सहयोग के लिए इन संस्थाओं के अकादमिक एवं अन्य स्टाफ का आभारी हूँ। सभी दोस्तों के सहयोग का भी आभारी हूँ। शोध कार्य को पूर्ण कराने के लिए विशेष रूप से शोध निर्देशक डॉ. गंगा सहाय मीणा का विशेष आभारी हूँ।

पहला अध्याय

बौद्ध पर्यटन साहित्य की अनुवाद परम्परा

बौद्ध पर्यटन एवं उसका क्षेत्र

भारत प्राचीन काल से ही तीर्थयात्रियों के लिए प्रसिद्ध स्थल रहा है। धार्मिक ज्ञान की खोज एवं आध्यात्मिक शांति के लिए लोग भारत की यात्रा करते रहे हैं। पर्यटकों की भारत के सांस्कृतिक स्थलों में विशेष रुचि है। बौद्ध स्थल भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग हैं।

लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर, राजगीर, वैशाली, संकिसा, श्रावस्ती आदि बौद्धों के प्रमुख तीर्थस्थल हैं।[1] तीसरी शताब्दी ई.पू. में सम्राट अशोक इन स्थलों की यात्रा पर गए और उसे धम्मयात्रा का नाम दिया। विदेशी यात्रियों में फाह्यान, शुंग युंग, ह्वेनसांग एवं इत्सिंग ने इन स्थलों की यात्रा की और अपने-अपने अनुभवों के आधार पर यात्रावृत्तांत लिखे। ये सभी चीनी बौद्ध भिक्षु थे।

देश के बौद्ध स्थल एवं स्मारक पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र हैं जिनमें स्तूप, गुफा, विहार, आदि शामिल हैं। ये स्मारक बौद्ध कला एवं वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भारत में बौद्ध पर्यटन के निम्नलिखित रूप हैं-

स्तूप

भारत में महापुरुषों के अवशेषों को मिट्टी में दबाकर सुरक्षित रखने की प्रथा बहुत पुरानी है।[2] बौद्धों ने इस परम्परा को अपनाया और अनेक स्तूप निर्मित किए। बौद्ध स्रोतों के अनुसार बुद्ध के शारीरिक अवशेषों को आठ भागों में विभक्त किया गया और उन पर आठ स्तूप बनाए गए। सम्राट अशोक ने इन स्थलों की खुदाई करवायी और बुद्ध के अवशेषों पर लगभग 84000 स्तूप बनवाये।[3] स्तूपों की पूजा होने से इनका अलंकरण बढ़ा और इनके निर्माण की एक खास तरह की वास्तुकला विकसित हुई।

स्तूप का आकार अर्द्धवृत्ताकार गुबंद जैसा होता है। ऊपरी हिस्सा समतल होता है जिसे हर्मिका या भगवान का निवास स्थल माना जाता है। यहीं पर बुद्ध या किसी महापुरुष के अवशेष सोने या चाँदी की मंजूषा में रखे होते हैं। मध्य में एक लकड़ी का खंभा लगा होता है जिसका निचला हिस्सा स्तूप के ऊपरी हिस्से से जुड़ा होता है। इस खंभे के ऊपर तीन छत्र

---

[1] श्रीकृष्ण, आनंद, *भगवान बुद्ध : धम्म सार व धम्म-चर्या*, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुम्बई, 2016, पृ. 142

[2] *पर्यटन : सांस्कृतिक विरासत*, बी. टी. एस., अध्ययन सामग्री, दिल्ली, इग्नू, 2009, पृ. 14

[3] कौसल्यायन, भदन्त आनंद (अनुवादक), महवंश, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2021, पृ. 43

लगे होते हैं। भारत में प्रमुख स्तूप साँची, भरहुत, सारनाथ, अमरावती और नागार्जुनकोंडा में निर्मित किए गए थे। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल के अनुसार "धर्मराजिक स्तूप उन पाँच महत्त्वपूर्ण स्मारकों में से एक है जिन्हें महात्मा बुद्ध के जीवन से संबंधित बताया गया है।"[4]

विहार

बौद्ध धर्म में संघ के उद्भव के साथ भिक्षुओं की संख्या लगातार बढ़ती गई और उनके निवास की समस्या पैदा हो गई। भिक्षु संघ के निवास के लिए बड़े स्तर पर पहाड़ों में गुहा निर्माण कार्य आरंभ हो गया। भिक्षु समुदाय का आवास स्थान निश्चित हो जाने के बाद पूजा स्थल की आवश्यकता अनुभव हुई। अतः पहाड़ों को खोदकर निवास स्थान तथा पूजागृह निर्मित किए गए। इस प्रकार विहार और चैत्यगृह निर्मित हुए।[5]

बौद्ध गुहा विहारों का आरंभ हीनयान युग में हुआ। पहाड़ियों को खोद कर विहार बनाए गए। थेरवाद तथा महायान संप्रदाय के गुहा एक जैसे नहीं थे। हीनयान संप्रदाय के विहार गाँवों के गृह जैसे तैयार किए गए। महायान मत के विहार में कुछ परिवर्द्धन किए गए। इसके विहार के केन्द्र में बड़े हॉल का निर्माण प्रमुख था। जिसके चारों ओर छोटे कमरों के प्रस्तर की चौकियाँ बनाई गईं जिन पर भिक्षु शयन करते थे।

विहारों के इतिहास से पता चलता है कि अशोककालीन बराबर तथा नागार्जुन की गुफाएँ सबसे पहले निर्मित की गई थीं। ये पहाड़ियाँ काले ठोस प्रस्तर की थीं। उनमें गुहा खोदना आरंभ हुआ। अशोक का साम्राज्य बहुत विशाल था किन्तु अन्य स्थानों पर गुफाएँ मिलती नहीं थीं। हिमालय क्षेत्र में मिट्टी वाली चट्टानें थीं जहाँ गुफाएँ खोदी नहीं जा सकती थीं। शुंगकाल में पश्चिमी भारत में सहयाद्रि की पहाड़ियों में अनेक विहार निर्मित किए गए। इनमें अजंता, एलोरा, भाजा, पितलखोरा एवं कार्ले की गुफाओं के विहार शामिल हैं। इस प्रकार मौर्यकालीन गुहा विहार के आधार पर कालांतर में अनेक विहार बनाए गए। आठवीं सदी तक पश्चिमी सहयाद्रि की पहाड़ियों में विहार खोदे गए। किन्तु कालांतर में समतल भूमि पर ईंट तथा प्रस्तर के विहार निर्मित किए गए जैसे- सारनाथ तथा नालंदा के विहार।

---

[4] उपाध्याय, उदयनारायण, गौतम तिवारी, *भारतीय स्थापत्य एवं कला*, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2015, पृ. 54

[5] उपाध्याय, वासुदेव, *प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर*, पटना, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1972, पृ. 14

चैत्यगृह

भिक्षु संघ के लिए गुफाओं को खोद कर विहार निर्मित किए गए और उसके बाद पूजा स्थल बनाए गए जो चैत्यगृह कहलाए। सर्वप्रथम मौर्यकालीन बराबर की गुफाओं की खुदाई की गई, जहाँ केवल विहार निर्मित किए गए तथा चैत्यगृह का अभाव रहा परन्तु मौर्य युग के बाद चैत्य तथा विहार साथ-साथ निर्मित किए गए। शैलकर्त्त चैत्य गुफाओं को दो भागों में बांटा जा सकता है - (1) थेरवाद संप्रदाय से संबंधित चैत्यगृह (2) महायान संप्रदाय से संबंधित चैत्यगृह।

थेरवाद मत से संबंधित शैलकर्त्त चैत्यगृहों का निर्माण दूसरी शताब्दी ई.पू. से प्रथम शताब्दी ई. के मध्ययुग का माना जाता है। भाजा, पितलखोरा तथा अजंता के कई चैत्यगृह इस युग के माने जाते हैं। इन चैत्यगृहों में बुद्ध को धम्मपाद, बोधिवृक्ष आदि के रूप में दर्शाया है।

पश्चिमी भारत के इन चैत्यगृहों में भाजा की गुहा को प्राचीन संरचना माना गया है। दूसरी शताब्दी ई.पू. में पहाड़ी को खोद कर घोड़े की नालनुमा (अर्द्धगोलाकार) मंडप तैयार किया गया जिसका ऊपरी भाग झोपड़ी के बाँस के ढाँचे के जैसा गोल है।

महायान मत से संबंधित शैलकर्त्त चैत्यगृहों का निर्माण दूसरी शताब्दी से सातवीं शताब्दी ई. के मध्य युग का माना जाता है। इस युग में बुद्ध की प्रतिमाएँ स्थापित की जाने लगी थीं। एलोरा के चैत्यगृहों के अलावा अजंता, कार्ले एवं कन्हेरी के कई चैत्यगृह महायान परंपरा से संबंधित हैं।

अशोक स्तंभ और अभिलेख

अशोक स्तंभ मौर्यकालीन कला के उत्कृष्ट नमूने हैं।[6] इन शिल्प स्तम्भों की संख्या लगभग तीस बताई गई है। किन्तु इनमें से अनेक नष्ट हो चुके हैं। अब पन्द्रह पाषाण-स्तम्भ उपलब्ध हैं, जिनमें से दस पर अभिलेख उत्कीर्ण हैं तथा शेष पाँच लेख-रहित है। दिल्ली, इलाहाबाद, लौरिया नन्दनगढ़ तथा रामपुरवा के पाषाण-स्तम्भों पर अभिलेख उत्कीर्ण हैं। इसी प्रकार सारनाथ, साँची एवं लुंबिनी के पाषाण-स्तम्भों पर लघु-स्तम्भ लेख उत्कीर्ण हैं।

---

[6] उपाध्याय, उदयनारायण, गौतम तिवारी, *भारतीय स्थापत्य एवं कला*, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2015, पृ. 57

अशोककालीन ये पाषाण-स्तंभ लम्बे, सुडौल एवं चिकने एकाश्म स्तम्भ हैं। अशोक ने इन स्तंभों पर अभिलेख खुदवाए और शीर्ष पर पशु प्रतीक बनवाए। पाषाण-स्तम्भ वास्तव में भारतीय कला के सबसे मौलिक एवं सुन्दर संरचनाओं में से एक हैं। इन स्तंभों की ऊँचाई 40 से 50 फीट के मध्य है। मौर्यकालीन पाषाण-स्तम्भों का निर्माण एक ही शिला को तराश कर किया गया और इसमें कहीं भी जोड़ नहीं है, इसलिए इन्हें एकाश्म स्तम्भ कहते हैं। इन स्तम्भों के निम्न भाग होते हैं-

- स्तंभ यष्टि या नाल
- स्तंभ की चोटी पर स्थापित घंटाकृति
- स्तंभ पट्टिका
- स्तंभ शीर्ष पर पशु आकृति

स्तंभ यष्टि के समाप्त होने पर अधोमुखी कमल की आकृति है जिसे विद्वान घण्टाकृति मानते हैं। इस घण्टाकृति को तांबे की कील से जोड़ा गया है। घण्टाकृति के ऊपर जो चौकी प्रदर्शित है, वह आरम्भ में चौकोर तथा अनालंकृत थी जिसे बाद में गोलाकार पट्टियों से अलंकृत किया गया।

पशु आकृति एवं उसके नीचे की पट्टी एक ही प्रस्तर को तराश कर बनाई गई हैं। पाषाण स्तंभ बलुआ प्रस्तर से निर्मित हैं। पाषाण-स्तम्भों की नाल नीचे से ऊपर की ओर पतली है जो स्थापत्य के वैशिष्टय को दर्शाती है। अशोककालीन स्तम्भों में सबसे सुरक्षित अवस्था में लौरिया नन्दनगढ़ का स्तम्भ मिला है।

अशोक ने धम्म-नीति एवं राजाज्ञा के प्रसार के लिए स्तंभों और अभिलेखों को अपना माध्यम बनाया। अशोककालीन भिन्न-भिन्न अभिलेख मिलते हैं जैसे - बृहद शिलालेख, लघु शिलालेख एवं स्तम्भ लेख।

अशोक ने अपने विचार इन स्तम्भों एवं शिलाओं पर इस आशय से लिखवाए थे कि लोग उन्हें पढ़ सकें। ये शिलालेख प्रमुख नगरों के मुख्य मार्ग पर स्थापित किए गए। इससे पता चलता है कि राजा जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहता था।

महाविहार

प्राचीन काल में शिक्षा व्यवस्था के दो रूप थे।[7] एक तो यह कि शिक्षा समाज के उच्च वर्णों के लिए ही थी और दूसरा यह कि आचार्य अपने निवास स्थान पर ही शिष्यों के एक समूह को शिक्षा देते थे, जिसे गुरुगृह कहा जाता था। भिक्षुओं ने विहारों में शिक्षा आरंभ की और सभी जातियों के लिए उपलब्ध करायी तथा विहारों में सामूहिक शिक्षा व्यवस्था को शुरू किया। इन विहारों ने बाद में महाविहारों का रूप धारण किया जिनमें नालन्दा सबसे प्रमुख था।

प्राचीन नालन्दा महाविहार

नालन्दा प्राचीन भारत का सबसे प्रमुख विश्वविद्यालय था।[8] इसके अस्तित्व का पाँचवीं शताब्दी ई. में गुप्त राजाओं के शासनकाल से पता चलता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने महाविहार से शिक्षा ग्रहण की थी। उनके अनुसार गुप्त वंश के राजाओं ने पाँच महाविहार निर्मित किए। तब यह विश्वविद्यालय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।

पाल राजाओं के समय नालन्दा अपने सर्वोच्च शिखर पर था। राजकीय संरक्षण एवं दान के कारण, यह महायान और वज्रयान संप्रदायों का प्रमुख केन्द्र बन गया था। यहाँ के भिक्षुओं ने इसकी कीर्ति को सुदूर तक फैलाया। इसके विख्यात भिक्षु पद्मसंभव ने तिब्बत पहुँच कर, बौद्ध धर्म के एक नए संप्रदाय की नींव डाली थी।

इसकी कीर्ति के पीछे यहाँ के बौद्ध विद्वानों का गंभीर ज्ञान, कठिन परिश्रम एवं अनुशासित आचरण था। नागार्जुन, आर्यदेव, असंग, वसुबन्ध आदि विद्वानों ने इसकी गरिमा को 12वीं शताब्दी तक बनाए रखा।

13वीं शताब्दी के आसपास नालन्दा महाविहार की मुहम्मद बख्तियार खिलजी के आक्रमण के कारण नष्ट हो गया। तिब्बती विद्वान धर्मस्वामी ने इसकी व्यवस्था का वर्णन किया है। इसकी अधिकतर इमारतें नष्ट हो चुकी थीं और केवल कुछ विद्वान एवं लगभग 70

---

[7] बापट, वी. पी., *बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष*, दिल्ली, प्रकाशन विभाग, 2010, पृ. 112

[8] सिंह, प्रियसेन, *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल*, दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2016, पृ. 93

छात्र रह गये थे। इस प्रकार नालन्दा महाविहार की गरिमा समाप्त हो गई। बाद में यह एक खंडहर में तबदील हो गया और इसका नाम तक भुला दिया गया।

अलेक्जैंडर कनिघंम ने बड़गाँव के पास इसकी पहचान की और इसे दुनिया के मानचित्र पर प्रकट किया। सन् 1915 में खुदाई का कार्य प्रारंभ हुआ और नालंदा महाविहार के खंडहर अस्तिव में आए।

संग्रहालय

संग्रहालय भी हमारी संस्कृति का अंग हैं। आशुतोष मुखर्जी का कथन है, "संग्रहालय प्राकृतिक तत्त्वों तथा मानव क्रियाओं का संग्रह संस्थान है जिसका उपयोग ज्ञान के संवर्धन और जनता के सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास के लिए किया जाता है।"[9] संग्रहालय में किसी देश के क्रमशः विकास से जुड़ी अनेक वस्तुएँ रखी होती हैं। वस्तुओं का अधिग्रहण, संरक्षण तथा प्रदर्शन संगहालय के मुख्य कार्य हैं। बच्चों के लिए संग्रहालय आकर्षण का विशेष केन्द्र होता है क्योंकि यहाँ शिक्षा प्राप्ति के साथ-साथ उनका मनोरंजन भी होता है। वयस्कों के लिए भी संग्रहालय का भ्रमण लाभप्रद होता है, उन्हें यहाँ क्षेत्रीय या राष्ट्रीय संस्कृति एवं इतिहास की जानकारी मिलती है।

पर्यटन के क्षेत्र में संग्रहालय प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। संग्रहालयों के माध्यम से पर्यटकों को देश की सांस्कृतिक, औद्योगिक एवं ऐतिहासिक विकास की जानकारी मिलती है। पर्यटक संग्रहालयों के माध्यम से मेजबान देश की सांस्कृतिक विरासत से अवगत होते हैं।

संग्रहालय पर्यटन का प्रमुख अंग हैं। ये विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, कलाकृतियों तथा चित्रों को प्रदर्शित करते हैं। ये विभिन्न माध्यमों से देश के कला, विज्ञान, प्रौद्योगिक, स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुए विकास को प्रदर्शित करते हैं। ये पर्यटकों को बौद्ध कला, इतिहास एवं संस्कृति से अवगत कराते हैं।

संग्रहालय के प्रकार

संग्रहालय के कई प्रकार हैं तथा इन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है[10]-

---

[9] सहाय, शिवस्वरूप, संग्रहालय की ओर, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2019, पृ. 3

[10] सहाय, शिवस्वरूप, *संग्रहालय की ओर*, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2019, पृ. 49-50

(1) **संग्रहित वस्तुओं की प्रकृति के आधार पर -** संग्रहित वस्तुओं तथा उनकी प्रकृति के आधार पर संग्रहालयों को वर्गीकृत किया गया है। इनमें कला संग्रहालय, पुरातात्त्विक संग्रहालय, औद्योगिक एवं प्रोद्यौगिक संग्रहालय, बाल संग्रहालय आदि शामिल हैं। राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (दिल्ली), सारनाथ संग्रहालय (उत्तर प्रदेश), बिड़ला औद्योगिक और प्रौद्योगिक संग्रहालय (पश्चिम बंगाल), राष्ट्रीय बाल संग्रहालय (दिल्ली) आदि इनके कुछ उदाहरण हैं।

(2) **अनुदान प्राप्ति और नियंत्रण या संचालन के आधार पर -** ये संग्रहालय केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, स्थानीय निकाय, शिक्षण संस्था द्वारा संचालित होते हैं जैसे- राष्ट्रीय संग्रहालय, पटना संग्रहालय, सारनाथ संग्रहालय तथा भारत कला भवन।

पुरातात्त्विक संग्रहालय में आसपास के क्षेत्रों में हुई खुदाई से प्राप्त पुरावशेषों को संग्रहित किया जाता है। इन संग्रहालयों की देखरेख आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया करता है। बिहार में बोधगया एवं नालंदा, मध्य प्रदेश में साँची और ग्वालियर पुरातात्त्विक संग्रहालय के कुछेक उदाहरण हैं।

बोधगया संग्रहालय

सन् 1956 में बिहार के गया जिले में बोधगया परातत्त्व संग्रहालय का उद्घाटन तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के कर-कमलों द्वारा किया गया।[11] इस संग्रहालय में प्रस्तर एवं अन्य धातुओं की कलाकृतियों को पर्यटकों के दर्शनार्थ रखा गया है। इसमें अधिकतर मूर्तियाँ पाल-सेना काल से संबंधित हैं।

त्यौहार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में स्वयं की पहचान को किसी विशेष संस्कृति से जोड़ता है। इसलिए संसार में भिन्न-भिन्न धार्मिक समुदाय के लोगों की भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक पहचान नजर आती है। त्यौहार इस सांस्कृतिक पहचान का एक अंग हैं। प्रत्येक धार्मिक समुदाय के अपने त्यौहार होते हैं जैसे- होली, दीपावली, ईद, गुड फ्राईडे, बुद्ध पूर्णिमा आदि।

---

[11] बौद्ध, शांति स्वरूप, *बोधगया : संबोधि स्थल*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2010, पृ. 130

बुद्ध पूर्णिमा

यह बौद्ध समुदाय का एक प्रमुख त्यौहार है।[12] इस त्यौहार को बौद्ध बड़े उत्साह के साथ से मनाते हैं क्योंकि इस दिन बुद्ध का जन्म हुआ था। इस दिन बुद्ध-विहारों को पंचशील ध्वजों तथा पताकाओं से सजाया जाता है। इस दिन विशेष पकवान बनाए जाते हैं, जैसे खीर। महाबोधि मंदिर को विशेष रूप से सजाया जाता है। बौद्ध मठों में प्रदर्शनी, वाद-विवाद, सामूहिक ध्यान आदि का आयोजन किया जाता है।

बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती

प्रत्येक वर्ष 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती मनायी जाती है।[13] डॉ. भीमराव अम्बेडकर को आधुनिक बोधिसत्त्व कहा जाता है क्योंकि उन्होंने समाज में व्याप्त बुराईयों का विरोध किया एवं हाशिये के समाज को न्याय दिलाया। बाबा साहब ने 14 अक्टूबर, 1956 में नागपुर में अपने लाखों समर्थकों के साथ बौद्ध धर्म अपनाकर एक बार फिर से धर्मचक्र को गतिशील किया।

लोसर त्यौहार

यह तिब्बती बौद्धों का प्रमुख त्यौहार है।[14] लद्दाख में बौद्ध समुदाय द्वारा लोसर उत्सव ग्यारहवें चन्द्र महीने के प्रथम दिन मनाया जाता है। इसका कारण यह है कि 17वीं शताब्दी में राजा जमयांग नामग्याल द्वारा इस परम्परा को आरम्भ किया था। इस दिन बौद्ध मठों में प्रार्थना करते हैं तथा सगे-संबंधियों को उपहार देते हैं। घरों और मठों को सजाया जाता है।

हिमाचल प्रदेश में लोसर बौद्ध बहुल क्षेत्रों में मनाया जाता है। राज्य का लाहौल जिला उन प्रमुख स्थलों में से एक है जहाँ यह त्यौहार धूम-धाम से मनाया जाता है। इस दिन मठों में छाम नृत्य प्रदर्शित किया जाता है। सिक्किम में, यह दिसम्बर-जनवरी के समय सोनम

---

[12] श्रीकृष्ण, आनंद, *भगवान बुद्ध : धम्म सार व धम्म-चर्या*, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुम्बई, 2013, पृ. 211

[13] वही, 220

[14] Jacob, Robinet, *Buddhist Tourism in India*, Delhi, Abhijeet Publication, 2013, P. 285

लोसर या कृषि नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। इस समय वहाँ अनाज और चावल की प्रचुरता होती है तथा मौसम भी सुहावना होता है।

हेमिस त्यौहार

हेमिस बौद्ध समुदाय का एक प्रमुख त्यौहार है और गुरु पद्मसंभव के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है।[15] यह त्यौहार हेमिस मठ में मनाया जाता है। त्यौहार का सबसे प्रमुख आकर्षण मुखौटा नृत्य है। इसमें भिक्षु विभिन्न चित्रित पोशाक पहनकर नृत्य करते हैं। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

[15] Jacob, Robinet, *Buddhist Tourism in India*, Delhi, Abhijeet Publication, 2013, P. 286

बौद्ध स्थल - भारतीय पर्यटन का आधार

बौद्ध स्थल, भारतीय पर्यटन का अभिन्न अंग हैं। ये भारतीय संस्कृति के संवाहक हैं। ये सारे संसार से पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। प्रत्येक वर्ष लाखों पर्यटक (घरेलू एवं विदेशी) इनकी यात्रा करते हैं तथा इनके प्रति अपनी धार्मिक आस्था प्रकट करते हैं। बौद्ध स्थलों को निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत कर सकते हैं-

महात्मा बुद्ध के जीवनकाल से संबंधित स्थल[16]

लुम्बिनी- यह नेपाल में स्थित है और बुद्ध का जन्म स्थल है। इस स्थल पर सम्राट अशोक ने अपनी धम्मयात्रा के दौरान एक स्तंभ स्थापित किया था तथा जिस पर ब्राह्मीलिपि में बुद्ध के जन्म स्थान होने की पुष्टि की गई है। इसका वर्तमान नाम रूम्मिनदेई है। इसके आसपास अनेक आकर्षण हैं, जिन्हें देखने के लिए पर्यटक तथा तीर्थयात्री आते हैं।

बोधगया- वह स्थान है जहाँ सिद्धार्थ गौतम को संबोधि प्राप्त हुई और वे बुद्ध कहलाए। सिद्धार्थ गौतम को जिस पीपल के वृक्ष के नीचे निर्वाण प्राप्त हुआ। आज वह बोधिवृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। इसके आकर्षणों में महाबोधि मंदिर, वज्रासन, अनिमेषलोचन स्तूप, चंक्रमण, रत्नगृह, बुद्धपाद, मुचलिन्द झील आदि शामिल हैं।

सारनाथ- सारनाथ एक प्रमुख बौद्ध स्थल है। बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया था जिसे धर्मचक्र प्रवर्तन का नाम दिया। इसका प्राचीन नाम इसिपतन था। यहाँ अनेक मृग विचरण करते थे। इस कारण इसे मृगदाव भी कहा गया। इसके आकर्षणों में चौखण्डी स्तूप, मूलगन्ध कुटी, धम्मेख स्तूप, अशोक स्तंभ, सिंह शीर्ष आदि शामिल हैं।

कुशीनगर- यहाँ बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था और उनका अंत्येष्टि विधान हुआ था। इसलिए यह एक प्रमुख बौद्ध स्थल है। यहाँ बुद्ध ने अपना अंतिम प्रवचन दिया था। इसके आसपास अनेक स्मारक हैं।

राजगीर- जिसका अर्थ है- राजकीय भवन। बौद्ध एवं जैन समुदाय के लिए एक धार्मिक स्थल है। तथागत ने राजगीर में अपने निवास के दौरान अनेक उपदेश दिए थे। यह

---

[16] श्रीकृष्ण, आनंद, *भगवान बुद्ध : धम्म सार व धम्म-चर्या*, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुम्बई, 2013, पृ. 142-178

अपने गर्म पानी के चश्मों के लिए प्रसिद्ध है। इसके आकर्षणों में गृध्रकूट चोटी, स्वर्ण भंडार, सप्तपर्णी गुफा, जीवक आम्र उद्यान आदि शामिल हैं।

वैशाली- यह विश्व का प्रथम गणराज्य था, जो बौद्ध उपासकों के लिए विशेष महत्त्व रखता है। वह वैशाली ही था जहाँ बुद्ध ने अपने महापरिनिर्वाण की घोषणा की थी। इसकी गणिका आम्रपाली अपनी सुन्दरता के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध थी जिसने अपना आम का उद्यान संघ को दान कर दिया था और फिर भिक्षुणी बन गई थी। बुद्ध ने वैशाली की कई यात्राएँ की थीं और अनेक उपदेश दिए थे। इसके स्मारकों में शारीरिक स्तूप, विश्व शांति स्तूप, अशोक स्तंभ, अभिषेक सरोवर, वैशाली महोत्सव, कुण्डलपुर वैशाली संग्रहालय, चौमुखी महादेव मंदिर आदि शामिल हैं।

संकिसा- यह बौद्ध समुदाय का प्रमुख तीर्थस्थल है। इसका प्राचीन नाम संकाश्य था। ऐसा माना जाता है कि स्वर्ग से बुद्ध इंद्र और ब्रह्म देव के साथ जिस स्थान पर नीचे उतरे थे, वह संकिसा था। इसके आकर्षणों में अशोककालीन स्तंभ एवं बुद्ध विहार प्रमुख हैं।

श्रावस्ती- बुद्ध के समय में श्रेष्ठी सुदत्त अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था। उसे अनाथपिण्डक (अनाथों का पोषक) कहा जाता था तथा बुद्ध से भेंट करने के बाद उनका अनुयायी बन गया। उसने श्रावस्ती में शाक्यमुनि को आमंत्रित किया और राजकुमार जेत के वन को खरीदकर बुद्ध के लिए जेतवन विहार बनवाया था। बुद्ध ने जेतवन उद्यान में निवास किया और अनेक उपदेश दिए। इसके आकर्षणों में जेतवन विहार, स्तूप, बोधिवृक्ष तथा कच्ची एवं पक्की कुटी शामिल हैं।

कौशांबी- बुद्ध ने संबोधि प्राप्ति के बाद छठे एवं नवें वर्ष में कौशांबी की यात्राएँ की थीं। तथागत ने कौशांबी में अनेक उपदेश दिए, जिसके कारण यह बौद्धों का तीर्थस्थल बन गया। शहर की खुदाई से अनेक अवशेष मिले जिनमें अशोक स्तंभ, घोषिताराम विहार तथा अन्य कलाकृतियों आदि सम्मिलित हैं। ये हमें बौद्ध धर्म के स्वर्णिम दिनों की याद दिलाते हैं। इसके आकर्षणों में प्राचीन कौशांबी के खंडहर, प्रभाषगिरि पहाड़ी, शीतला देवी मंदिर आदि शामिल हैं।

कपिलवस्तु- यह एक प्रमुख बौद्ध स्थल है जहाँ सिद्धार्थ गौतम ने जीवन के आरंभिक 29 वर्ष व्यतीत किए थे। ज्ञान प्राप्ति के बाद, बुद्ध अपने पिता के निमंत्रण पर कपिलवस्तु गए। इस दौरान उन्होंने कई उपदेश दिए और अनेक शाक्य युवकों, सगे-संबंधियों को प्रव्रज्या दी जैसे – नन्द, आनन्द तथा अनुरुद्ध। उन्होने अपने पुत्र राहुल को भी संघ में शामिल किया।

एक बार बुद्ध कपिलवस्तु से वैशाली गए। जब बुद्ध वैशाली के पास महावन में ठहरे हुए थे तो उन्हे पिता की बीमारी की सूचना मिली। वे तुरन्त कपिलवस्तु गए और जीवन के अंतिम क्षणों में पिता की सेवा की। पिता के परिनिर्वाण के बाद, फिर वैशाली लौट आए। इस दौरान महाप्रजापति गौतमी ने पाँच सौ अन्य शाक्य स्त्रियों के साथ संघ में प्रवेश की अनुमति मांगी, परन्तु बुद्ध ने अस्वीकार कर दिया। तब आनन्द के हस्तक्षेप के बाद स्त्रियों को कुछ शर्तों के साथ संघ में प्रवेश मिल गया।

कई विद्वान पिपरहवा स्थल की पहचान प्राचीन कपिलवस्तु के रूप में करते हैं क्योंकि यहाँ खुदाई से एक स्तूप निकला जिससे धातु सहित मंजूषा प्राप्त हुई। इसके आकर्षणों में मुख्य स्तूप तथा विहारों के अवशेष शामिल हैं।

वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध स्थल[17]

साँची स्तूप- साँची का विशाल स्तूप प्रस्तर की सबसे पुरानी संरचना है तथा इसे सम्राट अशोक ने बनवाया था। यह एक अर्द्धगोलाकार संरचना है। सारे संसार के बौद्धों के लिए साँची एक महत्त्वपूर्ण स्थल है। साँची का महत्त्व विशाल स्तूप तथा अन्य बौद्ध स्मारकों के कारण है। इनमें विशाल स्तूप तथा अशोक स्तंभ सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। इनके अलावा, यहाँ एक संग्रहालय भी है। यहाँ भगवान बुद्ध को मानव आकृति में नहीं बल्कि विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है जैसे- धम्मपाद, बोधिवृक्ष तथा धर्मचक्र।

अजंता की गुफाएँ - ये गुफाएँ, महाराष्ट्र में स्थित हैं। इनमें मुख्य रूप से चैत्य हॉल तथा विहार शामिल हैं। इन गुफाओं की कुल संख्या 30 है। इन गुफाओं के मुख्य आकर्षण हैं-

थेरवाद मत की गुफाएँ - इसमें दूसरी शताब्दी ई.पू. से प्रथम शताब्दी की गुफा संख्या 9 और 10 के चैत्य हॉल और गुफा संख्या 12 और 13 के विहार शामिल हैं। इन गुफाओं में शाक्यमुनि को विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है।

---

[17] सिंह, प्रियसेन, *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल*, दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2016, पृ. 64, 149

महायान मत की गुफाएँ - इसमें पाँचवी शताब्दी ई. से छठी शताब्दी ई. के मध्य की गुफा संख्या 19, 26 और 29 चैत्य हॉल हैं जबकि गुफा संख्या 1 से 7, 11, 14 से 18, 20 से 25, 27 से 28 तक विहार हैं। इन गुफाओं में तथागत को मानव आकृति में दर्शाया गया है। गुफा संख्या 8 और एक अन्य अपूर्ण है।

मठों के लिए प्रसिद्ध स्थल[18]

भारत में स्थित बौद्ध मठ पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण हैं। ये देश के बहुत बड़े भू-भाग में फैले हुए हैं तथा बौद्ध विरासत का अभिन्न अंग हैं।

हेमिस मठ- हेमिस लद्दाख का सबसे बड़ा मठ है और द्रुक्पा संप्रदाय से संबंधित है। इसे 17वीं शताब्दी के आसपास स्टेग्संग रास्पा नवांग ग्यात्सो ने बनवाया था। हेमिस त्यौहार मठ का प्रमुख आकर्षण है जो जून या जुलाई के महीने में मनाया जाता है। यह त्यौहार गुरु पद्मसंभव के जन्म दिवस का प्रतीक है। मठ परिसर में कई मंदिर हैं जो इसके मुख्य आकर्षण हैं जैसे – दुखांग मंदिर, त्शोगखांग तथा त्सोमखांग मंदिर।

नामग्याल मठ- यह मैकलोडगंज शहर में स्थित है और 14वें दलाई लामा का निवास स्थल है। इसका दूसरा नाम नामग्याल तांत्रिक महाविद्यालय है। इसे तिब्बत के सैनिकों के सम्मान में बनाया गया था जिन्होंने देश की आज़ादी में प्राणों का बलिदान दिया था। इसे 16वीं शताब्दी में तीसरे दलाई लामा गेदुन ग्यात्सो ने बनवाया था। 14वें दलाई लामा की उपस्थिति के कारण आज यह बौद्ध पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र है। मठ परिसर में कई दर्शनीय आकर्षण हैं जिनमें त्सुगलगखांग मंदिर, नामग्याल स्तूप, तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान, नोरबुलिंगका संस्थान आदि प्रमुख हैं।

विपस्सना के लिए प्रसिद्ध स्थल

विपस्सना पालि भाषा का शब्द है जिसका संधि-विच्छेद है- वि+पस्सना। वि का अर्थ है- सूक्ष्मतापूर्वक, पूर्णतया और पस्सना का अर्थ है- देखना, जानना, विश्लेषण करना आदि। विपस्सना किसी वस्तु या स्थित को सूक्ष्म रूप से देखना, समझा या विश्लेषण करना है। विपस्सना ध्यान पद्धति बुद्ध की देन है। विपस्सना ध्यान की एक प्राचीन भारतीय पद्धति है।

---

[18] Jacob, Robinet, *Buddhist Tourism in India*, Delhi, Abhijeet Publication, 2013, P. 109, 154

भारत में इस पद्धति को आचार्य सत्य नारायण गोयनका जी ने पुनः स्थापित किया, जिन्होंने इसे विपस्सना के विख्यात आचार्य श्री समाजी ऊ बा खिन (बर्मा) से सीखा था। आचार्य गोयनका जी का कथन है कि अपने अंदर जो चल रहा है, उसे समभाव से देखना ही विपस्सना है। स्वयं की सांस, काया और काया की संवेदनाओं के आधार पर चित्त (मन) को एकाग्र करना ही विपस्सना है।

भारत में विपस्सना के प्रमुख केन्द्र हैं[19]

धम्मगिरि- यह महाराष्ट्र के नाशिक जिले में इगतपुरी में स्थित है। यह विपस्सना अन्तर्राष्ट्रीय अकादमी और विपस्सना शोध संस्थान का मुख्यालय है। यहाँ पूरे वर्ष विपस्सना के शिविरों का आयोजन होता है। विश्व में विपस्सना का यह सबसे बड़ा केन्द्र है। विपस्सना शोध संस्थान की स्थापना सन् 1985 में विपस्सना ध्यान तकनीक तथा इसके स्रोतों पर शोध के उद्देश्य से की गई थी। संस्थान विपस्सना पद्धति पर 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित कर चुका है। यहाँ प्रत्येक वर्ष अनेक शिवर लगाए जाते हैं जिनमें भाग लेने के लिए देश-विदेश से साधक आते हैं।

ग्लोबल विपस्सना पगोड़ा- यह मुम्बई महानगर में बोरिवली के गोराई खाड़ी के पास स्थित है। पगोडा में एक विशाल ध्यान कक्ष है जिसमें एक साथ लगभग 8 हजार साधक ध्यान कर सकते हैं।

आधुनिक बौद्ध तीर्थस्थल[20]

आधुनिक बौद्ध तीर्थस्थलों में दीक्षाभूमि और धर्मशाला प्रमुख हैं। नागपुर की दीक्षाभूमि पर बौद्ध धर्म का पुनः उत्थान हुआ। धर्मशाला 14वें दलाई लामा का निवास स्थल है। इसलिए यह बौद्ध मतावलंबियों का प्रमुख दर्शनीय स्थल है। इन दोनों स्थलों को आधुनिक तीर्थस्थल का दर्जा प्राप्त है।

---

[19] श्रीकृष्ण, आनंद, *भगवान बुद्ध : धम्म सार व धम्म-चर्या*, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुम्बई, 2013, पृ. 122, 194-199

[20] सिंह, प्रियसेन, *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल*, दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2016, पृ. 208, 216

दीक्षाभूमि- वह स्थान है जहाँ 14 अक्तूबर, 1956 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने महास्थविर चंद्रमणी (भिक्षु) से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और उनके बाद लगभग पाँच लाख से अधिक उनके अनुयायियों ने धम्म की दीक्षा ली। यहाँ प्रत्येक वर्ष लाखों बौद्ध अनुयायी एवं पर्यटक आते हैं। प्रत्येक वर्ष 14 अक्तूबर को यहाँ मेले का आयोजन होता है जिसमें बौद्ध धर्म एवं बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर से संबंधित साहित्य, मूर्तियों एवं चित्रों इत्यादि की खरीददारी कर सकते हैं।

धर्मशाला- धर्मशाला के ऊपरी भाग मैकलोडगंज में 14वें तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थान है जो वर्ष 1959 में अपने हजारों अनुयायियों के साथ यहाँ आए थे। सारे संसार के बौद्ध धर्मावलंबी उनका आदर करते हैं और उनकी शिक्षाओं को मानते हैं।

नामग्याल मठ एवं तिब्बती संस्थान, मैकलोडगंज का प्रमुख आकर्षण है। इसे नामग्याल तान्त्रिक महाविद्यालय भी कहते हैं। मैकलोडगंज छोटे ल्हासा के नाम से विख्यात है। मठ परिसर में स्थित नामग्याल स्तूप तिब्बती सैनिकों को समर्पित है जिन्होंने चीनियों से अपने देश की रक्षा के लिए प्राण त्याग दिए थे। इसे इंडो-तिब्बत शैली में बनाया गया है। तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान, मैकलोडगंज का एक अन्य आकर्षण है। आज यह देश-विदेश के पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन चुका है।

बौद्ध पर्यटन साहित्य के अनुवाद की परम्परा

बौद्ध पर्यटन साहित्य- महात्मा बुद्ध एवं उनके अनुयायियों (राजा, व्यापारी, विद्वान) के जीवनकाल में घटित प्रमुख घटनाओं से संबंधित बौद्ध स्थलों और स्मारकों पर आधारित साहित्य है। इसमें चैत्य, बोधिवृक्ष, गुफा, विहार, स्तंभ एवं अभिलेख, त्यौहार तथा संग्रहालय आदि का प्रमुख रूप से वर्णन होता है। इसमें बौद्ध स्मारकों जैसे-साँची स्तूप, महाबोधि मंदिर, अजंता एवं एलोरा की गुफाएँ आदि का विवरण होता है।

बौद्ध धर्म विश्व का एक प्रमुख धर्म है और इसका साहित्य बहुत विशाल है। इसका मूल स्रोत पालि में संग्रहित *विनय पिटक*, *सुत पिटक* एवं *अभिधम्म पिटक* आदि ग्रंथ हैं। अन्य ग्रंथों में *बुद्धचरित*, *महायान सूत्र*, *दीपवंश* एवं *महावंश* आदि शामिल हैं।

बौद्ध धर्म अनुवाद के माध्यम से विश्व के अन्य भागों में फैला। मौर्य सम्राट अशोक के समय में तीसरी संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ था और इसमें अनेक विद्वान शामिल हुए। इसमें अन्य प्रदेशों में धम्म प्रचारकों को भेजने का भी निर्णय लिया गया। ये प्रचारक यवन, गांधार, कश्मीर, हिमालयी क्षेत्र, श्रीलंका, थाईलैण्ड (मलय) एवं सुमात्रा भेजे गए।

मध्य काल में जब मुस्लिम शासक भारत आए तो बौद्ध धर्म का ह्रास हुआ तथा बौद्ध ग्रन्थों के अनुवाद की परम्परा भी प्रभावित हुई।

आधुनिक युग में बौद्ध धर्म ग्रन्थों के अनुवाद को तीन चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है।[21] पहले चरण में औपनिवेशिक काल में ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा बौद्ध ग्रन्थों के किए गए अनुवाद सम्मिलित हैं। ये अनुवाद ईसाई पूर्वाग्रह से भरे हुए हैं। सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का आरंभिक अनुवाद इस काल के सबसे अच्छे तथा सबसे खराब स्तर का है। इसमें परिनिर्वाण के लिए मृत्यु शब्द का चयन किया गया है। जो मूल अवधारणा को ही नष्ट करता है।

दूसरे चरण में ईसाई प्रभाव उतना हावी नहीं था क्योंकि एशिया के कई बौद्ध बहुल देशों का राजनीतिक एवं आर्थिक वर्चस्व था। इस काल में बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थों के अनुवाद हुए तथा अधिकतर अनुवादक पश्चिमी दार्शनिकों से प्रभावित थे।

---

[21] *अनुवाद : इतिहास एवं परम्परा*, एम. ए. टी. एस., अध्ययन सामग्री, दिल्ली, इग्नू, 2014

तीसरे चरण में भारतीय विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के अनुवाद प्रस्तुत किए। सतीश चन्द्र विद्या भूषण ने कच्चायन के पालि व्याकरण का अंग्रेजी अनुवाद कर पालि का पुनरुद्धार किया। राहुल सांकृत्यायन ने तिब्बत के प्राचीन ग्रन्थों का संपादन तथा अनुवाद किया।

बौद्ध साहित्य की भांति, बौद्ध पर्यटन साहित्य के अनुवाद की परम्परा प्राचीन नहीं है। चीनी यात्री फाह्यान ने अपना यात्रावृत्तांत पाँचवीं शताब्दी में लिखा जोकि बौद्ध स्थलों पर केंद्रित था। उनके बाद अन्य चीनी यात्रियों ने यात्रा विवरण लिखें।

भारत प्रारंभ से ही विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रहा है। यहाँ अनेक विदेशी यात्री आए और गए। कुछ सोना तथा चाँदी लूटने के उद्देश्य से आए तो कुछ व्यापार के उद्देश्य से आए और बाद में वर्षों तक शासन किया। किन्तु चीनी बौद्ध यात्री यहाँ केवल ज्ञान की खोज में आए।

फाह्यान एक भिक्षु थे और 399-414 ई. के मध्य भारत आए। यहाँ उन्होंने अनेक जनपदों की यात्राएँ की थीं। उन्होंने अपनी यात्राओं के दौरान जो कुछ देखा और समझा, उसका एक विवरण लिखा। इनका यात्रा विवरण मूलतः चीनी भाषा में है। इसमें तत्कालीन भारतीय सामाज की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। इसमें फाह्यान द्वारा भ्रमण किए गए बौद्ध स्थलों का विवरण दिया गया है जैसे- कपिलवस्तु, कुशीनगर तथा वैशाली।

इस यात्रावृत्तांत का 1877 ई. में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के चीनी भाषा और साहित्य के प्रो. जेम्स लेगी द्वारा *A Record of Buddhistic Kingdoms* नाम से अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया। इसका 1918 में जगन्मोहन वर्मा द्वारा *फाह्यान की भारत यात्रा* नाम से हिन्दी अनुवाद किया गया। अनुवाद सरल एवं सुबोध भाषा में किया गया है। सन् 2017 में शांति स्वरूप बौद्ध ने इस ग्रंथ का *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री फाह्यान की भारत यात्रा*[22] नाम से संपादन किया।

ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध भिक्षु और अनुवादक थे जो राजा हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आए थे। उन्होंने 629-645 ई. के मध्य भारत के विभिन्न स्थलों की यात्राएँ की थीं।

[22] बौद्ध, शांति स्वरूप (संपादक), *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री फाह्यान की भारत यात्रा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2017

और नालंदा महाविहार में कई वर्षों तक अध्ययन किया। उन्होंने अपनी यात्राओं का एक विवरण लिखा जिसका नाम *सी.यू.की.* है।

1857 ई. में इसी ग्रंथ का प्रथम अनुवाद स्टैनिस्लैस जूलियन द्वारा फ्रेंच भाषा में किया गया जो चीनी भाषा के विद्वान थे। बाद में 1884 ई. में सैम्युअल बील द्वारा इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया। इसके बाद टॉमस वाटर्ज ने भी इसका अंग्रेजी अनुवाद किया। रीज डेविड ने इसे 1904 में *On Yuan Chwang's Travels in India* के नाम से संपादित किया।

इस यात्रावृत्तांत का ठाकुर प्रसाद शर्मा ने *ह्वेनसांग की भारत यात्रा* के नाम से हिन्दी अनुवाद किया गया जो वर्ष 1972 में आदर्श पुस्तकालय, इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। सन् 2019 में शांति स्वरूप बौद्ध ने इस यात्रावृत्तांत का *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा*[23] नाम से संपादन किया।

इत्सिंग सातवीं शताब्दी के आसपास भारत आए थे और बौद्ध स्थलों की यात्राएँ की थीं। 691 ई. में इत्सिंग ने अपनी यात्राओं का विवरण लिखा जिसका नाम *भारत तथा मलय द्विपपुंज में प्रचलित बौद्ध धर्म* है। इससे हमें सातवीं शताब्दी के भारतीय समाज और संस्कृति का पता चलता है।1896 ई. में इस यात्रा विवरण का जापानी विद्वान तक्कुसु ने अंग्रेजी अनुवाद किया। वर्ष 1925 में संतराम, बी.ए. ने *इत्सिंग की भारत यात्रा* नाम से हिन्दी अनुवाद किया। सन् 2020 में शांति स्वरूप बौद्ध ने इस यात्रावृत्तांत का *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री इत्सिंग की भारत यात्रा*[24] नाम से संपादन किया।

बौद्ध पर्यटन पर हिन्दी भाषा में लेखन बीसवीं शताब्दी के आरंभ में शुरू हुआ। आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया ने विभिन्न बौद्ध स्थलों पर गाइड पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं जैसे – *सारनाथ, अमरावती* तथा *साँची* । इन पुस्तिकाओं में बौद्ध स्थल के विषय में ज्यादा नहीं लिखा गया है। इसके बाद अन्य प्रकाशन संस्थानों ने भी बौद्ध पर्यटन पर कुछ

---

[23] बौद्ध, शांति स्वरूप (संपादक), *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2019

[24] बौद्ध, शांति स्वरूप (संपादक), *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री इत्सिंग की भारत यात्रा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2020

ग्रन्थ प्रकाशित किए। लेकिन अनुवाद का कार्य बहुत ही कम हुआ है। हिन्दी में बौद्ध पर्यटन पर कुछ ही पुस्तकें लिखी गई हैं।

आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया से प्रकाशित सभी पुस्तिकाओं का अनुवाद नहीं हुआ है। ये पुस्तिकाएं बौद्ध स्थल का संक्षेप में वर्णन करती हैं। सारनाथ पर प्रथम बार 1914 में कैटलॉग निकाला गया। बुद्धिरश्मि मणि द्वारा लिखित *सारनाथ*[25] का हिन्दी अनुवाद इन्दुधर द्विवेदी ने किया है। इस पुस्तिका के अनुवाद में बहुत कमियां हैं। इसमें कुषाण काल का अनुवाद परवर्ती काल किया है। धम्म की प्रमुख घटना धर्मचक्र प्रवर्तन का भी केवल धर्मचक्र किया है। पुस्तिका के कुछ वाक्यों का अनुवाद ही नहीं किया है। इससे स्पष्ट है कि अनुवादक पूर्वाग्रह से ग्रस्त है।

साँची संसार में बौद्ध वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ प्रत्येक वर्ष हजारों पर्यटक आते हैं। आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया ने *साँची*[26] पर पर्यटक पुस्तिका प्रथम बार सन् 1957 में प्रकाशित की थी तथा इसको देबला मित्रा ने लिखा है। इसका अनुवाद केदारनाथ शास्त्री एवं भास्करनाथ मिश्र ने किया है। अनुवाद सरल एवं सुबोध भाषा में किया गया है। किन्तु कहीं-कहीं पर वाक्य बहुत जटिल हैं।

सम्यक प्रकाशन ने बौद्ध पर्यटन स्थलों पर द्विभाषी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनमें स्थल से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है।

लुम्बिनी : भगवान बुद्ध की जन्मस्थली[27], मधुकर पिपलायन की प्रमुख कृति है। इसमें स्थल और आसपास के प्रमुख आकर्षणों का विवरण दिया गया है। इसमें पुरातात्विक खोजों का भी उल्लेख किया गया है।

बोधगया : संबोधि स्थल[28], शांति स्वरूप बौद्ध की कृति है। इस कृति में बोधगया के इतिहास तथा वर्तमान स्वरूप का उल्लेख किया गया है। वहाँ समय-समय पर हुए उत्खनन कार्य तथा उससे प्राप्त सामग्री वर्णन किया गया। इसमें अनागरिक धर्मपाल के बोधगया के लिए किए गए संघर्ष का भी उल्लेख किया गया है। इसमें प्रमुख दर्शनीय आकर्षणों का विवरण दिया गया है।

---

[25] अग्रवाल, वासुदेवशरण, *सारनाथ*, दिल्ली, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, 2010

[26] मित्रा, देवला, *साँची*, दिल्ली, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, 2001

[27] पीपलायन, मधुकर, *लुम्बिनी : भगवान बुद्ध की जन्मस्थली*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2016

[28] बौद्ध, शांति स्वरूप, *बोधगया : संबोधि स्थल*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2010

सारनाथ : प्रथम उपदेश स्थल[29], शांति स्वरूप बौद्ध की अन्य महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें सारनाथ का बुद्ध के समय से लेकर वर्तमान स्वरूप तक के विषय में उल्लेख किया गया है। यहाँ बुद्ध ने प्रथम धर्मोपदेश दिया था। इसमें प्रमुख दर्शनीय आकर्षणों का सचित्र वर्णन किया गया है जैसे- मूलगन्ध कुटी विहार।

कुसीनारा : महापरिनिर्वाण स्थल[30], जुगल किशोर बौद्ध की कृति है। इसमें कुसीनारा के इतिहास तथा वर्तमान स्वरूप के साथ भविष्य के कुशीनगर का भी उल्लेख किया गया है। इसमें बुद्ध के शिष्यों आनंद, महाकाश्यप, अनुरूद्ध और अंतिम भिक्षु सुभद्द का विवरण दिया गया है। इसमें कुशीनगर के प्रमुख दर्शनीय आकर्षणों को चित्रों सहित वर्णित किया है जैसे- मुख्य स्तूप।

सम्यक प्रकाशन से प्रकाशित इन कृतियों का अनुवाद, एम. माईकल ने किया है। अनुवादक ने प्रसंग के अनुसार शब्दानुवाद एवं भावानुवाद का प्रयोग किया है। पालि एवं संस्कृत भाषा के शब्दों का लिप्यंतरण किया गया है जैसे- धम्मचक्कप्पवत्तन, इसिपतन, निर्वाण तथा ऋषिपतन। अनुवादक ने बोधगया कृति के अनुवाद में एडविन अर्नाल्ड के मौलिक विचार को भी शामिल किया जो कि मूल कृति में नहीं है। अनुवाद सरल एवं स्पष्ट भाषा में किया गया है। ताकि सामान्य पाठक भी इसे आसानी से पढ़ सके।

---

[29] बौद्ध, शांति स्वरूप, *सारनाथ : प्रथम उपदेश स्थल*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2015

[30] बौद्ध, जुगल किशोर, *कुसीनारा : महापरिनिर्वाण स्थल*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2008

दूसरा अध्याय

समतुल्य पाठों से भिन्नता और शोध कार्य की उपादेयता

समतुल्य पाठों से भिन्नता

बौद्ध पर्यटन पर हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनेक ग्रन्थ लिखे गए हैं फिर भी वे बौद्ध पर्यटन का वैसा चित्र प्रस्तुत नहीं करते हैं जैसा *बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* ने प्रस्तुत किया है। बौद्ध पर्यटन से संबंधित कुछ पुस्तकों एवं पुस्तिकाओं का विवरण इस प्रकार है-

फाह्यान एक चीनी बौद्ध भिक्षु थे जो बौद्ध ग्रन्थों की खोज में भारत आए।[31] 399 ई. से 414 ई. दौरान उन्होंने अनेक स्थलों का भ्रमण किया। जिनमें गांधार, वाराणसी, तक्षशिला, मथुरा संकाश्य, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, राजगृह, वैशाली, कुसीनारा प्रमुख थे।

फाह्यान की यात्रा का मुख्य लक्ष्य *विनय पिटक* की प्रतिलिपि की खोज करना था। इसके लिए उन्होंने अनेक बौद्ध स्थलों का भ्रमण किया। वे पाटलिपुत्र गए और वहाँ तीन वर्षों तक अध्ययन किया। पाटलिपुत्र से चंपा गए और फिर वहाँ से ताम्रलिप्ति गए जिसे आज तमलुक कहते हैं। वहाँ दो वर्षों तक रहे और बौद्ध ग्रन्थों की हस्तलिपि तैयार की।

ताम्रलिप्ति से फाह्यान एक नाव में सवार होकर सिंहल (श्रीलंका) गए और वहाँ दो वर्ष ठहरे तथा अनेक बौद्ध धर्म ग्रन्थों की पांडुलिपि तैयार की। फिर सिंहल से जावा द्वीप गए और वहाँ पाँच महीने ठहरे। अंत में समुद्र मार्ग से वापस चीन लौट गए।

इस यात्रावृत्तांत से तत्कालीन भारतीय समाज, इतिहास, भूगोल आदि की जानकारी मिलती है। इस ग्रन्थ में अनेक बौद्ध स्थलों का विवरण दिया गया है जिनकी फाह्यान ने यात्रा की थी जैसे- पाटलिपुत्र। इससे तत्कालीन बौद्ध स्थलों की जानकारी प्राप्त होती है।

ह्वेनसांग एक बौद्ध भिक्षु थे और राजा हर्ष के शासन में भारत आए।[32] तब चीन में तांग वंश का शासन था। उन्होंने 629 ई. से 645 ई. के दौरान बौद्ध स्थलों का भ्रमण किया और अनेक ग्रन्थों का अध्ययन किया। वे चीन से मार्ग में अनेक पर्वतों को पार कर ताशंकद, समरकंद और अफगानिस्तान के रास्ते कश्मीर पहुँचे थे।

---

[31] बौद्ध, शांति स्वरूप (संपादक), *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री फाह्यान की भारत यात्रा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2017

[32] बौद्ध, शांति स्वरूप (संपादक), *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2019

वे कश्मीर मार्ग से होते हुए थानेश्वर पहुँचे। वहाँ से 636 ई. के मध्य कन्नौज पहुँचे। कन्नौज से पाटलिपुत्र और फिर वहाँ से बोधगया और नालंदा गए। इसके बाद वे बंगाल, उड़ीसा होते हुए कांची पहुँचे। भ्रमण के दौरान उन्होंने पाटलिपुत्र में विहारों तथा स्तूपों के दर्शन किए, बोधगया में बोधिवृक्ष की पूजा की। उन्होनें नालंदा महाविहार में कई वर्षों तक बौद्ध ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। लेकिन भारत में उनका सबसे महत्त्वपूर्ण समय सम्राट हर्षवर्धन की राजधानी कन्नौज में बीता और यहीं से ही वे अपने देश को वापस लौट गए। यह माना जाता है कि ह्वेनसांग भारत से लगभग 657 ग्रन्थों की पांडुलिपियां अपने साथ ले गए और इनका चीनी भाषा में अनुवाद किया। उन्होनें *सी.यू.की.* नामक यात्रा विवरण लिखा।

इस यात्रावृतांत से तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है। इससे सातवीं शताब्दी के भूगोल को समझने में सहायता मिलती है। बौद्ध स्थलों के तत्कालीन स्वरूप एवं उनकी व्यवस्था का पता चलता है।

इत्सिंग एक चीनी यात्री और बौद्ध भिक्षु थे जो 671 ई. में भारत आए।[33] वे समुद्री मार्ग से भारत आए। 673 ई. में वे ताम्रलिप्ति पहुँचे और फिर वहाँ से मगध होते हुए बोधगया गए तथा उसके बाद कुशीनगर और सारनाथ गए। उन्होने नालंदा में 10 वर्षों (675 ई. से 685 ई.) तक अध्ययन किया। फिर वे ताम्रलिप्ति लौट गए। ऐसा माना जाता है कि वे अपने साथ लगभग 400 बौद्ध ग्रन्थ ले गए जिनका चीन पहुँचकर अनुवाद किया।

इस यात्रा विवरण में मठावासीय जीवन का उल्लेख किया है जैसे- वर्षावास, उपोसथ दिवस पर भोज के नियम, उपसंपदा के नियम, उचित समय पर स्नान, औषधि देने के नियम, पूज्यों के प्रति व्यवहार, निद्रा एवं विश्राम के नियम।

इस यात्रा विवरण से हमें तत्कालीन समाज, संस्कृति एवं भूगोल की जानकारी मिलती है तथा इसमें भिक्षु समुदाय के दैनिक व्यवहारों का वर्णन किया गया है जैसे- आवश्यक वस्त्र एवं भोजन, पवित्र और अपवित्र भोजन की पहचान तथा उचित समय पर स्नान।

---

[33] बौद्ध, शांति स्वरूप (संपादक), *बुद्ध की तलाश में चीनी यात्री इत्सिंग की भारत यात्रा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2020

ये यात्रावृत्तांत प्राचीन इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं जिनसे तत्कालीन समाज तथा शासन प्रणाली की जानकारी मिलती है। ये यात्रा विवरण हमें विभिन्न बौद्ध संप्रदायों तथा स्थलों के विषय में जानकारी देते हैं। ये यात्रावृत्तांत बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करते हैं। ये सिर्फ तत्कालीन बौद्ध स्थलों की जानकारी प्रदान करते हैं।

प्रियसेन सिंह की कृति *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल*[34] बौद्ध पर्यटन साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचना है। इसमें गुफाओं, महाविहारों, मंदिरों आदि का उल्लेख किया गया है। इसमें कुल सात खण्ड हैं। पहले खंड में आठ प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों का वर्णन किया गया है। इसमें आसपास के स्मारकों जैसे- विहार, चैत्य, संग्रहालय आदि का उल्लेख किया गया है।

दूसरे खण्ड में उत्तर तथा दक्षिण भारत के प्रमुख स्तूपों को वर्णित किया है जैसे- साँची, भरहुत, नागार्जुनकोण्डा और अमरावती। इसमें स्तूपों के इतिहास, कला एवं वास्तुकला का विवरण दिया गया है।

तीसरे खण्ड में प्रमुख महाविहारों का वर्णन किया गया है जिनमें नालन्दा, विक्रमशिला, जगद्दल, तक्षशिला, वल्लभी आदि प्रमुख थे। यहाँ दूर-दराज के प्रदेशों से लोग शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे।

चौथे खण्ड में बौद्ध मंदिरों का वर्णन किया गया है जैसे- सोमपुर एवं मैनामति। तब ये मंदिर प्रमुख धार्मिक केन्द्र थे। सोमपुर (पहाड़पुर) तिब्बती बौद्धों के मध्य प्रसिद्ध था तो मैनामति तांत्रिक पक्ष के लिए बिहार, बंगाल एवं पूर्वोत्तर के राज्यों में प्रसिद्ध था।

पाँचवें खण्ड में गुफा, चैत्यगृह और विहार की कला एवं स्थापत्य का वर्णन किया गया है जिनमें अजन्ता, एलोरा, कार्ले, कन्हेरी, बाघ, रत्नागिरि की गुफाएँ प्रमुख हैं। इनमें मूलतः विहार और चैत्यगृह शामिल हैं। गुफाओं की विशेषता इनकी चित्रकला है जो मुख्यतः बुद्ध के जीवन और जातक कथाओं से संबंधित है। इनमें भगवान बुद्ध को प्रतीकों एवं मानव आकृति में दर्शाया गया है।

छठे खण्ड में कौशांबी एवं कपिलवस्तु के अतीत से लेकर वर्तमान स्वरूप को वर्णित किया गया है। तब कौशांबी भारत का एक प्रमुख नगर था। कपिलवस्तु में बुद्ध ने अपना आंरभिक जीवन व्यतीत किया था।

---

[34] सिंह, प्रियसेन, *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल*, दिल्ली, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2016

सातवें खण्ड में दीक्षाभूमि और धर्मशाला का वर्णन किया गया है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सामूहिक धर्मांतरण के माध्यम से 14 अक्तूबर, 1956 में नागपुर में बौद्ध धर्म को पुनः गतिशील किया। तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा धर्मशाला में निवास करते हैं। इसलिए यह भी एक तीर्थस्थल है।

प्रस्तुत ग्रन्थ बौद्ध स्थलों, स्तूपों, चैत्यों, मंदिरों, विश्वविद्यालयों आदि का वर्णन है। किन्तु पर्यटन के अभिन्न अंग त्यौहारों का कहीं भी वर्णन नहीं किया गया है। अतः यह पुस्तक बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती है।

जगमोहन नेगी की कृति *संपूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल*[35] में भारत के पर्यटन स्थलों का क्षेत्रवार वर्णन किया गया है। इसमें कुल पाँच खण्ड हैं।

पहले खण्ड में भारत का संक्षिप्त परिचय, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न एवं राष्ट्रीय गान का वर्णन किया गया है। इसमें भारत की विविधता को वर्णित किया गया है जैसे – भाषा, धर्म, रहन-सहन, खान-पान तथा जलवायु। इसमें बौद्ध स्थलों के विषय में बहुत संक्षेप में लिखा गया है जिससे बौद्ध पर्यटक की स्थल के विषय में ज्ञान पिपासा शांत नहीं होती है।

दूसरे खंड में दिल्ली सहित उत्तर भारतीय राज्यों जैसे – हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा एवं पंजाब के सांस्कृतिक स्थलों एवं स्मारकों का वर्णन किया गया है। इन आकर्षणों में कुतुबमीनार, लाल किला, वैष्णो देवी मंदिर, रोहतांग दर्रा, हवामहल, ताजमहल, केदारनाथ मंदिर, स्वर्ण मंदिर, सूरजकुंड आदि प्रमुख हैं।

तीसरे खंड में पश्चिमी भारत के दर्शनीय आकर्षणों का उल्लेख किया गया है। इनमें भारत का प्रवेश द्वार – मुम्बई, ताज होटल (महाराष्ट्र), समुन्द्री तट (गोवा), द्वारिकधीश मंदिर तथा सोमनाथ मंदिर (गुजरात), खजूराहों के मंदिर (मध्य प्रदेश), इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान आदि का वर्णन किया गया है।

चौथे खंड में पूर्वी भारत के सांस्कृतिक स्थलों एवं स्मारकों का वर्णन किया गया है। इनमें बोधगया (बिहार), विक्टोरिया महल, भारतीय संग्रहालय (पश्चिम बंगाल), धौली शांति स्तूप (ओडिसा), रांची झील (झारखंड) आदि शामिल हैं। इसमें पूर्वोत्तर के राज्यों जैसे – असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड आदि के दर्शनीय

---

[35] नेगी, जगमोहन, *सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल*, दिल्ली, तक्षशिला, प्रकाशन, 2015

आकर्षणों का भी उल्लेख किया गया है जैसे –नामग्याल तिब्बती अध्ययन एवं शोध संस्थान, पेमायांगत्से मठ, कामाख्या मंदिर और तवांग मठ।

पाँचवें खंड में दक्षिण भारत के प्रमुख दर्शनीय स्मारकों का वर्णन किया गया है। इसमें तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल आदि राज्यों के पर्यटन स्थलों एवं स्मारकों का उल्लेख किया गया है। इनमें तिरुपति मंदिर, चार मीनार, सालार जंग संग्रहालय, महाबलीपुरम मंदिर, रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग, मीनाक्षी मंदिर, नटराज शिव मंदिर आदि शामिल हैं। इसमें बौद्ध स्थलों के विषय में बहुत संक्षेप में लिखा गया है जिससे बौद्ध पर्यटक की ज्ञान पिपासा शांत नहीं होती है।

बौद्ध पर्यटन पर लिखित गाइड पुस्किाएँ केवल एक स्थल विशेष पर केन्द्रित हैं जैसे- *सारनाथ*[36], *राजगीर*[37], *साँची*[38] *तथा कुशीनगर*[39] । इनमें स्थल विशेष के स्मारक, संग्रहालय, पुरातात्त्विक उत्खनन एवं इतिहास का वर्णन है। इसके अलावा, अन्य सूचनाएं भी दी गई हैं जैसे- भ्रमण के लिए कब जाएं, क्या पहने, यात्रा मार्ग एवं दूरभाष नम्बर।

ये पुस्तिकाएँ बौद्ध पर्यटन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं, विशेषकर जब किसी स्थल विशेष की यात्रा करनी हो। किन्तु ये समग्र बौद्ध पर्यटन का भ्रमण करने वाले पर्यटकों के लिए उपयुक्त नहीं हैं। ये पुस्तिकाएँ मूल ग्रन्थ की भांति बौद्ध पर्यटन का समग्र रूप प्रस्तुत नहीं करती हैं।

आनन्द श्रीकृष्ण की कृति *भगवान बुद्ध : धम्म-सार व धम्म-चर्या*[40] एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें ग्यारह अध्याय हैं। इसमें बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं, बौद्ध साहित्य, तीर्थस्थल, बौद्ध त्यौहार, धम्म पूजा आदि को वर्णित किया गया है।

इसमें तथागत के जन्म, बचपन, गृह त्याग, ध्यान, संबोधि, महापरिनिर्वाण आदि का विवरण दिया गया है। इसमें विपस्सना पद्धति का उल्लेख किया गया है जो ध्यान की एक प्राचीन पद्धति है। इसमें विपस्सना के विभिन्न प्रकार बताए गए हैं।

---

36 अग्रवाल, वासुदेवशरण, *सारनाथ*, दिल्ली, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, 2010

37 कुरैशी, मोहम्मद हमीद, *राजगीर*, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, 2006

38 मित्रा, देवला, *साँची*, दिल्ली, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, 2001

39 पाटिल, डी. आर., *कुशीनगर*, दिल्ली, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, 2006

40 श्रीकृष्ण, आनंद, *भगवान बुद्ध : धम्म सार व धम्म-चर्या*, समृद्ध भारत प्रकाशन, मुम्बई, 2013

बौद्ध वाङ्मय दुनिया का सबसे विशाल एवं विस्तृत साहित्य है। यह मूलतः पालि भाषा में लिपिबद्ध है। इसके तीन भाग हैं- विनय, सुत्त एवं अभिधम्म जिसे त्रिपिटक कहते हैं। इनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

इसमें भारत के प्रमुख बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है। इसके साथ ही भारत से बाहर के कई स्थलों की जानकारी ही गई है जैसे - गोटाहेना मंदिर (श्रीलंका), श्वेदेगोन पगोडा (म्यांमार), बारोकुदुर (जाव) तथा हक्को-दो तोंदाई जी मंदिर (जापान)।

इसमें बुद्ध पूर्णिमा, धर्मचक्र अनुप्रवर्तन दिवस, डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती आदि त्यौहारों का विवरण दिया गया हैं। इनके साथ ही धम्म पूजा एवं दीक्षा का भी वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक बौद्ध पर्यटन का आंशिक रूप प्रस्तुत करती है। इसमें स्थलों के विषय में केवल संक्षेप में उल्लेख किया गया है जबकि *बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया* में पर्यटन के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी गई है।

सम्यक प्रकाशन की बौद्ध पर्यटन स्थलों पर लिखित पुस्तकें, एक स्थल विशेष को केन्द्र में रख कर लिखी गई हैं। इन पुस्तकों में बौद्ध पर्यटन स्थल के विषय में विस्तार से लिखा गया है। ये स्थल विशेष का समग्र रूप प्रस्तुत करती हैं जैसे- स्थल का इतिहास एवं वर्तमान स्वरूप, कला एवं स्थापत्य, विहार, स्तूप, मंदिर, प्रमुख महापुरुषों का विवरण, संग्रहालय तथा स्थल संबंधित विवाद। ये पुस्तकें बौद्ध पर्यटन के एक स्थल का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करती हैं तथा स्थल से संबंधित सभी सूचनाएं प्रदान करती हैं। किन्तु बौद्ध पर्यटन के सभी पक्षों से अवगत नहीं कराती हैं।

चान सान की कृति *बुद्धिस्ट पिलग्रिमेज*[41] में बौद्ध पर्यटन का मनोरम वर्णन किया गया है। इसमें चार भाग हैं जिनमें बौद्ध पर्यटन के धार्मिक महत्त्व, पवित्र स्थलों, चमत्कारिक स्थलों आदि की व्यवहारिक जानकारी दी गई है। इसके साथ ही यात्रा संबंधी सामान्य जानकारी भी दी गई है जैसे- यात्रा वीजा, परिवहन एवं मार्ग तथा मानचित्र।

पहले भाग में तीर्थ यात्रा के मानसिक पक्षों का वर्णन किया गया है। इतिहास के प्रसिद्ध तीर्थयात्रियों का विवरण दिया गया है। सम्राट अशोक ने प्रसिद्ध आठ बौद्ध स्थलों की

---

[41] सान, चान, *बुद्धिस्ट पिलग्रिमेज*, मलेशिया, 2001

यात्रा की और उसे 'धम्मयात्रा' का नाम दिया। चीनी बौद्ध भिक्षुओं ने स्थलों की यात्रा की और उसका वर्णन अपने ग्रन्थों में किया। इन्हीं ग्रन्थों को आधार बना कर सर अलेक्जैंडर कनिंघम ने उन्नीसवीं शताब्दी में बौद्ध स्थलों की खुदाई करवायी थी तथा अदृश्य हुए स्थलों को विश्व मानचित्र पर पुनः स्थापित किया।

दूसरे भाग में चार प्रमुख धार्मिक स्थलों का वर्णन किया है। इसमें प्रमुख स्थलों के धार्मिक महत्त्व तथा इतिहास को वर्णित किया है। स्थलों के स्मारकों का विवरण दिया गया है।

तीसरे भाग में अन्य प्रमुख चार स्थलों का विवरण दिया गया है। ये स्थल बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं से जुड़े हुए हैं। इसमें स्थलों तक पहुँचने के मार्ग, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा दर्शनीय आकर्षणों का भी वर्णन किया गया है।

चौथे भाग में भारत में यात्रा से संबंधित व्यवहारिक जानकारी दी गई है। जिससे कि पर्यटक पहले से अवगत हो जाएं ताकि उन्हें यात्रा के दौरान कोई परेशानी न आए जैसे- यात्रा वीजा, बीमा एवं खर्च, तीर्थस्थल, मार्ग एवं मानचित्र।

इस पुस्तक में बौद्ध पर्यटन के महत्त्वपूर्ण पक्षों का उल्लेख किया गया है। इसमें प्रमुख आठ तीर्थस्थलों का विवरण दिया गया है। इसमें धार्मिक स्थलों के इतिहास एवं महत्त्व का तो वर्णन किया है किन्तु धार्मिक उत्सवों का वर्णन नहीं किया है जो पर्यटन का अभिन्न अंग हैं।

स्वाति मित्रा द्वारा संपादित *वॉकिंग विद दा बुद्धा*[42] *एक महत्वपूर्ण* पुस्तक है। इसमें तथागत के जीवन, बौद्ध साहित्य, प्रमुख स्थलों, बौद्ध उत्खनन, समकालीन बौद्ध धर्म गुरुओं, व्यवहारिक सूचना आदि का वर्णन किया गया है। पहले भाग में सिद्धार्थ गौतम के जीवन की घटनाओं को वर्णित किया है जैसे- रानी महामाया का स्वप्न, ध्यान मुद्रा तथा गृह त्याग।

दूसरे भाग में धम्म की ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख किया गया है। सम्राट अशोक के समय में यह भारत के बाहर फैला। मुस्लिम आक्रांताओं के कारण धम्म का भारत में पतन हो गया। यह केवल हिमालय के क्षेत्रों तक सीमित रह गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने लाखों समर्थकों के साथ सन् 1956 में नागपुर में सामूहिक धर्मांतरण कर, बौद्ध धर्म का पुरुद्धार किया।

---

[42] मित्रा, स्वाति, *वॉकिंग विद दा बुद्धा*, दिल्ली, गुडअर्थ प्रकाशन, 2001

तीसरे भाग में बौद्ध कला एवं वास्तुकला का विवरण दिया गया है। इसमें स्तूप, चैत्य, गुफा का वर्णन किया है जैसे- अजन्ता की चित्रकारी और बोधिसत्त्व की प्रतिमाएँ। चौथे भाग में पालि भाषा से इतर लिखे गए साहित्य का विवरण दिया गया है। जिनमें *मिलिन्द प्रश्न, ललितविस्तर* एवं *बुद्धचरित्र* प्रमुख हैं। सिंहली भाषा की *दीपवंश* तथा *महावंश* का भी वर्णन किया गया है।

पाँचवें भाग में पवित्र बौद्ध स्थलों के मुख्य मार्ग पटना एवं वाराणसी का वर्णन किया है। बौद्ध सर्किट जाने के लिए ये मुख्य मार्ग हैं। छठे भाग में प्रमुख बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है। इन स्थलों के प्रमुख आकर्षणों का विवरण दिया गया है जैसे- मंदिर, स्तूप, बोधिवृक्ष, चैत्य तथा अशोक स्तम्भ।

सातवें भाग में भारत के अन्य बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है। इनमें साँची, अजंता व एलोरा, तवांग, लेह, धर्मशाला आदि प्रमुख हैं। इसमें स्थलों के प्राचीन इतिहास से वर्तमान स्थिति तक का विवरण दिया है। आठवें भाग में समकालीन बौद्ध धर्म गुरुओं का वर्णन किया गया है। जिनमें तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा प्रमुख हैं। इनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को वर्णित किया गया है।

नौवें भाग में बौद्ध पर्यटकों के लिए व्यावहारिक जानकारी दी गई है। जिसमें भारत कब आना है, क्या पहनना चाहिए, वीजा, यात्रा बीमा, पर्यटक सूचना केन्द्रों का विवरण, भारतीय मुद्रा, बैंक, अस्पताल, पुलिस आदि की जानकारी दी गई है।

इस पुस्तक में बौद्ध पर्यटन के विभिन्न पक्षों का वर्णन किया गया जैसे- प्रमुख आठ बौद्ध स्थल, कला तथा वास्तुकला किंतु इसमें बौद्ध स्थलों का राज्यवार विवरण नहीं दिया गया है। इसमें बौद्ध त्यौहारों की मात्र सूचना ही प्रदान की है।

स्वाति मिश्रा द्वारा संपादित *बुद्धिस्ट सर्किट इन सैन्ट्रल इंडिया*[43] बौद्ध परिपथ पर्यटन पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण गाइड पुस्तिका है। इसमें मध्य प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों को वर्णित किया गया है। जिनमें साँची स्तूप के अलावा साथ अन्य बौद्ध स्थल भी शामिल हैं। इसमें कुल पाँच खण्ड हैं।

---

[43] मित्रा, स्वाति, *बुद्धिस्ट सर्किट इन सेंट्रल इंडिया*, दिल्ली, गुडअर्थ प्रकाशन, 2010

पहले खण्ड में भगवान बुद्ध का जीवन परिचय दिया गया है। इसमें उनके जीवन काल की प्रमुख घटनाओं काउल्लेख किया है। धम्म के प्रचार-प्रसार में सम्राट अशोक योगदान को वर्णित किया है। भारत के प्रारंभिक बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है।

दूसरे खण्ड में बौद्ध परिपथ का वर्णन किया गया है। साँची स्तूप की विश्व प्रसिद्ध कला एवं वास्तुकला का उल्लेख किया गया है। इसमें मुख्य स्तूप के विभिन्न भागों के विषय में बताया गया है। जिसमें तोरण पर चित्रित जातक कथाएं, प्रदक्षिणा, स्तम्भ आदि शामिल हैं। इसके साथ ही साँची के पास स्थित अन्य बौद्ध स्थलों को भी वर्णित किया गया है जैसे- सोनारी और सतधारा।

तीसरे खण्ड में साँची के निकट स्थित अन्य स्थलों का वर्णन किया गया है। जिनमें विदिशा, विजय मंदिर, जिला पुरातत्त्व संग्रहालय आदि सम्मिलित हैं। इनका संक्षेप में उल्लेख किया गया है।

चौथे खण्ड में साँची के मुख्य मार्ग भोपाल का वर्णन किया गया है। भोपाल मध्य प्रदेश की राजधानी है। यह साँची से केवल 46 किलोमीटर दूर है तथा रेलमार्ग, सड़कमार्ग एवं वायुमार्ग द्वारा अन्य शहरों से से जुड़ा हुआ है। यहाँ अनेक स्मारक स्थल हैं जैसे- भोजपुर तथा भीमबैठक। भोजपुर राजा भोज ने बनवाया था। पाँचवें खण्ड में पर्यटकों के लिए सामान्य जानकारी दी गई है जैसे- भ्रमण के लिए कब आना है, क्या पहनना है, वीजा, वायुमार्ग, सड़कमार्ग एवं रेलमार्ग।

यह पर्यटक पुस्तिका बौद्ध सर्किट पर्यटन को आधार बनाकर लिखी गई है जो वर्तमान में पर्यटन का सबसे अधिक प्रचलित रूप है। आज पर्यटक स्थल विशेष और उसके आसपास के अन्य तीर्थों को भी देखना चाहता है ताकि वह प्रमुख स्थल के साथ-साथ अन्य स्थलों की भी यात्रा कर सके। इसी उद्देश्य के साथ यह पुस्तिका लिखी गयी है। किन्तु, जो पर्यटक बौद्ध पर्यटन को समग्र रूप देखना या समझना चाहता है, यह उसके उद्देश्य की पूर्ति नहीं करती है।

रामस्वरूप राकेश की कृति *प्राचीन बौद्ध स्थल*[44] में भारतीय एवं अभारतीय बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है। इसमें भारत के अलग-अलग राज्यों भागों में स्थित बौद्ध स्थलों का विवरण दिया गया है जैसे– उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश

---

[44] राकेश, रामस्वरूप, *प्राचीन बौद्ध स्थल*, दिल्ली, सम्यक साहित्य प्रकाशन, 1998

और आंध्र प्रदेश। इसके अलावा, अभारतीय (एशिया) बौद्ध स्थलों का भी विवरण दिया गया है। जिनमें तक्षशिला, पुष्कलावती (पाकिस्तान), बामियान, बल्ख (अफगानिस्तान), सुखोदई (थाईलैंड), विक्रमपुर (बांग्लादेश), ल्हासा (तिब्बत), रेशम मार्ग (चीन), बाली द्वीप (इंडोनेशिया), तिलौराकोट (नेपाल) आदि शामिल हैं। इसमें बौद्ध स्तूपों, गुफाओं, विहारों, चैत्यों, विश्वविद्यालयों आदि का वर्णन किया गया है।

प्रस्तुत कृति भारत एवं एशिया के तत्कालीन बौद्ध स्थलों का वर्णन करती है। इसमें स्थलों एवं स्मारकों के पुराने रूप का विवरण दिया गया है। जबकि समय के साथ-साथ स्थलों के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है जैसे- अंबपालि वन अब आम्रपाली वन है। इसमें बौद्ध त्यौहारों का कहीं भी उल्लेख नहीं है जो पर्यटन का अभिन्न अंग हैं। यह कृति बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती है।

सुनीता द्विवेदी की कृति *बुद्धिस्ट हेरिटेज साइट्स ऑफ इंडिया*[45] बौद्ध पर्यटन स्थलों पर आधारित महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें बौद्ध स्थलों का क्षेत्रवार वर्णन किया गया है। इसमें तथागत के जीवन से संबंधित स्थलों, वर्षावास स्थलों, विभिन्न मठों एवं गुफाओं का वर्णन किया है। इसमें कुल 7 खंड हैं।

प्रथम खंड में शाक्यमुनि के जीवन से संबंधित स्थलों का वर्णन किया है। जो बौद्ध पर्यटन का आधार है। स्थलों के आसपास के स्मारकों का विवरण दिया गया है। दूसरे खंड में उन स्थलों का वर्णन किया गया है जहाँ बुद्ध ने वर्षावास के दौरान निवास किया था। बुद्ध ने सबसे अधिक वर्षावास (24) कौशांबी में व्यतीत किए थे।

तीसरे खंड में पूर्वी भारत के स्थलों का विवरण दिया किया है। जिनमें पश्चिम बंगाल एवं ओडिसा के स्थल प्रमुख हैं। इनमें पं. बंगाल के मोगोलमारी, जगजीवनपुर के मठ शामिल हैं तो ओडिसा के ललितगिरि, रत्नागिरि और उदयगिरि बौद्ध स्थल प्रमुख हैं। प्रथम शताब्दी ई. में स्थापित ललितगिरि ओडिसा के प्रमुख स्थलों में से एक है। यह तथागत के अस्थिधातु के कारण प्रसिद्ध है जो एक स्तूप से प्राप्त हुई। रत्नागिरि, महायान एवं वज्रयान बौद्ध परंपरा का प्रसिद्ध स्थल है। यह कालचक्र तंत्र का उद्गम परिसर था। सातवीं शताब्दी में उदयगिरि

[45] द्विवेदी, सुनीता, *बुद्धिस्ट हेरिटेज साइट्स ऑफ़ इंडिया*, दिल्ली, रूपा प्रकाशन, 2017

उड़ीसा का सबसे बड़ा बौद्ध परिसर था। यहाँ दो विशाल विहार सिंहप्रस्था महाविहार तथा माधवपुर महाविहार प्रमुख थे।

चौथे खंड में मध्य भारत के बौद्ध स्थलों का उल्लेख किया गया है। इनमें देउर कोठार बौद्ध स्तूप, भरहुत स्तूप, साँची स्तूप तथा धमनार बौद्ध गुफाएँ आदि प्रमुख हैं। ये अपनी कला एवं वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं तथा बौद्ध आकर्षण का केन्द्र हैं।

पाँचवें खंड में पश्चिमी भारत के बौद्ध आकर्षणों का विवरण दिया गया है। इसमें राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र के स्थलों का उल्लेख किया गया है। राजस्थान के बौद्ध आकर्षणों में कोल्वी गुफा, बीनयाग की गुफा तथा बैराट का मठ प्रमुख हैं। गुजरात के बौद्ध स्थलों में वडनगर मठ, तरंग गुफा, देवनी मोरी की गुफाएँ, जूनागढ़ की गुफाएँ आदि प्रमुख हैं। महाराष्ट्र के बौद्ध आकर्षणों में विश्व प्रसिद्ध अजंता एवं एलोरा की गुफाएँ शामिल हैं।

छठे खंड में दक्षिण भारत के बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है। इसमें कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल तथा आंध्र प्रदेश के स्थल शामिल हैं। इनमें सन्नति बौद्ध स्थल, कांचीपुरम के मठ, नागार्जुनकोंडा स्तूप तथा अमरावती स्तूप प्रमुख हैं। इस खंड में इनके इतिहास, वास्तुकला, चित्रकला का वर्णन किया है।

सातवें खण्ड में हिमालय क्षेत्र के मठों का वर्णन किया है जिनमें ताबो मठ, रुमटेक मठ, तवांग मठ आदि शामिल हैं। ये मठ हिमालय क्षेत्र के पर्यटन का प्रमुख आकर्षण हैं। इस भाग में इनके इतिहास, कला और बौद्ध संप्रदायों का वर्णन किया गया है। तवांग मठ पूर्वोत्तर का ताज है और भारत का सबसे बड़ा मठ है। नामग्याल मठ (धर्मशाला) 14वें तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के निवास स्थल के कारण एक प्रमुख आकर्षण है।

कृति में भारत के बौद्ध स्थलों को क्षेत्र के आधार पर वर्गीकृत किया गया है जैसे- उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के बौद्ध स्थल। इसमें स्थलों के इतिहास, कला, वास्तुकला एवं बौद्ध संप्रदायों का वर्णन किया गया है। इसमें चार प्रमुख तीर्थस्थलों के साथ-साथ भगवान बुद्ध द्वारा विभिन्न स्थलों पर व्यतीत किए गए वर्षावास का भी उल्लेख किया गया है। इसमें हिमालय क्षेत्र के मठों का भी वर्णन किया। इनमें तवांग मठ सबसे प्रमुख है। इसमें बौद्ध

त्यौहारों का वर्णन नहीं किया गया है जो पर्यटन का अंग है। इसलिए यह कृति बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती है।

दुलारी कुरैशी की कृति *केव टेम्पल्स ऑफ अजंता एंड एलोरा*[46] बौद्ध गुफाओं पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है। इसमें अजंता एवं एलोरा की गुफाओं के चैत्यगृहों और विहारों का वर्णन किया गया है। इसमें दो खंड हैं-

प्रथम खंड में अजंता की गुफाओं का वर्णन किया गया है। इनकी कुल संख्या 30 है। ये गुफाएँ 200 ई.पू. से 250 ई. के मध्य काल की हैं। इन गुफाओं को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम चरण में थेरवादी मत की गुफाएँ हैं जिनमें तथागत का स्तूप, बोधिवृक्ष के रूप में चित्रण किया गया है। इसमें गुफा संख्या 9 और 10 चैत्यगृह तथा गुफा संख्या 12 और 13 विहार हैं। दूसरे चरण में महायान मत की गुफाएँ हैं जिनमें बुद्ध को मानव आकृति में दर्शाया गया है। गुफा संख्या 19, 26 तथा 29 चैत्यगृह हैं जबकि गुफा संख्या 1 से 7, 11, 14 से 18, 20 से 25, 27 एवं 28 विहार हैं। इन गुफाओं का उपयोग भिक्षु निवास तथा ध्यान साधना के लिए करते थे। इनमें कला के अनेक रूप देखे जा सकते हैं। इनके भित्तिचित्रों में जातक कथाएं उत्कीर्ण हैं।

दूसरे खंड में एलोरा की गुफाओं का वर्णन किया गया है। ये गुफाएँ संख्या में 34 हैं। ये गुफाएँ बौद्ध, जैन और हिन्दू गुफाओं का सम्मिश्रण हैं। भारत में सभी धर्मो के प्रति प्रेम और आदर का प्रतीक हैं। एलोरा की गुफाओं को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है-

बौद्ध गुफाएँ–1 से 12 तक बौद्ध गुफाएँ है और प्राचीनतम संरचनाएं हैं। इनमें ज्यादातर विहार हैं जहाँ भिक्षु निवास एवं ध्यान साधना करते थे। इनमें तथागत, बोधिसत्त्वों एवं अन्य महापुरुषों के चित्र शामिल हैं। इन गुफाओं के विहार बड़े और बहुमंजिला संरचनाएं हैं।

हिन्दू गुफाएँ- गुफा नं. 13 से 29 तक हिन्दू गुफाएँ हैं। हिन्दू गुफाओं के मंदिर भगवान शिव एवं विष्णु को समर्पित हैं। इनमें गुफा नं.16 सबसे बड़ी संरचना है। यह दुनिया में सबसे बड़ी अखंड संरचना है और भगवान शिव को समर्पित है।

---

[46] क़ुरैशी, दुलारी, *केव टेम्पल्स ऑफ़ अजंता एंड एलोरा*, दिल्ली, भारतीय कला प्रकाशन, 2012

जैन गुफाएँ- गुफा संख्या 30 से 34 तक जैन गुफाएँ हैं और नौवीं से ग्यारहवीं शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। ये गुफाएँ जैन दर्शन एवं मूल्यों को दर्शाती हैं। गुफा संख्या 32 एक जैन मंदिर है जिसकी छत पर कमल की नक्काशी की गई है।

यह कृति बौद्ध गुफा स्थापत्य का वर्णन करती है। इसमें विश्व प्रसिद्ध अजंता एवं एलोरा की गुफाओं का विस्तृत वर्णन है। इन गुफाओं का प्रमुख आकर्षण इनकी कला है। यह कृति बौद्ध पर्यटन के एक पक्ष का वर्णन करती है। इसलिए यह बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती है।

डी.सी. अहीर की कृति *Buddhist Shrines in India*[47] में बौद्ध स्थलों के अलावा कला एवं वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध स्थलों का भी वर्णन किया गया है। कृति में इन स्थलों के इतिहास, कला, वास्तुकला आदि का विवरण दिया गया है। इसमें चार अध्याय हैं-

प्रथम अध्याय में प्रमुख बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया जो बुद्ध के जन्म, संबोधि, प्रथम उपदेश तथा महापरिनिर्वाण स्थल के रूप में प्रसिद्ध हैं। अन्य चार उनके द्वारा किए गए चमत्कारों के कारण प्रसिद्ध हैं। इसमें बौद्ध स्थलों के इतिहास, तीर्थयात्रियों एवं प्रमुख आकर्षणों का वर्णन किया गया है।

दूसरे अध्याय में नालंदा महाविहार के प्राचीन गौरव का उल्लेख किया गया है। यहाँ देश-विदेश से छात्र आते थे तथा भिन्न-भिन्न विषयों का अध्ययन करते थे जैसे- धर्म, दर्शन, चिकित्सा एवं साहित्य।

तीसरे अध्याय में प्रमुख स्तूपों का विवरण दिया गया है जिनमें साँची स्तूप, अमरावती स्तूप तथा नागार्जुनकोंडा स्तूप शामिल हैं। ये स्तूप अपनी कला के लिए विख्यात हैं। इस भाग में इनके इतिहास, कला, वास्तुकला एवं प्रमुख आकर्षणों का उल्लेख किया गया है। किसी स्तूप में बुद्ध को प्रतीक तो किसी में मानव आकृति में दर्शाया गया है। ये बौद्ध पर्यटन का प्रमुख आकर्षण हैं।

चौथे अध्याय में गुफाओं का उल्लेख किया गया है जिनमें अजंता, एलोरा, कन्हेरी एवं कार्ले प्रमुख हैं। ये गुफाएँ अपनी कला के लिए जानी जाती है। अजंता की गुफाएँ भगवान बुद्ध

[47] Ahir, D. C., *Buddhist Shrines in India*, Delhi, B. R. Publishing Corporation, 1986

को समर्पित हैं। इनमें से कई गुफाएँ थेरवादी मत की हैं तो कई महायान मत की हैं। एलोरा की गुफाओं में विभिन्न धर्मों की गुफाएँ शामिल हैं। ये गुफाएँ भारत में सभी धर्मों के प्रति प्रेम और सम्मान का प्रतीक हैं। कार्ले की गुफाओं का मुख्य आकर्षण चैत्यगृह हैं। इसके अलावा विहार भी हैं। कन्हेरी की ज्यादातर गुफाएँ छोटे आकार की हैं।

इस कृति में बौद्ध स्थलों का विवरण दिया गया है। इसमें नालंदा विश्वविद्यालय, साँची स्तूप, अजंता की गुफाएँ आदि का भी उल्लेख किया गया है। यह बौद्ध पर्यटन स्थलों की महत्त्वपूर्ण कृति है किन्तु बौद्ध पर्यटन के सभी पक्षों को प्रस्तुत नहीं करती है जैसे- बौद्ध त्यौहार।

निगम भारद्वाज की पुस्तक *नालंदा का पुरातात्त्विक वैभव*, बौद्ध कला पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण रचना है। इसमें कुल बारह अध्याय हैं। कृति में सर्वप्रथम नालंदा का परिचय दिया गया है। इसमें नालंदा महाविहार की संक्षिप्त जानकारी दी गई है। इसकी स्थापना कुमारगुप्त के शासनकाल में हुई तथा हर्षवर्धन के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर था। उसके बाद पाल शासकों ने संरक्षण तो दिया किन्तु यह वज्रयान, मंत्रयान तथा तंत्रयान आदि के कारण अवनति की ओर अग्रसर हो गया। तेरहवीं शताब्दी में बख्तियार खिलजी ने नालंदा महाविहार पर आक्रमण किया और इसे नष्ट कर दिया।

प्राचीन नालंदा महाविहार के वैभव को पुनः स्थापित करने के लिए सन् 1951 में नव-नालंदा महाविहार की स्थापना की गई। इसकी स्थापना में भिक्षु जगदीश कश्यप की प्रमुख भूमिका रही है। यह बौद्ध अध्ययन का प्रमुख संस्थान है।

कृति में बौद्ध कला के क्रमिक विकास को वर्णित किया गया है। बौद्ध कला का आरंभ मौर्यकाल से माना जाता है। इसमें बौद्ध कला के विभिन्न रूपों का उल्लेख किया गया है। इसमें मथुरा तथा सारनाथ जैसे प्रमुख कला केंद्रों का वर्णन है। इसके अलावा, कला की विभिन्न शैलियों का भी विवरण दिया गया है जैसे – गांधार शैली, मथुरा शैली और नालंदा शैली।

इसमें नालंदा महाविहार के अवशेषों का उल्लेख किया गया है। बुकनान तथा अलेक्जैंडर कनिंघम ने यात्रावृतातों तथा शिलालेखों के आधार पर नालंदा महाविहार की खोज की थी। इसकी खुदाई से अनेक भग्नावशेषों का पता चला। यहाँ से महायान तथा वज्रयान संप्रदाय के बोधिसत्त्वों की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं जैसे – मुकुटधारी बुद्ध, जांभल, मैत्रेय, देवी तारा, अपराजित।

आज ये प्रतिमाएँ देश के विभिन्न संग्रहलयों की शोभा बढ़ा रही हैं। इसी तरह अन्य प्रतिमाएँ भारत के अलग-अलग संग्रहालयों में संरक्षित हैं। इसमें बुद्ध की विभिन्न मुद्राओं का उल्लेख किया गया है जैसे – धर्मचक्र मुद्रा। इसमें पाँच ध्यानी बुद्ध का भी उल्लेख दिया गया है।

कृति में नालंदा की कला एवं स्थापत्य का उल्लेख किया गया है। इसमें स्थल के उत्खनन से प्राप्त कलाकृतियों का विवरण दिया गया है। यह कृति एक स्थल विशेष (नालंदा) को समग्र रूप प्रस्तुत करती है, न कि बौद्ध पर्यटन का।

शोध कार्य की उपादेयता

बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया[48] एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें बौद्ध पर्यटन के भिन्न-भिन्न रूपों का वर्णन किया गया है जैसे- प्रमुख धार्मिक बौद्ध स्थल, भारत में स्थित बौद्ध मठ, मंदिर, स्तूप, गुफाएँ एवं त्यौहार। इसमें भारत में स्थित बौद्ध स्थलों का राज्यवार उल्लेख किया गया है। यह बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है। इसलिए कृति का हिन्दी अनुवाद किया गया है। इसमें कुल नौ अध्याय हैं।

पहले अध्याय में बौद्ध धर्म की प्रमुख घटनाओं का विवरण दिया गया है। इसमें चार संगीतियों का वर्णन किया गया है। बौद्ध धर्म के आरंभिक स्कूलों का उल्लेख किया गया है जिनमें थेरवाद सम्प्रदाय सबसे पुराना है। महायान बोधिसत्त्व की अवधारणा के साथ प्रसिद्ध हुआ। वज्रयान, महायान का ही परवर्ती रूप है। यह पाँचवीं एवं छठी शताब्दी ई.पू. में व्यापार के माध्यम से भारत से बाहर फैला। मौर्य साम्राज्य में अपने सर्वोच्च शिखर पर था।

इसमें बौद्ध धर्म के पतन के कारणों का उल्लेख किया गया है जिनमें हूणों तथा तुर्कों के आक्रमण, बौद्ध मठों के आंतरिक कलह तथा हिन्दू धर्म का प्रभाव प्रमुख हैं। बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार में विद्वानों एवं संस्थाओं के योगदान का वर्णन किया गया है जैसे- अनागरिक धर्मपाल व महाबोधि सभा, बंगाल बौद्ध सभा, नव बौद्ध आन्दोलन, तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा तथा विपस्सना केन्द्र।

दूसरे अध्याय में चार पवित्र स्थलों का वर्णन किया गया है जिनमें जन्म स्थल-लुम्बिनी, संबोधि स्थल-बोधगया, प्रथम उपदेश स्थल-सारनाथ तथा महापरिनिर्वाण स्थल-कुशीनगर आदि प्रमुख हैं। इसमें स्थलों के इतिहास का वर्णन किया गया है। इनके पुरातात्त्विक उत्खनन का भी उल्लेख किया गया है।

तीसरे अध्याय में भारत के राज्यों में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थलों का उल्लेख किया गया है। इसमें प्रमुख दर्शनीय बौद्ध स्थलों तथा स्मारकों का विवरण दिया गया है जैसे- सारनाथ में धम्मेख स्तूप, अशोक स्तंभ तथा लेह-लद्दाख में हेमिस मठ। इनके अतिरिक्त, अन्य स्मारकों को भी वर्णित किया गया है।

---

[48] आर., जैकब, *बुद्धिस्ट टुरिज्म इन इंडिया,* दिल्ली, अभिजीत प्रकाशन, 2013

चौथे अध्याय में प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों का वर्णन किया गया है जिनमें राजगीर, वैशाली, नालन्दा, श्रावस्ती, धर्मशाला आदि प्रमुख हैं। जीवक आम्रवन, जेतवन विहार, वैशाली संग्रहालय, मैकलोडगंज आदि इनके प्रमुख दर्शनीय स्मारक हैं। इसमें दर्शनीय स्थल के इतिहास, भूगोल एवं पर्यावरण, पर्यटन, जनसंख्या धनत्व, परिवहन, मार्ग आदि को वर्णित किया गया है।

पाँचवें अध्याय में भारत के बौद्ध मठों का राज्यवार वर्णन किया गया है। ये बौद्ध पर्यटन के आकर्षण का मुख्य केन्द्र हैं। इनमें से कई मठ सदियों पुराने हैं। कुछ तो ऐसे हैं जो अतीत में नष्ट कर दिए गए और अब उनका पुनर्निर्माण किया जा रहा है। इसमें प्रमुख मठों का विवरण दिया गया है जो इस प्रकार है-

बिहार में स्थित प्रमुख मठ- इस भाग में बिहार राज्य के मठों का उल्लेख किया गया है। इसमें मठों में मनाए जाने वाले त्यौहारों को वर्णित किया गया है जैसे- बुद्ध पूर्णिमा, हिरोशिमा दिवस और डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती। इसमें बिहार के प्रसिद्ध तिब्बती मठ, थाई मठ, जापानी मठ, चीनी मंदिर एवं मठ का विवरण दिया गया है। इसमें मठों के कलात्मक पक्ष को भी वर्णित किया गया है।

जम्मू-कश्मीर में स्थित मठ- इसमें लेह-लद्दाख के बौद्ध मठों का वर्णन किया गया है। ये ऐतिहासिक मठ बौद्ध भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के अध्ययन, प्रशिक्षण एवं निवास स्थल हैं। अधिकतर मठ पहाड़ के ऊपर स्थित हैं। इनमें हेमिस मठ, अल्ची मठ, थिकसे मठ प्रमुख हैं।

सिक्किम में स्थित मठ- सिक्किम बौद्ध मठों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें रुमटेक मठ, फोदांग मठ, ताशीदिंग मठ, रेलांग मठ आदि प्रमुख हैं। यहाँ मनाया जाने वाला लोसर त्यौहार भी पर्यटकों को आकर्षित करता है।

हिमाचल प्रदेश में स्थित मठ- धर्मशाला में तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थल है। जहाँ अनेक बौद्ध मठ हैं जिनमें नामग्याल मठ, काई मठ, धनकर मठ, रिवलसार मठ, गुरु घंटाल मठ आदि प्रमुख हैं।

अरुणाचल प्रदेश में स्थित मठ– यह राज्य तवांग मठ के लिए विख्यात है। यह भारत का प्रथम तथा एशिया दूसरा सबसे बड़ा मठ है। इसके अतिरिक्त, बोमडिला तथा उर्गेल्लिंग मठ प्रमुख हैं। उर्गेल्लिंग छठे दलाई लामा का जन्म स्थल भी है। इसमें मठों की कला एवं वास्तुकला का वर्णन किया गया है। लोसर इन मठों में मनाया जाने वाला प्रमुख त्यौहार है

छठे अध्याय में भारत के बौद्ध स्मारकों का विवरण दिया गया है। इनमें गुफा, स्तूप, मंदिर एवं पुरातत्त्व संग्रहालय आदि सम्मिलित हैं। इसमें स्मारकों की कला, वास्तुकला का वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिएः

महामाया मंदिर- 64 योगिनी या महामाया मंदिर उड़ीसा के हीरापुर में स्थित है। इसमें मंदिर की कला एवं वास्तुकला को वर्णित किया गया है। इसके अलावा, उड़ीसा के अन्य बौद्ध स्मारकों का उल्लेख किया गया है। जिनमें उदयगिरि, रत्नागिरि, ललितगिरि, शांति स्तूप आदि प्रमुख हैं।

भरहुत स्तूप- इसे तीसरी शताब्दी ई.पू. में सम्राट अशोक ने बनवाया था तथा परवर्ती काल में शुंग शासकों द्वारा पुनरुद्धार किया गया। इसमें बुद्ध को बोधिवृक्ष, धम्मपाद आदि के रूप में दर्शाया गया है। स्तूप आरंभिक बौद्ध कला का अद्वितीय उदाहरण है।

सातवें अध्याय में विश्व प्रसिद्ध भारतीय बौद्ध गुफाओं को वर्णित किया गया है। ये गुफाएँ पहाड़ को काटकर बनायी गयी हैं। इसमें भारत के अलग-अलग राज्यों में स्थित गुफाओं का उल्लेख किया गया है जिनमें महाराष्ट्र की अजंता, एलोरा, भाजा, कार्ले की गुफाएँ तथा आंध्र प्रदेश की नागार्जुनकोण्डा की गुफाएँ और बिहार की बारबर की गुफाएँ प्रमुख हैं। इसमें बौद्ध कला का संजीव वर्णन किया गया है। इन गुफाओं में बुद्ध के जीवन की घटनाओं का चित्रण किया गया है। इसमें आसपास के अन्य आकर्षणों का भी वर्णन किया गया है।

आठवें अध्याय में भारत के गाँवों, कस्बों और छोटे शहरों में स्थित अन्य बौद्ध स्थलों को वर्णित किया गया है। इसमें कम आकर्षक स्थलों का विवरण दिया गया है। इसके अलावा अन्य बौद्ध स्थलों की सूचना दी गई है। ये स्थल कम प्रसिद्ध होते हुए भी बौद्ध पर्यटन का अंग हैं जैसे - चंपानगर (बिहार), भाट्टिप्रोलु (आंध्र प्रदेश), मथुरा (उत्तर प्रदेश) तथा हाजो (असम)।

नौवें अध्याय में भारत में मनाए जाने वाले प्रमुख बौद्ध त्यौहारों का वर्णन किया गया है। ये त्यौहार बौद्ध पर्यटन का अभिन्न अंग हैं। इसमें बौद्ध उत्सवों के इतिहास एवं वर्तमान स्वरूप का उल्लेख किया गया है। इनमें से कुछ त्यौहार महायान सम्प्रदाय तो कुछ थेरवाद एवं वज्रयान से संबंधित हैं। इनमें बुद्ध पूर्णिमा, लोसर, हेमिस आदि प्रमुख हैं। बौद्धों द्वारा इन त्यौहारों को बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है तथा देश-विदेश से लाखों पर्यटक इन्हें देखने के लिए भारत की यात्रा करते हैं।

कृति का हिन्दी अनुवाद पर्यटकों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बौद्ध पर्यटन के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करती है। जो बौद्ध पर्यटन का अभिन्न अंग हैं जैसे- बुद्ध विहार, गुफा, संग्रहालय, स्तूप, मंदिर तथा त्यौहार। पर्यटक इसे पढ़ कर, बौद्ध पर्यटन के विभिन्न क्षेत्रों (रूपों) से अवगत होगा तथा वह अपनी यात्रा में स्थल विशेष के भ्रमण के साथ-साथ वहाँ के अन्य बौद्ध स्थलों को भी शामिल करेगा। ताकि वह किसी स्थल विशेष के आसपास के अन्य बौद्ध स्थलों की यात्रा कर सके। इसके साथ ही वह स्थल विशेष पर मनाए जाने वाले त्यौहारों को भी नज़दीक से देख सकता है और बौद्ध पर्यटन को समग्र रूप में समझ सकता है। भविष्य में पर्यटक यात्रा की योजना इस प्रकार बनाएगा कि वह ज्यादा से ज्यादा बौद्ध पर्यटन के रूपों एवं दर्शनीय आकर्षणों की यात्रा कर सकें।

कृति का हिन्दी अनुवाद पाठक के लिए भी उपयोगी है जो उसे बौद्ध स्थलों की कला, वास्तुकला एवं इतिहास के विभिन्न काल खण्डों से अवगत कराती है। इसे पढ़कर वह बौद्ध पर्यटन को समग्र रूप में समझ सकता है। वह बौद्ध कला एवं वास्तुकला से अवगत होगा तथा उसे वह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित बौद्ध स्थलों की जानकारी प्राप्त होगी।

पाठका हिन्दी अनुवाद बौद्ध पर्यटन के क्षेत्र के शोधार्थी के लिए भी उपयोगी है। इसे पढ़कर वह बौद्ध पर्यटन के विभिन्न पक्षों से अवगत होगा और अपनी रूचि के अनुसार किसी एक बौद्ध स्थल या पक्ष का शोध कार्य के लिए चुनाव कर सकता है। अतः यह कृति बौद्ध पर्यटन पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिए एक सन्दर्भ ग्रन्थ का कार्य करेगी।

तीसरा अध्याय

बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया का

हिन्दी अनुवाद

प्रस्तावना

तप और समाधि जैसे वैदिक व्यवहारों के बाद बुद्ध का मध्यम मार्ग - एक ऐसा संयम का मार्ग था जो आत्मदमन तथा भोग-विलास की अतियों से दूर रखता था। सिद्धार्थ गौतम ने जिस पीपल के वृक्ष के नीचे संबोधि प्राप्त की, आज वह बोधिवृक्ष के नाम से विख्यात है। उसके बाद गौतम, सम्यक संबुद्ध कहलाए।

बौद्ध धर्म का उदय प्राचीन मगध (बिहार) के आसपास हुआ। यह सिद्धार्थ गौतम की शिक्षाओं पर आधारित है। इनका संस्कृत नाम सिद्धार्थ गौतम तथा पालि नाम सिद्धात्थ गोतम बुद्ध- जिसका शाब्दिक अर्थ है वह अनंत ज्ञानी एवं जागृत मनुष्य जिसने निर्वाण प्राप्त कर लिया है। यह बुद्ध के जीवन काल में ही मगध से बाहर फैलना प्रारंभ हो गया था और सम्राट अशोक के शासनकाल में नेपाल से होते हुए चीन और फिर जापान में फैला तथा एशिया के इन देशों का एक प्रमुख धर्म बन गया।

भारत के बाहर बौद्ध धर्म दो परंपराओं के माध्यम से फैला। पहली, थेरवादी जिसका विस्तार दक्षिण एवं पूर्व तथा अब इसके अनुयायी दक्षिण-पूर्व एशिया और श्रीलंका तक फैले हुए हैं। दूसरी, महायान जिसका विस्तार पहले पश्चिम, फिर उत्तर और बाद में पूर्व में संपूर्ण पूर्वी एशिया में हुआ। दोनों परंपराएं अब विश्व में सर्वत्र फैल चुकी हैं, मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका और यूरोप। किन्तु 13वीं शताब्दी के आसपास बिना कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़े बौद्ध धर्म जैसे सुस्पष्ट एवं संगठित धर्म का अपने मूल स्थान पर पतन हो गया। हिन्दुओं ने बौद्ध व्यवहारों एवं सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया जैसे- त्याग एवं अहिंसा। बौद्ध रीति-रिवाज सबसे अधिक हिमालय के क्षेत्रों में प्रचलित हैं।

विषय सूची

			पृष्ठ संख्या
अध्याय- 1	:	बौद्ध धर्म का परिचय	45-57
अध्याय- 2	:	चार प्रमुख धार्मिक बौद्ध स्थल	58-76
अध्याय- 3	:	भारत में राज्यवार स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल	77-101
अध्याय- 4	:	भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल	102-132
अध्याय- 5	:	भारत में राज्यवार स्थित बौद्ध मठ	133-228
अध्याय- 6	:	बौद्ध स्मारक	229-255
अध्याय- 7	:	बौद्ध गुफाएँ	256-269
अध्याय- 8	:	भारत के अन्य बौद्ध स्थल	270-301
अध्याय- 9	:	भारत में मनाए जाने वाले बौद्ध त्यौहार	302-311

अध्याय- 1

बौद्ध धर्म का परिचय

भारत बौद्ध धर्म का जन्म स्थल है। विश्व में फैलने से पहले बौद्ध धर्म भारत में समृद्ध हुआ। बौद्ध धर्म का 5वीं शताब्दी ई.पू. से 12वीं शताब्दी ई. के दौरान लगभग 1700 वर्षों तक प्रभुत्व रहा। 12वीं शताब्दी ई. में तुर्क आक्रमणों के कारण भारत में बौद्ध धर्म का निरंतर ह्रास होने लगा। भारत में बौद्ध धर्म अब भी एक अल्पसंख्यक समुदाय के व्यवहार में है। किन्तु यह एशिया महाद्वीप के अनेक देशों का प्रमुख धर्म है जैसे- चीन, जापान, कोरिया एवं थाईलैंड।

बौद्ध धर्म विश्व का एक प्रमुख धर्म है जिसका उदय प्राचीन मगध (बिहार) के आसपास हुआ। यह सिद्धार्थ गौतम की शिक्षाओं पर आधारित है जिनका जन्म लुम्बिनी में एक राजकुमार के रूप में हुआ था। इनका संस्कृत नाम सिद्धार्थ गौतम तथा पालि नाम सिद्धात्थ गोतम बुद्ध - जिसका शाब्दिक अर्थ है वह अनंत ज्ञानी एवं जागृत मनुष्य जिसने निर्वाण प्राप्त कर लिया है। यह बुद्ध के जीवनकाल में ही मगध से बाहर फैलना प्रारंभ हो गया था और सम्राट अशोक के शासनकाल में नेपाल से होते हुए चीन और फिर जापान में फैला तथा एशिया के इन देशों का प्रमुख धर्म बन गया।

प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने स्वयं को शाक्य या शाक्य भिक्षु के रूप में उल्लिखित किया, जिन्हें अंग्रेजी में बुद्धिस्ट कहा गया। बौद्ध विद्वान डॉनाल्ड एस. लोपेज का मत है कि वे बुद्ध शब्द का भी प्रयोग करते थे। यद्यपि विद्वान रिचर्ड कोहेन का मत है कि इस नाम का प्रयोग केवल बाहरी लोगों द्वारा बौद्धों के वर्णन के लिए किया जाता था।

भारत के बाहर बौद्ध धर्म दो परंपराओं के माध्यम से फैला। पहली, थेरवादी जिसका विस्तार दक्षिण एवं पूर्व तथा अब इसके अनुयायी दक्षिण-पूर्व एशिया और श्रीलंका में फैले हुए हैं। दूसरी, महायान जिसका विस्तार पहले पश्चिम, फिर उत्तर और बाद में पूर्व में संपूर्ण पूर्वी एशिया में हुआ। दोनों परंपराएं अब विश्व में सर्वत्र फैल चुकी हैं, मुख्य रूप से उत्तरी अमेरिका और यूरोप। किन्तु 13वीं शताब्दी के आसपास बिना कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव छोड़े बौद्ध धर्म जैसे सुस्पष्ट एवं संगठित धर्म का अपने मूल स्थान पर पतन हो गया। हिन्दुओं ने बौद्ध व्यवहारों एवं सिद्धांतों को आत्मसात कर लिया जैसे- त्याग एवं अहिंसा। बौद्ध रीति-

रिवाज सबसे अधिक हिमालय के क्षेत्रों में प्रचलित हैं जैसे- लद्दाख। भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार अनेक भारतीय विद्वानों द्वारा इसके अंगीकरण, निर्वासित तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा एवं उनके अनुयायियों और लाखों हिन्दू दलितों के सामूहिक धर्मांतरण के कारण हुआ।

तप और समाधि जैसे वैदिक व्यवहारों के बाद बुद्ध का मध्यम मार्ग - एक ऐसा संयम का मार्ग था जो आत्मदमन तथा भोग-विलास की अतियों से दूर रखता था। सिद्धार्थ गौतम ने जिस पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर ज्ञान प्राप्त किया, अब वह बोधिवृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। उसके बाद गौतम, सम्यक संबुद्ध कहलाए।

बुद्ध को मगध के शासक सम्राट बिम्बिसार का संरक्षण प्राप्त था। राजा ने बौद्ध धर्म व्यक्तिगत रूप से स्वीकार कर लिया था और अनेक विहार स्थापित करने की अनुमति प्रदान की। संभवतः इसी कारण संपूर्ण क्षेत्र का बिहार के रूप में नामकरण हुआ। उत्तर भारत में वाराणसी के पास जल आरक्षित क्षेत्र मृगदाव उपवन में बुद्ध ने उन पाँच साथियों को प्रथम उपदेश दिया जो ज्ञान प्राप्ति से पूर्व उनके साथ थे और धर्मचक्र प्रवर्तन को गतिमान किया। वे बुद्ध के साथ आ गए और भिक्षु संघ की स्थापना की और फिर त्रिशरण (बुद्ध, धम्म और संघ) का गठन किया। अपने जीवन के शेष वर्षों में बुद्ध ने पूर्वोत्तर में गंगा के मैदानी तथा अन्य क्षेत्रों की यात्राएँ की थीं। बुद्ध ने कुशीनगर के घने जंगल में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

बौद्ध संगीतियाँ

बुद्ध ने कोई उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था तथा अपने अनुयायियों से कहा था कि अपना दीपक स्वयं बनो। बुद्ध की शिक्षाएं केवल मौखिक परंपराओं में विद्यमान थी। संघ में बौद्ध सिद्धांत एवं व्यवहार के विषय में मतैक्य फैल जाने के कारण, क्रमशः कई बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया। बौद्ध धर्मग्रन्थों के अनुसार, प्रथम बौद्ध संगीति राजगीर में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता महाकश्यप भिक्षु ने की थी। इसका उद्देश्य बुद्ध की शिक्षाओं और मठ-संबंधी नियमों का विवरण देना तथा उन पर सहमति बनाना था। कुछ विद्वान इस सभा को मिथ्या मानते हैं।

ऐसा माना जाता है कि दूसरी बौद्ध संगीति वैशाली में आयोजित हुई थी। इसका उद्देश्य मठ से संबंधित संदिग्ध व्यवहारों को सुलझाना था जैसे- धन का उपयोग, ताड़ी पीना तथा अन्य अनियमिताएं। सभा ने इन व्यवहारों को अनैतिक घोषित कर दिया। सामान्यतः

ऐसा कहा जाता है कि तीसरी बौद्ध संगीति सम्राट अशोक के निर्देशन में आयोजित हुई थी जिसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की थी। इसके आयोजन का उद्देश्य संघ में उन भिक्षुओं की संख्या को कम करना था जो केवल संघ के राजकीय संरक्षण के कारण सदस्य बने थे। अब अधिकतर विद्वानों का मत है कि यह सभा केवल थेरवादियों की थी और जहाँ से धर्म प्रचारकों को विभिन्न देशों के लिए भेजा गया था।

चौथी बौद्ध संगीति के विषय में सामान्यतः कहा जाता है कि यह राजा कनिष्क के समय में जालंधर में आयोजित हुई थी। यद्यपि स्व. प्रो. लैमोटे ने इसे काल्पनिक माना। सामान्यतः माना जाता है कि यह सभा सर्वास्थिवाद संप्रदाय की थी। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, बौद्ध धर्म में अनेक दार्शनिक संप्रदायों का उदय हुआ। थेरवाद आरंभिक बौद्ध संप्रदायों में प्रथम था। बाद में, महायान और वज्रयान संप्रदायों का उदय हुआ।

बौद्ध धर्म के प्रसार में ब्राह्मणों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। बुद्ध के अधिकतर शिष्य ब्राह्मण थे जिनमें दो प्रमुख शिष्य भी शामिल थे। उदाहरणार्थ, सम्राट अशोक ने अपने ब्राह्मण गुरु मंजुश्री तथा राधास्वामी के कारण धर्मांतरण किया था।

आरंभिक बौद्ध संप्रदाय

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के कुछ समय बाद बौद्ध धर्म प्रारंभिक शताब्दियों में विभाजित हो गया जिसमें आरंभिक बौद्ध मत के अनेक संप्रदाय शामिल थे। इन संप्रदायों का धर्मग्रन्थों के प्रति एक सामान्य विचार था कि वे महायान सूत्रों को गौतम बुद्ध की शिक्षाओं के रूप में स्वीकार नहीं करते थे। वे त्रिपिटक को महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का अंतिम पाठ मानते थे। बौद्ध धर्म के आरंभिक संप्रदायों का थेरवाद अकेला प्रतिनिधित्व करता है। थेरवाद वर्तमान में श्रीलंका, म्यांमार, कंबोडिया तथा लाओस का प्रमुख धर्म है

सर्वास्थिवाद अन्य प्रमुख निकाय स्कूल था और इसके अधिकतर सिद्धांत तिब्बती बौद्ध धर्म में शामिल कर लिए गए। इनमें भारतीय अभिधम्म की एक शाखा भी शामिल है जो योगाचार्य मत की उत्पत्ति में सहायक बनी। विनय के मठावासीय नियमों पर आधारित इसकी व्यवस्था आज भी तिब्बती बौद्ध धर्म में प्रचलित है और चीनी बौद्ध धर्म में भी प्रभावशाली रहा है।

महायान

महायान संप्रदाय बोधिसत्त्व की अवधारणा एवं पूजा के कारण लोकप्रिय हुआ। महायान मत मंजुश्री, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय जैसे बोधिसत्त्वो की पूजा का केन्द्र बिन्दु होने के कारण लोकप्रिय हुआ। महायान परंपरा के अनुसार बोधिसत्त्वों के मुख्य गुण दया एवं करूणा हैं। महायान में निम्नलिखित भारतीय बौद्ध संप्रदाय शामिल हैं-

माध्यमिक (मध्यम मार्ग)- एक महायान संप्रदाय है जो नागार्जुन एवं अश्वघोष के कारण प्रसिद्व हुआ।

योगाचार (चेतना)- असंग तथा वसुबंधु द्वारा स्थापित संप्रदाय है।

वज्रयान

एक बौद्ध संप्रदाय है जिसका चौथी शताब्दी में उदय हुआ और बाद में तिब्बत तथा जापान में व्यापक स्तर पर फैला। वज्रयान भारत में विकसित हुआ पर तिब्बत में फैला तथा आज नेपाल, भूटान एवं मंगोलिया में प्रचलित है।

इस संप्रदाय का उद्भम उत्तर भारत में जंगल में तंत्र साधना की परंपरा से हुआ जिसमें शिक्षण का पूरा बल अभ्यास पर होता था, तंत्र साधना का उपयोग व्यक्ति द्वारा वर्तमान जीवनकाल में निर्वाण प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह संप्रदाय वज्रयान के नाम से प्रसिद्ध है। तंत्र साधना एक गूढ़ परंपरा है। धार्मिक अनुष्ठानों में प्रवेश की यह आरंभिक अवस्था है और आध्यात्मिक दुनिया के मानचित्र में एक रहस्यवादी चक्र है। इसके अतिरिक्त, तंत्र साधना के केन्द्र में मंत्र और मुद्रा भी हैं। वज्रयान तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रमुख संप्रदाय बन गया और फिर चीन से होकर जापान पहुँचा और जहाँ शिंगोन मत के व्यवहार में प्रचलित है।

सामान्यतः कहा जाता है कि बौद्ध धर्म भारत से तिब्बत तथा फिर कश्मीर से होकर मध्य एवं पूर्वी एशिया के क्षेत्रों में फैला। स्थानांतरण के उस मार्ग को बहुत कम लोग जानते हैं जिसके माध्यम से यह काठमांडू (नेपाल) की घाटी से बाहर गया। घाटी स्वयं हिंदू एवं बौद्ध सभ्यताओं से प्रभावित थी और पहले दूरतम केन्द्र थी तथा आज नेपाल का उद्भम स्थान है। हालांकि, बौद्ध एवं हिन्दू धर्म से सीमा की दूरी होने के कारण यहाँ सामाजिक उथल-

पुथल एवं परवर्ती आक्रमणों से कम विनाश हुआ। भारत में बौद्ध धर्म के पतन के बाद भी यह काठमांडू घाटी में विद्यमान था। अनेक मठों के अभिलेख दर्शाते है कि नेपाली इतिहास में मध्यकाल तक तिब्बती छात्र नियमित रूप से बौद्ध धर्म गुरूओं से शिक्षा ग्रहण करने आते थे। तिब्बती धर्मग्रन्थों की लिपियाँ लानत्शा और वरतु काठमांडू के नेवार समुदाय द्वारा प्रयोग की जाने वाली रंजन लिपि के ही भिन्न रूप हैं। हालाँकि घाटी में बौद्ध मठवाद के समाप्त होने के सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक कारणों में से हिन्दू राजाओं द्वारा दान में कमी सबसे प्रमुख था। तब तक, इस क्षेत्र में तिब्बती बौद्ध धर्म उत्कर्ष प्राप्त कर चुका था। आज हम काठमांडू में महायान संप्रदाय को नव बौद्ध समुदाय के व्यवहार में देख सकते हैं जो मिश्रित वज्रयान से रूपातंरित है।

भारत में बौद्ध धर्म का उत्थान

आरंभिक प्रसार

छठी एवं पाँचवीं शताब्दी ई.पू. के दौरान पूर्व में आत्मनिर्भर उत्पादन और वस्तु विनिमय के प्रभुत्व वाली अर्थव्यवस्था में वाणिज्य और व्यापार बहुत महत्वपूर्ण हो गए। व्यापारियों ने बौद्धों की न्यायसंगत और नीतिपरक शिक्षाओं को पारंपरिक ब्राह्मण पुरोहितों के गूढ़ कर्मकांडों का एक आकर्षक विकल्प पाया, जो नए तथा उभरते वर्गों की उपेक्षा करते थे और केवल ब्राह्मण हितों का ख्याल रखते थे।

इसके अतिरिक्त, बौद्ध धर्म व्यापारी समुदाय में प्रमुख था जो इसे अपनी आवश्यकताओं के लिए उचित समझते थे तथा जिन्होंने संपूर्ण मौर्य साम्राज्य में व्यापारिक संबंध स्थापित कर लिए थे। व्यापारी बौद्ध धर्म के लिए एक कुशल संवाहक सिद्ध हुए क्योंकि उन्होंने मध्य एशिया के रेशम मार्ग पर स्थित नख़लिस्तान (मरुस्थल के बीच हरित शहर), मर्व (तुर्कमेनिस्तान), बुख़ारा (उज़्बेकिस्तान), समरक़ंद (उज़्बेकिस्तान), काश्गर (चीन), ख़ोतान (चीन), कुक्का अक्सू (चीन), टर्पैन (चीन), दुनहुआंग (चीन) शहरों की श्रृंखला में प्रवासी समुदायों को स्थापित किया जिन्होंने जीवन रेखा के रूप में कार्य किया।

सम्राट अशोक और मौर्य साम्राज्य

सम्राट अशोक के शासनकाल में मौर्य साम्राज्य अपने शिखर पर पहुँच गया था जिन्होंने कलिंग युद्ध के बाद स्वयं को बौद्ध धर्म में परिवर्तित कर लिया था। इस अग्रदूत बौद्ध सम्राट के अधीन राज्य में लम्बे समय तक स्थिरता बनी रही। साम्राज्य की शक्ति बहुत

विशाल थी तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए राजदूतों को अन्य देशों में भेजा गया। ग्रीक के राजदूत मैगस्थनीज ने मौर्य साम्राज्य के वैभव का वर्णन किया। साँची, सारनाथ तथा मथुरा के स्तूप, स्तंभ एवं पत्थर पर लिखित राजाज्ञाएं साम्राज्य के विस्तार को सूचित करती हैं।

सैन्य युद्धों की एक श्रृंखला के बाद संपूर्ण भारत पर सम्राट अशोक का शासन हो गया। अशोक के राज्य का विस्तार दक्षिण एशिया और पश्चिम में अफगानिस्तान तथा पर्शिया के भागों तथा पूर्व में असम एवं बंगाल तथा दक्षिण में मैसूर तक हो गया था।

किंवदंती के अनुसार कलिंग की विजय के बाद सम्राट अशोक अपराध बोध महसूस करने लगे जो अपने गुरु राधास्वामी और मंजुश्री की सहायता से बौद्ध धर्म को व्यक्तिगत धर्म के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। अशोक ने बुद्ध के जीवन से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण स्मारकों को निर्मित किया। बौद्ध स्त्रोतों के अनुसार राजा बौद्ध धर्म के प्रसार और संरक्षण में व्यक्तिगत रूप से शामिल था। उन्होंने नए दर्शन का प्राचीन रोम एवं मिस्र तक प्रसार के लिए अपेक्षाकृत अपने पद का उपयोग किया।

ग्रीको- बैक्ट्रीयन, शक तथा इन्डो-पार्थियन

मिलिन्द बैक्ट्रीया का एक प्रसिद्ध राजा था। उसने तक्षशिला तथा बाद में सिल्कोट तक शासन किया। उसने तक्षशिला तथा पुश्कलावती का पुनः निर्माण कराया। वह बौद्ध बन गया और *मिलिंद प्रश्न* नामक पुस्तक में महान दार्शनिक नागसेन के साथ अपने विमर्श के कारण याद किया जाता है।

पार्थियनों ने 90 ई.पू. तक पूर्वी ईरान को अपने नियंत्रण में ले लिया और लगभग 50 ई.पू. में अफगानिस्तान में अंतिम ग्रीक शासक का अंत हो गया। लगभग सातवीं शताब्दी तक इण्डो-पार्थियन वंश ने गांधार को सफलतापूर्वक अपने नियंत्रण में ले लिया। पार्थियनों ने गांधार में कलात्मक ग्रीक परंपराओं का समर्थन किया। गांधार की ग्रीक बौद्ध कला का आरंभ 50 ई.पू. तथा 75 ई.पू. के मध्य के काल खण्ड को माना गया।

कुषाण साम्राज्य

राजा कनिष्क के अधीन कुषाण राज्य, गांधार राज्य के रूप में प्रसिद्ध था। बौद्ध कला गांधार से एशिया के अन्य भागों में फैली। उन्होंने बौद्ध धर्म को अत्यधिक प्रोत्साहित किया। कनिष्क से पहले बुद्ध मानव आकृति में चित्रित नहीं थे। गांधार में महायान बौद्ध धर्म फला-फूला और भगवान बुद्ध मानव आकृति में प्रस्तुत किए गए।

पाल एवं सेना युग

पाल एवं सेना राजाओं के अधीन शासन में बड़े - बड़े महाविहार विकसित हुए जो अब बिहार और बंगाल में हैं। तिब्बती स्रोतों के अनुसार सोमपुर, ओदानतपुर, जगदल, विक्रमशिला और नालंदा (जिसका उत्कर्ष अतीत आज तक सुविख्यात) आदि पाँच प्रमुख महाविहार थे। पाँचों महाविहारों में एक जैसी व्यवस्था गठित थी। सभी राज्य पर्यवेक्षण के अधीन थे और उन सभी का अस्तित्व समन्वय की व्यवस्था में निहित था। बौद्ध प्रमाण से ऐसा लगता है कि बौद्ध शिक्षा के विभिन्न केन्द्र थे जो पाल राजाओं के अधीन पूर्वी भारत में एक नेटवर्क के रूप में कार्य करते थे तथा जो संस्थाओं का आपस में जुड़ा हुआ एक संगठित समूह था जहाँ विद्वानों का आवागमन आसान था।

बौद्ध धर्म गुरु

भारतीय श्रमणों ने बौद्ध धर्म का विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार किया, जिनमें पूर्वी तथा मध्य एशिया शामिल हैं। अशोक के अभिलेखों में यूनानी राजाओं को अशोक ने अपने बौद्ध प्रचारक के रूप में वर्णित किया गया है। अशोक के राजदूत धर्मरक्षित का पालि स्रोतों में मुख्य ग्रीक बौद्ध भिक्षु तथा धर्म प्रचारक के रूप में विवरण दिया गया है।

ऐतिहासिक रोमण लेखों में वर्णन मिलता है कि प्रथम शताब्दी ई. के आसपास राजा पांडया ने रोमन सम्राट सीज़र ऑगस्टस के पास एक राजदूत भेजा था। यूनान की यात्रा के दौरान राजदूत एक राजनायिक पत्र ले गया तथा इसके सदस्यों में से एक श्रमण था जिसने अपने मत के प्रदर्शन के दौरान एथेंस शहर में आत्मदाह कर लिया था। इस घटना से सनसनी फैल गई तथा जिसका दमिश्क के निकोलस द्वारा वर्णन किया गया, जो उससे अन्ताकिया (शहर) के दूतावास में मिले थे और स्ट्रेबो तथा डियो कैसियस से जुड़े हुए थे। उस श्रमण की एक समाधि बनाई गई जिस पर उसके कष्टों का विवरण लिखा था। इसे प्लूटार्क के समय तक देखा गया।

लोकक्षेम सबसे पहले ज्ञात बौद्ध भिक्षु हैं जिन्होंने महायान धर्मग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था। गांधार भिक्षु ज्ञानगुप्त तथा प्रज्ञ ने अनेक महत्त्वपूर्ण संस्कृत सूत्रों के चीनी अनुवादों के माध्यम से योगदान दिया। शाओलिन मंदिर को स्थापित करने वाले मठाधीश एवं आचार्य भारतीय ध्यान गुरु बुद्धभद्र (छठी शताब्दी ई.) थे। ति-लून स्कूल के कुलपति दक्षिण भारत के कांचीपुरम से संबंध रखते थे और तांत्रिक बौद्ध धर्मगुरु थे। बोधिधर्म (छठी शताब्दी ई.) को चीन में ज़ेन बौद्ध धर्म के संस्थापक का गौरव प्राप्त है। 580

ई. में भिक्षु विनितरूची ने वियतनाम की यात्रा की और उस समय यह वियतनामी ज़ेन या थिएन बौद्ध धर्म की प्रथम उपस्थिति थी।

ऐसी मान्यता है कि 8वीं शताब्दी में गुरु पद्मसंभव (जिसका संस्कृत में अर्थ है- कमल से उत्पन्न) तांत्रिक बौद्ध धर्म तिब्बत ले गए। तिब्बत और भूटान में वे गुरु रिम्पोचे के रूप में प्रसिद्ध हैं और वहाँ निंगमापा संप्रदाय के अनुयायी उन्हें दूसरा बुद्ध मानते हैं। ऐसा कहा जाता है कि नालंदा के मठाधीश एवं माध्यमिक योगाचार्य के संस्थापक शांतिरक्षित ने तिब्बत में बौद्ध धर्म स्थापित करने में गुरु पद्मसंभव की सहायता की थी।

ध्यान पद्धति के विशेषज्ञ भारतीय भिक्षु अतीश को गेलुक संप्रदाय का अप्रत्यक्ष संस्थापक माना जाता है। भारतीय भिक्षु वज्रबोधि ने भी बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए इण्डोनेशिया की यात्रा की थी।

भारत में बौद्ध धर्म का पतन

बौद्ध धर्म के पतन के लिए अनेक कारण उत्तरदायी हैं। अपने राजाओं की धार्मिक मान्यताओं की परवाह किए बिना राज्य प्रायः सभी प्रमुख धर्मों को अपेक्षाकृत समान रूप से दान देते थे। इसमें मठों का निर्माण, भिक्षुओं के जीनव-यापन के लिए गाँवों से कर लिया जाता था जिसमें संपत्ति कर और पहले दान की गई संपत्ति को कर से मुक्त करके उसकी रक्षा करना शामिल था। दान प्रायः विशेष व्यक्तियों द्वारा दिया जाता था, जैसे- धनी व्यापारी एवं राजकीय परिवार की महिला सदस्य। यह उस समय की बात है जब राज्य भी इसे संरक्षण एवं सहायता प्रदान करता था। बौद्ध धर्म के मामले में यह संरक्षण विशेष महत्त्व रखता था क्योंकि इसके संस्थागत संगठन उच्च स्तर के थे और भिक्षु लोगों द्वारा दिए गए दान पर निर्भर थे। बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण से अत्यधिक संपत्ति प्राप्त होती थी।

जाति आधारित नियमों के क्षेत्र और अधिकार में हुए क्रमिक विकास ने केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति को पूर्णतया बदल दिया तथा राजनीतिक और आर्थिक शक्ति को स्थानीय क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया। जाति व्यवस्था धीरे-धीरे दैनिक जीवन में सामाजिक एवं आर्थिक लेन-देन की एक संहिता के रूप में विस्तारित हुई।

ब्राह्मणों ने राज्य के साथ एक नया संबंध स्थापित कर लिया। ब्राह्मणों द्वारा लिखित जाति व्यवस्था के नियमों को लागू करना राजनीतिक अधिकारियों का कर्त्तव्य बन गया। जाति के नियम एक दीर्घकालीन अवधि में विकसित हुए थे। जब उन्होंने ऐसा किया तो राज्यों ने धीरे-धीरे भू-राजस्व पर नियंत्रण खो दिया। यह गुप्त शासकों के पतन का संक्रमण

काल था। भारत की सामाजिक संरचना चीन एवं रोम के विपरीत विकसित हुई जहाँ प्रशासनिक व्यवस्था पर सरकारी अधिकारियों का वर्चस्व था। इसके बजाय ब्राह्मणों का कमजोर राज्यों पर वंशानुगत रूप से एकाधिकारी शासन हो गया।

ब्राह्मण सार्वजनिक जीवन के अधिक से अधिक पक्षों को संचालित करने लगे और अपने धार्मिक कर्मकांडों के प्रदर्शन के लिए धन संग्रह करने लगे। ब्राह्मणों द्वारा प्रशासित जाति के नियम सभी स्थानीय आर्थिक उत्पादन एवं इसके अधिकांश वितरण को नियंत्रित के लिए बनाए गए थे। ब्राह्मण पुरोहितों के रूपातंरण ने धुरे की कील की तरह कार्य किया जिससे जाति व्यवस्था परिवर्तित होकर पूंजी व्यवस्था के रूप में कार्य करने लगी। हिन्दू धर्म के राजनीतिक प्रभुत्व एवं इस अप्रत्यक्ष मार्ग ने बौद्ध धर्म के सामाजिक एवं राजनीतिक आधार का स्थानांतरण कर दिया। रूढ़िवादी ब्राह्मण अब उन संपत्ति संसाधनों के प्रवाह को रोकने में समर्थ थे, जिन पर बौद्ध संस्थान निर्भर थे। समानांतर विकास जिसके कारण बौ़द्ध धर्म के प्रभाव में कमी आयी, वे प्रतिद्वंद्वी संस्थान हिन्दू मंदिर थे, जो भक्ति आन्दोलन का एक नव परिवर्तन थे और अंत में हिन्दू संतों के विभिन्न संप्रदाय थे। इसने बौद्ध संरक्षण एवं अनुदान पर आघात किया।

12वीं शताब्दी में बौद्ध धर्म के अंतिम समर्थक साम्राज्य पाल वंश के पतन के बाद, इसका निरंतर ह्रास होने लगा। मुस्लिम आक्रांताओं ने विहारों को नष्ट किया और अपने प्रयासों से क्षेत्र में इस्लाम का प्रसार किया।

हिन्दू धर्म का प्रभाव

बौद्ध धर्म की तुलना में हिन्दू धर्म उपसकों के लिए अधिक बोधगम्य और संतोष प्रदान करने वाला मार्ग बन गया क्योंकि अब इसमें ईश्वर की प्राप्ति के लिए केवल व्यक्तिगत आग्रह ही शामिल नहीं था बल्कि इसमें धार्मिक भजनों की रचना के साथ भावनात्मक पक्ष का विकास भी हो चुका था। लगभग 400 ई. और 1000 ई. के मध्य हिन्दू धर्म को बौद्ध धर्म के मूल्यों पर आगे बढ़ते देखा गया।

हूणों के आक्रमण

फाह्यान, ह्वेनसांग जैसे विद्धानों ने पाँचवीं तथा आठवीं शताब्दियों के बीच भारत की यात्राओं के माध्यम से बौद्ध संघ के पतन के विषय में बताना आरंभ किया, विशेषकर हूणों के आक्रमण के बाद।

तुर्कों के आक्रमण

दक्षिण एशिया में भारतीय उप-महाद्वीप में सर्वप्रथम मूर्ति भंजनकारी आक्रमण मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा किए गए। परिणामस्वरूप मंदिरों के छुट-पुट एवं यदा-कदा विनाश ने हिन्दू धर्म को अधिक प्रभावित नहीं किया किन्तु स्तूपों के विनाश के कारण बौद्ध धर्म शीघ्र एवं लगभग पूरे उत्तर भारत से अदृश्य हो गया। इसके अतिरिक्त, बौद्ध धर्म के अधिकतर शैक्षणिक संस्थान राजाओं और व्यापारियों के संरक्षण पर निर्भर थे। शासन में हुए इस परिवर्तन के साथ-साथ इस्लामी दुनिया के साथ आर्थिक एकीकरण और फिर मुस्लिम व्यापारी वर्ग के साथ सुदूर व्यापार के बढ़ते वर्चस्व ने संरक्षण के इन स्रोतों को नष्ट कर दिया। जिसके परिणामस्वरूप इसका हिन्दू या इस्लाम धर्म में से किसी एक में समावेश हो गया।

तत्कालीन बौद्ध मठों के आंतरिक कारण

मोहम्मद गौरी के नेतृत्व में 12 शताब्दी में मुस्लिमों ने भारत पर आक्रमण किया और अनेक विहारों को तीव्रता से नष्ट कर दिया। बौद्ध धर्म जैसा महत्त्वपूर्ण संगठन अपने मूल क्षेत्रों में विहारों के निरंतर ह्रास से सीमित हो गया जो किसी समय संपूर्ण भारत के धरातल पर फैल हुआ था। विद्वानों का मत है कि भारत में तत्कालीन विहार दैनिक जीवन की गतिविधियों से अलग हो गए थे तथा भारतीय बौद्ध धर्म का न कोई धर्म गुरु था और न धार्मिक अनुष्ठान थे। जिससे लोग शादी एवं अंत्येष्टि विधान के लिए ब्राह्मणों पर निर्भर हो गए।

भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार

अनागरिक धर्मपाल एवं महाबोधि सभा

भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार सन् 1891 में आरंभ हुआ जब श्रीलंका के बौद्ध भिक्षु अनागरिक धर्मपाल ने महाबोधि सभा की स्थापना की। भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार में

उनकी प्रसारित गतिविधियां शामिल थीं। जून 1892 में, उन्होंने दार्जलिंग में बौद्धों की एक सभा का संचालन किया। धर्मपाल ने तिब्बती बौद्धों के विषय में भाषण दिया और दलाई लामा के लिए भगवान बुद्ध का एक स्मृति चिह्न उपहार के रूप में भेजा। भारत में धर्मपाल ने अनेक विहार एवं मंदिर बनवाए, जिनमें से एक सारनाथ में है। सन् 1933 में वे एक अभिषेक भिक्षु बने और उसी वर्ष उनका परिनिर्वाण हो गया।

बंगाल बौद्ध सभा

सन् 1892 में कृपाशरण महास्थवीर ने कलकत्ता में बंगाल बौद्ध सभा की स्थापना की थी। कृपाशरण ने पूर्वोत्तर तथा बंगाल के बौद्ध समुदाय को मिलाने में सहायक का कार्य किया। उन्होंने बंगाल बौद्ध सभा की अन्य साखाओं की स्थापना शिमला (1907), लखनऊ (1907), डिबरुगढ़ (1908), रांची (1915), शिलांग (1918), दार्जलिंग (1919), टाटा नगर जमशेदपुर (1922) में की थी। इनके अतिरिक्त सकपुर, सतबरिया, नोपारा युनीनपुर, चितगोंग क्षेत्र हैं जो अब बंगलादेश में स्थित हैं।

तिब्बती बौद्ध धर्म

सन् 1959 में बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा ने तिब्बत से प्रस्थान किया और तत्कालीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें तथा उनके अनुयायियों के सम्मुख धर्मशाला में निर्वासित सरकार स्थापित करने की अनुमति प्रदान की थी। हजारों की संख्या में निर्वासित तिब्बती शहर में बसाये गए। इनमें से अधिकतर प्रवासी मैकलोड़गंज में रहते हैं जहाँ उन्होंने विहार, मंदिर एवं स्कूल स्थापित किए हैं। यह शहर छोटे ल्हासा (तिब्बत की राजधानी) के नाम से भी विख्यात है।

ज़ेनजी संग्रहालय

ज़ेनजी संग्रहालय योग और प्रारंभिक भारतीय बौद्ध कलाकृतियों और पुरावशेषों को संरक्षित और प्रदर्शित करता है। इसकी स्थापना ज़ेनजी आचार्य द्वारा की गई, जो भारत के सबसे पुराने बौद्ध वंश से संबंध रखते हैं। ज़ेनजी संग्रहालय में भारतीय दृष्टिकोण से बौद्ध धर्म के सभी स्कूलों के प्रचार के लिए एक केन्द्र भी है जो बौद्ध धर्म एवं योग पर व्याख्यान आयोजित करता है तथा अन्तर्राष्ट्रीय फिल्में बनाता है।

नव बौद्ध आन्दोलन

सन् 1890 में दलित नेताओं जैसे- अयोथी थास, ब्रह्मानन्द रेड्डी एवं दमोदर धर्मानंद कोसांबी ने दलितों के बीच बौद्ध धर्म के पुनरुद्धार का एक आंदोलन चलाया था। सन् 1950 में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का झुकाव बौद्ध धर्म की ओर हुआ और एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्रीलंका गए। उसी समय पुणे के पास एक बौद्ध विहार समर्पित करते हुए डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने घोषणा की कि वे बौद्ध धर्म पर एक पुस्तक लिख रहे हैं और जैसे ही यह कार्य समाप्त होता है तो उन्होंने बौद्ध धर्म में औपचारिक धर्मांतरण की योजना बनाई है। सन् 1954 में वे दो बार बर्मा की यात्रा पर गए तथा दूसरी बार रंगून में आयोजित तीसरी बौद्ध विश्व मैत्रीभाव की सभा में भाग लिया। सन् 1955 में उन्होंने भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की। सन् 1956 में उन्होंने अपनी पुस्तक *बुद्धा एंड हिज धम्मा* का कार्य पूर्ण किया किन्तु यह उनके मरणोपरांत प्रकाशित हुई।

भिक्षु चन्द्रमणि महाथेर से मिलने बाद डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 14 अक्तूबर, 1956 में नागपुर में स्वयं तथा अपने समर्थकों के लिए एक औपचारिक सामूहिक धर्मानुष्ठान आयोजित किया। परंपरागत रीति-रिवाज से एक बौद्ध भिक्षु से पंचशील एवं त्रिशरण ग्रहण किए और इस प्रकार उन्होंने अपना धर्मांतरण पूर्ण किया। उनके बाद उनके लगभग 5 लाख समर्थकों ने धर्मांतरण को आगे बढ़ाया जो उनके साथ एकत्रित हुए थे। 22 प्रतिज्ञाएं लेने के बाद डॉ. अम्बेडकर एवं उनके समर्थको ने हिन्दू धर्म एवं दर्शन की स्पष्ट रूप से निन्दा की और अस्वीकृत किया। यह विश्व में सामूहिक धर्मांतरण की सबसे बड़ी घटना थी जिसका उत्सव प्रत्येक वर्ष बौद्धों द्वारा नागपुर के पास मनाया जाता है और वहाँ लगभग 10 से 15 लाख तक बौद्ध एकत्रित होते हैं। फिर, वे चतुर्थ विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाग लेने के लिए काठमांडू (नेपाल) गए। उन्होंने *बुद्धा और कार्ल मार्क्स* पर अपनी पांडुलिपि 2 दिसम्बर, 1956 को पूर्ण की थी।

विपस्सना आन्दोलन

भारत में बौद्ध ध्यान परंपरा की विपस्सना पद्धति की लोकप्रियता बढ़ रही है। सरकारी एवं निजी दोनों क्षेत्र के कई संस्थान अब अपने कर्मचारियों को ऐसे कार्यक्रमों का प्रस्ताव दे रहे हैं। इस प्रकार के अभ्यास मुख्य रूप से भारत में मध्यम एवं उच्च वर्ग के

समुदाय द्वारा किए जाते हैं। यह आंदोलन अमेरिका, यूरोप एवं एशिया के अनेक देशों में फैल चुका है।

बौद्ध धर्म पर फिल्में

भारतीय फिल्म उद्योग ने बौद्ध धर्म के विषय से संबंधित अनेक फिल्में बनायी हैं जैसे- अशोका द ग्रेट, आम्रपाली। सिमरण कालेर द्वारा निर्देशित 'पंजाब में बौद्ध धर्म' एक बड़ा वृत्तचित्र है जो भारत के प्रमुख वृत्तचित्र निर्माताओं में से एक है।

अध्याय-2

चार प्रमुख धार्मिक बौद्ध स्थल

लुम्बिनी- जन्म स्थल

बुद्ध का जन्म लुम्बिनी में उस समय हुआ था जब उनकी माता कपिलवस्तु से अपने पैतृक घर जा रही थीं। एक उपासक को लुम्बिनी की यात्रा एवं दर्शन अवश्य करने चाहिए। लुम्बिनी प्रत्येक बौद्ध के लिए मक्का है और चार प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है।

बुद्ध का जन्म 623 ई. पू. में वैशाख महीने में पूर्णिमा के दिन हुआ था। उनका जन्म साल वृक्ष के नीचे हुआ, जब माया देवी गर्भावस्था के समय अपने मातृक नगर जा रही थीं। जन्म के बाद बुद्ध ने उत्तर की ओर सात कदम रखे और चारों दिशाओं की ओर देखा तथा घोषणा की कि "सभी प्राणियों में मैं श्रेष्ठ हूँ तथा संसार के प्राणियों को भवसागर से पार करता हूँ तथा यह मेरा अंतिम जन्म है और इसके बाद मैं दोबारा जन्म नहीं लूँगा।"

सिद्धार्थ के पास जन्म के समय दैवीय प्रतीक थे जो संकेत दे रहे थे कि नवजात बालक विश्व की मुक्ति करेगा। ऋषियों ने राजा को चेतावनी दी कि अगर बालक संयोगवश दुःख, वृद्ध, मृतक तथा साधु को देखता है तो वह किसी भी समय घर को त्याग देगा। यह सुनकर राजा चिंतित हो गया और राजकुमार सिद्धार्थ का अल्पायु में विवाह कर दिया और उन्हें सभी प्रकार के आनंद प्रदान करने वाले महलों में कैद कर दिया गया।

बुद्ध के समय लुम्बिनी

बुद्ध के समय में लुम्बिनी कपिलवस्तु तथा देवदह के मध्य स्थित थी। यहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। एक स्तंभ अशोक की लुम्बिनी यात्रा का प्रतीक है। स्तंभ के अभिलेख के अनुसार, इसे अशोक की यात्रा और भेंट की स्मृति में उद्यान के प्रभारी द्वारा वहाँ रखा गया था। उद्यान पहले रूम्मिनदेई के नाम से प्रसिद्ध था जो भगवानपुर से उत्तर में दो मील की दूरी पर स्थित है।

सुत्त निपात में वर्णित है कि बुद्ध का जन्म लुम्बिनी जनपद में शाक्यों के गाँव में हुआ था। बुद्ध ने अपनी यात्रा के दौरान देवदह के लुम्बिनी उद्यान में निवास किया था और वहाँ देवदत्त सुत्त का उपदेश दिया था।

लुम्बिनी की पुनः खोज

सन् 1896 में नेपाली पुरातत्त्वविद खड़ग शमशेर राणा के प्रयासों द्वारा अशोक से संबंधित प्रस्तर स्तंभ की खोज की गई। यह माना जाता है कि यह स्तंभ सम्राट अशोक द्वारा लगभग 345 ई.पू. में स्थापित किया गया था। फाह्यान का यात्रावृत्तांत भी पहचान की प्रक्रिया में उपयोग में लिया गया जिससे इस धार्मिक स्थल की पहचान हुई।

वर्तमान लुम्बिनी

सन् 1997 से लुम्बिनी यूनेस्को का एक विश्व विरासत स्थल है और विशेष रूप से अन्तर्राष्ट्रीय विश्व विरासत स्थल की सूची में नामांकित है। वर्तमान लुम्बिनी एक तिहाई के अनुपात में विभाजित है जिसका अर्थ है कि प्रत्येक 1 किलोमीटर चौड़ाई के लिए 3 किलोमीटर लम्बाई है। संपूर्ण क्षेत्र 6 किलोमीटर लंबा 2 किलोमीटर चौड़ा है।

लुम्बिनी का पवित्र स्थल एक बड़े मठवासीय क्षेत्र से घिरा हुआ है जहाँ केवल विहारों का निर्माण किया जा सकता किंतु दुकान, होटल तथा रेस्तरां का नहीं। यह पूर्वी एवं पश्चिमी मठावासीय क्षेत्र में विभाजित है। पूर्वी क्षेत्र में थेरवादी विहार हैं तथा पश्चिमी क्षेत्र में महायान एवं वज्रयान के विहार हैं।

लुम्बिनी के पवित्र स्थल पर प्राचीन विहारों के खंडहर हैं। यहाँ पवित्र बोधिवृक्ष, प्राचीन तालाब, अशोक स्तंभ तथा माया देवी का मंदिर है, जहाँ बुद्ध के जन्म का सही स्थान है। इस स्थल पर विभिन्न देशों के तीर्थयात्री सुबह से शाम तक ध्यान एवं प्रार्थना करते हैं।

नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी (एकीकृत मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के अध्यक्ष और तत्कालीन प्रधानमंत्री प्रचंद द्वारा समर्थित एशिया पैसिफिक एक्सचेंज एंड को-ऑपरेशन फांउडेशन नामक एक गैर सरकारी संगठन, जो मूलतः चीनी सरकार का संगठन है तथा संयुक्त राष्ट्र के विशेष संगठन 'संयुक्त राष्ट्र औद्योगिक विकास संगठन' ने 30 लाख डॉलर के अनुदान से लुम्बिनी में 'स्पेशल डवलपमेंट जोन' विकसित वाले एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह चीन और संयुक्त राष्ट्र की एक संयुक्त साहसिक परियोजना थी। 17 अक्तूबर, 2011 को पुष्प कमल दहल के नेतृत्व में 'लुम्बिनी विकास राष्ट्रीय निर्देशन समिति' बनी जिसमें छह सदस्य थे जिनमें नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (एकीकृत मार्क्सवादी-लेनिनवादी) का नेता मंगल

सिद्धी मन्नधर, नेपाली कांग्रेस नेता मिनेन्द्र रिजाल, वनमंत्री मोहम्मद वाकिल तथा अन्य नेता शामिल थे। समिति ने प्राधिकार को लुम्बिनी को एक शांतिपूर्ण एवं पर्यटन क्षेत्र के रूप में विकसित करने के प्रस्ताव की सूची प्रदान की तथा वैसी ही अन्तर्राष्ट्रीय सहायता के साथ उत्तरदायित्व की भी सूची दी थी।

हिन्दू भगवान बुद्ध को विष्णु के अवतार के रूप में पूजते हैं और हजारों तीर्थयात्री वैशाख महीने की पूर्णिमा के दिन लुम्बिनी की देवी, माया देवी की पूजा, रूपा देवी के रूप में करते हैं।

स्थित

लुम्बिनी हिमालय की तलहटी में नेपाल के भैरहवाँ से लगभग 22 किलोमीटर दूर है। यह गोरखपुर शहर से 122 किलोमीटर, कुशीनगर से 181 किलोमीटर और श्रावस्ती से 240 किलोमीटर दूर स्थित है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

हरे-भरे उपवन तथा प्राकृतिक दृश्य इस स्थल को संपूर्ण रूप से आकर्षक बनाते हैं। लुम्बिनी की यात्रा केवल आध्यात्मिक ज्ञान के लिए ही नही है, बल्कि उस शांति और संतुष्टि के लिए भी आवश्यक है जो ऐसी शांत तथा शांतिपूर्ण जगह पर ही प्राप्त की जा सकती है।

माया देवी मंदिर- लुम्बिनी सदियों तक उपेक्षित रही। सन् 1895 में एक प्रसिद्ध जर्मन पुरातत्त्वविद फुहरेर ने एक बड़े स्तंभ की खोज की तथा फिर क्षेत्र के आसपास की खुदाई से ईंटों से निर्मित मंदिर के अस्तित्व को उद्घाटित किया एवं मंदिर के अंदर एक बलुआ पत्थर की प्रतिमा निकली जो भगवान बुद्ध के जन्म के दृश्यों को प्रकट करती है। माया देवी मंदिर के पास दक्षिण में एक सरोवर है। यह माना जाता है कि प्रसव से पूर्व माया देवी ने इस तालाब में स्नान किया था। पहले मुख्य मंदिर बना और फिर मंदिर परिसर में एक के बाद एक कई मंदिर बनाए गए। यह भी पता चला है कि संभवतः मंदिर के स्थान पर पहले स्तूप था।

अशोक स्तंभ- सम्राट अशोक ने लुम्बिनी की यात्रा के दौरान महात्मा बुद्ध के जन्म स्थल के निकट एक स्तंभ स्थापित किया था। स्तंभ का अभिलेख (नेपाल में सबसे पुराना) स्पष्ट बताता है कि अशोक ने लुम्बिनी को बुद्ध का जन्म स्थान होने के कारण कर में छूट की

प्रतिष्ठा प्रदान कर रखी थी। यह 6 मीटर ऊँचा है तथा इसका आधा भाग जमीन के अंदर है। सम्राट अशोक ने संपूर्ण भारत में अनेक स्तंभ स्थापित किए। इसका शीर्ष भाग आज तक प्राप्त नहीं हुआ है।

बौद्ध मठ- ये मठ नेपाल के आधुनिक बौद्ध मंदिरों की तरह बनाए गए हैं किन्तु दीवारों की वास्तुकला की परिधि प्रभावशाली है। भवन के मध्य में कुछ भित्तिचित्र मध्यकालीन से लगते हैं।

आसपास के पर्यटन स्थल

कपिलवस्तु- यह एक पवित्र स्थल है तथा वह स्थल है जहाँ बुद्ध ने बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था का समय पूर्ण आनंद के साथ व्यतीत किया था। तब यह राजा शुद्धोधन की राजधानी थी तथा आज भी रहस्यवादी आकर्षण को संभाले हुए है। यह बौद्ध धर्म की अनेक मूर्तियों का घर है जो पर्यटकों के सामने एक परिदृश्य प्रस्तुत करती हैं जिससे उन्हें शांति और संतुष्टि मिलती है। कपिलवस्तु आगंतुकों को प्राचीन काल के उन दिनों की याद दिलाता है जब बुद्ध एक छोटे बालक और युवराज थे।

बोधगया- संबोधि स्थल

महाबोधि मंदिर परिसर बोधगया में स्थित है जिसमें महाबोधि मंदिर, वज्रासन और पवित्र बोधिवृक्ष शामिल हैं। यह वृक्ष मूल रूप से श्रीलंका के बोधिवृक्ष की एक शाखा का रूप है जो मूल बोधिवृक्ष की शाखा से उगाया गया था।

यह माना जाता है कि बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के 250 वर्ष बाद सम्राट अशोक बोधगया गए। उन्हें मूल महाबोधि मंदिर का संस्थापक माना जाता है। इसके चबूतरे पर एक छत्रावली है और शीर्ष तक एक पिरामिडनुमा लंबी मीनार है। मंदिर तथा चबूतरे की ओर जाने के लिए दोनों तरफ सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। चोटी की ओर ढलान पर ताकों में बुद्ध की मूर्तियाँ बनी हैं। भारत में बौद्ध धर्म के पतन के साथ मंदिर को भुला दिया गया तथा यह भूमि की परतों के नीचे दब गया।

बाद में, 19वीं शताब्दी के अन्त में सर अलेक्जैंडर कनिंघम ने मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया। सन् 1883 में कनिंघम के साथ जे.डी. बेगलर और डॉ. राजेन्द्रलाल मित्रा के कठिन परिश्रम से स्थल की खुदाई हुई। बोधगया के गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए पुनरुद्धार कार्य किया गया।

अन्य बौद्ध आकर्षण

श्रीलंका का किट्टीश्रीमेघ समुद्रगुप्त का समकालीन था। उसने समुद्रगुप्त से अनुमति लेकर महाबोधि-विहार के पास सिंहली भिक्षुओं के उपयोग के लिए एक संघाराम की स्थापना की थी जो बोधिवृक्ष की पूजा के लिए आते थे। ह्वेनसांग ने संघाराम की परिस्थितियों का वर्णन किया है, जैसा कि उसने स्वयं देखा था। शायद यहीं पर बुद्धघोष की ज्येष्ठ रेवत से भेंट हुई, जिन्होंने उन्हें श्रीलंका आने के लिए राजी किया।

महाबोधि मंदिर के आसपास भूटान, चीन, जापान, म्यांमार, नेपाल, सिक्किम, श्रीलंका, ताइवान, थाईलैंड, तिब्बत तथा वियतनाम के उपासकों द्वारा अनेक बौद्ध मठों का निर्माण किया गया है। इन मठों में संबंधित देशों की वास्तुकला शैली, आंतरिक एवं बाहरी सजावट झलकती है। चीनी मंदिर में भगवान बुद्ध की 200 वर्ष पुरानी मूर्ति है तथा इसे चीन से लाया गया था। जापान का निप्पोन मंदिर पगोड़ा शैली में निर्मित है। म्यांमार का मंदिर भी पगोड़ा शैली में निर्मित है और बागान की याद दिलाता है। थाई मंदिर तिरछे आकार का है तथा छत गोल्डन टाइलों से ढकी हुई है। थाई मंदिर से 25 मीटर आगे एक उद्यान में बुद्ध की मूर्ति है जो वहाँ 100 वर्षों से अधिक समय से मौजूद है।

बोधगया की जनसांख्यिकी

भारत की सन् 2001 की जनगणना के अनुसार बोधगया की जनसंख्या 30,883 थी। जिसमें 54% पुरुष तथा 46% महिलाएँ थीं। राष्ट्रीय औसत साक्षरता दर 59% की तुलना में बोधगया की औसत साक्षरता दर 51% थी जिसमें 63% पुरूष तथा 38% महिलाएँ साक्षर थीं। 18% जनसंख्या 6 वर्ष की आयु से नीचे थी।

सारनाथ- प्रथम उपदेश स्थल

यह उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास स्थित है। यहाँ बुद्ध ने अपने पाँच साथियों को प्रथम उपदेश दिया तथा धर्मचक्र प्रवर्तन किया था। फिर इसिपतन के मृगदाव उपवन में प्रथम पाँच शिष्यों ने धर्मचक्र प्रवर्तन के प्रति सम्मान प्रकट किया।

सारनाथ में मृगदाव उपवन, वह स्थान है जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था और सर्वप्रथम कौण्डिन्य ने अर्हत पद प्राप्त किया। इस स्थल से सिंहपुर गाँव एक किलोमीटर दूर है जो जैन धर्म के ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म स्थल है और उन्हें एक मंदिर समर्पित है। यह एक महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल है। यह भगवान बुद्ध द्वारा उल्लिखित चार तीर्थस्थलों से एक है। बौद्ध उपासक को सारनाथ की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

इसिपतन के साहित्यिक स्रोत

मृगदाव का अर्थ है –वह स्थान जहाँ अधिक संख्या में मृग विचरण करते थे। पालि ग्रन्थों में इसिपतन नाम का उल्लेख मिलता है जिसका अर्थ है- वह स्थल जहाँ ऋषि रहते थे। पौराणिक दंतकथा कहती है कि जब बुद्ध पैदा हुए तो 500 ऋषियों के साथ देवता इसकी घोषणा करने के लिए पृथ्वी पर आए। सभी ऋषि हवा में दिखाई दिए और फिर अदृश्य हो गए तथा उनके अवशेष जमीन पर गिर गए। इसिपतन नाम के विषय में अन्य स्पष्टीकरण है कि तथाकथित ऋषियों के निवास के कारण इसे इसिपतन कहा गया जो हिमालय से वायुमार्ग के द्वारा अपनी उड़ान यहाँ से आरंभ करते थे। प्रत्येक बुद्ध गंध मैदान में ध्यान में सात दिन व्यतीत करते थे। अनात्ता झील में स्नान करते तथा भिक्षा की खोज में वायुमार्ग से मनुष्यों के निवास स्थान पर आते। वे धरती पर इसिपतन में उतरते थे। कभी-कभी प्रत्येक बौद्ध नंदमूलक-पबभार से इसितपन आते थे।

ह्वेनसांग ने मृगदाव की उत्पत्ति के लिए निग्रोधमृग जातक का उद्धरण दिया है। उनके अनुसार जातक में बनारस का राजा मृगदाव के जंगल को दान दे देता है जहाँ हिरण बिना किसी भय से घूमते थे। मृगदाव को ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि वहाँ मृगों को चारों ओर बिना किसी भय के घूमने की अनुमति थी।

सारंगनाथ से सारनाथ बना जिसका अर्थ है- मृगों का स्वामी तथा इससे संबंधित एक पुरानी बौद्ध कथा है जिसमें बोधिसत्त्व एक मृग थे और उन्होंने हिरणी का जीवन बचाने के लिए राजा को अपना जीवन अर्पित कर दिया था। राजा इतना प्रभावित हुआ कि उसने हिरण के लिए एक मृगवन के रूप में उद्यान का निर्माण करवाया। उद्यान आज भी वहीं स्थित है।

सारनाथ का इतिहास

बुद्ध के समय इसिपतन

महात्मा बुद्ध संबोधि प्राप्ति के लगभग 5 सप्ताह बाद, बोधगया से सारनाथ गए। संबोधि प्राप्त करने से पहले सिद्धार्थ गौतम (जो बाद में बुद्ध कहलाए) ने कठोर तप तथा अपने साथियों, पंचवग्गीय साधुओं को छोड़ दिया था तथा वे इसिपतन चले गए थे।

ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने उरुवेला छोड़कर, इतिपतन का भ्रमण किया और अपने पूर्व साथियों से मिले और उन्हें उपदेश दिया। वे अपने आध्यात्मिक ज्ञान के प्रयोग के लिए उनके पास गए क्योंकि वे जानते थे कि उनके पूर्व पाँच साथी धर्म को समझने के योग्य हैं।

सारनाथ की यात्रा के दौरान बुद्ध ने गंगा नदी को पार किया। उन्होने वायुमार्ग से गंगा को पार किया क्योंकि उनके पास धन नहीं था जिसे वे केवट को दे सकें। जब राजा बिम्बिसार ने यह सुना तो उन्होंने संन्यासियों के लिए कर समाप्त कर दिया। जब गौतम बुद्ध ने अपने पहले साथियों को खोज निकाला और उन्हें उपदेश दिया तथा वे समझ गए और उन्हें भी ज्ञान प्राप्त हुआ।

उस समय एक प्रबुद्ध समूह द्वारा भिक्षु संघ की संस्थपना की गई। बुद्ध ने प्रथम उपदेश पाँच भिक्षुओं को दिया, जिसे धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्त कहा गया। यह असल्हा (आषाढ मास) के दिन पूर्णिमा को दिया गया था। इसके बाद बुद्ध ने पहला वर्षावास भी मूलगंधकुटी में व्यतीत किया था। यश और उसके साथियों के भिक्षु बनने के बाद संघ में सदस्यों की संख्या (60) में वृद्धि हुई तथा बुद्ध ने उन्हें चारों दिशाओं में अकेले भ्रमण और धम्म की शिक्षा देने के लिए भेजा। सभी 60 भिक्षु अर्हत थे। प्रथम उपदेश के अलावा भी बुद्ध से संबंधित कई अन्य घटनाओं का उल्लेख इसिपतन में हुआ है।

एक दिन यश प्रातःकाल बुद्ध के पास आए और अर्हत हो गए। वह भी इसिपतन ही था जहाँ ताड़पत्र से बनी चरण पादुकाओं के प्रयोग के निषेध का नियम अस्वीकार किया गया। एक अन्य अवसर पर जब बुद्ध राजगीर से वहाँ गए और उन्होंने कुछ वर्जित मांस के उपयोग के नियम बनाए जिसमें मानव मांस भी शामिल था। जिस समय बुद्ध इसिपतन में थे तो दो बार मार उनसे मिलने आया किन्तु असफल होकर वहाँ से भाग गया।

ऊपर वर्णित धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्त के अलावा, महात्माबुद्ध ने इसितपन में निवास के दौरान अन्य सुतों के उपदेश भी दिए थे।

ऐसा लगता है कि समय-समय पर संघ के कुछ प्रसिद्ध विद्वानों ने इसिपतन में निवास किया था। उनमें से कई संवाद महाकोत्थिता और सारीपुत्र के बीच हुए तथा एक संवाद महाकोत्थिता और सिट्टा हथिसारीपुत्र विद्वान के मध्य हुआ, ये सभी इसिपतन में अभिलिखित हैं। इसके अलावा, एक प्रवचन का उल्लेख है जिसमें इसिपतन में निवास के दौरान रहने वाले कई भिक्षुओं ने चुन्द की उसकी कठिनाईयों में सहायता की थी। उदापान जातक के अनुसार बुद्ध के समय में इसिपतन के पास एक प्राचीन तालाब था जिसका उपयोग वहाँ रहने वाले भिक्षु करते थे।

बुद्ध के बाद इसिपतन

महावंस के अनुसार, दूसरी शताब्दी ई.पू. में इसिपतन में भिक्षुओं का एक बड़ा समुदाय रहता था। इसके विषय में कहा गया है कि अनुराधापुर में महाथूप के शिलान्यास समारोह में ज्येष्ठ धम्मसेन के मार्गदर्शन में इसिपतन से बारह हजार भिक्षु उपस्थित हुए थे।

ह्वेनसांग ने इसिपतन में पंद्रह सौ भिक्षुओं को थेरवाद की शिक्षा ग्रहण करते हुए देखा था। संघाराम की चारदीवारी के अन्दर लगभग दो सौ फीट ऊँचा एक विहार था और उसकी छत एक सुनहरे आम की आकृति की तरह थी। विहार के केन्द्र में भगवान बुद्ध की धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा वाली आदमकद की मूर्ति थी। दक्षिण-पश्चिम में सम्राट अशोक द्वारा निर्मित एक प्रस्तर स्तूप के अवशेष थे। बौद्ध ग्रन्थों में वर्णित है कि सम्राट अशोक ने भगवान बुद्ध से संबंधित स्थलों की यात्रा की अपनी इच्छा उपगुप्त के पास बड़ी आत्मीयता से रखी और वहाँ थूपों का निर्माण करवाया। यह अशोक के शिलालेखों द्वारा प्रमाणित है।

इसिपतन में एक प्रस्तर का स्तंभ खड़ा है जो उस स्थान का प्रतीक है जहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था। स्थल के पास एक अन्य स्तूप है तथा जहाँ बुद्ध के पहुँचने से पहले पाँच साधु अपना समय ध्यान में व्यतीत करते थे तथा एक अन्य स्थान है जहाँ पाँच सौ प्रत्येक बुद्धों ने निर्वाण प्राप्त किया था। इसके समीप एक भवन है जहाँ मैत्रेय ने बुद्ध बनने का प्रण लिया था।

सारनाथ में बौद्ध धर्म राजाओं और वाराणसी के धनी व्यापारियों के कारण फला-फूला। तीसरी शताब्दी तक, सारनाथ कला का एक प्रमुख केन्द्र बन चुका था तथा गुप्त काल

(चौथी से छठी शताब्दी ई. तक) के दौरान अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था। 7वीं शताब्दी के आसपास ह्वेनसांग ने सारनाथ की यात्रा की और यहाँ अनेक विहारों को देखा था।

तब यह बौद्ध धर्म के सम्मतिय स्कूल का प्रमुख केन्द्र बन गया जो प्रारंभिक बौद्ध स्कूलों में से एक था। हालांकि, तारा और हेरूका की मूर्तियों की उपस्थित संकेत देती है कि परवर्ती काल में यहाँ वज्रयान भी प्रचलित था। इसके अतिरिक्त, इस स्थल पर भगवान शिव एवं ब्रह्मा की भी मूर्तियाँ पायी गयी थीं तथा आज वहाँ धम्मेख स्तूप के समीप एक जैन मंदिर चन्द्रपुरी में स्थित है। 12वीं शताब्दी के अंत में तुर्क आक्रांताओं ने सारनाथ में लूटपाट की और बाद में स्थल के विहारों को नष्ट कर दिया।

इसिपतन की खोज

इसितपन की पहचान बनारस से छह मील दूर आधुनिक सारनाथ के रूप में की जाती है। सर अलेक्जैंडर कनिंघम ने मृगदाव को खोजा और एक घने जंगल के रूप में प्रकट किया। जो विशाल धम्मेख स्तूप से चौखंडी स्तूप तक फैला हुआ था।

इसिपतन के पौराणिक स्रोत

बौद्ध धर्मग्रन्थों की टीकाओं के अनुसार, सभी बुद्ध अपने प्रथम उपदेश का प्रतिपादन इसिपतन के मृगदाव उपवन में करते हैं। यह चार अपरिवर्तनीय स्थलों में से एक है तथा अन्य स्थल हैं- बोधिपल्लंका तथा संकिसा का द्वार जहाँ बुद्ध ने तावतिंसा स्वर्ग से लौटने के बाद प्रथम बार धरती को स्पर्श किया था। वह स्थल जेतवन में गंधकुटी का आधार है।

प्राचीन काल में समय-समय पर इसिपतन के अनेक नाम रखे गए। ऐसा फुस्स बुद्ध, धम्मदस्सी बुद्ध और कस्सप बुद्ध के समय में हुआ था। यहाँ कस्सप बुद्ध का जन्म हुआ था। विपस्सी बुद्ध के समय में यह खेम-उपान के नाम से प्रसिद्ध था। उस समय यह प्रथा थी कि सभी बुद्ध वायुमार्ग से इसिपतन पहुँचकर अपना प्रथम उपदेश देते थे। हालाँकि, गौतम बुद्ध ने 18 मील मार्ग पैदल चलकर तय किया क्योंकि वे जानते थे कि ऐसा करके वे उपक नामक आजीवक से मिलेंगे जो उनकी सेवा कर सकते हैं।

सारनाथ के प्रमुख बौद्ध आकर्षण

अतीत में, तुर्क आक्रांताओं ने सारनाथ के अधिकतर भवनों एवं इमारतों को नष्ट कर दिया था। फिर भी, आज विख्यात अवशेषों को देखा जा सकता है।

धम्मेख स्तूप– यह एक प्रभावशाली स्तूप है और इसके आसपास कई विहार हैं।

धर्मराजिक स्तूप- पूर्व अशोककालीन स्तूपों में से अकेला बचा हुआ है यद्यपि अब केवल आधार ही शेष रह गया है। 18वीं शताब्दी में धर्मराजिक स्तूप के अवशेष का वाराणसी में भवन निर्माण की सामग्री के रूप में प्रयोग किया गया। उस समय धर्मराजिक स्तूप में अवशेष भी पाए गए थे तथा बाद में, इन अवशेषों को गंगा नदी में फेंक दिया गया।

चौखंडी स्तूप- वह स्थल है जहाँ बुद्ध अपने प्रथम शिष्यों से मिले थे। बाद में इसमें इस्लामी मूल की एक अष्टभुजाकार मीनार को जोड़ा गया।

आधुनिक मूलगंधकुटी विहार- इस विहार का निर्माण सन् 1930 में श्रीलंका की महाबोधि सभा द्वारा किया गया था जिसमें कई सुन्दर भित्तिचित्र हैं। इसके पीछे मृगदाव उपवन है जहाँ आज भी हिरण देखे जा सकते हैं।

अशोक स्तंभ- यहाँ खड़ा अशोक स्तंभ मूलतः अशोक के सिंह शीर्ष सहित स्थापित किया गया था। यह तुर्क आक्रमणों के दौरान नष्ट हो गया, किन्तु आधार अभी थी मूल स्थान पर खड़ा है।

सारनाथ पुरातत्त्व संग्रहालय- यह अशोक स्तंभ के सिंह शीर्ष के लिए प्रसिद्ध है। अशोक स्तंभ शीर्ष से जमीन की ओर 45 फीट है और भारत का राष्ट्रीय चिह्न है।

बोधिवृक्ष- अनागरिक धर्मपाल द्वारा यहाँ एक बोधिवृक्ष भी रोपित किया गया जो बोधगया के बोधिवृक्ष की शाखा से उगाया गया था

सारनाथ के आधुनिक तीर्थस्थल

सारनाथ भारतीय तथा बाहरी बौद्धों के लिए एक तीर्थस्थल के रूप में विकसित किया गया है। अनेक देश हैं जिनमें बौद्ध धर्म एक प्रमुख धर्म है जैसे- थाईलैंड, जापान, तथा तिब्बत। इन्होंने सारनाथ में अपने देश की विशिष्ट शैली के विहार और मंदिर स्थापित किए

हैं। इस प्रकार तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को विभिन्न प्रकार की बौद्ध वास्तुकला को देखने का अवसर मिलता है।

कुशीनगर- महापरिनिर्वाण स्थल

यह स्थल गोरखपुर से 56 किलोमीटर दूर है जहाँ महात्मा बुद्ध अंतिम बार ठहरे थे और महापरिनिर्माण प्राप्त किया था। यह कुशीनगर जिले में एक नगर पंचायत तथा कस्बा है।

जनसांख्यिकी

भारत की सन् 2001 की जनगणना के अनुसार कुशीनगर की जनसंख्या 17,982 थी जिसमें 52% पुरुष तथा 48% महिलाएँ थी। कुशीनगर की औसत साक्षरता दर 62% थी जिसमें पुरुषों की साक्षरता 70% तथा स्त्रियों की साक्षरता 54% थी जो राष्ट्रीय औसत साक्षरता दर 59.5% से उच्च थी। कुशीनगर में 15% आबादी 6 वर्ष की आयु से नीचे थी।

इतिहास

प्राचीन काल में यह कुशवती के नाम से प्रसिद्ध था। इसका उल्लेख रामायण महाकाव्य में अयोध्या के प्रसिद्ध राजा राम के पुत्र कुश के शहर के रूप में मिलता है। तब कुशीनगर मल्ल जनपद का एक प्रसिद्ध स्थल था। बाद में, यह कुसीनारा के नाम से जाना गया। यह हिरण्यवती नदी के पास था जहाँ बुद्ध खुमी की एक प्रजाति या संभवतः सूअर के मांस का भोजन ग्रहण करने से बीमार हो गए और उसके बाद महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

यहाँ तीसरी शताब्दी ई.पू. से 5वीं शताब्दी ई. तक के स्तूपों और विहारों के भग्नावशेष मौजूद हैं तथा उस समय इसका वैभव शिखर पर था। सम्राट अशोक ने इस स्थल पर अनेक स्मारक निर्मित किए तथा इस योगदान के लिए स्मरण किया जाता हैं। 19वीं शताब्दी में इसकी पुनः खोज से पहले, कसिया में अर्ध-सहस्त्राब्दी से अधिक तक एक खामोशी थी। भयंकर आक्रमणों के कारण, कुशीनगर ने अपना तेज खो दिया और अंत में उपेक्षित हो गया।

बुद्ध की कुशीनगर की यात्राएँ

बुद्ध के समय में कुशीनगर मल्लों की राजधानी थी। यह राजगीर से 25 योजन था और फाह्यान के यात्रावृत्तांत में वर्णित है यह कपिलवस्तु से 24 योजन था तथा अलका से राजगीर जाने वाले राजमार्ग पर स्थित था तथा *सुत्त निपात* के अनुसार जब बावरी ऋषि ने बुद्ध के विषय में सुना तो अपने 16 शिष्य बदनकुर्थी से सड़कमार्ग द्वारा राजगीर भेजे। जहाँ बुद्ध वेणुवन में उपदेश दे रहे थे। उन्होंने बुद्ध से विमर्श किया और बौद्ध धर्म में परिवर्तित हो गए। बावरी के शिष्य सड़कमार्ग से होकर राजगीर पहुँचे। तब यह एक छोटा सा कस्बा था तथा जंगल के बीच में मिट्टी से बनी झोपिड़यों का नगर था। पहली बार तो आनंद निराश हुआ, जब उसे पता चला कि बुद्ध ने इसे अपने परिनिर्वाण के लिए चुना। फिर बुद्ध ने उसे ध्यान दिलाया कि प्राचीन काल में यह कुशवती नगर था जिसका महा-सुदस्सन राजा था और जहाँ उन्होंने महा-सुदस्सन सुत्त का उपदेश दिया था।

मुकुटबंधन जो रामभार स्तूप के नाम से भी जाना जाता है। महात्मा बुद्ध का अंत्येष्टि-स्थल है। ऐसी मान्यता है कि बुद्ध ने कई कारणों से कुशीनगर का महापरिनिर्वाण के लिए चयन किया-

- क्योंकि यह महा-सुदस्सन सुत्त के उपदेश का स्थल था।
- क्योंकि उनका उपदेश सुनने के बाद, सुभद उनसे मिलने यहाँ आया था और ध्यान किया और बुद्ध के समय में ही अर्हत हो गया।
- क्योंकि यहाँ दोण ब्राह्मण रहता था जिसने बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, उनकी अस्थियों के वितरण की समस्या का समाधान किया।

बुद्ध राजगीर से अपनी अंतिम यात्रा पर कुशीनगर आए जिसकी कुशीनगर और पावा के बीच 15 किलोमीटर की दूरी थी। वे मार्ग में अनेक स्थानों पर ठहरे और ककुत्था नदी के तट पर आम के वन में विश्राम किया। उसके आगे हिरण्यवती नदी थी जो नगर के पास थी। बुद्ध मल्लों के साल वृक्षों के उद्यान में ठहरे जो उनका अंतिम विश्राम स्थल था।

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, उनके शरीर को दक्षिण द्वार से नगर में लाया गया तथा पूर्वी द्वार से नगर के बाहर निकाल कर मल्लों के मुकुटबंधन मंदिर लाया गया तथा वहाँ शरीर का अंत्येष्टि विधान किया गया। वहाँ एकत्रित लोगों ने अवशेषों के सम्मान में सात दिनों तक उत्सव आयोजित किया।

महापरिनिर्वाण सुत्त में बुद्ध द्वारा घोषित चार पवित्र स्थलों में से एक होने के कारण तथा उनके महापरिनिर्वाण का घटना स्थल होने के कारण कुशीनगर बौद्ध समुदाय के लिए एक तीर्थस्थल बन गया।

महापरिनिर्वाण से पूर्व, बुद्ध ने कुसीनारा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए कई यात्राएँ की थीं। एक बार वे आपन से वहाँ गए तथा कुछ समय कुसीनारा में ठहरे तथा आतुमा की ओर अग्रसर हुए। कुसीनारा के मल्ल बुद्ध के सदैव बहुत बड़े प्रशंसक थे, यद्यपि सभी उनके अनुयायी नहीं थे। इस यात्रा के अवसर पर उन्होंने निर्णय लिया कि कुसीनारा का कोई भी निवासी जो बुद्ध के पास जाने, मिलने तथा उनके मार्गरक्षण करने में असफल हुआ तो उसे दंड दिया जाएगा। यह वह अवसर था जब रोजा मल्ला का धर्म-परिवर्तन किया गया और बुद्ध एवं भिक्षुओं को हरी सब्जियों तथा खीर का भोजन अर्पित किया गया।

इनमें से कुछ यात्राओं के दौरान बुद्ध एक जंगल में ठहरे, जिसे बालीहरण कहा जाता था और वहाँ उन्होंने दो कुसीनारा सुत्तों एवं किन्ती सुत्त का उपदेश दिया। तीसरे कुसीनारा सुत्त का उपदेश उन्होंने उपवन में निवास के दौरान दिया था। परवर्ती परंपरा के अनुसार कुसीनारा में बुद्ध के आठ अवशेषों में से एक भाग को स्तूप में स्थापित किया गया और जिसकी मल्लों द्वारा पूजा की गई।

ह्वेनसांग की यात्रा के समय कुसीनारा में बुद्ध के अंतिम दिनों और अंत्येष्टि से संबंधित स्थलों के प्रतीक, बुर्ज तथा संघाराम विद्यमान थे। उनके यात्रावृत्तांत में वर्णित है कि कुशीनगर, वैशाली से 19 योजन दूर था। महापरिनिर्वाण स्थल पर निर्मित स्तूप से संबंधित एक तामपत्र हाल ही में खोजा गया है।

खोज एवं पहचान

जब महापरिनिर्वाण स्तूप एवं मंदिर के अवशेष खोजे गए तो चालीस फीट ऊँचा ईंटों का टीला एक सघन कांटेदार जंगल से ढका हुआ था। ई. बुकानन के बाद, 1854 ई. में एच.एच. विल्सन अपने सर्वेक्षण-कार्य के लिए कसिया पहुँचा। उसने सुझाव दिया कि प्राचीन कुसीनारा और कसिया एक हैं। आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के संस्थापक, सर अलेक्जैंडर कनिघंम ने जब 1861-1862 ई. के आसपास खुदाई का कार्य पुनः आरंभ किया

तो सुझाव दिया कि यह स्थल बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थल हो सकता है। ए.सी.एल. कार्लाइल नामक अंग्रेज अधिकारी ने भी उन्हीं का अनुसरण किया।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में जे.पी.एच. वोगेल की देखरेख में उत्खन्न कार्य शुरू हुआ। उसने 1904-05, 1905-06 तथा 1906-07 में पुरातत्त्व के अभियानों को संचालित किया तथा बौद्ध संसार के वैभव को प्रकट किया। यद्यपि कनिंघम के अनुमान को सिद्ध करने के लिए कोई ठोस साक्ष्य नहीं मिला कि माथाकुअर का मंदिर ही कुसीनारा था। संस्कृत आख्यानों सहित मठ आवासीय प्रवचनों की महापरिनिर्वाण चतुरदेव भिक्षु संघ की श्रृंखला ने प्रमाणित किया कि गुप्त काल के बाद इस स्थल को बुद्ध का अंत्येष्टि स्थल माना गया था।

वर्तमान कुशीनगर

आज कुशीनगर भारतीय और विदेशी पर्यटकों के लिए एक प्रमुख तीर्थस्थल हैं। यहाँ मठों एवं स्तूपों के खंडहरों के निकट भारतीय, चीनी, श्रीलंकाई, थाई, बर्मी, दक्षिण-कोरियाई, तिब्बती तथा जापानी बौद्धों द्वारा कई मठों का निर्माण किया गया। आज कुशीनगर में एक स्नातकोत्तर कॉलेज तथा एक इंटर कॉलेज है। कुशीनगर में पर्यटकों के ठहरने के लिए अनेक होटल एवं रेस्तरां बन चुके हैं।

कुशीनगर में प्रायः दो स्थानों की सबसे अधिक यात्राएँ जाती हैं। जिनमें से एक महापरिनिर्वाण स्तूप है, जो बुद्ध का महापरिनिर्वाण स्थल तथा दूसरा उनका अंत्येष्टि स्थल है जो 1.6 किलोमीटर दूर है। स्तूप में बुद्ध की 1500 वर्ष पुरानी प्रतिमा है। स्तूप के आसपास प्राचीन विहारों के खंडहर हैं। कुशीनगर में मैत्रेय बुद्ध की 152 मीटर ऊँची कांस्य प्रतिमा के निर्माण की एक परियोजना है जो पहले बोधगया में बनने वाली थी।

अन्य प्रमुख बौद्ध स्थल

कपिलवस्तु

प्राचीन काल में यह शाक्य वंश की राजधानी थी जहाँ गौतम बुद्ध का बचपन व्यतीत हुआ। यहाँ उनका पैतृक घर और उद्यान था। यह माना जाता है कि यह उनके जन्म स्थल, लुम्बिनी से पश्चिम में कुछ किलोमीटर की दूरी पर था। अशोक स्तंभ इस स्थल का प्रमाण है और इसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा दिया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में चीनी यात्रियों के यात्रावृत्तांतों के आधार पर कपिलवस्तु की ऐतिहासिक स्थल के रूप में खोज हुई।

पुरातत्त्वाविदों ने नेपाल के तिलौराकोट स्थल की संभवतः कपिलवस्तु के रूप में पहचान की है।

निग्रोधर्म

यह कपिलवस्तु के पास एक बरगद का उपवन था। ज्ञान प्राप्ति के बाद जब बुद्ध ने नगर की प्रथम बार यात्रा की तो वे यहाँ ठहरे थे तब यह निग्रोध नामक शाक्य का उद्यान था, जिसने इसे संघ को दान कर दिया था। वर्तमान निग्रोधर्म कुदान गाँव के पास स्थित है जो कपिलवस्तु के गढ़ तिलौराकोट से दक्षिण में लगभग छह किलोमीटर दूर है। निग्रोधर्म की उत्तर में स्थिति 27.528186^0 तथा पूर्व में 83.040757^0 है।

निग्रोधर्म की घटनाएं

वह निग्रोधर्म था जहाँ महाप्रजापति गौतमी ने प्रथम बार संघ में स्त्रियों के प्रवेश की अनुमति मांगी थी और बुद्ध ने मना कर दिया गया था तथा वैशाली चले गए। महात्मा बुद्ध कई अवसरों पर निग्रोधर्म में ठहरे थे तथा वहाँ विनय के नियमों का उल्लेख किया। अनेक शाक्य उनके दर्शन के लिए आए जिनमें महानाम, गोधा, साराकानी, नारदीया और वप्पा प्रमुख थे।

महात्मा बुद्ध अपने निवास के दौरान कालीगोधा गए। उस समय महानाम के साथ एक विमर्श किया और उसे चुल्ल दुखखंद सुत्त का प्रवचन दिया। निग्रोधर्म में बुद्ध के निवासों में से एक के दौरान शाक्यों ने उन्हें अपने नए राज भवन को पवित्र करने के लिए आंमत्रित किया, जहाँ उन्होंने देर रात तक उपदेश दिए और फिर मौद्गल्यायन को अपना विमर्श जारी रखने को कहा। एक अन्य अवसर पर बुद्ध का उल्लेख निग्रोधर्म में स्वास्थ्य-लाभ के लिए निवास के रूप में किया गया। जब रोहिणी नदी के जल के बंटवारे को लेकर शाक्यों एवं कोलियों के बीच झगड़ा हुआ, तब भी वे वहाँ मौजूद थे। बुद्ध के व्यवहार से ऐसा लगता है कि जब वे निग्रोधर्म में ठहरते थे तो दोपहर का आराम महावन में करते थे।

अन्य लोगों में अनुरुद्ध और लोमसाकंगिया निग्रोधर्म में ठहरने के रूप में उल्लिखित हैं जिन्हें चंदनथेर भद्दकारत्त सुत का उपदेश देते हैं। यह लोमसकंगिया, लोमवांगिया भी हो सकता है जिसका वैसा ही उल्लेख निग्रोधर्म में ठहरने के रूप में किया गया है। किसी समय निग्रोधर्म में कान्हा नामक साधु का निवास था। उसे याद करते हुए, बुद्ध एक बार मुस्कुराते हैं और जब उनसे इसका कारण पूछा जाता है तो इसे कान्हा जातक से संबंधित बताते हैं।

एक बौद्ध कथा के अनुसार निग्रोधर्म में अपने प्रथम निवास के दौरान तथागत ने सारीपुत्त को *बुद्धवंश* और *चरियापिटक* का उपदेश दिया था। संभवतः यहीं पर अनुरुद्ध की बहन ने उनके अनुरोध पर संघ के लिए एक दो मंजिला सभा भवन बनवाया था। बुद्धघोष कहते हैं कि काला खेमका शाक्य ने निग्रोधर्म के निकट एक विशेष विहार निर्मित किया था।

निग्रोधर्म के वर्तमान अवेशष

वर्तमान में निग्रोधर्म के अवशेषों को कुदान कहा जाता है क्योंकि यह कुदान गाँव के निकट स्थित है। अवशेषों की खुदाई से दो बड़े स्तूप मिले हैं तथा एक तीसरा स्तूप अब भी भूमि के अंदर है। तीसरे स्तूप के ऊपर हाल ही में एक संरचना (संभवतः इस्लामी) निर्मित की गई है।

साँची

साँची का विशाल स्तूप आरंभिक बौद्ध वास्तुकला का एक अद्‌भुत उदाहरण है। यह यूनेस्को के विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल है। साँची अपने स्तूपों के लिए प्रसिद्ध है। यह भोपाल से 496 किलोमीटर तथा विदिशा और बेसनगर से 10 किलोमीटर दूर है। यह कई बौद्ध स्मारकों का स्थान है। यह रायसेन जिले (म.प्र.)की नगर पंचायत है। स्तूप के चारों तरफ तोरण हैं तथा उनमें से प्रत्येक प्रेम, शांति, तथा शौर्य का प्रतीक है। यह विश्व विरासत स्थल पूर्ण रूप से राज्य द्वारा संपोषित है तथा जन साधारण के देखने का समय प्रातः 8 बजे से सायं 5 बजे तक है। इस स्थल की यात्रा में लगभग एक घन्टा तीस मिनट का समय लगता है। फोटोग्राफी की अनुमति है तथा मार्गदर्शक (गाइड) उपलब्ध है।

भारत में साँची का विशाल स्तूप प्रस्तर की सबसे पुरानी संरचना है, जिसे मूलत: तीसरी शताब्दी ई.पू.में सम्राट अशोक ने बनवाया था। इसके केन्द्र में बुद्ध के अवशेषों के ऊपर ईंटों से बनी एक अर्धगोलाकार इमारत है। यह उच्च कोटि के छत्र रूपी ताज से सुशोभित है जो अवशेषों के अभीष्ट सम्मान और सुरक्षा का प्रतीक है। इसमें चार अत्यधिक अलंकारिक नक्काशी वाले तोरण द्वार तथा एक वेदिका है जो पूरी संरचना को घेरे हुए है।

साँची की व्युत्पत्ति

साँची नाम की उत्पत्ति संस्कृत तथा पालि शब्द सांच से हुई है जिसका अर्थ है- किसी विशेष आकार का होना। यद्यपि, हिन्दी में साँची या सांच का अर्थ है- प्रस्तरों का ढाँचा। दूसरी शताब्दी ई.पू. में एक समय स्तूप को नष्ट कर दिया गया था। यह घटना शुंग वंश के

राजा पुष्यमित्र शुंग के समय से संबंधित है जो मौर्य साम्राज्य में सेना प्रमुख से राजा बना था। यह सुझाव दिया जाता है कि संभवत पुष्यमित्र ने मूल स्तूप को नष्ट किया और उसके पुत्र अग्निमित्र ने इसे पुनः निर्मित किया था। शुंग वंश के शासन के परवर्ती काल में, स्तूप को प्रस्तर की पट्टियों के साथ अपने मूल आकार से लगभग दोगुना कर दिया गया था। एक वर्गाकार रेलिंग के अंदर गुंबद का शीर्ष भाग समतल रखा गया जिसके ऊपर तीन छत्रों का ताज रखा गया। अपने कई स्तरों सहित यह बुद्ध, धम्म और संघ का प्रतीक है। गुबंद को एक गोलाकार चबूतरे पर स्थापित किया गया जो प्रदक्षिणा के लिए था, जहाँ एक दोहरी सीढ़ी से होकर पहुँचा जा सकता है। दूसरा प्रस्तर मार्ग भूतल पर एक प्रस्तर की वेदिका से जुड़ा हुआ है जिसके चार प्रमुख स्मारकीय द्वार (तोरण) मुख्य दिशाओं की ओर हैं। ऐसा लगता है कि शुंग वंश के शासनकाल में जो स्तूप बनाए गए, वे दूसरा और तीसरा स्तूप हैं लेकिन प्रवेश द्वार अलंकृत नहीं है जबकि परवर्ती सातवाहन काल के विशाल स्तूप का प्रस्तर, आवरण और मूल वेदिका अत्यधिक अलंकृत हैं।

सातवाहन काल

ऐसा लगता है कि सातवाहन काल में वेदिका एवं तोरण (द्वार) बनवाए गए। एक शिलालेख के अनुसार दक्षिण के तोरण का शीर्ष पादांग सातवाहन राजा सतकर्णी को शिल्पकार से उपहार स्वरूप मिला- यह आनंद वसिथि पुत्र की ओर से उपहार है जो राजन सतकर्णी के कारीगरों का प्रमुख है।

डी.सी. सरकार ने निरीक्षण किया कि पुरालिपिशास्त्र के अनुसार हाथीगुफा अभिलेख नानेघाट अभिलेख की तुलना में कुछ परवर्ती है जबकि हाथीगुफा शिलालेख की लिपि सतकर्णी के साँची शिलालेख के अक्षरों से समानता रखती है। खारवेल ने अपने अभिलेख में एक सतकर्णी का उल्लेख किया है, जिसकी पहचान द्वितीय सतकर्णी के रूप में हुई तथा जो साँची में अभिलिखित है। अगर यह सत्य है तो साँची के तोरण तथा वेदिका का समय 180-160 ई.पू. युग से बहुत पहले का होगा।

कथात्मक मूर्तियों से छतदार तोरण लकड़ी की तरह निर्मित किए गए और उन पर नक्काशी की गई थी, हालांकि वे प्रस्तर से बने थे। उन्होंने बुद्ध के जीवन की घटनाओं को एकीकृत रूप में प्रदर्शित किया जिससे दर्शक परिचित हो सकें और बौद्ध मत का महत्त्व अपने जीवन में समझना, उनके लिए आसान हो। स्थानीय जनता सौभाग्य प्राप्त करने के लिए

साँची एवं अन्य स्तूपों के अलंकरण के लिए धन दान करती थी। उस समय कोई प्रत्यक्ष राजकीय संरक्षण नहीं था तथा स्त्री और पुरुष एक साथ दान करते थे। उन्हें प्रायः बुद्ध के जीवन की घटनाओं पर आधारित मूर्ति दी जाती थी और फिर उस पर उनका नाम लिखा जाता था। स्तूप पर विशेष घटनाओं की पुनरावृत्ति का यह लेखा चलता रहता था। मानव आकृति के रूप में बुद्ध इन शिलाखण्डों की नक्काशी पर चित्रित नहीं थे। शिल्पकारों ने मानव आकृति के स्थान पर उन्हें निश्चित प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जैसे- घोड़ा जिस पर सवार होकर, उन्होंने अपने पिता का घर छोड़ा, चरणपाद, छत्र और बोधिवृक्ष। उस समय बुद्ध के लिए मानव शरीर के चित्रण को तुच्छ माना जाता था। साँची स्तूप के तोरणों पर निर्मित कुछ चित्रवल्लरियों में उपासकों को यूनानी पहनावे में स्तूप की पूजा करते हुए दर्शाया गया है।

परवर्ती काल

आगे की शताब्दियों में स्तूपों और अन्य बौद्ध संरचनाओं में आरंभिक हिन्दू संरचनाओं को जोड़ा गया। यह विस्तार 12वीं शताब्दी तक चला। मंदिर नं. 17 संभवतः आरंभिक बौद्ध संरचनाओं में से एक है क्योंकि इसका समय आरंभिक गुप्त काल का लगता है। इसमें एक सपाट छत वाला चौकोर गर्भगृह है जिसमें एक द्वारमंडप और चार स्तंभ हैं। स्तूप के आंतरिक एवं तीन बाहरी भाग सादा और अनलंकृत हैं। किंतु अग्रभाग और स्तंभों पर परिष्कृत नक्काशी की गई है जो स्तूप को लगभग एक अति उत्कृष्ट रूप प्रदान करते हैं। भारत में बौद्ध धर्म के पतन के साथ साँची के स्मारकों का उपयोग भी बंद हो गया और राज्य के अंदर अदृश्य हो गए।

पश्चिमी विद्वानों द्वारा साँची स्तूप की पुनः खोज

सन् 1818 में एक अंग्रेज अधिकारी, जनरल टेलर अंग्रेजी में साँची के अस्तित्व पर दस्तावेज प्रस्तुत करने वाले पहले ज्ञात पश्चिमी इतिहासकार थे। जब तक पुनरूद्धार का कार्य आरंभ नहीं हुआ था तो सन् 1881 तक अव्यवसायी पुरातत्त्वविदों तथा खजाना खोजने वाले शिकारियों ने स्थल को बहुत क्षति पहुँचाई। सन् 1912 तथा 1919 के मध्य सर जॉन मार्शल की देखरेख में इमारतों को उनकी वर्तमान स्थिति में बहाल किया गया। आज साँची की पहाड़ी पर लगभग पचास स्मारक हैं जिनमें तीन स्तूप तथा कई विहार शामिल हैं।

साँची की जनसांख्यिकी

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार साँची की जनसंख्या 6785 थी जिसमें 53% पुरुष और 47% स्त्रियां थीं। साँची की औसत साक्षरता दर 67% थी जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 75% थी जबकि स्त्रियों की साक्षरता दर 57% थी जो राष्ट्रीय औसत साक्षरता दर 59.5% से उच्च थी। साँची में 16% जनसंख्या 6 वर्ष की आयु के नीचे थी।

अध्याय -3

भारत में राज्यवार स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

अपने नाम के अनुसार, यह खंड आपको भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित बौद्ध स्थलों से परिचित कराता है। एक बौद्ध पर्यटक के रूप में यहाँ गंतव्यों से हमारा तात्पर्य उन सभी राज्यों से है जो आपके लिए महत्त्वपूर्ण हैं और जिनकी यात्रा के लिए आप भारत में भुगतान करते हैं। ये राज्य या तो स्वयं गौतम बुद्ध या बौद्ध धर्म के प्रमुख विद्वानों से संबंधित हैं और आपको आकर्षित करने के लिए इनके पास अनेक बौद्ध आकर्षण हैं।

इस खंड में आपको राज्य के विषय में, राज्य में बौद्ध धर्म के महत्त्व, प्रसिद्ध बौद्ध स्थलों एवं स्मारकों के साथ-साथ आसपास के अन्य आकर्षणों की भी जानकारी मिलेगी। इसके अलावा, विभिन्न साधनों तथा स्थानों से राज्य तक कैसे पहुँच सकते हैं, इसकी भी जानकारी दी गई है।

एक बार जब आप इन स्थलों के विषय में पढ़ लेंगे, तो आप समझ जाएंगे कि इन राज्यों की यात्रा क्यों महत्त्वपूर्ण हैं और वे कौन से आकर्षण हैं जिन्हें आप अपनी यात्रा के दौरान देख सकते हैं और उनका आनंद ले सकते हैं। इसलिए, आगामी छुट्टियों के लिए अपनी यात्रा की योजना बनाएं और इन राज्यों की यात्रा करें। भारत के बौद्ध स्थलों की यात्रा निश्चित रूप से आपके मन पर अपनी छाप छोड़ेगी।

बिहार

बिहार, भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक राज्य है। बिहार अपनी राजधानी पटना (प्राचीन काल में पाटलिपुत्र) सहित कभी प्राचीन भारत का सबसे विकसित क्षेत्र था। मौर्य एवं गुप्त शासकों ने यहाँ शासन किया तथा यह प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ चाणक्य की भूमि है जिन्होंने *अर्थशास्त्र* ग्रन्थ लिखा था। किन्तु, आज कर्ण, बुद्ध, महावीर, गुरु गोविंद सिंह तथा अशोक की यह भूमि दुर्भाग्य से भारत के सबसे पिछड़े राज्यों में से एक है। बिहार कृषि पर आधारित राज्य है तथा यहाँ गंगा नदी से सिंचाई होती है। राज्य प्रबल राजनीतिक अराजकता का मुक्तभोगी रहा है किन्तु यह अभी भी अपने पर्यटकों को अनेक भेंट प्रदान करता है।

बिहार में बौद्ध धर्म का महत्त्व

बिहार शब्द संस्कृत शब्द विहार से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है- निवास स्थान। यह स्वयं विहारों के साथ बिहार के संबंध को स्पष्ट करता है। बौद्ध धर्म के सन्दर्भ में बिहार की भूमि सबसे समृद्ध स्थलों में से एक मानी जाती है क्योंकि इसने एक युवा संन्यासी सिद्धार्थ पर ज्ञान के दैवीय प्रकाश की वर्षा की थी। जिसने सत्य की खोज के लिए जीवन की सभी सुख-सुविधाओं को त्याग दिया था। तथागत ने बिहार के विभिन्न स्थलों पर अनेक उपदेश दिए जिनमें वैशाली एवं राजगीर कुछ नाम हैं। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनके शिष्यों ने बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को आगे बढ़ाया तथा नालंदा एवं विक्रमशिला में कई महाविहार स्थापित किए। बौद्ध धर्म के इतिहास में सम्राट अशोक के योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि वह अशोक ही था, जिसने बौद्ध बनने के बाद बौद्ध धर्म को राजधर्म के रूप में संरक्षण दिया। इसकी शिक्षाओं को भारत के साथ-साथ विदेश में श्रीलंका, ग्रीक एवं मिस्र तक फैलाया था।

बिहार में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

बोधगया- यह बिहार के अत्यधिक पवित्र बौद्ध स्थलों में से एक है। वह बोधगया ही था, जहाँ युवा संन्यासी सिद्धार्थ गौतम जीवन के सत्य की खोज में आए और पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान लगाया और ज्ञान प्राप्त किया। आज बोधगया महाबोधि मंदिर तथा अनेक विहारों की पवित्र भूमि है।

वैशाली- जब सिद्धार्थ गौतम ने एक संन्यासी के रूप में घर छोड़ा था तो उन्होंने सबसे पहले वैशाली की यात्रा की थी जो बिहार में पटना के पास स्थित है। वैशाली मंदिरों, विहारों एवं स्तूपों से सुशोभित स्थल है तथा यहाँ एक स्तूप में बुद्ध के अवशेष हैं। बौद्धों, जैनों तथा अन्य पर्यटकों द्वारा वैशाली की निरंतर यात्राएँ की जाती हैं।

राजगीर- सिद्धार्थ गौतम परम सत्य की खोज के दौरान एक बार राजगीर गए और फिर इस स्थल पर बुद्ध के रूप में वापस लौटे और यहाँ कुछ समय व्यतीत किया। यह माना जाता है कि राजगीर में दो शैलकर्त गुफाएँ तथागत का प्रिय आश्रय स्थल थीं तथा वहाँ उन्होंने दो उपदेश दिए थे। वैभव पहाड़ी, अजातशत्रु का क़िला तथा स्वर्ण भंडार जैसे कई आकर्षणों सहित राजगीर एक छोटा सा शहर है। यह हिन्दुओं के साथ-साथ जैनों के लिए भी एक पवित्र स्थल है।

राज्य में प्रमुख बौद्ध स्मारक

महाबोधि मंदिर- यह मंदिर बोधगया में स्थित है। मूलत: इसे सम्राट अशोक ने बनवाया था। मंदिर के भवन में एक 150 फीट ऊँची मीनार है।मंदिर में भगवान बुद्ध की एक भव्य प्रतिमा है, जिस पर सोने की परत चढ़ी है। मंदिर की वास्तुकला भव्य एवं शानदार होने के साथ-साथ बहुत मनोहर है।

बोधिवृक्ष- बोधगया में स्थित बोधिवृक्ष सभी बौद्धों के लिए अत्यधिक पूजनीय स्थान है क्योंकि यह उस पीपल के वृक्ष का अंश है जिसके नीचे एक युवा संन्यासी ने अपनी सत्य की खोज पूर्ण की तथा ध्यान किया और संबोधि का दैवी प्रकाश प्राप्त किया था। 160 वर्ष पुराना बोधिवृक्ष, मूल वृक्ष की पाँचवीं पीढी का वृक्ष है जो 80 फीट ऊँचा है।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय- इस महाविहार के खंडहर भागलपुर (50 कि.मी.) के पास स्थित हैं। धर्मपाल द्वारा निर्मित विक्रमशिला महाविहार आठवीं शताब्दी के दौरान तंत्रयान के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ था।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

पटना- यह बिहार की राजधानी है। यह गंगा नदी के तट पर स्थित है। प्राचीन काल में यह पाटलिपुत्र के नाम से विख्यात थी। तत्कालीन बिहार में पटना केवल सभी बौद्ध स्थलों के लिए एक प्रमुख प्रवेश द्वार ही नहीं थी बल्कि राज्य का सांस्कृतिक केन्द्र भी थी। यह अनेक स्मारकों जैसे- गोलघर, सदाकत आश्रम एवं तख्त श्री हर मंदिर जी के साथ-साथ कुम्हरार, पटना जैसे कई संग्रहालयों का घर है। बुद्ध ने गंगा नदी पार करते समय पटना का भ्रमण किया था।

गया- यह बुद्ध के संबोधि स्थल बोधगया का घर है। यह हिन्दुओं के लिए भी पवित्र स्थल है जो प्रसिद्ध विष्णुपाद मंदिर के दर्शन के लिए आते हैं। यहाँ भगवान विष्णु ने मृत्यु की वास्तविकता का उपदेश दिया था। यह शहर सूती वस्त्र, जूट तथा चीनी और पत्थर के उद्योगों के साथ-साथ तम्बाकू एवं पान के पत्तों के व्यापार के लिए भी प्रसिद्ध है।

मधुबनी- यह मधुबनी कला का केन्द्र है। विश्व में अपनी चित्रकला के लिए प्रसिद्ध है तथा क्षेत्र की महिलाओं ने इस लोक कला को आगे बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त, मधुबनी देवी

काली के मंदिरों में तांत्रिक साधना तथा दरभंगा के पूर्व प्रतापी शासकों के महलों के अवशेषों के लिए भी प्रसिद्ध है।

मौसम

दिसम्बर और जनवरी के महीनों में सर्दी जबकि अप्रैल, मई तथा जून के महीनों में गर्मी रहती है। सर्दियों के समय तापमान 5 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे चला जाता है जबकि गर्मियों में तापमान 46-47 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर के महीनें में अच्छी वर्षा होती है। सुहावने मौसम के कारण अक्तूबर, फरवरी तथा मार्च के महीने यात्रा के लिए सबसे उत्तम हैं।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश अपने दैवत्व एवं पवित्रता के लिए प्रसिद्ध है तथा वह स्थान है जो सारे संसार को समृद्ध संस्कृति एवं विरासत प्रदान करता है। यह भारत के इतिहास की प्रत्येक घटना में शुरू से निरंतर अपनी उपस्थिति बनाए हुए है तथा सभी हिन्दुओं के मन में प्रमुख स्थान रखता है। इस स्थान की मिट्टी और भूमि हिन्दू मन और आत्मा के बहुत नजदीक है। प्राचीन भारत की इस पूजनीय भूमि पर दुनिया के प्रमुख धर्मों के पवित्र स्थल और मंदिर हैं। इसके अलावा, दुनिया के कई अद्‌भुत स्थापत्यों का घर होने के कारण पर्यटन की दुनिया के मानचित्र पर अपनी जगह बनाई है।

ऐसा माना जाता है कि वाराणसी को भगवान शिव एवं देवी पार्वती ने बसाया था। यह हिन्दुओं के लिए सबसे अधिक पूजनीय स्थल है। इसके अलावा, भगवान राम और कृष्ण का जन्म स्थल भी है। उत्तर प्रदेश संसार के बौद्धों के लिए भी कम पूजनीय नहीं है क्योंकि यहाँ उनके दो सबसे पवित्र स्थल सारनाथ और कुशीनगर स्थित हैं। ये स्थल नेपाल की सीमा के पास स्थित हैं तथा चार प्रमुख पवित्र स्थलों में से दो हैं। दुनियाभर के पर्यटकों द्वारा इन स्थलों यात्राएँ की जाती हैं और लोगों के हृदय में इन स्थलों के प्रति असीम श्रद्धा है।

उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का महत्त्व

बुद्ध को सत्य की अनुभूति मगध (बिहार) में हुई जबकि संबोधि बोधगया में प्राप्त हुई। निर्वाण प्राप्ति के बाद बुद्ध ने उसी स्थल पर सात सप्ताह चिंतन किया और फिर अपने पाँच संन्यासी साथियों की खोज में उत्तर प्रदेश की ओर चल दिए जो पहले उनके साथ थे। वे

सारनाथ में मिले और बुद्ध के मुखमंडल की चमक देखकर आश्चर्यचकित रह गए। बुद्ध ने उन्हें विश्वस्त किया और उनके सम्मुख मध्यम मार्ग पर आधारित अपना प्रथम उपदेश दिया। बुद्ध ने अपने जीवन के अगले 45 वर्षों में उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थलों सहित बिहार के कई क्षेत्रों में महापरिनिर्वाण तक भ्रमण किया।

बाद में, मुख्य रूप से सम्राट अशोक तथा गुप्त शासकों ने बौद्ध धर्म को उत्तर प्रदेश की भूमि के साथ-साथ भारत के अन्य भागों में भी प्रचारित किया। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म अपना लिया और बौद्ध स्थलों की यात्रा पर गए और धम्म की शिक्षाओं को स्तंभों एवं शिलालेखों पर अंकित किया तथा अनेक स्तूप एवं विहार बनवाए। भारत में इस परम्परा का अनुसरण 12वीं शताब्दी में तुर्कों एवं अरबों के आगमन से पूर्व तक रहा तथा उसके बाद मुस्लिम आक्रांताओ ने विहारों को नष्ट कर दिया। किन्तु 19वीं तथा 20वीं शताब्दी में भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूद्धार हुआ। अन्य बौद्ध स्थलों की तरह उत्तर प्रदेश के स्थलों का भी जीर्णोद्धार किया गया ताकि राज्य को भारत में प्रमुख बौद्ध स्थलों एक मेजबान बनाया जा सके।

उत्तर प्रदेश में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

सारनाथ- यह स्थल उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास स्थित है। यह बौद्ध समुदाय के लिए एक पूजनीय स्थल है क्योंकि यह बुद्ध के प्रथम उपदेश का प्रतीक है और धर्मचक्र प्रवर्तन के रूप में प्रसिद्ध है। वह सारनाथ था जहाँ बुद्ध अपने पूर्व साथियों से मिले और उन्हें मध्यम मार्ग का उपदेश दिया। बौद्ध धर्म के त्रि-रत्न (बुद्ध, धम्म एवं संघ) की उत्पत्ति के संकेत सारनाथ में मिलते हैं। सारनाथ के पवित्र स्मारकों में धम्मेख स्तूप, अशोक स्तंभ, मूलगंधकुटी विहार आदि शामिल हैं।

कुशीनगर- पाँचवीं शताब्दी ई.पू. में जब भगवान बुद्ध ने उत्तर प्रदेश में हिरण्यवती नदी के पास कुशीनगर में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया, तब से यह बौद्धों के लिए एक पूजनीय स्थल बन गया। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, पूरा गाँव स्तूपों सहित एक स्मारक स्थल में बदल गया जिनमें से एक में बुद्ध के पवित्र अवशेष रखे हैं।

संकिसा- यह उत्तर प्रदेश में स्थित है। ऐसी मान्यता है कि स्वर्ग में अपनी माता को उपदेश देने के बाद बुद्ध, इन्द्र और ब्रह्मा देवता के साथ जिस स्थल पर नीचे उतरे थे, वह संकिसा था। यह पवित्र स्थल बुद्ध विहार एवं अशोककालीन स्तंभ का केन्द्र है।

कौशांबी- बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद छठे तथा नवें वर्ष में प्राचीन कौशांबी नगर की यात्राएं की थीं जो कि वर्तमान में खंडहर है। अपनी दोनों यात्राओं के दौरान भगवान बुद्ध ने यहाँ अनेक उपदेश दिए जिनका बाद में श्रावस्ती के लोगों ने पालन किया तथा आज तक अनुसरण करते हैं। आज भी कौशांबी में अनेक भग्नावशेष मौजूद हैं। किन्तु, कौशांबी का खजाना हमें भारत में बौद्ध धर्म के स्वर्णिम दिनों की याद दिलाता है जैसे- अशोककालीन स्तंभ, पुराना क़िला।

श्रावस्ती- यह बुद्ध के 24 वर्षावासों के उपदेशों का साक्षी है। माना जाता है कि बुद्ध ने लंबी अवधि तक जेतवन उद्यान में निवास किया और अनेक उपदेश दिए। जेतवन उद्यान में आनंद बोधिवृक्ष, स्तूप, मंदिर और कुटी के खंडहरों सहित श्रावस्ती आज भी धन्य है।

राज्य में प्रमुख बौद्ध स्मारक

धम्मेख स्तूप, सारनाथ- यह सारनाथ में स्थित है। वह स्थल है जहाँ बुद्ध ने अपने पाँच शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया था।

निर्वाण स्तूप, कुशीनगर- इसे रामभार स्तूप भी कहा जाता है। यह ईंटों से बनी विशाल इमारत है जहाँ बुद्ध का अन्त्येष्टि विधान हुआ था।

प्राचीन कौशांबी के खंडहर, कौशांबी- उत्तर प्रदेश में प्राचीन नगर कौशांबी के खंडहर मठों, स्तूपों, स्तभों और कई मूर्तियों से समृद्ध एक विशाल बौद्ध स्थल को प्रकट करता है। इस पूजनीय स्थल के विषय में मान्यता है कि बुद्ध ने इसकी दो बार यात्रा की और यहाँ अनेक उपदेश दिए थे।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

आगरा- यह यमुना नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह ताजमहल के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। हालांकि, आगरा अपने मकबरों, क़िलों एवं कब्रिस्तानों के लिए भी प्रसिद्ध है जो अपनी भव्य वास्तुकला शैली के कारण संपूर्ण विश्व से बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

लखनऊ- यह उत्तर प्रदेश की राजधानी है। यह गोमती नदी के किनारों पर स्थित है। यह भारत के सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। यह अपने आतिथ्य-सत्कार, भव्य

वास्तुकला, रेशम, चिकनकरी, संगीत की विरासत तथा अपने आकर्षक व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। किसी समय लखनऊ शहर का सौंदर्य अवध के गौरव के रूप में प्रसिद्ध था। यह मध्यकालीन युग से संबंधित अपने सुन्दर उद्यानों, स्थलों तथा स्मारकों के लिए भी प्रसिद्ध है।

वाराणसी- मार्क ट्वीन के अनुसार "बनारस इतिहास से भी पुराना है, परंपरा से भी पुराना है और यहाँ तक कि दंतकथाओं से भी पुराना है और इन सभी को मिलाकर देखने से दोगुना पुराना लगता है।"

वाराणसी पहले बनारस के नाम से प्रसिद्ध था तथा विश्व के प्राचीन शहरों में से एक है। यह गंगा नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। वाराणसी शहर को भगवान शिव का आशीर्वाद माना जाता है। इसलिए तीर्थयात्रियों द्वारा यहाँ की निरंतर यात्राएँ की जाती हैं। हिन्दू देवताओं के अनेक मंदिरों और स्नान घाटों के अलावा आध्यात्मिक नगरी वाराणसी कला एवं शिल्प, शास्त्रीय संगीत, बनारसी सिल्क साड़ियों तथा सिल्क ज़री के साथ-साथ शिक्षा केन्द्र के रूप में भी प्रसिद्ध है।

मथुरा- यह हिन्दुओं का एक प्रमुख तीर्थस्थल है। हिन्दू पुराणशास्त्र के अनुसार यहाँ भगवान कृष्ण का जन्म, उनके मामा कंस के शासनकाल में एक कारागार में हुआ था। धार्मिक नगरी मथुरा यमुना नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है और जिसका मुख्य आकर्षण बृजभूमि है। स्थल के सुन्दर घाट यमुना नदी को गौरव प्रदान करते हैं जो किसी समय नटखट कृष्ण की बाल लीलाओं के साक्षी थे। इन घाटों के चारों ओर धनुषाकार द्वार और मंदिर हैं।

वृंदावन- यह मथुरा से 15 किलोमीटर दूर है और एक हिन्दू तीर्थस्थल है। ऐसी मान्यता है कि यह कभी भगवान कृष्ण और उनकी प्रिय राधा के शाश्वत प्रेम का साक्षी था। आज यह अनेक हिन्दू मंदिरों के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है जो राधा-कृष्ण को समर्पित हैं।

राज्य में अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारक

ताजमहल, आगरा- यह अनंत प्रेम का प्रतीक है, जिसे मुगल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में बनवाया था। पूरी दुनिया से पर्यटक ताजमहल के सफेद संगमरमर सहित इसकी भव्य वास्तुकला एवं सौंदर्यपरक खूबसूरती का दर्शन करने के लिए आते हैं। यह संसार के आठ आश्चर्यों में से एक है।

फतेहपुर सिकरी, आगरा- मुगल बादशाह अकबर ने फतेहपुर सिकरी शहर को महान संत शेख सलीम चिश्ती के सम्मान में बनवाया था जिनकी कृपा से बादशाह को पुत्र सलीम का आशीर्वाद प्राप्त हुआ जो जहाँगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। फतेहपुर सिकरी एक विरासत स्थल है जो न केवल हिन्दू तथा मुस्लिम वास्तुकला के अद्वितीय मिश्रण का प्रतीक है,बल्कि रमजान के पवित्र महीने के दौरान बड़ी संख्या में तीर्थयात्री भी देखे जाते हैं।

आगरा का क़िला, आगरा- इसे मुगल बादशाह अकबर ने बनवाया था। यह उत्तर प्रदेश के महत्त्वपूर्ण आकर्षणों में से एक है। यह लाल बलुआ पत्थर से बनी एक विशाल इमारत है तथा क़िले के अन्दर अनेक भवन एवं हॉल हैं। इसकी बगल में यमुना नदी बहती है जो इस विशाल इमारत की सुन्दरता में चार चाँद लगाती है।

काशी विश्वनाथ मंदिर, वाराणसी- यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और वाराणसी में गंगा नदी के तट पर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि मंदिर में स्थापित शिवलिंग में दैवी शक्तियाँ हैं तथा 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

स्नान घाट, वाराणसी- स्नान घाट गंगा नदी के तट पर 4 किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं। स्नान घाट एक अनोखा दृश्य प्रस्तुत करते हैं, विशेषकर शाम के समय जब उपासक देवी गंगा की आरती उतारते हैं। ऐसी मान्यता है कि वाराणसी के घाटों पर दाह-संस्कार करने से मृतक को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

बड़ा इमामबारा, लखनऊ- यह स्मारक असफाक-उद-दौला ने 1784 ई. में अकाल सहायता परियोजना के रूप में बनवाया था। जिसकी इमारत क़िले की तरह है तथा यह पर्यटकों को अपनी भव्य इमारत के कारण आकर्षित करता है।

श्री कृष्ण जन्म-भूमि, मथुरा- यह हिन्दुओं का प्रमुख धार्मिक स्थल है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ भगवान कृष्ण ने अपने मामा कंस की कारावास में जन्म लिया था।

मौसम

उत्तर प्रदेश की जलवायु उष्णकटिबंधीय है। हालांकि, सिर्फ वर्षा ऋतु में कुछ भिन्नता होती है। यह अन्तर ऊँचे स्थानों की ओर होता है। मध्य नवम्बर से जनवरी के महीनों के दौरान सर्दियां पड़ती हैं तथा तापमान 4 डिग्री सेल्सियस से भी नीचे पहुँच जाता है। गर्मियां

प्रायः गरम होती हैं तथा अत्यधिक गर्मी पड़ती है तथा तापमान 46 डिग्री सेल्सियस से ऊपर पहुँच जाता है। जुलाई से सितम्बर तक वर्षा ऋतु के मौसम में राज्य के पूर्वी भाग में भारी वर्षा होती है, हालांकि इसके पूर्वोत्तर की ओर कम वर्षा होती है। अक्तूबर से मार्च तक का समय राज्य के स्थलों की यात्रा के लिए सबसे उत्तम है।

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश 55658 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को घेरे हुए है तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में स्थित है। इसकी सीमा उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम में जम्मू-कश्मीर जबकि दक्षिण में हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश के साथ लगती है। इस तरह इसका क्षेत्र दक्षिण-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम में पंजाब तथा उत्तरांचल तक फैला हुआ है। अंत में, इसके पूर्व में तिब्बत है। इसकी राजधानी शिमला एक सुन्दर पहाड़ी स्थल है। हिमाचल प्रदेश प्रमुख रूप से एक पहाड़ी राज्य है तथा प्राचीन धर्मग्रन्थों में देव भूमि के रूप में उल्लिखित है। आज यह पर्यटन स्थलों की अधिकता, आमोद-प्रमोद की क्रियाओं के कारण ही पर्यटकों को दूर-दराज से आकर्षित करता है। हालांकि, इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र की मनोहर प्राकृतिक सुन्दरता है जैसे- बर्फ से ढकी चोटियां, हरी-भरी घाटियां, तेज बहाव वाली नदियां, धाराओं की गड़गड़ाहट, शांत झीलें तथा बलूत एवं देवदार के घने जंगल। आध्यात्मिक शांति हमेशा इस तरह के वातावरण में प्राप्त होती है।

हिमाचल प्रदेश में बौद्ध धर्म का महत्त्व

तीसरी शताब्दी ई.पू. में सम्राट अशोक ने हिमाचल प्रदेश में बौद्ध धर्म का परिचय कराया और राज्य में अनेक स्तूप निर्मित किए। उनमें से एक स्तूप का वर्तमान कुल्लू घाटी में पता चला है, जिसका ह्वेनसांग के यात्रावृत्तांत में भी विवरण मिलता है।

यद्यपि, आज राज्य में हिन्दू बहुसंख्यक हैं फिर भी बौद्ध प्रभाव कम नहीं हुआ है। इसका प्रमुख कारण चौदहवें उच्चाधिकार प्राप्त तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा, तेनजिंग ग्यात्सो की उपस्थिति है। सन् 1960 से पहले जब तिब्बत में चीनी आक्रमण हुए तो निर्वासित दलाई लामा ने अपने 85000 तिब्बती अनुयायियों के साथ मैकलोडगंज में शरण ली जो पूर्व में अंग्रेजो की एक छावनी था। राज्य में उनके प्रयास केवल तिब्बत की संस्कृति का विकास करना ही नहीं है बल्कि पिछले चार दशकों में सम्पूर्ण तिब्बती बौद्ध धर्म उनका

केन्द्र बिन्दु बन चुका है। ताइवान और कोरिया के उपासकों के अनुरोध पर चौदहवें दलाई लामा उन्हें बौद्ध धर्म की शिक्षा प्रदान करते हैं।

ऊपरी धर्मशाला में मैकलोडगंज के अतिरिक्त, लाहौल तथा स्पीति में भी बौद्धों की मजबूत उपस्थिति है। इन क्षेत्रों में कई मठ हैं जो बौद्ध कला एवं संस्कृति को दृढ़ता के साथ संरक्षित करते हैं।

हिमाचल प्रदेश में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

मैकलोडगंज- आज यह चार दशकों से तिब्बत के निर्वासित दलाई लामा का निवास स्थान बन चुका है। यहाँ वे अपनी शिक्षाओं और जटिल कालचक्र धर्मानुष्ठान का संचालन करते हैं।

रिवालसर- बौद्ध उपासकों के बीच इस स्थान के प्रति असीम श्रद्धा है। श्रद्धा का कारण यहाँ से गुरु पद्मसंभव ने धर्म प्रचार के क्रम में तिब्बत की ओर प्रस्थान किया था। वे गुरु रिम्पोचे के नाम से प्रसिद्ध हैं तथा तिब्बत में महायान बौद्ध के प्रसार के लिए उत्तरदायी हैं। यह माना जाता है कि रिवालसर झील में गुरु पद्मसंभव की आत्मा निवास करती है। झील के सामने दो तिब्बती विहार हैं।

लाहौल-स्पीति- लाहौल और स्पीति घाटी कई प्रसिद्ध बौद्ध गोंपाओं का घर है। दुनियाभर से पर्यटक इन बौद्ध स्मारकों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए यहाँ की यात्रा करते हैं।

किन्नौर- यह हिमाचल प्रदेश के कम यात्रा करने वाले जिलों में से एक है तथा भारत-तिब्बत सीमा के पास स्थित है। इसकी तिब्बत की ओर निकटता के कारण किन्नौर के लोग तिब्बत की रहन-सहन की शैली से बहुत अधिक प्रभावित हैं। हिन्दू बहुसंख्यक हैं किन्तु बौद्धों की जनसंख्या भी काफी है, विशेषकर उत्तरी एवं मध्य क्षेत्र में। लगभग सभी गाँवों में एक गोंपा या मंदिर है। यहाँ कुछ प्रसिद्ध बौद्ध स्थल हैं जिनमें मोरंग, पुह, नाको तथा चांगो गाँव शामिल हैं।

राज्य में प्रमुख बौद्ध स्मारक

गुरु घंटाल मठ- मठ के भवन में गुरु पद्मसंभव की मूर्ति के साथ-साथ बृजेश्वरी देवी तथा अन्य लामाओं की प्रतिमाएँ स्थापित हैं। मठ की मूर्तियाँ अन्य मठों से भिन्न हैं क्योंकि वे

चिकनी मिट्टी की बजाय लकड़ी से बनी हैं। पहले, मठ में घंटाल के नाम से एक उत्सव मनाया जाता था जिसमें लामाओं और ठाकुरों के आने पर दिन भर दावत होती थी। अब यह उत्सव नहीं मनाया जाता है।

धनकर मठ- मठ में पीठासीन देवता 'वैरोचन' की चार मुख वाली प्रतिमा स्थापित है। मठ भोटी भाषा के बौद्ध धर्मग्रन्थों के साथ-साथ मूर्तियों एवं चित्रों के अवशेषों का भी संरक्षक है।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

शिमला- भारत में शिमला पहले अंग्रेजों की ग्रीष्म-आवास की राजधानी थी तथा आज यह हिमाचल प्रदेश की राजधानी है। बर्फ से ढकी चोटियां, सेबों, देवदार के जंगलों तथा फूलों सहित शिमला का प्राकृतिक सौंदर्य मनमोहक है। माल रोड़, शिमला के आकर्षण का केन्द्र है। इसके अन्य आकर्षणों में जल प्रपात, राज्य संग्रहालय एवं पुस्तकालय तथा हिन्दू मंदिर शामिल हैं।

मनाली- यह कुल्लु घाटी में सबसे महत्त्वपूर्ण शहर है। यह शिमला से लगभग 274 किलोमीटर दूर है। व्यास नदी के साथ विशाल पीर पंजाल और बड़ा भंगाल की उच्च पर्वतमालाएं स्थान की सुन्दरता को बढ़ाती हैं। मनाली प्रत्येक प्रकृति प्रेमी की पसंद है। इसके अतिरिक्त, उन लोगों के लिए एक विकल्प है जो थोड़ा-सा साहसिक काम करना पसंद करते हैं।

पालमपुर- यह कांगड़ा घाटी में धर्मशाला से लगभग 38 किलोमीटर दूर स्थित है। इसका मुख्य आकर्षण चाय के बगानों में स्थित होना है। चारो ओर फैली अत्याधिक हरियाली सुन्दरता और ताजगी का एहसास कराती है। यहाँ की चाय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों बाजारों में बेची जाती है। इसके अलावा, ताशीजोंग मठ शहर से मात्र 12 किलोमीटर दूर है। इसका निर्माण दलाई लामा के भारत आगमन तथा निवास के बाद हुआ था। इसमें गलीचा, बौद्ध थांकाचित्र तथा तिब्बत के अन्य शिल्प बेचे जाते हैं।

जम्मू-कश्मीर

यह उत्तर भारत का राज्य है अथवा देश का ताज है। इसके दक्षिण में हिमाचल प्रदेश के रूप में एक सुन्दर पड़ोसी राज्य है। इसके उत्तर और पूर्व में चीन है जबकि पश्चिम में पाकिस्तान है। राज्य संस्कृति और स्थलाकृति में भिन्नता के कारण तीन क्षेत्रों में विभाजित है। हालांकि, जम्मू के वनों में आश्रमों तथा मंदिरों की प्रचुरता है तो कश्मीर बर्फ से ढके पहाड़ों के सामने तथा साफ नीले आकाश के नीचे रत्न की भांति चमक रहा है। दूसरी तरफ, लद्दाख के पास एक ठंडी मरुस्थलीय जीवन शैली है जो भारत की तुलना में तिब्बत से अधिक साम्यता रखता है। यद्यपि राज्य में प्रायः लगातार आतंकवादी हमलों के कारण पहले जैसी चमक नहीं रही है, फिर भी हाल में चीजें बदल रही हैं। अब बहुत सारे लोग दोबारा इस सुन्दर भूमि के पर्यटन स्थलों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर में बौद्ध धर्म का महत्त्व

सम्राट अशोक जिसने शांति के समर्थन में हिंसा को त्याग दिया था, उसे श्रीनगर शहर की स्थापना का श्रेय जाता है। ह्वेनसांग के यात्रावृत्तांत में उल्लेख किया गया है कि बौद्ध भिक्षुओं का आगमन कश्मीर मार्ग से हुआ था। इस क्षेत्र के ब्राह्मण बौद्ध धर्म के प्रति कुछ उदार थे और श्रद्धा रखते थे। हालांकि, 13वीं शताब्दी में मुस्लिम शासन के आरंभ से बौद्ध धर्म के विकास में गतिरोध उत्पन्न हुआ। कई मुस्लिम शासक दूसरे धर्म के उत्थान को पसंद नहीं करते थे।

कश्मीर मार्ग से बौद्ध धर्म लद्दाख, तिब्बत, मध्य एशिया तथा चीन तक फैला। आज, लद्दाख की प्रतिष्ठा लगभग 50 प्रतिशत बौद्ध जनसंख्या तथा पहाड़ियों की चोटी पर स्थित अनेक मठों के कारण है।

जम्मू-कश्मीर में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

लेह-लद्दाख- लद्दाख,जम्मू-कश्मीर का तीसरा भू-सांस्कृतिक क्षेत्र है तथा बौद्ध धर्म का केन्द्र है। लेह, लद्दाख की राजधानी है तथा बौद्ध मठों की यात्रा का आधार है। वास्तव में लेह में दो मठ परिपथ हैं जिन्हें आप लेह में यात्रा के लिए चुन सकते हैं। प्रथम में शेय, थिकसे, सटकना, माथो, चेम्रे, टेकथोक, हेमिस आदि मठ शामिल हैं जबकि दूसरे में स्पितुक, फयांग,

लिकिर, अलची, रिजोंग तथा लामायुरु मठ सम्मिलित हैं। लेह के मठ तिब्बती बौद्ध धर्म के चारों संप्रदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें निंगमापा (सबसे प्राचीन), द्रुक्पा, शाक्यपा तथा गेलुग्पा (संप्रदाय सबसे नया पर सबसे अधिक प्रतिनिधित्व) शामिल हैं।

राज्य में प्रमुख बौद्ध स्मारक

हेमिस मठ- यह लद्दाख का सबसे महत्त्वपूर्ण मठ है। यह क्षेत्र के धनाढय मठों में से एक है। मठ का मुख्य आकर्षण इसका दो दिवसीय वार्षिक उत्सव, हेमिस त्यौहार है जो उस समय पड़ता है जब राज्य में पर्यटकों का आगमन शुरु होता है। अधिकतर पर्यटक मठ के उत्सव में भाग लेते हैं जहाँ भिक्षु मुखौटा पहने होते हैं तथा मजीरों के टकराने पर नृत्य करते हैं। प्रत्येक 12 वर्ष में उत्सव का आकर्षण कई गुणा बढ़ जाता है क्योंकि यह वह समय होता है जब मठ का सबसे अधिक मूल्यवान और मोतियों से जड़ा गुरु पद्मसंभव का विशाल थांकाचित्र लोगों को दिखाने के लिए फहराया जाता है। अंतिम बार, यह 2004 में फहराया गया था।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

जम्मू- यह राज्य की शीतकालीन राजधानी है। इसकी स्थापना राज्य के व्यावसायिक केन्द्र के रूप में हुई थी। उपासक जम्मू से भी अपनी अमरनाथ मंदिर यात्रा शुरू कर सकते हैं।

श्रीनगर- यह पश्चिमी कश्मीर घाटी में 5214 फीट की ऊँचाई पर झेलम नदी के किनारे पर स्थित है। मनोहर मुगल गार्डन, नहरें, स्मारक आदि शहर के मुख्य आकर्षण हैं। डल झील में राजसी शिकारा पर घूमना अनेक पर्यटकों का सपना होता है।

गुलमार्ग- यह श्रीनगर से 96 किलोमीटर दूर स्थित है तथा मछली पकड़ने वालों, ट्रेकरों तथा पर्यटकों का एक प्रिय स्थल है। श्रीनगर से पहलगाम जाने के लिए डिलक्स बसें तथा टैक्सी उपलब्ध हैं।

सोनमार्ग- यह श्रीनगर से पूर्वोत्तर में 80 किलोमीटर दूर है। सोनमार्ग के आसपास पर्यटकों के आकर्षण के लिए नीलग्राड नदी तथा बाल्टिक समुदाय की एक कॉलोनी है जहाँ एक सहायक नदी, सिन्धु नदी में मिलती है। ऐसी मान्यता है कि इसके जल में औषधीय गुण

हैं। संयोग से यह लद्दाख क्षेत्र का प्रवेश द्वार भी है। जोजी-ला दर्रा सोनमार्ग से सिर्फ 20 दूर किलोमीटर है जो लद्दाख पठार तक फैला हुआ है।

सिक्किम

यह भारत के पूर्वोत्तर का एक छोटा-सा प्रदेश है जो नदियों, हरी-भरी घाटियों तथा हिमालय की पर्वतमालाओं के बीच स्थित है जिसके पास पर्यटकों तथा दर्शकों के लिए अनेक भेंट हैं। सिक्किम राज्य अपनी राजधानी गंगटोक सहित छोटे गाँवों, आधुनिक शहरों, सभ्य एवं मेहमाननवाज़ निवासियों तथा विभिन्न धार्मिक मतों के लोगों का राज्य है तथा यह समान मूल्यों एवं सद्भावना के साथ प्यार से रहने वाले लोगों की भूमि है।

सिक्किम में बौद्ध धर्म का महत्त्व

सिक्किम में हिन्दू धर्म के साथ-साथ बौद्ध धर्म के विचार भी एक मुख्य स्थान पर फैले हुए हैं। निंगमापा बौद्ध धर्म का संप्रदाय है जो एक धर्म के रूप में उल्लिखित है जिसके सिक्किम में तिब्बती तथा भूटिया लोग मुख्य अनुयायी हैं। 15वीं-16वीं शताब्दी पूर्व भूमि पर इसके इतिहास का पता चलता है। यह वह समय था जब तिब्बती बौद्धों तथा तांत्रिक परंपराओं पर आधारित अन्य विचारधाराओं में भिन्नता तथा आधिपत्य के कारण संघर्ष हुआ था। इस मतभेद के परिणामस्वरूप सिक्किम के अंदर पुराने संप्रदाय निंगमापा (जो तांत्रिक परपंराओं में विश्वास करता था) का आगमन हुआ। जबकि तिब्बत में दलाई लामा के नेतृत्व में उदार संप्रदाय, गेलुक्पा के प्रभुत्व में वृद्धि हुई। आज सिक्किम अनेक बौद्ध स्मारकों की मेजबानी करता है जो बौद्ध जीवन पद्धति के मूल्यों, संस्कृति तथा परम्पराओं को प्रदर्शित करते हैं।

सिक्किम में स्थित प्रमुख बौद्ध स्मारक

दो द्रुल स्तूप- यह सिक्किम में स्थित है। इसे सन् 1945 में तरूलसी रिम्पोचे ने बनवाया था जो निंगमापा मत का प्रमुख था। यह रुमटेक मठ परिसर में स्थित है और जिसमें दोरजी फुरबा का मंडल चित्र है जिसमें कांग्यूर ग्रंथों का एक सेट, अवशेष तथा अन्य वस्तुएँ शामिल हैं। इसमें 10 प्रार्थना चक्र तथा गुरु पद्मसंभव की दो बड़ी मूर्तियाँ हैं।

मृग उद्यान- सारनाथ जैसा मृग उद्यान सिक्किम में भी स्थित है जो बुद्ध द्वारा सारनाथ के मृगदाय में दिए गए, प्रथम उपदेश का गुणगान करता है। रूसतमजी उद्यान का नाम सिक्किम के चोग्याल दीवान के नाम के कारण पड़ा तथा रूसतमजी ने *एनचांटेड फ्रंटियर्स* पुस्तक भी लिखी थी। उद्यान में भगवान बुद्ध की एक भव्य मूर्ति है जिसके आगे घी का दीपक प्रज्वलित रहता है। मूर्ति के शीर्ष पर बौद्ध विद्वान शांतिदेव की कुछ पंक्तियां सुनहरे अक्षरों संकलित हैं। उद्यान सन् 1950 के बाद स्थापित किया गया था जो हिमालयी भालुओं, लाल पांडाओं तथा मृग की प्रजातियों का केन्द्र है।

खेच्योपालरी झील- यह एक पवित्र झील है तथा सिक्किम की शांत भूमि के घने जंगलों के अंदर स्थित है। यह हिन्दू और बौद्ध दोनों के लिए पूजनीय है।

नामग्याल तिब्बत अध्ययन संस्थान- यह विश्व में महायान संप्रदाय की पांडुलिपियों तथा पुस्तकों के संकलन का वर्तमान में सबसे बड़ा संस्थान है। संस्थान देश - विदेश के बौद्ध विद्वानों के अनुवाद के साथ साथ बुद्ध की शिक्षाओं के लगभग 30 हजार खंड प्रस्तुत करता है।

राज्य में अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारक

युमथांग घाटी- मनोहर युमथांग घाटी 'फूलों की घाटी' के नाम से प्रसिद्ध है तथा विशाल हिमालय के बीच स्थित है। मनोहर घाटी तीसता नदी की तेज बहाव वाली सहायक नदी का क्षेत्र है तथा औषधीय महत्त्व के गर्म पानी के चश्में तथा रंग-बिरंगे फूलों की अनेक प्रजातियों की भूमि है। हालांकि, विदेशी पर्यटक सिक्किम पर्यटन विभाग से अनुमति लेकर ही घाटी की यात्रा कर सकते हैं।

राजकीय कुटीर उद्योग संस्थान- सिक्किम में हथकरघा एवं हस्तशिल्प केन्द्र स्थित है। यह सिक्किम के शिल्पकारों तथा उनके विलक्षण कलात्मक कौशल का संरक्षण एवं प्रचार करता है। संस्थान विभिन्न उत्पादों को प्रदर्शित करता है तथा बेचता है जैसे - हाथ से बुना हुआ गलीचा, कंबल, शाल, थांकाचित्र, फर्नीचर एवं हथकरधा उत्पाद।

ओरचीड उद्यान- यह उद्यान गंगटोक में स्थित है तथा विश्व में पाई जाने वाली फूलों की कई दुर्लभ प्रजातियों का केन्द्र है। पर्यटकों को विभिन्न फूलों के संग्रह के कारण आकर्षित करता है। उद्यान प्रकृति प्रेमियों के लिए एक वरदान है जिसमें 454 प्रकार के फूलों की प्रजातियों का संग्रह है।

चांगु झील- यह सिक्किम की राजधानी गंगटोक से 35 किलोमीटर दूर स्थित है जिसका भूटानी भाषा में अर्थ है- झील का स्रोत। स्थानीय लोग झील को पवित्र मानते हैं। यह 1 किलोमीटर लम्बी, 15 मीटर गहरी तथा आकार में अंडाकार है। शांत झील को चारों ओर से अलपाइन जंगल ने घेरा हुआ है। यह लाल पांडा और ब्रह्मनी बत्तख के जैसे अनेक पशु पक्षियों के लिए एक आश्रय स्थल है जो पर्यटकों के लिए झील की सुंदरता को बढ़ाते हैं। झील की यात्रा विदेशी पर्यटकों के लिए वर्जित है जबकि भारतीय पर्यटक प्रतिबंधित क्षेत्र में अनुमति लेकर जा सकते हैं।

मौसम

सिक्किम की जलवायु स्थान की ऊँचाई तथा स्थिति पर निर्भर करती है तथा एक स्थान की जलवायु दूसरे से भिन्न है। नवम्बर से फरवरी के महीनों के बीच तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से भी निम्न होता है। अप्रैल से जून तक गर्मियों का मौसम होता है। गर्मियां अपेक्षाकृत गर्म होती है फिर भी तापमान 28 डिग्री सैल्सियस से अधिक ऊपर नहीं बढ़ता है। हालांकि, जुलाई से सितम्बर तक मानसून के महीनों में भारी वर्षा होती है।

सिक्किम की यात्रा के लिए अक्तूबर, नवम्बर एवं मार्च के महीने सबसे उपयुक्त हैं। हालांकि, विदेशी पर्यटकों को इस स्थल की यात्रा के लिए आप चाहे जो महीना चुने सिक्किम के सरकारी पर्यटन मुख्यालय से अनुमति लेना आवश्यक है।

ओडिसा

यह भारत के पूर्वी भाग में स्थित है तथा इसकी सीमा उत्तर में झारखण्ड, पूर्वोत्तर में पश्चिम बंगाल, पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में छत्तीसगढ़ तथा दक्षिण में आंध्र प्रदेश से लगती है। यह 155,707 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को घेरे हुए है। भीतरी क्षेत्रों में व्यापक पठार तथा अग्र-भागों में विशाल तटीय मैदान हैं।

राज्य की यात्रा के लिए नवम्बर से मार्च के महीनों के मध्य का समय सबसे उपयुक्त है। राज्य में पर्यटकों के देखने के लिए सांस्कृतिक विरासत एवं प्राकृतिक सुन्दरता दोनों आकर्षण शामिल हैं। जिनके अन्तर्गत शांत बीच, सुन्दर नीली पहाड़ी, घुमावदार नदियां,

विशाल जलप्रपात, जंगल, गुफा, विदेशी प्रजाति के वन्य प्राणी, मिट्टी की झोपड़ियों के सुन्दर गाँव, मंदिरों की मूर्तियाँ, आदिवासी जीवन, हस्तशिल्प आदि शामिल हैं।

ओडिसा में बौद्ध धर्म का महत्त्व

प्राचीन काल में ओडिसा शक्तिशाली कलिंग साम्राज्य था। उस समय, यह व्यापारिक एवं सांस्कृतिक दोनों दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण था। सम्राट अशोक के भावावेश के कारण कलिंग युद्ध की एक घटना ने बहुत बड़ा परिवर्तन किया। अशोक एक महत्त्वाकांक्षी राजा था किन्तु कलिंग युद्ध के समय अत्यधिक रक्तपात को देखकर उसे पूर्ण रूप से आघात लगा और पश्चात्ताप से भर गया। तत्पश्चात उसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया और बुद्ध की शिक्षाओं को विश्व के अनेक भू-भागों तक फैलाया। अशोक के अभिलेख, आज भी उस घटित धर्मांतरण का मौजूद प्रमाण है जहाँ से शक्तिशाली राजा ने अपने प्रयासों से विश्व में लोगों के बीच प्रेम तथा शांति का प्रचार किया। सम्राट अशोक की मृत्यु के बाद, ओडिसा में बौद्ध धर्म को जैन धर्म के उद्भव के कारण गतिरोध का सामना करना पड़ा। आज बौद्ध अल्पसंख्यक हैं, फिर भी राज्य में असंख्य लोग हैं जो अभी भी बौद्ध धर्म का अनुसरण करते हैं विशेषकर बदम्बा, नरसिंहपुर, नौपटन और तिगरिया क्षेत्र के गाँवों में।

ओडिसा में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

उदयगिरि- यहाँ बौद्ध अवशेषों की खुदाई से ईंटों से बना विहार निकला जो संभवतः 7वीं और 12वीं शताब्दी ई. के मध्य में फला-फूला था। हाल में, यह पता चला है कि इसका प्राचीन नाम माधवपुर महाविहार था। परिसर में अब भी ईंटों का एक अन्य विहार है जिसके अवशेष जमीन के अंदर हैं। दो विहारों के अतिरिक्त, ईंटों से बने एक स्तूप के भग्नावशेष भी मिले हैं जिसमें अभिलेखों सहित पत्थर का एक सुन्दर कुंआ है तथा पीछे पहाड़ी की चोटी पर शैलकर्त मूर्तियाँ हैं। संपूर्ण परिसर एक पहाड़ी के आधार पर स्थित है।

ललितगिरि- इस स्थल की खुदाई से प्राचीन बौद्ध परिसर की खोज हुई जो प्रथम शताब्दी ई. के आसपास का है। यहाँ कई बौद्ध आकर्षण हैं जिनमें विशाल विहार के खंडहर, अनेक मन्नत स्तूप और एक चैत्य हाल के अवशेष तथा छोटी-सी पहाड़ी के शिखर पर निर्मित प्रस्तर स्तूप आदि शामिल हैं। इनके अतिरिक्त, एक संग्रहालय भी है जो अनेक महायान

मूर्तियों को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा जो रोमांचक है वह यह है कि इनमें से अधिकांश मूर्तियों पर अभिलेख हैं। यहाँ बुद्ध की गांधार शैली में निर्मित प्रतिमा है।

यहाँ पवित्र अवशेषों से युक्त एक मंजूषा है जो संभवतः तथागत से संबंधित है जिसे प्रस्तर स्तूप से खोजा गया है। इसके कारण दुनियाभर के बौद्धों के हृदय में ललितगिरि के महत्त्व में वृद्धि हुई। माना जाता है कि यह वही स्तूप है जिसके विषय में ह्वेनसांग ने अपने यात्रावृत्तांत में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि यह एक पहाड़ी की चोटी पर पुष्पगिरि महाविहार में स्थित थी जो अपनी पवित्रता के कारण दिव्य प्रकाश प्रसारित करता था। उत्खनन से प्राप्त अभिलेखों से उस विश्वास को बल मिला कि जाजपुर जिले में लंगुदी पर्वत है जिसकी पहचान पुष्पागिरि के रूप में हुई। ओडिसा में कटक तथा भुवनेश्वर, स्थल की यात्रा शुरू करने के लिए सबसे उपयुक्त आधार हैं।

रत्नागिरि- यह जाजपुर जिले में बिरूपा नदी घाटी पर स्थित है और यहाँ हुआ उत्खनन, सांस्कृतिक खजाने के मामले में अब तक सबसे समृद्ध रहा है। यहाँ हुई खुदाई से दो बड़े विहार, एक बड़ा स्तूप तथा अनेक मन्नत स्तूपों का पता चला है जो गुप्त राजा नरसिम्हा गुप्त बालदित्य (छठी शताब्दी ई. के पूर्वार्द्ध) के शासनकाल में बौद्ध धर्म के प्रभुत्व का संकेत देते हैं। यहाँ बौद्ध धर्म ने 12वीं शताब्दी तक बहुत तीव्र गति से विकास किया था। उत्खनन के परिणाम भी उद्घाटित करते हैं कि यह क्षेत्र 8वीं एवं 9वीं शताब्दी में वज्रयान, कला एवं दर्शन का प्रमुख केन्द्र था। रत्नागिरि की यात्रा के लिए भी कटक एवं भुवनेश्वर आधार प्रमुख हैं। वास्तव में उदयगिरि, रत्नागिरि तथा ललितगिरि एक डायमंड त्रिभुज की तरह आकृति बनाते हैं।

धौली- यह दया नदी के किनारे पुरी-कोणार्क राजमार्ग पर स्थित है। यहीं पर कलिंग के भयंकर युद्ध ने मौर्य सम्राट अशोक के जीवन की दिशा को हमेशा के लिए बदल दिया था। उन्होंने शांति के पक्ष में हिंसा को त्याग दिया था तथा धौली पर्वत के शिखर पर हाथी की मूर्ति (बौद्ध धर्म का सर्वव्यापी प्रतीक) सहित पत्थरों पर 13 अभिलेख उत्कीर्ण किए। यहाँ दो विशिष्ट अभिलेख हैं जो सम्राट अशोक की इच्छा और उनके प्रशासनिक निर्देशों पर प्रकाश डालते हैं और सौम्यता, भद्रता एवं निष्पक्षता के साथ शासन करने पर विशेष बल देते हैं। अभिलेख में निर्देश का निम्नलिखित अर्थ बताया गया है-

“ये मेरे निर्देश आप के लिए हैं। आप लाखों जीवित प्राणियों के प्रभारी हैं। तुम्हें मानव का स्नेह प्राप्त करना चाहिए। सभी प्राणी मेरी संतान हैं और क्योंकि मेरे प्राणियों के लिए

मेरी इच्छा है कि उन्हें इस दुनिया में तथा इसके बाद की दुनिया दोनों में प्रसन्नता और कल्याण की प्राप्ति होनी चाहिए, ऐसी ही इच्छा मेरी सभी प्राणियों के लिए है।”

शांति स्तूप पहाड़ी के ऊपर स्थित है। इसका निर्माण सन् 1870 में कलिंग निप्पोन बौद्ध संघ तथा जापान बौद्ध संघ ने संयुक्त रूप से करवाया था। उसी समय दोनों ने सद्धर्म नामक एक विहार स्थापित किया था।

राज्य में स्थित अन्य बौद्ध स्थल

पद्मपुर- यह रायगड़ा जिले में स्थित है तथा मुख्य रूप से एक कृषि केन्द्र है। यह प्रसिद्ध बौद्ध तर्कशास्त्री एवं दार्शनिक धर्मकीर्ति का निवास स्थल था। 7वीं शताब्दी पूर्व के एक शिलालेख से ज्ञात होता है कि यह मठ जगमंडा की पहाड़ियों पर स्थित था।

बैनपुर- यहाँ से बड़ी संख्या में बुद्ध, बोधिसत्त्वो तथा संरक्षकों की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं जो वज्रयान संप्रदाय से संबंधित है। चिलिका एवं बालूगाँव बैनपुर की यात्रा के लिए सबसे उत्तम आधार हैं।

विश्वनाथ पर्वत- यह पर्वत बौद्ध तार्किक एवं दार्शनिक दिङ्नाग के प्राचीन मठ का घर है।

जौगद- यह ओडिसा में दूसरा स्थल है जहाँ कलिंग से संबंधित अशोककालीन शिलालेख स्थित है। यहाँ एक बौद्ध मंदिर है जो बंडी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है।

सम्बलपुर जिला- ऐसा माना जाता है कि गंधमर्दन पर्वत की खुदाई से प्राप्त भग्नावशेष एक मठ के हैं, जिसे पारीमलगिरि कहा जाता था।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

भुवनेश्वर- यह ओडिसा की राजधानी है तथा मंदिर नगरी के रूप में प्रसिद्ध है। इसका कारण यह है कि यहाँ मंदिर बहुत हैं। उनमें से अधिकतर पवित्र बिन्दु सरोवर के चारों ओर स्थित हैं। मंदिरों के अलावा, भुवनेश्वर में अन्य आकर्षण भी हैं जिनमें राज्य संग्रहालय, हस्तशिल्प संग्रहालय, आदिवासी संग्रहालय आदि प्रमुख हैं।

पुरी- यह हिन्दुओं के सबसे अधिक प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है तथा भगवान जगन्नाथ को समर्पित है। यह हिन्दुओं के पवित्र चार धामों में से भी एक है। जून-जुलाई के महीने में वार्षिक रथ यात्रा के दौरान पुरी पूरे देश को आकर्षित करता है। पर्यटक अपनी यात्रा के दौरान मनोहर पुरी बीच की भी सैर कर सकते हैं।

कोणार्क- कटक पहले भुवनेश्वर की राजधानी थी तथा इसका आकर्षण बाराबती मराठा क़िले के नीले ग्रेनाइट के खंडहर तथा एक गुम्बद जैसी इमारत है जिसमें पैगम्बर मोहम्मद के पदचिह्न हैं।

मध्य प्रदेश

जैसा इसके नाम से स्पष्ट है कि मध्य प्रदेश, भारत के मध्य में स्थित है। मध्य का अर्थ है- केन्द्र और प्रदेश का अर्थ है- राज्य। यह भारत का सबसे बड़ा राज्य है तथा जिसकी सीमा दक्षिण में महाराष्ट्र, पूर्व में छत्तीसगढ़, पूर्वोत्तर में उत्तर प्रदेश, पश्चिम में गुजरात तथा उत्तर-पश्चिम में राजस्थान से लगती है। यह 308144 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। भोपाल इसकी राजधानी है तथा इंदौर इसका सबसे बड़ा शहर है।

पर्यटकों के लिए मध्य प्रदेश के पास अनेक आकर्षण हैं। राज्य के पास वह सब-कुछ है, जो पर्यटकों को आनंदित करता है जैसे- प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत तथा आधुनिक विकास। वास्तव में, इसकी यह मिश्रित सुन्दरता पर्यटकों को मध्य प्रदेश की ओर आकर्षित करती है।

मध्य प्रदेश में बौद्ध धर्म का महत्त्व

मध्य प्रदेश के इतिहास का सम्राट अशोक के समय से पता चलता है जिसने हिंसा को त्याग दिया और बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और सिद्धांतों के प्रसार का स्वयं उत्तरदायित्व लिया था। अशोक ने अपना जीवन एक राजदूत के रूप में उज्जैन से आरंभ किया था। उस समय उज्जैन, उज्जैनी के नाम से जाना जाता था। बौद्ध धर्म को स्वीकृत करने के बाद, अशोक ने राज्य में अनेक स्तूपों का निर्माण करवाया। स्वयं अशोक द्वारा बौद्ध धर्म में गहन रूचि प्रकट करने के कारण यह राज्य में फला-फूला। हालांकि, उनकी मृत्यु के बाद साम्राज्य खंडित हो गया और बौद्ध धर्म पतन की ओर बढ़ने लगा। आज, राज्य में हिन्दू बहुसंख्यक हैं तथा बौद्ध

अल्पसंख्यक हैं। फिर भी, अतीत की विरासत लोगों को उस गौरवशाली युग की याद दिलाती है जब बौद्ध धर्म अपने शिखर पर था।

मध्य प्रदेश में प्रमुख बौद्ध स्मारक

साँची के बौद्ध स्मारक- साँची दुनियाभर के बौद्धों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थल है। जबकि वास्तविकता यह है कि बुद्ध ने कभी इस स्थल की यात्रा नहीं की थी। साँची का महत्त्व, बौद्ध वास्तुकला के कारण है जैसे- स्तूप, चैत्य तथा विहार। इनमें विशाल स्तूप के चार तोरण, अशोक स्तंभ तथा 18 नंबर मंदिर महत्त्वपूर्ण हैं। इनके अलावा, विहार तथा एक संग्रहालय भी है। यहाँ बुद्ध मानव आकृति में नहीं हैं बल्कि प्रतीकों में चित्रित हैं जो बौद्ध धर्म की हीनयान परंपरा के अनुसरण का संकेत है। जिसमें बुद्ध को एक मानव माना गया है न कि भगवान।

भरहुत स्तूप- यह सतना जिले (म.प्र.)में स्थित है तथा एक बौद्ध स्मारक है। इस स्तूप को सम्राट अशोक ने बनवाया था। दूसरी शताब्दी ई.पू. में शुंग शासक द्वारा पुनरुद्धार का कार्य किया गया। इस स्तूप में भी बुद्ध प्रतीकों के रूप में चित्रित हैं जैसे- बोधिवृक्ष, पदचिह्न, तथा धर्मचक्र।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

भोपाल- यह मध्य प्रदेश की राजधानी है और दो कृत्रिम झीलों के पास स्थित है जिसके कारण यह झीलों के शहर के रूप में भी प्रसिद्ध है। यद्यपि भोपाल का भू-भाग अधिक स्मारक भेंट नहीं करता, फिर भी शहर के चारों ओर अद्वितीय आकर्षण हैं। इसके अलावा, शहर हिन्दू तथा मुस्लिम संस्कृति के एक सुन्दर सम्मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। पर्यटकों के आकर्षण के लिए पुराना शहर एवं उसकी मस्जिदें, भारत भवन परिसर, वन विहार राष्ट्रीय पार्क आदि हैं। इसके अतिरिक्त, झीलें मौज-मस्ती करने के लिए अच्छी जगह हैं। पर्यटक यहाँ स्थित उद्यानों में आराम कर सकते हैं या वाटर स्पोर्टस का आनंद ले सकते हैं जैसे- पैडल नौका विहार, डोंगी चलाना, डोंगी में यात्रा और नौ-चालन।

खजुराहो- इसका संक्षिप्त परिचय दिया गया है। खजुराहों के मंदिर 950 ई.-1050 ई. के दौरान चन्देल शासकों द्वारा बनवाए गए। मंदिर अपनी काम विषयक मूर्तिकला के कारण

विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल हैं। खजुराहो के मंदिर तीन समूहों- पश्चिम, पूर्व एवं दक्षिण में विभक्त हैं। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण मंदिर पश्चिम समूह के हैं, जिसमें लक्ष्मण मंदिर सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यद्यपि खजुराहो पर्यटकों को साल भर आकर्षित करता है, फिर भी मार्च के महीने में यहाँ सबसे अधिक पर्यटक आते हैं। इसका कारण खजुराहो का नृत्य उत्सव है जिसमें 10 दिनों तक पूरे भारत से नर्तक मंदिरों के देवी-देवताओं के प्रति सम्मान अर्पित करने के लिए आते हैं। मध्य प्रदेश की यात्रा के दौरान खजुराहो की यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

ग्वालियर- यह माना जाता है कि इसका ग्वालियर नाम एक प्रसिद्ध ऋषि ग्वालिपा के नाम पर पड़ा है जिसने कुष्ठ से पीड़ित एक कछवाह राजा को रोग मुक्त कर दिया था। शहर अनेक वंशों के शासन के अधीन रहा है जैसे- हूण, कछवाह, प्रतिहार, दास, तोमर, लोधी, मराठा तथा मुगल। सिंधिया स्थल पर शासन करने वाला अंतिम राज परिवार था तथा जो आज भी भारतीय राजनीति में सक्रिय है। पर्यटकों के लिए ग्वालियर का मुख्य आकर्षण निश्चित रूप से ग्वालियर का क़िला है जिसको राजा मान सिंह तोमर ने बनवाया था। ग्वालियर के चारों ओर आकर्षक स्थल हैं जिनमें ओरछा, शिवपुरी तथा चन्देरी शामिल हैं।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान- यह देश के प्रमुख वन्य प्राणी स्थलों में से एक है। कान्हा के वन्य जीवन और सुन्दरता से केवल दुनियाभर के पर्यटक ही आकर्षित नहीं हुए बल्कि रैडयार्ड किपलिंग जैसे उच्च कोटि के लेखक भी प्रेरित हुए तथा जिन्होंने अपने विख्यात उपन्यास *जंगल बुक* के लिए इसे आधार बनाया। आज, बंधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के अलावा कान्हा उद्यान भी देश में बाघ देखने के लिए सबसे अच्छे स्थलों में शामिल है। बाघ के अलावा, उद्यान के वन्य आकर्षणों में ग्रे लंगूर, नेवला, लकड़बग्घा, जंगली बिल्ली, तेंदुआ, बारहसिंगा, चित्तीदार हिरण, छहसिंगा, नीलगाय, भारतीय भैंसा, जंगली सूअर आदि शामिल हैं। उद्यान में लगभग 175 प्रजाति के पक्षी भी देखे जा सकते हैं।

बंधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान- यह मध्य प्रदेश के उमरिया जिले में स्थित है। उद्यान के प्राणियों में बाघ, नीलगाय, छहसिंगा, चीता, चिंकारा, जंगली सूअर, लोमड़ी, भेड़िया तथा लगभग 150 प्रजाति के पक्षी शामिल हैं। यात्रा का आनन्द लेने का सबसे अच्छा मार्ग या तो

सफारी जीप या हाथी की सवारी है। यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय नवम्बर से जून के मध्य का है।

मौसम

मध्य प्रदेश मानसूनी जलवायु का प्रदेश है। मार्च से मई तक गर्मियां होती हैं जबकि नवम्बर से फरवरी तक सर्दियां होती हैं। राज्य में जून से सितम्बर के महीनों के दौरान वर्षा होती है। राज्य की यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त समय अक्तूबर से मार्च के मध्य का है।

अरुणाचल प्रदेश

यह पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य है। यह भारत के पूर्वोत्तर में एक शांत क्षेत्र है। यह दक्षिण में असम तथा दक्षिण- पूर्व में नागालैंड से सीमाबद्ध है। राज्य के पूर्वी भाग की सीमा म्यांमार से लगती है जबकि पश्चिमी भाग की सीमा भूटान से लगती है। इसकी उत्तर दिशा में मैक मोहन सीमा रेखा है जो इसे चीन से अलग करती है। इटानगर इसकी राजधानी है।

अरुणाचल प्रदेश आने वाले पर्यटकों के लिए सघन सदाबहार जंगलों के रूप में प्राकृतिक सुन्दरता, शानदार घाटियां, बर्फ से ढके पर्वत, घुमावदार नदियां, भिन्न-भिन्न प्रजाति के जीव-जन्तु एवं पेड़-पौधे प्रमुख आकर्षण हैं। इसके अलावा, राज्य की समृद्ध आदिवासी संस्कृति एवं आनन्द के लिए साहसिक खेलों के अवसर अतिरिक्त आकर्षण हैं।

हालांकि, विदेशी पर्यटकों के प्रवेश पर कुछ प्रतिबंध हैं। उन्हें राज्य में ठहरने के लिए कुछ निश्चित औपचारिकताओं को पूरा करना होता है और विदेश में भारतीय मिशन या गृह मंत्रालय के कार्यालय से अनुमति लेनी होती है। भारतीय नागरिकों को भी नई दिल्ली से आंतरिक सीमा निवास या निवास उपायुक्त कार्यालय से अनुमति लेनी आवयक है।

अरुणाचल प्रदेश में बौद्ध धर्म का महत्त्व

अरुणाचल प्रदेश की 13 प्रतिशत जनसंख्या बौद्ध धर्म की अनुयायी है। राज्य की बौद्ध जनसंख्या तवांग, पश्चिमी कमेंग, तिब्बत के नज़दीक सुदूरवर्ती क्षेत्रों में तथा म्यांमार सीमा के आसपास निवास करती है। प्रथम तीन क्षेत्रों में तिब्बती बौद्ध धर्म प्रचलित है जबकि म्यांमार सीमा के आसपास रहने वाले लोगों के जीवन में थेरवाद बौद्ध धर्म पथप्रदर्शक है।

अरुणाचल प्रदेश में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

तवांग- यह मोनपा जनजाति का क्षेत्र है। तवांग नाम की उत्पत्ति इसके मूल परिवेश से हुई है। हालांकि, लोगों का मानना है कि 17वीं शताब्दी ई. में मेराक लामा द्वारा यह नाम दिया गया। तवांग जिला राज्य के दो सबसे महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठों के साथ-साथ कई भिक्षुणी आवासों का भी घर है।

बोमडीला- यह तवांग से अधिक दूर नही है तथा पश्चिमी कमेंग का जिला मुख्यालय है। यह सेब के उद्यान तथा हरे-भरे जंगल के मध्य में स्थित है। यह स्थल मोनपा तथा शेरदुकपेन आदिवासियों का क्षेत्र है। एक शिल्प केन्द्र सहित, यहाँ कई सुन्दर गोम्पा भी स्थित हैं जिनमें मोनपा आदिवासियों के हाथ से बना स्वरग्राम, गलीचा आदि मिलते हैं।

राज्य में स्थित प्रमुख बौद्ध स्मारक

तवांग मठ- यह अरुणाचल प्रदेश का सबसे विख्यात मठ है। ऐसा माना जाता है कि यह लगभग 400 वर्ष पुराना है। इसे मेराक लामा ने स्थापित किया था जो उस समय पाँचवां दलाई लामा था और इसकी पृष्ठभूमि में मनोहर पर्वत हैं, जिससे ऐसा लगता है कि वे इसके संरक्षण में खड़े हुए हैं। इसके 65 आवासीय भवनों में लगभग 500 लामा निवास करते हैं। मठ के अन्य आकर्षण भी हैं जिनमें घूमने वाले प्रार्थना चक्र तथा अमूल्य थांकाचित्र शामिल हैं। मठ के साथ एक पुस्तकालय तथा एक संग्रहालय भी जुड़ा हुआ है। संग्रहालय दुर्लभ थांकाचित्रों तथा आनुष्ठानिक के पात्रों के साथ-साथ अन्य वस्तुओं को प्रदर्शित करता जबकि पुस्तकालय महत्त्वपूर्ण पांडुलिपियों, धर्मग्रन्थों तथा साहित्य को संरक्षित रखता है।

तवांग के भिक्षुणी आवास- तवांग के भिक्षुणी आवास ऐनी गोम्पा के रूप में प्रसिद्ध हैं, जहाँ लड़कियां बिना किसी सामाजिक परम्परा का पालन किए, स्वैच्छिक आधार पर भिक्षुणियाँ बन सकती हैं। इनमें से ब्रामा डुंग-चुंग ऐनी गोम्पा सबसे प्राचीन है जिसे 1595 ई. में करचेन येशी गेलेक द्वारा मान्यता दी गई थी। यह तवांग शहर से लगभग 12 किलोमीटर दूर है तथा लगभग 45 भिक्षुणियों का एक आवास है। ग्यानगोंग ऐनी गोम्पा तथा सिंगसुर ऐनी गोम्पा महत्त्वपूर्ण भिक्षुणी आवास हैं। दोनों में से पहले में लगभग 50 भिक्षुणियाँ रहती हैं जबकि दूसरा 45 भिक्षुणियों का आश्रय स्थल है।

राज्य में स्थित अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

जीरो- यह ईटानगर से लगभग 200 किलोमीटर दूर अपतानी पठार पर स्थित है। यह स्थल अपने मनोहर प्राकृतिक दृश्य तथा आदिवासी संस्कृति के कारण अत्यधिक आकर्षक है। पर्यटक इन लोगों के जीवन का अनुभव प्राप्त करने के लिए अपतानी जनजाति के निवास स्थल के भ्रमण को एक प्रस्थान बिन्दु मानते हैं। वे प्रायः उच्च दाब क्षेत्र पर स्थित मत्स्य उद्योग, देवदार के वन तथा शिल्प केन्द्र की यात्रा करते हैं। यह ऊपरी सबनसिरि का जिला मुख्यालय है।

पासीघाट- यह पूर्वी सियांग का जिला मुख्यालय है तथा अरुणाचल प्रदेश का सबसे पुराना शहर है। यह आदि जनजाति का क्षेत्र है जो अपने पोनूंग नृत्य के लिए जानी जाती है। इसके आसपास अनेक घूमने योग्य स्थल हैं जिनमें वन्यजीव उपवन, मलीनीथन पुरातात्त्विक स्थल, अकाशीगंगा का पवित्र स्थल आदि शामिल हैं।

नामदफा वन्यप्राणी उद्यान- यह उद्यान, चंगलेंग जिले में मियाओ से कुछ किलोमीटर दूर स्थित है। नामदफा भारत के सबसे महत्त्वपूर्ण वन्यप्राणी उद्यानों में से एक है जो चार बिल्ली प्रजाति जैसे बाघ, तेंदुआ, साह तथा अन्य तेंदुआ का आश्रय स्थल है। राज्य के अन्य प्राणियों में टेकिन, गिब्बन, लाल पांडा, टोपीधारी लंगूर आदि शामिल हैं। सजावटी तथा औषधीय पौधों सहित नामदफा वन्यप्राणी उद्यान में लगभग 150 प्रजाति के वृक्ष हैं।

मौसम

अरुणाचल प्रदेश में एक स्थान की जलवायु दूसरे से भिन्न है, इसका कारण ऊँचाई पर स्थित होना है। तिब्बत के आसपास हिमालय की ऊँचाई पर रहने वाले लोग ठंडे मौसम का आनंद लेते हैं। मध्य हिमालय क्षेत्र के निवासी संतुलित मौसम का अनुभव करते हैं जबकि जो निम्न हिमालय क्षेत्र तथा समुद्र तल पर हैं, वे अत्यधिक गर्मी तथा हल्की सर्दियों सहित एक निम्न आर्द्र उप-उष्णकटिबंधीय जलवायु का सामना करते हैं।

अध्याय-4

भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल

प्रत्येक धर्म में कुछ ऐसे स्थल होते हैं जिन्हें तीर्थस्थलों का दर्जा प्राप्त होता है। उपासक सुदूर से इन स्थलों के प्रति आस्था प्रकट करने के लिए यात्रा करते हैं तथा अपने मार्ग की सभी बाधाओं और कठिनाईयों को पार कर आते हैं। उनका मानना है कि इन स्थलों की यात्रा करने से उन्हें भगवान का आशीर्वाद मिलेगा तथा उनके जीवन के सभी दुख दूर हो जाएंगे।

बौद्ध धर्म में उन सभी स्थलों को अत्यंत पवित्र माना गया है जिनका बुद्ध ने अपने जीवनकाल में भ्रमण किया था। विश्व में जब कोई बौद्ध तीर्थयात्रा के विषय में सोचता है तो ये स्थल सूची में सबसे ऊपर होते हैं। इन स्थलों के अलावा, बौद्धों द्वारा कुछ श्रद्धेय बौद्ध विद्वानों से संबंधित स्थलों को भी पवित्र माना जाता है। इसलिए वे भी तीर्थस्थल के समान हैं।

इस खंड में प्रमुख बौद्ध स्थलों का विवरण दिया गया है। आप इस बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि उस स्थान को क्या पवित्र बनाता है, स्थल के बौद्ध तथा अन्य आकर्षण क्या हैं जिन्हें यात्रा के दौरान देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, उस स्थल तक विभिन्न संचार माध्यमों से पहुँचने की जानकारी दी गई है जिसके द्वारा आप स्थल तक पहुँच सकते हैं। इसका भी विवरण दिया गया है।

इसलिए, अगर आपकी आत्मा तीर्थयात्रा का उत्तरदायित्व उठाने के लिए तैयार है तो इन स्थलों की यात्रा करें और उस आध्यात्मिकता को महसूस करें जो वहाँ की हवा में विद्यमान है।

बोधगया

“चाहे इस आसन पर ही मेरा शरीर सूख जाये, चमड़ी, हड्डी व मांस नष्ट हो जायें, किन्तु यह शरीर इस स्थान से तब तक नहीं उठेगा जब तक कि उस बोधि को न प्राप्त कर लूंगा जिसको तमाम कल्पों से भी प्राप्त करना कठिन है।” महात्मा बुद्ध ने 528 ई.पू. में अपनी बोधि प्राप्ति से पहले ऐसा कहा था। यह वह स्थान है जहाँ राजकुमार सिद्धार्थ को दैवीय ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाए तथा कुछ समय ध्यान में प्रविष्ट होने के बाद मानव जाति के दुखों को दूर करने के लिए चल दिए। बोधगया दक्षिणी बिहार में स्थित है तथा प्रायः

धर्मशाला से तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा एवं अन्य लामाओं द्वारा इसकी यात्राएँ की जाती हैं। यह केवल एक ऐतिहासिक स्थल ही नहीं है बल्कि आस्था का जीता-जागता केन्द्र भी है।

सामान्य सूचना

- देश - भारत।
- राज्य - बिहार।
- स्थित - वाराणसी से 10 किलोमीटर।
- मौसम - मार्च से जून तक - ग्रीष्म ऋतु, जुलाई से अगस्त तक - वर्षा ऋतु, नवम्बर से फरवरी तक - सर्दी तथा तथा सुहावना मौसम।
- यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त समय - अक्तूबर से फरवरी के महीनों के मध्य।
- महत्त्व - बुद्ध को इस स्थान पर ज्ञान प्राप्त हुआ।
- भाषा - अंग्रेजी, हिन्दी, भोजपुरी व मगही।
- वर्ष का सबसे महत्त्वपूर्ण दिन - बुद्ध पूर्णिमा।

बोधगया में मनाए जाने वाले त्यौहार

- बुद्ध पूर्णिमा।
- प्रत्येक पूर्णिमा के दिन संघ दान।
- 17 सितम्बर को अनागारिक धर्मपाल का जन्म दिवस।
- 14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती।
- 14 अक्तूबर को बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार दिवस।
- प्रत्येक वर्ष अक्तूबर के महीने में शांति प्रार्थना सभा।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

बोधिवृक्ष- यह एक पवित्र वृक्ष है जो मूल का पाँचवीं पीढ़ी का वृक्ष है जिसके नीचे सिद्धार्थ ने संबोधि प्राप्ति की थी। वज्रासन के पास बुद्धपाद हैं जहाँ पत्थर पर बुद्ध के पदचिह्न हैं। यह माना जाता है कि चंक्रमण वह घटना स्थल है जहाँ बुद्ध ने गंभीर चिंतन में चहल-कदमी की थी। भारत एवं दूसरे देशों में अनेक वृक्ष, बोधिवृक्ष के बीज से उगाए गए हैं। सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा तीसरी शताब्दी ई.पू. में मूल बोधिवृक्ष की एक शाखा

श्रीलंका ले गई जहाँ उसे श्रीलंका के शासक देवनामपिय तिस्स ने अनुराधापुरम के मठ में रोपित किया था और अब वह बौद्धों के लिए एक पवित्र स्थल है।

महाबोधि मंदिर- यह मंदिर बोधगया में स्थित है और बोधिवृक्ष के पास स्थित है मंदिर की वास्तुकला शानदार है और इसके चारों ओर प्रस्तर की सुन्दर रेलिंग हैं। वर्तमान मंदिर का आधार 15 मीटर वर्ग, लंबाई 15 मीटर तथा चौड़ाई एवं ऊँचाई 52 मीटर है जो एक वर्गाकार चबूतरे से पृथक एक पिरामिडनुमा मीनार जैसा दिखाई देता है। एक संग्रहालय में बुद्ध की सोने, कांसे तथा प्रस्तर की मूर्तियाँ रखी हैं।

कमल सरोवर- महाबोधि मंदिर की उत्तर दिशा में कमल के पौधों से भरा एक सरोवर है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ बुद्ध ने एक सप्ताह व्यतीत किया था।

शैव मठ- यह महाबोधि मंदिर से जुड़ा हुआ है और चार मंदिरों का एक समूह है। इन मंदिरों के चारों ओर मनोहर हरियाली है और अद्भुत वास्तुकला के प्रतीक हैं तथा इनके आसपास अनेक समाधियां हैं।

अन्य मठ- महाबोधि मंदिर के आसपास तिब्बत, जापान और म्यामांर के कई मठ स्थित हैं। तिब्बती मठ के अंदर एक विशाल धर्मचक्र है जबकि जापानी मठ बौद्ध धर्म पर ओजस्वी प्रवचनों के संचालन के लिए प्रसिद्ध है।

बोधगया पुरातत्त्व संग्रहालय- यह संग्रहालय धार्मिक कला प्रेमियों की आवश्यकताओं को पूरी करता है क्योंकि यह बौद्ध कला शिक्षण के प्रारंभिक केन्द्रों में से एक है। संग्रहालय में प्रथम शताब्दी ई.पू. से ग्यारहवीं शताब्दी ई. तक की बौद्ध मूर्तियों का संग्रह है।

अन्य आकर्षण

जगन्नाथ मंदिर- यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और काले पत्थर पर उनकी जगमगाती मूर्ति उत्कीर्ण है।

बोधगया के आसपास के अन्य स्थल

गया और बराबर की गुफाएँ, बोधगया के निकट दो प्रमुख आकर्षण स्थल हैं। गया हिन्दुओं के लिए पवित्र स्थल है तथा बोधगया से 12 किलोमीटर दूर है और रामशिला एवं

प्रेतशिला की पहाड़ियों के मध्य स्थित है। बराबर की गुफाएँ, बोधगया से 32 किलोमीटर दूर हैं तथा बौद्ध वास्तुकला का मनोहर चित्र प्रस्तुत करती हैं।

बाजार

पर्यटक बोधगया के स्थानीय बाजार से ऊनी वस्त्र, थांकाचित्र, बौद्ध धर्म की पुस्तकें तथा घंटियाँ खरीद सकते हैं।

राजगीर

राजगीर जिसका अर्थ है- शाही भवन। बौद्धों और जैनों के लिए अत्यंत पवित्र स्थल है। बुद्ध ने राजगीर में 12 वर्ष के निवास के दौरान नगर में अनेक उपदेश दिए थे। यह शहर शीतकालीन सैरगाह एवं स्वास्थ्य के लिए अपने गर्म पानी के चश्मों के लिए भी प्रसिद्ध है।

राजगीर, बिहार राज्य का एक प्रमुख शहर है। प्राचीन काल में राजगीर मगध राज्य की प्रथम राजधानी था तथा एक ऐसा राज्य था जो अंततः मौर्य साम्राज्य में विकसित हुआ। इसके उद्भव का समय अज्ञात है। हालांकि, शहर में लगभग 1000 ई.पू. की मृत्तिका-शिल्प प्राप्त हो चुकी है। यहाँ बुद्ध ने गृद्धकूट चोटी पर प्रसिद्ध आटानाटिय सुत्त का उपदेश दिया था।

राजगीर सड़क एवं रेलमार्ग द्वारा बख्तियारपुर के रास्ते पटना से जुड़ा हुआ है। बख्तियारपुर मोकामेह तथा पटना के बीच में स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग 30ए से बख़्तियारपुर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग 31 से दक्षिण की तरफ बिहार शरीफ पहुँचते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 31 मोकामेह से बिहार शरीफ तक जाता है। वहाँ से राष्ट्रीय राजमार्ग 82 राजगीर की ओर जाएगा। राजगीर पटना और मोकमेह से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। यह पथरीली पहाड़ियों से घिरी हरी-भरी घाटी में स्थित है। श्रमजीवी सुपर फास्ट एक्सप्रेस ट्रेन सीधे राजगीर से दिल्ली के लिए चलती है।

मिथक एवं इतिहास

राजगीर नाम संस्कृत शब्द राजगृह से लिया गया है जिसका अर्थ है- राजा का महल या 'राजकीय भवन'। राजगीर शब्द की उत्पत्ति का स्पष्ट शाब्दिक अर्थ है- राजकीय पर्वत। प्राचीन काल में यह मगध के शासकों की राजधानी था फिर अजातशत्रु ने राजधानी को

पाटलिपुत्र में स्थानांतरित कर दिया था। उन दिनों इसे राजगृह कहा जाता था जिसका अनुवाद 'राजसत्ता का क्षेत्र' के रूप में था।

महाभारत महाकाव्य में इसे गिरिव्रज कहा गया है तथा इसके राजा जरासंध की कहानी का वर्णन किया गया है जिसमें उसका पांडवों एवं उनके सहयोगी श्री कृष्ण के साथ युद्ध होता है। इस स्थान से जरासंध ने उन्हें युद्ध के लिए ललकारा था जिसे श्री कृष्ण 17 बार पराजित करते हैं। 18वीं बार श्री कृष्ण बिना युद्ध किए रणभूमि छोड़ देते हैं। इस कारण श्री कृष्ण को रणछोड़ भी कहा जाता है। महाभारत में भीम और जरासंध के बीच एक मल्ल युद्ध का उल्लेख मिलता है। जरासंध अजेय था क्योंकि उसके शरीर का अंग विच्छेद होने पर पुनः जुड़ जाता था। दंतकथा के अनुसार, भीम उसके शरीर को दो भागों में विभक्त करता है और दोनों भागों को एक-दूसरे से विपरीत दिशा में फेंकता है ताकि वे दोबारा जुड़ न सकें। यहाँ एक प्रसिद्ध जरासंध अखाड़ा है जहाँ मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण दिया जाता है।

इसका उल्लेख बौद्ध तथा जैन धर्मग्रन्थों में भी मिलता है, जो बिना किसी भौगोलिक सन्दर्भ के इस स्थल के नामों की सूची देते हैं। ग्रन्थों में इन स्थलों की स्थिति का पता लगाने का प्रयास किया गया है तथा स्थानों की स्थिति के विषय में अन्य वर्णन चीनी बौद्ध यात्रियों के यात्रावृत्तांतों में मिलता है। विशेषकर ह्वेनसांग के यात्रावृत्तांत के आधार पर कह सकते हैं कि यह स्थान नए राजगीर एवं प्राचीन राजगीर में विभक्त था। प्राचीन राजगीर घाटी में स्थित है तथा चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसकी आंतरिक क़िलेबंदी मिट्टी के बांध द्वारा की गई जिसके साथ बाहरी क़िलेबंदी जुड़ी हुई है तथा जो साइक्लोपियन दीवार का एक परिसर है जिसके खंडहर पहाड़ियों की चोटी के पास स्थित हैं। नया राजगीर घाटी के उत्तरी प्रवेश द्वार के बाहर एक अन्य बांध द्वारा सीमाबद्ध है और आधुनिक शहर के बगल में है। यह पवित्र स्थल जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म दोनों के प्रवर्तकों के कारण स्मरण किया जाता है तथा ऐतिहासिक बुद्ध और महावीर से जुड़ा हुआ है। यहाँ बुद्ध ने कई महीने ध्यान साधना में व्यतीत किए और गृध्रकूट चोटी पर प्रवचन दिए। यहाँ उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण उपदेश दिए और मगध के राजा बिम्बिसार तथा अन्य असंख्य लोगों को अपने धर्म में परिवर्तित किया। सप्तपर्णी गुफा उन पहाड़ियों में से एक है जहाँ महाकश्यप के नेतृत्व में प्रथम बौद्ध संगीति आयोजित हुई थी। भगवान महावीर ने अपने जीवन के चौदह वर्ष राजगीर एवं नालंदा में व्यतीत किए तथा राजगीर में एक स्थान पर चतुर्मास (4 महीने की वर्षा ऋतु) व्यतीत किया और आसपास के स्थानों में विश्राम किया। यह उनके प्रिय शिष्य राजा श्रनिक की राजधानी थी। इस प्रकार, राजगीर जैनों के लिए भी एक प्रमुख धार्मिक स्थल है।

राजगीर हर्यक वंश के राजाओं बिम्बिसार एवं अजातशत्रु से संबंधित होने के कारण भी प्रसिद्ध है। अजातशत्रु ने अपने पिता बिम्बिसार को यहाँ कैद में रखा था। सूत्र इस बात से सहमत नहीं हैं कि बुद्ध के समकालीन बिम्बिसार और अजातशत्रु में कौन इसके निर्माण के लिए जिम्मेदार है। अजातशत्रु को पाटलिपुत्र को राजधानी बनाने का भी श्रेय दिया जाता है।

भौगोलिक दशा एवं जलवायु

राजगीर शहर घाटी में स्थित है जो सात पहाड़ियों से घिरा हुआ है जैसे- वैभार, रत्न, शैल, सोना, उदय, छठा एवं विपुल। यह अपने गर्म पानी के चश्मों के कारण स्वास्थ्य एवं शीतकालीन सैरगाह के रूप में विकसित किया गया है। ऐसी मान्यता है कि इन कुंडों में औषधीय गुण हैं। जो त्वचा के रोगों के उपचार में सहायक हैं। सप्तपर्णी गुफा राजगीर में गर्म पानी के चश्मों का स्रोत है जिनमें औषधीय गुण हैं। रोपवे क्षेत्र का अन्य आकर्षण है, जो रत्नागिरि पहाड़ियों पर जापानी उपासकों द्वारा निर्मित मठों, विश्व शांति स्तूप तथा मखदूम कुण्ड की ओर आवागमन करता है।

तापमान- गर्मियों में अधिकतम तापमान 40^0 सेल्सियस तथा निम्नतम 20^0 सेल्सियस एवं सर्दियों में अधिकतम 28^0 सेल्सियस तथा निम्नतम 6^0 सेल्सियस होता है।

वर्षा-1860 मिलीमीटर (जून से सितम्बर के मध्य) होती है।

सुहावना मौसम- अक्तूबर से मार्च के मध्य मौसम सुहावना होता है।

पर्यटन

राजगीर अपने गर्म पानी के चश्मों के लिए प्रसिद्ध है और हिन्दुओं के लिए एक पवित्र स्थल है। विश्व शांति स्तूप एक अन्य प्रमुख आकर्षण है जो वर्ष 1969 में बनाया गया तथा विश्व के 80 शांति स्तूपों में से एक है। रोपवे स्थल का एक और अन्य आकर्षण है। वेणुवन के पास जापानी मंदिर है। वेणुवन एक कृत्रिम जंगल है जहाँ कोई भी ध्यान साधना कर, आंतरिक शांति अनुभव कर सकता है। वहाँ प्रसिद्ध मखदूम कुण्ड भी है।

ऐतिहासिक रूप से, राजगीर एक बहुत महत्त्वपूर्ण स्थल है क्योंकि अनेक साम्राज्यों की राजधानी रहा है। बिम्बिसार की जेल, अजातशत्रु का क़िला, जरासंध का अखाड़ा आदि इसके प्रमुख आकर्षण हैं।

जनसांख्यिकी

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार राजगीर की जनसंख्या 33,691 थी जिसमें 53% पुरुष और 47% स्त्रियों की जनसंख्या थी। राष्ट्रीय साक्षरता दर की 59.5% की तुलना में राजगीर की औसत साक्षरता दर 52% थी, जिसमें पुरुषों की साक्षरता दर 61% थी जबकि स्त्रियों की साक्षरता 41% थी। राजगीर में 19% जनसंख्या 6 वर्ष की आयु से नीचे थी।

बैंक

- भारतीय स्टेट बैंक
- सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
- नालंदा कॉ-ऑपरेटिव बैंक
- मध्य बिहार ग्रामीण बैंक
- एच.डी.एफ.सी. बैंक
- पंजाब नेशनल बैंक
- बैंक ऑफ इंडिया

परिवहन और होटल

बिहार राज्य का पर्यटन विभाग पटना से संबंधित स्थलों के लिए यात्रा सुविधाएं प्रदान करता है जैसे- बौद्ध सर्किट, जैन सर्किट तथा सिख सर्किट। विभाग के पास अपने होटल और सर्किट हाऊस भी हैं। ये होटल बहुत ही उचित मूल्य पर पर्यटकों के लिए उपलब्ध हैं।

मार्ग

वायुमार्ग- राजगीर से सबसे नज़दीक पटना हवाई अड्डा है जो 101 किलोमीटर दूर है। भारतीय एयरलाइंस पटना हवाई अड्डे द्वारा कलकत्ता, मुम्बई, दिल्ली, रांची और लखनऊ से जुड़ी हुई हैं।

रेलमार्ग- यद्यपि राजगीर में एक रेलवे स्टेशन है, फिर भी सुविधा के लिए सबसे नजदीक गया रेलवे जंक्शन है।

सड़कमार्ग- राजगीर सड़कमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है और पटना से 110 किलोमीटर, नालंदा से 12 किलोमीटर दूर है।

बस- राजगीर के लिए सभी नियमित बसें उपर्युक्त उल्लिखित स्थलों पर उपलब्ध हैं।

स्थानीय साधन- टैक्सी तथा बस के साथ टांगा भी उपलब्ध है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

गृध्रकूट चोटी- यहाँ बुद्ध ने द्वितीय धर्मचक्र प्रवर्तन शुरू किया और वर्षावास में अपने शिष्यों को उपदेश दिए। पर्वत की चोटी पर एक आधुनिक शांति स्तूप है जिसे जापानी बौद्ध संघ ने बनवाया है।

वेणुवन- एक ऐतिहासिक विहार है जिसे राजा बिम्बिसार ने बुद्ध के निवास के लिए बनवाया था।

सत्तपर्णी गुफा- वह धार्मिक स्थल है जहाँ 483 ई.पू. में प्रथम बौद्ध संगीति आयोजित हुई थी।

जीवक आम्र उपवन- यह राजकीय औषधालय था जहाँ बिम्बिसार के शासनकाल में बुद्ध राजकीय वैद्य, जीवक के पास उपचार के लिए गए थे।

करण्ड तालाब- यह एक अन्य धार्मिक स्थल है जहाँ बुद्ध प्रायः सरोवर में स्नान करते थे।

बुद्ध की मूर्ति- इसमें बुद्ध के महापरिनिर्वाण की अवस्था का चित्रण किया गया है, एक अन्य बौद्ध आकर्षण है।

आसपास के अन्य आकर्षण

गर्म जल के स्रोत- गर्म जल के स्रोत वैभव पहाड़ी के ऊपर स्थित हैं। ये सप्तधारा से निकलने वाले जल के स्रोत्र हैं और ऐसा माना जाता है कि इनमें औषधीय गुण हैं। गर्म जल

हॉल में लगे चीनी मिट्टी के नलों से बाहर निकलता है और जहाँ लोग इनके नीचे बैठ कर चश्मे के बहते जल से स्नान कर सकते हैं।

बिम्बिसार जेल- वह स्थान है जिसे राजा बिम्बिसार ने अपने अंतिम दिनों को व्यतीत करने के लिए चुना था। इस स्थान से, वे बुद्ध को ध्यान के लिए ग्रृधकूट चोटी पर जाते हुए देखते थे।

पीपल गुफा- यह एक प्राकृतिक गुफा है अथवा गर्म जल के चश्मों के ऊपर वैभव पहाड़ी पर स्थित एक आयताकार चट्टान है तथा यह जरासंध की बैठक के नाम से जानी जाती है।

जैन मंदिर- बौद्ध धर्म के समान जैन धर्म को भी मौर्य राजाओं से संरक्षण प्राप्त था। बिम्बिसार जिसने बौद्ध धर्म को अपने राज्य में संरक्षण दे रखा था। वह महावीर का भी मित्र था। उसने राज्य में जैन धर्म को भी संरक्षण दे रखा था। इसलिए हमें राजगीर की पहाड़ी पर 26 जैन मंदिर मिलते हैं तथा इनमें से कुछ तो पाँचवीं शताब्दी ई.पू. के हैं।

मारक कुशी- वह स्थान है जहाँ अजातशत्रु का अजन्मा भ्रूण पितृहत्या के कारण अभिशप्त था।

अजताशत्रु का क़िला- यह पर्यटकों के आकर्षण का एक अन्य स्थान है। इसे मौर्य शासक अजातशत्रु ने छठी शताब्दी ई.पू. में बनवाया था।

लक्ष्मी नारायण मंदिर– यह मंदिर भगवान विष्णु एवं उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मी को समर्पित है। यह गुलाबी रंग का मंदिर है और पास में गर्म पानी का स्रोत है।

बाजार

राजगीर में स्थानीय हस्तशिल्प और धार्मिक वस्तुओं जैसे कि घंटियों, मूर्तियों, अगरबत्तियों, मालाओं आदि की खरीददारी के लिए कुछ अच्छी दुकानें हैं।

कौशांबी

यह प्रमुख धार्मिक स्थलों में से एक है और जिसकी बुद्ध प्रायः प्रशंसा करते थे। बुद्ध के समय में कौशांबी भारत के छह समृद्ध नगरों में से एक था। बुद्ध ने संबोधि के बाद छठे और नौवें वर्ष में कौशांबी की यात्राएँ की थीं।

अपनी दोनों यात्राओं के समय, बुद्ध ने कौशांबी में अनेक उपदेश दिए जिसके कारण यह बौद्धों के लिए शिक्षा का एक केन्द्र बन गया। यद्यपि, आधुनिक कौशांबी अपने गौरवशाली अतीत की छायामात्र है और न तो यह पहले जैसा विकसित है और न ही उसमें पहले जैसी विशिष्टता है।

सामान्य सूचना

- देश - भारत।
- राज्य - उत्तर प्रदेश।
- मौसम - नवम्बर से फरवरी तक-सर्दी, अप्रैल से जूने तक-गर्मी, तथा जुलाई से सितम्बर तक-मौसम अच्छा एवं सुहावना होता है।
- महत्त्व - बुद्ध ने इस स्थान की दो बार (522 ई.पू. तथा 519 ई.पू.) यात्रा की और अनेक उपदेश दिए।
- भाषा - हिन्दी एवं अंग्रेजी।
- त्यौहार - बुद्ध पूर्णिमा (अप्रैल या मई) एवं बुद्ध महोत्सव (दिसम्बर) बौद्धों के प्रमुख त्यौहार हैं। दुर्गा पूजा, होली और दीपावली हिन्दुओं के प्रमुख त्यौहार हैं। महावीर जयंती जैनों का प्रमुख त्यौहार है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

प्राचीन कौशांबी के खंडहर- प्राचीन कौशांबी के उत्खनन कार्य से संकेत मिला है कि वर्तमान कौशांबी लगभग 800 साल पहले एक समृद्ध नगर था। नगर की खुदाई से अनेक अवशेष मिले जिनमें अशोक स्तम्भ के साथ अन्य अवशेष भी शामिल हैं जैसे- प्रस्तर का क़िला, पुराने सिक्के, मूर्तियाँ, चित्र एवं अन्य वस्तुएँ। इनके अतिरिक्त, प्राचीन नगर के खण्डहरों में कई स्तूप भी मिले हैं।

आसपास के अन्य आकर्षण

शीतला देवी मंदिर-1000 वर्ष पुराना शीतला देवी का मंदिर हिन्दुओं के लिए धार्मिक महत्त्व का मंदिर बन चुका है। यह माना जाता है कि मंदिर में उच्च दैवीय शक्तियां हैं जो 51 शक्तिपीठों में से एक है। भक्तों का विश्वास है कि चैत के महीने में कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन देवी की पूजा करने पर किसी को भी पापों से मुक्ति मिल सकती है।

प्रभाषगिरि- यह कौशांबी में एक छोटी-सी पहाड़ी है तथा जैनों के लिए बहुत धार्मिक महत्त्व रखती है। पहाड़ी के शिखर पर एक छोटी-सी गुफा है जो दूसरी शताब्दी ई.पू. गुप्त काल की है जिसमें ब्रह्मी लिपि में अभिलेख हैं। हिन्दू पुराणशास्त्र के अनुसार ऐसा माना जाता है कि प्रभाषगिरि वह स्थान है जहाँ जरतकुमार के तीर से श्री कृष्ण की मृत्यु हुई थी।

बाजार

कोई भी व्यक्ति कौशांबी से बौद्ध पूजा-अर्चना करने के लिए वस्तुएँ खरीद सकता है जैसे-घण्टी, अगरबत्ती एवं थांकाचित्र।

मार्ग

वायुमार्ग- कौशांबी के सबसे नज़दीक हवाई अड्डे इलाहाबाद (50 किलोमीटर), वाराणसी (150 किलोमीटर) तथा कानपुर (160 किलोमीटर) में स्थित है जो भारत के प्रमुख शहरों के साथ-साथ विदेश की उड़ानों का भी स्वागत करते हैं।

रेलमार्ग- कौशांबी से सबसे नजदीक इलाहाबाद रेलवे जंक्शन है। रेल से जाने का एक अन्य स्टेशन भारवाड़ी है जो 40 किलोमीटर दूर है तथा उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। इन स्थानों से पर्यटक बस या कार पकड़कर आसानी से कौशंबी पहुँच सकता है। कोई भी व्यक्ति कार किराये पर लेकर या बस द्वारा तथा यहाँ तक कि रेल द्वारा भी कौशांबी पहुँच सकता है।

सड़कमार्ग- सड़क नेटवर्क इलाहाबाद को आसपास के शहरों से जोड़ता है क्योंकि यह राष्ट्रीय राजमार्ग 2 तथा 27 पर पड़ता है। उत्तर प्रदेश के सभी प्रमुख शहरों जैसे- कानपुर, वाराणसी से कोई भी व्यक्ति कौशांबी की यात्रा के लिए बस, रेल एवं कार ले सकता है।

श्रावस्ती

एक प्रमुख बौद्ध स्थल है जो प्राचीन काल में कोशल महाजनपद की राजधानी था। किंवदंती के अनुसार राजा श्रावस्त ने श्रावस्ती की स्थापना की और उन्होंने श्रावस्ती में बुद्ध एवं उनके शिष्यों का 24 वर्षों तक आतिथेय सत्कार किया था। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध ने श्रावस्ती में बौद्ध मत न मानने वालों को विश्वस्त करने के लिए चमत्कार प्रदर्शित किया

था। प्राचीन श्रावस्ती शहर दर्शकों के सामने अपने पुराने स्तूपों, राजसी विहारों एवं अनेक मंदिरों के कारण पुनः जीवित हो चुका है।

महत्त्वपूर्ण सूचना

- देश - भारत।
- राज्य - उत्तर प्रदेश।
- मौसम - अप्रैल से जून तक-गर्मी, नवम्बर से फरवरी तक-सर्दी, जुलाई से सितम्बर तक-वर्षा तथा अक्तूबर से अप्रैल तक का मौसम यात्रा के लिए सबसे उचित है।
- महत्त्व – यहाँ बुद्ध ने 24 वर्ष व्यतीत किए।
- भाषा - हिन्दी एवं अंग्रेजी।
- त्यौहार - बुद्ध जयंती, महावीर जयंती, होली एवं दीपावली।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

जेतवन विहार- यह एक धार्मिक स्थल है जहाँ बुद्ध ने 24 वर्ष व्यतीत किए। इसका नाम श्रावस्ती के राजा प्रेसेनजित के नाम के कारण पड़ा। इसके अन्दर सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान आनन्द बोधिवृक्ष है जो श्रीलंका के बोधिवृक्ष की शाखा से उगाया गया है जो बोधगया के मूल बोधिवृक्ष का ही वंशज है। इसके अतिरिक्त, आनंद कुटी विहार एवं गंधकुटी विहार के खंडहर अन्य धार्मिक स्थल हैं जहाँ प्रायः बुद्ध ठहरते थे।

मठ- जेतवन विहार के नजदीक विभिन्न देशों के मठ हैं। जहाँ बौद्ध ध्यान साधना एवं अन्य क्रियाकलाप करते हैं। इन मठों के पास एक सुन्दर उपवन है जिसमें जापानी तीर्थयात्रियों द्वारा दान दिया गया, एक विशाल घण्टा रखा है।

महेथ- यह प्राचीन काल में एक क़िलेबन्द नगर था। यह जेतवन के उत्तर में स्थित है। महेथ के अवशेषों में दो स्तूप सम्मिलित हैं जिनमें से एक निर्दयी डाकू अंगुलिमाल का है जो बुद्ध के प्रवचनों से प्रभावित होकर बौद्ध बन गया था। उसका स्तूप पक्की कुटी के नाम से प्रसिद्ध है। जबकि दूसरा सुदत्त का है जो बुद्ध का शिष्य था तथा यह कच्ची कुटी के नाम से जाना जाता है।

अन्य आकर्षण

जैन मंदिर- इस मंदिर के अवशेष मध्यकालीन युग के हैं। यह तीसरे जैन तीर्थांकर स्वयंभूनाथ का जन्म स्थल है।

बाजार

कोई भी व्यक्ति स्थानीय हस्तशिल्प एवं बौद्ध वस्तुएँ श्रावस्ती में पर्यटक स्थलों के आसपास की दुकानों से खरीद सकता है।

वैशाली

छठी शताब्दी ई.पू. में वज्जि संघ महाजनपद में वैशाली नगर लिच्छवियों की राजधानी था जो विश्व का प्रथम गणराज्य था। यहाँ 599 ई.पू. में चौबीसवें तीर्थांकर महावीर का जन्म एवं पालन-पोषण वैशाली के गुण्डलग्राम में हुआ था, जो इसे जैनों के लिए भी एक पवित्र तीर्थस्थल बनाता है। इसके अलावा, यहाँ बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश दिया था तथा राजा कालाशोक ने 383 ई.पू. में द्वितीय संगीति आयोजित की थी। इसलिए यह बौद्धों एवं जैनों दोनों के लिए एक धार्मिक स्थल है।

बुद्ध के समय में वैशाली एक विशाल, फलता-फूलता, लोगों से आबाद तथा एक समृद्ध नगर था और अनेक अवसरों पर बुद्ध ने वैशाली की यात्राएँ की थीं। उस समय यहाँ 7707 उपवन तथा उतनी ही संख्या में कमल सरोवर थे। इसकी गणिका आम्रपाली अपनी सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध थी तथा उसने नगर को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था। नगर में तीन द्वार थे और तीनों द्वारों पर दुर्ग थे जिनसे निगरानी की जाती थी। नगर के बाहर हिमालय तक फैला हुआ, एक सघन जंगल था। उसके पास अन्य वन थे जैसे-गोसिंगलासाला। फाह्यान (चौथी शताब्दी ई.) तथा ह्वेनसांग (सातवीं शताब्दी ई.) के यात्रावृत्तांतों में नगर का वर्णन मिलता है जिनका 1861ई. में अलेक्जैंडर कनिघंम द्वारा उपयोग किया गया जब वैशाली की पहचान बिहार के बसाढ़ नामक गाँव के रूप में की थी।

इसका वैशाली नाम महाभारत काल के राजा विशाल के नाम के कारण पड़ा था। इसलिए इस नगर को विशाला भी कहा जाता था। पाँचवीं शताब्दी के थेरवादी बौद्ध भाष्यकार एवं विद्वान बुद्धघोष ने इसे वैशाली कहा क्योंकि यह बहुत विशाल था।

इतिहास

कुछ लोग ही वैशाली के इतिहास के विषय में जानते हैं। विष्णु पुराण में वैशाली के 34 राजाओं का उल्लेख किया गया है, जिनमें नभंग प्रथम राजा था, जिसके विषय में कहा जाता है कि उसने मानवाधिकार के एक मामले की वजह से अपना सिंहासन त्याग दिया था तथा उसने घोषणा की थी "अब मैं अपने क्षेत्र के राजा की अपेक्षा राज्य का एक स्वतंत्र कृषक हूँ।" उन 34 में अंतिम राजा सुमति था।

वैशाली में महावीर का जन्म हुआ था। बुद्ध ने अपना अंतिम उपदेश वैशाली में दिया था और वहाँ अपने महापरिनिर्वाण की घोषणा की थी। वैशाली प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली की मातृभूमि के रूप में भी प्रसिद्ध है जो बुद्ध की शिष्या बन गई थी तथा जिसके विषय में बौद्ध साहित्य में अनेक लोक कहानियाँ प्रचलित हैं।

वैशाली से एक किलोमीटर दूर अभिषेक पुष्कर्णी सरोवर है। वैशाली के निर्वाचित प्रतिनिधियों ने पवित्र सरोवर का जीणोद्धार करवाया है। इसके आगे, जापान के निप्पोजेन मायोहोजी समुदाय द्वारा निर्मित जापानी मंदिर एवं विश्व शांति स्तूप स्थित हैं।

स्तूप नं. 1 पुष्कर्णी सरोवर के पास स्थित है। यहाँ बुद्ध के शरीर के आठ अवशेषों में से एक पर लिच्छवियों ने स्तूप बनवाया था। बुद्ध ने अंतिम उपदेश देने के बाद कुशीनगर की ओर प्रस्थान किया। फिर भी लिच्छवियों ने उनका अनुगमन किया। तब बुद्ध ने उन्हें अपना दान-पात्र भेंट किया किन्तु उन्होंने वापस जाने से इंकार कर दिया। तब बुद्ध ने नदी में बाढ़ का भ्रम उत्पन्न किया जिसने उन्हें वापस जाने के लिए विवश कर दिया। इस स्थान की पहचान वर्तमान केसरिया गाँव के रूप में हुई, जहाँ सम्राट अशोक ने स्तूप बनवाया था। बुद्ध के शिष्य आनंद ने वैशाली के बाहर गंगा के पास निर्वाण प्राप्त किया था।

बुद्ध की वैशाली की यात्राएँ

बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद, वैशाली की यात्रा की और वहाँ वर्षावास व्यतीत किया। थेरवादी भाष्यों में इस यात्रा का विस्तृत विवरण मिलता है। वैशाली 7707 राजाओं का आबाद नगर था जिनमें प्रत्येक का संयुक्त परिवार था और उनके पास अनेक महल एवं उद्यान थे। अकाल के कारण खाद्य आपूर्ति में कमी हो गयी तथा अधिक संख्या में लोग मारे गए। शरीर के सड़न की गंध से बुरी आत्माएं आकर्षित हुईं तथा अनेक निवासी आंत्र संबंधी रोगों से संक्रमित हो गए। लोगों ने राजा से शिकायत की तथा उसने एक सभा आयोजित की

जहाँ विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि अपने नगर में बुद्ध को निमंत्रित किया जाए क्योंकि तब बुद्ध राजगीर के वेलुवन में ठहरे थे। लिच्छवि महालि बिम्बिसार के पास इस विनती के साथ भेजा गया कि वह बुद्ध को वैशाली की यात्रा के लिए अवश्य मना लेगा।

महालि की कहानी सुनकर बिम्बिसार ने स्वयं बुद्ध का उल्लेख किया और प्रस्थान की अनुमति प्रदान की। वह बुद्ध के पास गया और फिर बुद्ध पाँच सौ भिक्षुओं के साथ यात्रा आरंभ की। बिम्बिसार ने गंगा से राजगीर तक मार्ग को सजाया जिसकी दूरी पाँच मील थी तथा मार्ग में सभी प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की गईं। वह बौद्ध संघ के साथ चला और सभी पाँच दिनों में गंगा पर पहुँचे। बुद्ध और भिक्षुओं के लिए नाव तथा डेक राजसी शान से तैयार किए गए और कहा जाता है कि बुद्ध का अनुगमन करते हुए गंगा का जल बिम्बिसार के नाक तक पहुँच गया था। लिच्छवियों ने तट पर बुद्ध का स्वागत किया और बिम्बिसार की तुलना में अधिक सम्मान प्रकट किया। जैसे ही बुद्ध ने वज्जी क्षेत्र में पैर रखे तो वहाँ तेज गरज के साथ तूफान आया तथा मूसलाधार वर्षा हुई। वैशाली से गंगा की दूरी तीन मील थी तथा जैसे ही बुद्ध वैशाली पहुँचे तथा सक्क उनके स्वागत के लिए आए और उन्हें देखते ही सभी बुरी आत्माएं डर से भाग गईं। बुद्ध ने सायंकाल में आनन्द को रत्न सुत्त का उपदेश दिया और आदेश दिया कि नगर के अन्दर तीन स्थानों पर इसका पुनः पाठ होना चाहिए तथा नगर का भ्रमण लिच्छवि राजा से अनुमति लेकर करना। आनंद ने यह रात के तीसरे पहर में किया तथा नगरवासियों की सभी बीमारियां समाप्त हो गईं। बुद्ध ने स्वयं सभा में रत्न सुत्त का पाठ किया और 84000 लोगों ने धर्म परिवर्तित किया। यह कार्य निरंतर सात दिनों तक चला तथा उसके बाद बुद्ध वैशाली से चले गए। *दीघ निकाय* के अनुसार बुद्ध वैशाली में सात दिन ठहरे थे। लिच्छवि बुद्ध के पीछे चल दिए तथा गंगा नदी ने उनके प्रति पूर्व की तुलना में अधिक सम्मान प्रकट किया तथा देवों एवं नागों में उनके प्रति सम्मान प्रकट करने की होड़ मच गई। आगे नदी के तट पर बिम्बिसार उनके आगमन और राजगीर में पुनः मार्गदर्शन का इंतजार कर रहे थे। वहाँ लौटने पर, बुद्ध ने सुक जातक का पाठ किया। यह कहना संभव नहीं है कि बुद्ध ने वैशाली की कितनी यात्राएँ की थीं किन्तु ग्रन्थों में अनेक यात्राओं का उल्लेख मिलता है। वैशाली में वर्णित विनय के नियम इसका निर्धारण करते हैं। यात्रा के विषय में वर्णित अंतिम सन्दर्भ से ऐसा लगता है कि यह लम्बी यात्राओं में से एक थी। इस अवसर पर बुद्ध भिक्षुओं को आदेश देते हैं कि वे अपने दानपात्र लिच्छवि क्षेत्र में छोड़ दें। विनय के अन्य नियम भी वैशाली की यात्रा का निर्धारण करते हैं। एक बार, बुद्ध कपिलवस्तु से वैशाली गए और वैशाली में निवास के दौरान जब महाप्रजापति गौतमी पाँच सौ अन्य शाक्य स्त्रियों के साथ वहाँ आयीं तो आनंद के हस्तक्षेप से स्त्रियों को कुछ शर्तों के साथ संघ में प्रवेश मिल गया।

बौद्ध ग्रन्थों में बुद्ध की वैशाली से कुशीनगर की यात्रा का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस यात्रा के अंतिम दिन बुद्ध भोजन ग्रहण करने के बाद आनन्द के साथ दोपहर का आराम चापाल चैत्य पर करते हैं और फिर मार्ग में आनंद से संवाद के दौरान वैशाली की सुन्दरता के विषय में कहा तथा उदेन चैत्य, गोतमक चैत्य, सत्तंबक चैत्य आदि का उल्लेख किया। पहले ये सभी मंदिर थे जो स्थानीय देवों को समर्पित थे। किन्तु बुद्ध की वैशाली की यात्रा के बाद, वे बौद्ध पूजा स्थलों में बदल गए। वैशाली के आसपास के विहारों का भी उल्लेख किया जैसे-पाटीकाराम एवं वालीकाराम।

वैशाली में लिच्छवियों द्वारा स्थापित शारीरिक स्तूप

बुद्ध वैशाली की यात्राओं के दौरान प्रायः कुटागारशाला में ठहरते थे, किन्तु ऐसा लगता है कि कभी - कभी वे अन्य स्थलों पर भी ठहरते थे। चापाल चैत्य की अपनी अंतिम यात्रा के समय, उन्होंने तीन महीनों के अन्दर अपने महापिरनिर्वाण का निर्णय लिया तथा मार को सूचित किया और फिर बाद में आनंद को सूचित किया। अगले दिन, अंतिम बार नगर को देखा तथा संपूर्ण शरीर एक हाथी की भांति घुमाया और वैशाली नगर को छोड़ भंदग्राम की ओर चल दिए। बुद्ध ने वर्षावास के दौरान वैशाली के एक उपनगर बेलुवगाम में निवास किया जबकि भिक्षुओं ने वैशाली के आसपास निवास किया। वर्षावास से एक दिन पहले आम्रपाली ने बुद्ध एवं भिक्षुओं को भोजन के लिए आमंत्रित किया जिसके समापन पर उसने अपना आम्रवन संघ को दान कर दिया।

बुद्ध ने वैशाली में अनेक महत्त्वपूर्ण सुत्तों के उपदेश दिए। बुद्ध के महापिरनिर्वाण के बाद, उनके शारीरिक अवशेषों के एक भाग पर नगर में स्तूप बनवाया गया। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के लगभग सौ वर्ष बाद वैशाली फिर से बौद्धों क लिए रूचि का विषय था क्योंकिं वज्जी संघ के भिक्षुओं ने वालिकाराम विहार में आयोजित दूसरी बौद्ध संगीति में भिक्षु संघ में विवाद से संबंधित दस बातों को उठाया था।

वैशाली में जैन धर्म

श्वेताम्बर स्पष्ट कहते हैं कि महावीर का जन्म और पालन-पोषण क्षत्रियकुंड, वैशाली में राजा सिद्धार्थ तथा रानी त्रिशला के घर हुआ था। वैशाली जैनों का भी गढ़ था तथा यह कहा जाता है कि भगवान महावीर ने योगी जीवन के 42 वर्षावास में से 12 वैशाली में व्यतीत किए। वैशाली पातीकपुत्त तथा कंदरामासुक का भी निवास स्थल था। बुद्ध के अनेक

प्रमुख अनुयायी वैशाली में रहते थे जिनमें उग्गा, पिंगियानी, कर्णपाली, सिहा, वासिथा और अनेक लिच्छिवि प्रमुख थे।

कूटागारशाला विहार

वह विहार है जहाँ बुद्ध वैशाली की यात्राओं के दौरान सबसे अधिक बार ठहरे थे। यह शारारिक स्तूप से 3 किलोमीटर दूर है। इसकी भूमि से आनन्द स्तूप, अशोक स्तंभ एवं एक प्राचीन सरोवर देखे जा सकते हैं।

पुष्कर्णी सरोवर

शारीरिक स्तूप से 100 मीटर की दूरी पर अभिषेक पुष्कर्णी सरोवर है। सरोवर के पवित्र जल से निर्वाचित सदस्य अभिषेक करते हैं।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

विश्व शांति स्तूप- यह शांति स्तंभ के रूप में भी प्रसिद्ध है तथा बौद्धों के लिए वर्तमान में अत्यधिक पवित्र स्थल है। इसे भारत एवं जापानी सरकार ने संयुक्त रूप से बनवाया था।

शारीरिक स्तूप- स्तूप 1 तथा 2 चौथी शताब्दी ई.पू. में बनवाये गए थे तथा ये ईंटों के बने हैं और इनमें बुद्ध के शरीर की राख, एक मंजूषा में रखी है।

आसपास के अन्य आकर्षण

अशोक स्तम्भ- प्रसिद्ध सिंह स्तंभ सम्राट अशोक ने बनवाया था। यह भव्य भारतीय वास्तुकला का प्रतीक है और लाल बलुआ पत्थर से बनी अकेली कलाकृति है जिसके शीर्ष पर एक घण्टाकार आकृति है। इस स्तंभ के शीर्ष पर शेर की मूर्ति सुशोभित है।

अभिषेक सरोवर- लिच्छवि के राजा राज्याभिषेक से पहले इसमें स्नान करते थे।

भवन पोखर मंदिर- यह मंदिर हिन्दुओं के लिए एक पवित्र स्थल है। इसे पाल वंश के दौरान बनाया गया था। यह भवन झील के किनारे पर स्थित है।

चौमुखी महादेव मंदिर- यह हिन्दुओं के लिए एक धार्मिक स्थल है। इसमें एक चौमुखी शिवलिंग की मूर्ति है।

वैशाली संग्रहालय- इसमें बुद्ध एवं महावीर के जीवन से संबंधित क्षेत्रीय हस्तशिल्पों एवं कलाकृतियों का एक छोटा सा संग्रह है।

नालंदा

नालंदा शब्द न-अलम-दा से उत्पन्न है जिसका अर्थ है वह स्थान जहाँ ज्ञान के क्षेत्र में अन्त नहीं होता था। बुद्ध भी ज्ञान के प्रतीक हैं। नालंदा प्रमुख बौद्ध स्थलों में से एक है और विश्व के प्राचीन शिक्षा केन्द्र के भग्नावशेषों के लिए विख्यात है। यह बड़गाँव के पास स्थित है। यद्यपि आज एक खंडहर है परन्तु अभी भी बौद्ध एवं जैन धर्म (महावीर को नालंदा के पास पावापुरी में मोक्ष प्राप्त हुआ) के इतिहास के कारण महत्त्वपूर्ण स्थल है।

नालंदा, बिहार में उच्च शिक्षा का प्राचीन केन्द्र था। यह पटना से लगभग 88 किलोमीटर दूर है। पाँचवीं शताब्दी ई. से 1197 ई. के दौरान बौद्ध अध्ययन का प्रमुख केन्द्र था। नालंदा विश्वविद्यालय शंकरादित्य (जिसकी पहचान अनिश्चित है और जो कुमारगुप्त-1 या कुमारगुप्त हो सकते हैं) और हिन्दू गुप्त शासकों के संरक्षण के साथ-साथ बौद्ध सम्राटों जैसे- हर्ष और बाद में पाल शासकों के शासनकाल में फला-फूला।

नालंदा परिसर लाल ईंटों से निर्मित है तथा इसके खंडहर 14 हैक्टेयर में फैले हुए हैं। अपने चरमोत्कर्ष काल में विश्वविद्यालय दूर-दराज से विद्वानों एवं छात्रों को आकर्षित करता था जैसे- चीन, तिब्बत, ग्रीक एवं पर्शिया। 1193 ई. में बख्तियार खिलजी के नेतृत्व में नालंदा को लूटा और नष्ट कर दिया गया। नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय इतना विशाल था कि आक्रमणकारियों द्वारा इसे आग के हवाले करने पर भी यह तीन महीनों तक जलता रहा था। उन्होंने विहारों को लूटा एवं नष्ट कर दिया तथा भिक्षुओं को मार डाला। सन् 2006 में चीन, जापान, सिंगापुर एवं भारत तथा अन्य देशों ने नालंदा अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में प्राचीन स्थल के उत्थान एवं पुनः प्रतिष्ठित करने वाले एक प्रस्ताव की योजना की घोषणा की थी।

नालंदा की व्युत्पत्ति

ह्वेनसांग ने नालंदा नाम के अनेक स्पष्टीकरण दिए जैसे- यह नाम नागों के कारण पड़ा जो आम्रवन के मध्य में स्थित सरोवर में रहते थे। अन्य में, बुद्ध ने अपने पूर्व-जन्म में यहाँ एक राजा के घर जन्म लिया था और यह स्थान उनकी राजधानी था तथा उनकी

दानशीलता के कारण, इसका नाम नालंदा पड़ा था। अनेक विद्वानों ने नालंदा की पहचान नालक गाँव के रूप में की है जहाँ सारीपुत्त का परिनिर्वाण हुआ था।

इतिहास एवं गुप्तकाल में पराकाष्ठा

कुछ ऐतिहासिक अध्ययन सुझाव देते हैं कि राजा उकरादित्य के शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय स्थापित किया गया था। ह्वेनसांग तथा प्रज्ञवर्मन दोनों ने उसका संस्थापक के रूप में उल्लेख किया है।

इतिहासकार सुकुमार दत्त ने नालंदा विश्वविद्यालय के इतिहास को दो भागों में वर्गीकृत किया है। प्रथम, जब यह गुप्त काल में उदार सांस्कृतिक परंपराओं के अधिकार में था तो इसने छठी शताब्दी ई. से नौवी शताब्दी ई. के दौरान उत्थान एवं विकास किया। दूसरा, जब पूर्वी भारत में बौद्ध धर्म में अत्यधिक तंत्र विकसित हो गया तो इसका नौवीं शताब्दी में पतन शुरू हो गया तथा तेहरवीं शताब्दी में अंत हो गया।

पाल युग में नालंदा

प्राचीन बंगाल एवं मगध में पाल युग के दौरान कई विहार निर्मित किए गए। तिब्बती स्रोतों के अनुसार, उनमें पाँच महाविहार प्रमुख थे जैसे- विक्रमशिला, नालंदा जिसका उत्कर्ष अतीत आज तक सुविख्यात है, सोमपुर, ओदानतपुर, जगदल आदि। पाँचों महाविहारों में एक जैसी व्यवस्था गठित थी। सभी राज्य पर्यवेक्षण के अधीन थे और उनके बीच समन्वय की एक व्यवस्था मौजूद थी। बौद्ध साक्ष्यों से लगता है कि पाल राजाओं के अधीन पूर्वी भारत में बौद्ध शिक्षा के अनेक केन्द्र थे, जो एक व्यवस्था के रूप में कार्य करते थे तथा संस्थाओं का परस्पर जुड़ा हुआ समूह था जिसमें विद्वानों का एक स्थान से दूसरे तक आवागमन, एक सामान्य बात थी। पाल युग के दौरान नालंदा महाविहार कम उत्कृष्ट था क्योंकि पाल राजाओं ने अन्य संस्थान स्थापित किए और नालंदा से अनेक विद्वानों को आकर्षित किया जब वे संस्थान पाल शासकों के संरक्षण में आए।

नालंदा का पतन

1193 ई. में कट्टरपंथी बख्तियार खिलजी ने नालंदा पर लूटने उद्देश्य से आक्रमण किया। इस घटना को विद्वान भारत में बौद्ध धर्म के पतन के रूप में देखते हैं। फारसी इतिहासकार मिनाज-ई-सिराज ने अपने इतिवृत्त *ताबकत आई-नसीरी* में लिखा है कि

खिलजी की तलवार की धार पर इस्लाम को फैलाने की योजना थी और उसने अपने प्रयासों से बौद्ध धर्म उखाड़ फेंका तथा हजारों भिक्षुओं को जीवित जला दिया और सिर कलम कर दिए। महाविहार का पुस्तकालय कई महीनों तक जलता रहा और जलते हुए ग्रन्थों से निकलता धुआं ऐसा प्रतीत होता था जैसे पहाड़ियों के ऊपर काले कपड़े का आवरण हो।

इस दौरान विभिन्न कारणों से बौद्ध धर्म का पतन हो रहा था। दैनिक जीवन में ब्राह्मणों की शक्ति और जाति व्यवस्था का निरंतर बढ़ना, बौद्ध दर्शन के लिए एक सीधा खतरा था जिसने इसके सामाजिक एवं राजनीतिक आधार को विस्थापित कर दिया तथा भक्ति आन्दोलन के परिणामस्वरूप, अनेक हिन्दू मंदिरों का निर्माण हुआ जिन्होने बौद्ध दर्शन को दुर्बल कर दिया हैं। यह पतन बारहवीं शताब्दी में पाल वंश के अंतिम राजा के बाद भी जारी रहा, तत्पश्चात मुस्लिम आक्रांताओं ने विहारों को नष्ट कर दिया।

शाक्यश्रीभद्र नालंदा के अंतिम मठाधीश थे जो तिब्बती अनुवादक तरोपु-लोत्सवा के निमंत्रण पर 1204 ई. में तिब्बत गए। तिब्बत में, उन्होंने दो मौजूद वंशों के पूरक के लिए मूलसर्वास्थिवादी वंश की दीक्षा को आरंभ किया।

1235 ई. में, जब तिब्बती अनुवादक चेग लोत्सवा ने इस स्थान की यात्रा की तो उसने इसे नष्ट पाया था जहाँ राहुल श्रीभद्र नामक शिक्षक लगभग 70 छात्रों की एक कक्षा को पढ़ा रहे थे। चेग लोत्सवा के समय वहाँ तुर्कों ने आक्रमण किया और शेष छात्र भी वहाँ से भाग गए। इन सब के बावजूद, जिस समय चेगलराज ने नालंदा के अंतिम राजा को सहायता के लिए सूचित तब तक अपर्याप्त संसाधनों के निरंतर संघर्ष ने शेष बौद्ध समुदाय को दुर्बल बना दिया था। इतिहासकार डी.सी. अहीर ने नालंदा और उत्तर भारत के मठों, मंदिरों, शिक्षा केन्द्रों के विनाश के लिए गणित, ज्योतिष-शास्त्र, शरीर रचना विज्ञान में भारत के प्राचीन विचारों को पतन के लिए उत्तरदायी माना है।

सिंहावलोकन

नालंदा विश्व के प्राचीन आवासीय विश्वविद्यालयों में से एक था जिसके पास छात्रों के लिए छात्रावास थे। यह विश्व के विख्यात विश्विविद्यालयों में से एक था और वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण था। ऊँची दीवार तथा द्वार इसके विशेष प्रतीक थे। नालंदा में आठ पृथक प्रांगन तथा दस मंदिरों सहित ध्यान के लिए अनेक हॉल तथा कक्षा कक्ष थे। मैदान पर झीलें तथा उद्यान थे। पुस्तकालय नौ मंजिला इमारत में स्थित था जहाँ सावधानी से ग्रन्थों की

प्रति तैयार की जाती थी। महाविहार में अनेक विषय पढाए जाते थे। यह छात्रों तथा विद्वानों को चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत, इंडोनेशिया, पर्शिया, तुर्की आदि देशों से आकर्षित करता था। राजा हर्ष के शासनकाल में विश्वविद्यालय के पास अपने 200 गाँव थे जो इसे दान देते थे।

ह्वेनसांग के यात्रावृत्तांत में सातवीं शताब्दी के विश्वविद्यालय का वर्णन किया गया है। उसने लिखा है कि कैसे मीनारों, मंडपों, हार्मिकों तथा मंदिरों के नियमित प्रदर्शन से मानो आकाश में धुंध बहुत बढ़ जाती है जिसकी वजह से भिक्षु अपने कक्षों से हवा और बादलों की उत्पत्ति देख सकते हैं। तीर्थयात्री आगे कहते हैं कि मठ के चारों ओर हवा का नीला आकाश रूपी पुल, परिसर नीले कमल के फूलों से सुशोभित है तथा इधर-उधर चंपा के चमकीले फूल खिले हैं और बाहर आम के वनों की घनी छाया निवासियों को गर्मी से सुरक्षा प्रदान करती है। नालंदा महाविहार के भग्नावशेषों में अनेक विहारों से प्रवेश कर, भूतल पर धनुष का प्रतीक देखा जा सकता है जो गुप्त वंश का राजकीय प्रतीक था।

पुस्तकालय

नालंदा का पुस्तकालय धर्मगंज के नाम से जाना जाता था। इसके संग्रह के विषय में कहा जाता है कि इसमें लाखों ग्रन्थ थे जो इतने व्यापक थे कि जब तुर्क आक्रांताओं ने इसे जलाया था तो यह लगभग कई महीनों से अधिक तक जलता रहा था। पुस्तकालय नौ मंजिला ऊँचा था जिसमें तीन मुख्य भवन थे- रतन सागर, रतनोदधि तथा रतनरंजक।

पाठ्यक्रम

महाविहार पर तिब्बती बौद्ध परंपरा का नियंत्रण था तथा चार प्रमुख दर्शन पढ़ाए जाते थे। अलेक्जेंडर बेर्जिन ने इनको वर्गीकृत किया था जैसे- 1. सर्वास्तिवाद वैभाषिक 2. सर्वास्तिवाद सौत्रान्तिक 3. माध्यमिक, नागार्जुन का महायान दर्शन 4. योगाचार- असंग तथा बसुबंधु का महायान दर्शन।

धर्म फैलोशिप (2005) के एक लेख के अनुसार मंजूरी मित्रा के समय में नालंदा महाविहार के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय शामिल थे जिनमें वास्तव में उस समय संपूर्ण विश्व के ज्ञान का क्षेत्र उपलब्ध था। छात्र विज्ञान, खगोल विज्ञान तथा तर्कशास्त्र का अध्ययन

उतनी ही लगन से करते थे जितनी कि वे तत्त्वमीमांसा, दर्शन, सांख्य, वेद और बौद्ध धर्म के ग्रन्थों का अध्ययन करते थे। इसी तरह वे पाश्चात्य दर्शन का अध्ययन करते थे।

ह्वेनसांग ने अपने यात्रा विवरण में नालंदा के लगभग 1510 शिक्षकों का उल्लेख किया है। इनमें से लगभग 1000 शिक्षक 20 सूत्रों तथा शास्त्रों के संग्रह की व्याख्या करने के योग्य थे। लगभग 500 शिक्षक 30 संग्रहों का भाष्य करने के योग्य थे। केवल 10 शिक्षक ही 50 या उससे अधिक संग्रहों का भाष्य करने के योग्य थे। उस समय, नालंदा में केवल मठाधीश शीलभद्र ही सभी प्रमुख सूत्रों के संग्रह एवं शास्त्रों के भाष्य करने के योग्य थे।

चीनी यात्री इत्सिंग ने लिखा है कि नालंदा महाविहार में प्रशासन और विचार-विमर्श के विषयों पर सभा बुलाई जाती थी। सभा में सभी विद्वानों के साथ-साथ आवासीय भिक्षुओं की भी सहमति आवश्यक थी। यदि भिक्षुओं को कोई समस्या होती थी तो वे उस विषय पर विचार-विमर्श के लिए एकत्रित होते थे। फिर, वे विहार पाल को आदेश देते थे कि समस्या की सूचना सभी आवासीय भिक्षुओं को दी जाए। यदि किसी भिक्षु को सूचना के विषय में कोई आपत्ति है तो यह रोक दी जाए। सभी को सूचित किया जाता था कि किसी को भी मारने या प्रहार का अधिकार नहीं है। किसी समस्या के विषय में यदि कोई भिक्षु आवासीय भिक्षुओं की सहमति के बिना कुछ करता था तो उसे मठ छोड़ने के लिए बाध्य किया जाता था। यदि किसी समस्या पर किसी की अलग सलाह होती थी तो वह अन्य समूह का संदेह दूर करता था। संदेह दूर करने के लिए बल प्रयोग नहीं किया जाता था।

ह्वेनसांग का कथन है कि सभी विशेषज्ञों का जीवन अत्यधिक औपचारिक एवं सख्त होने के कारण उनकी आदतें स्वयं नियंत्रित थीं। इस कारण महाविहार के सात सौ वर्ष के इतिहास में किसी व्यक्ति ने अनुशासन के नियमों का विरोध नहीं किया। राजा अपना आदर एवं सम्मान प्रकट करने के लिए इसके रख रखाव के लिए एक सौ नगरों से कर की राशि दान करता था।

बौद्ध धर्म का प्रभाव

तिब्बती बौद्ध धर्म और इसके दोनों महायान और वज्रयान सम्प्रदाय नालंदा के पूर्व शिक्षकों और परम्पराओं की देन हैं। भारतीय तार्किक दर्शन के संस्थापकों में से एक और बौद्ध परमाणुवाद के मूल सिद्धांतकारों में से एक धर्मकीर्ति (7वीं शताब्दी) ने नालंदा में अध्यापन किया था।

बौद्ध धर्म के कई मत, इस महाविहार परिसर की चारदीवारी के भीतर फले-फूले जैसे कि महायान जिसके चीन, जापान, कोरिया एवं वियतनाम में अनुयायी हैं। कई विद्वानों ने नालंदा की बौद्ध परंपरा में कुछ महायान ग्रन्थों को जोड़ा है जैसे- कमल सूत्र, जो पूर्वी एशियाई देशों में बौद्ध धर्म का महत्त्वपूर्ण सूत्र है। रोन इपस्टेन ने भी लिखा है कि सूत्र की सामान्य सैद्धांतिक स्थिति वास्तव में उसी के अनुरूप है, जो नालंदा में बौद्ध शिक्षाओं के विषय में ज्ञात है जब गुप्तकाल में इसका अनुवाद किया गया था।

ह्यू ली के अनुसार कुछ स्थविरों द्वारा नालंदा की उपेक्षा की गई क्योंकि इसका महायान दर्शन पर विशेष बल था। उन्होंने कथित तौर पर उड़ीसा की अपनी एक यात्रा के दौरान नालंदा महाविहार को संरक्षण देने के लिए राजा हर्ष की निंदा की, वहाँ पढ़ाए जाने वाले माध्यमिक दर्शन का उपहास उड़ाया और सुझाव दिया कि राजा को वैसा ही संरक्षण कापालिका मंदिर को भी देना चाहिए। जब यह घटित हुआ तो राजा हर्ष ने नालंदा के मठाधीश को सूचित किया जो उड़ीसा के भिक्षुओं के विचारों का खंडन करने के लिए महाविहार के भिक्षुओं और ह्वेनसांग को वहाँ भेजते हैं।

महाविहार के भग्नावशेष

प्राचीन नालंदा महाविहार के भग्नावशेष आज भी मौजूद हैं। इसके नजदीक सूर्य मंदिर है जो एक हिन्दू मंदिर है। ज्ञात और उत्खनित खंडहर लगभग 150000 वर्ग मीटर से अधिक क्षेत्र में फैले हुए हैं। यदि ह्वेनसांग का यात्रावृत्तांत वर्तमान नालंदा क्षेत्र की खुदाई से संबंध रखता है तो इसके लगभग 90 प्रतिशत अवशेष अभी भी जमीन के अन्दर हैं। नालंदा अब आबाद क्षेत्र नहीं है और बड़गाँव के पास स्थित है।

सन् 1951 में, भिक्षु जगदीश कश्यप ने नव नालंदा महाविहार में पाली (थेरवादी) बौद्ध अध्ययन का एक केन्द्र स्थापित किया था। अब यह संस्थान संपूर्ण क्षेत्र में सैटेलाइट इमेज द्वारा महत्त्वकांक्षी कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहा है।

नालंदा संग्रहालय में प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की टेराकोटा मोहर (मृण्मूर्ति) दिखाने के लिए रखी हुई है। यह कई पांडुलिपियों और अनेक वस्तुओं के नमूनों को प्रदर्शित करता है जो आसपास खुदाई से प्राप्त हुई हैं। 26 जनवरी, 2008 को यहाँ भारत का प्रथम मल्टीमीडिया संग्रहालय खोला गया जिसमें शेखर सुमन द्वारा निर्देशित फिल्म में नालंदा के

इतिहास को 3-डी एनीमेशन के प्रयोग से दर्शाया गया है। मल्टीमीडिया संग्रहालय में चार विभाग हैं जिसमें भौगोलिक दृश्य, ऐतिहासिक दृश्य, नालंदा का हॉल तथा नालंदा का पुनरुद्धार शामिल हैं।

पुनरुद्धार की योजना

9 दिसम्बर, 2006 को न्यूयॉर्क टाइम्स ने नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुद्वार की योजना पर कार्य करने के लिए एक बिलियन डॉलर खर्च करने की खबर छापी। चीन, जापान, सिंगापुर, भारत तथा अन्य देशों के सहायता संघ के नेतृत्व में नए विश्वविद्यालय के निर्माण के लिए 500 मिलियन डॉलर तथा 500 मिलियन डॉलर आधारभूत संरचना के विकास के लिए एकत्रित करने होंगे।

28 मई, 2007 को मेरीन्यूज ने खबर छापी कि प्रथम चरण में विश्वविद्यालय के पुनरुद्धार के लिए 1137 तक पंजीकरण होंगे तथा पाँचवें वर्ष तक 4530 पंजीकरण होंगे। दूसरे चरण में 5812 तक पंजीकरण होंगे।

12 जून, 2007 को न्यूज पोस्ट इंडिया ने खबर छापी कि जापानी राजनयिक नोरो मोतोयाशु ने कहा कि ‘‘जापान बिहार में अंतर्राष्ट्रीय नालंदा विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए अनुदान देगा।’’ रिपोर्ट में आगे कहा गया कि ‘‘प्रस्तावित अतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, प्राचीन नालंदा की भांति पूर्ण रूप से आवासीय होगा। योजना के प्रथम चरण में, सात स्कूल स्थापित किए जाएँगे जिनमें 46 विदेशी संकाय सदस्यों और 400 से अधिक भारतीय विद्वानों का चयन होगा। विश्वविद्यालय में दर्शन, आध्यात्मिकता के साथ-साथ अन्य विषयों के पाठ्यक्रम भी सम्मिलित होंगे। कोई विख्यात विद्वान इसका कुलपति होगा।

15 अगस्त, 2007 को टाइम्स ऑफ इंडिया ने खबर छापी कि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सितम्बर, 2007 में नालंदा के पुनरुद्धार के प्रस्ताव का सदस्य बनने की स्वीकृति दे चुके हैं।

5 मई, 2008 को एन.डी.टी.वी. के समाचार में कहा कि नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन के अनुसार संभवतः वर्ष 2009 में विश्वविद्यालय की आधारशिला रखी जा सकती है और फिर कुछ वर्षो के बाद शिक्षण आरंभ होगा। नालंदा मेंटर समूह के अध्यक्ष प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने कहा कि इस संबंध में अंतिम सूचना दिसम्बर, 2008 में पूर्वी एशिया समिति के सामने रखना अपेक्षित है।

11 मई, 2008 को टाइम्स ऑफ इंडिया ने खबर छापी कि मेजबान भारत और पूर्वी एशिया के देशों का एक संघ नालंदा की योजना पर विमर्श के लिए न्यूयॉर्क में मिले। यह निर्णय लिया गया कि नालंदा प्रमुख रूप से एक स्नात्कोत्तर शोध विश्वविद्यालय होगा जिसमें निम्नलिखित स्कूल होंगे- बौद्ध अध्ययन स्कूल, दर्शन एवं धर्म का तुलनात्मक अध्ययन स्कूल, ऐतिहासिक अध्ययन स्कूल, अन्तर्राष्ट्रीय संबंध एवं शांति स्कूल, व्यापार प्रबन्धन एवं विकास स्कूल, भाषा एवं साहित्य स्कूल तथा परिस्थिति एवं पर्यावरण अध्ययन स्कूल। स्कूलों का उद्देश्य एशियाई समुदाय की संकल्पना को आगे बढ़ाना एवं प्राचीन संबंधों की पुनः समीक्षा करना होगा।

13 सितम्बर, 2010 को जकार्ता ग्लोब ने खबर छापी कि भारत की वैश्विक महत्त्वाकांक्षा के प्रतीक के रूप में विश्वविद्यालय के पुनः निर्माण की योजना का प्रस्ताव संसद ने पास कर दिया गया है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

नालंदा महाविहार- यह विश्व के प्राचीन विश्वविद्यालय के रूप में अंकित है जो पाँचवीं शताब्दी ई. में स्थापित किया गया था। ऐसा माना जाता है कि महात्मा बुद्ध ने इस स्थान की यात्रा की और पवरिका के आम के उद्यान में उपदेश दिए। बाद में, भिक्षुओं ने जन साधारण को शिक्षित करने के लिए महाविहार में धम्म की शिक्षा, अभ्यास, ध्यान तथा दर्शन आरंभ करने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया। यहाँ बौद्ध धर्म के अनेक मतों का उदय हुआ जैसे- तंत्रयान, वज्रयान और महायान। यहाँ तक कि भारत में बौद्ध धर्म का पतन 12वीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा नालंदा महाविहार के ध्वंस के साथ जुड़ा हुआ है। आज संपूर्ण नालंदा कुछ स्थलों में विभाजित है जिसमें 11 विहार तथा अनेक स्तूप शामिल हैं जो ईंटों से बने हैं।

धर्मशाला

यह हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा घाटी के ऊपरी भाग में स्थित है जिसकी ऊँचाई लगभग 1250 से 2000 मीटर के बीच है। यह तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थल है। सन् 1960 से निर्वासित तिब्बती सरकार का घर और तंत्रयान का केन्द्र बन चुका है। गत चार दशकों से अधिक में निर्वासित तिब्बती समुदाय ने 200 से अधिक मठ तथा भिक्षुणी आवास स्थापित किए हैं जिनमें 20000 से अधिक भिक्षु तथा भिक्षुणी पंजीकृत हैं। जिस समय भारत में बौद्ध धर्म का पतन हो गया था तो यहाँ इसके पुनरुद्धार के प्रयास किए गए तथा जिनमें कुछ सफल भी हुए। आज धर्मशाला अनेक बौद्ध मंदिरों तथा मठों का घर है। यह स्थान विश्व में शांति एवं मैत्री के प्रसार के लिए जाना जाता है।

महत्वपूर्ण सूचना

- देश - भारत।
- राज्य - हिमाचल प्रदेश।
- स्थित - कांगड़ा घाटी।
- मौसम - हल्की गर्मी तथा अत्याधिक सर्दी।
- यात्रा के लिए उचित समय - अप्रैल से जून तथा सितम्बर से अक्तूबर तक।
- महत्त्व - तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थल।
- भाषा - हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी और पहाड़ी।
- भोजन - तिब्बती व्यंजन जैसे- थूकपा (नूडल सूप), मोमोज, सिज़लर सुकियाकी, पैनकेक, पिज्जा और स्पघेटी पास्ता।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

त्सुगलगखांग परिसर- यह तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थान है जो भारतीय उपासकों के बीच प्रमुख मंदिर के रूप में विख्यात है। इसके भवन में शाक्यमुनि बुद्ध, गुरु पद्मसंभव तथा अवलोकितेश्वर की मूर्तियाँ हैं। इनमें शाक्यमुनि बुद्ध की मूर्ति प्रमुख मानी जाती है जो तीन मीटर ऊँची है जिस पर सोने की परत चढ़ी है। इसमें तिब्बती बौद्ध साहित्य का संपूर्ण संग्रह है जिसमें कांग्यूर बुद्ध के मूल उपदेशों का संग्रह है तथा तेंग्यूर भारतीय विद्वानों द्वारा मूल सिद्धांतों पर लिखे गये भाष्यों का संग्रह है। यह जनसाधारण के लिए प्रार्थनाएं, उपदेश तथा कई उत्सव भी आयोजित करता है जैसे- मठवासी नृत्य।

मठ- धर्मशाला के आसपास विशेषकर मैकलोडगंज में अनेक तिब्बती मठ हैं जैसे दीप-त्से, चोकलिंग मठ, नेचुंग मठ तथा गादोंग मठ। जो केवल तिब्बती संस्कृति का स्पष्ट चित्र ही नहीं बल्कि तंत्रयान की जानकारी भी प्रदान करते हैं।

नामग्याल स्तूप- इसके चारों ओर प्रार्थना चक्र हैं जो उन तिब्बतियों की उन याद में स्थापित किए गए हैं जिन्होंने अपना जीवन तिब्बत को आजाद कराने की लड़ाई में त्याग दिया था। यह मैकलोडगंज में स्थित है तथा एक स्मारक के रूप में खड़ा है और उन लोगों का निर्धारण करता है जिन्होंने अत्यधिक दमन के विरूद्ध अपने जीवन में दमित लोगों की रक्षा की थी। 24 घंटे उपासक मंत्रों का पाठ करते हुए प्रार्थना चक्रों को घुमाते हैं।

तुशीता साधना स्थल- यह मैकलोडगंज के ऊपर स्थित है तथा आध्यात्मिक साधना एवं ध्यान के लिए एक उत्तम स्थान है। यह एक आवासीय स्थल है जो तंत्रयान के पाठ्यक्रम संचालित करता है।

अन्य आकर्षण

पर्वतारोहण संस्थान- यह एक प्रसिद्ध संस्थान है जो धर्मकोट के मार्ग पर स्थित है। पर्यटकों के लिए अनेक मनोहर दर्शनीय स्थलों तथा आकर्षक स्थलों की यात्रा का आयोजन करता है।

आसपास के आकर्षण

सेन्ट जॉन गिरजाघर- धर्मशाला से 8 किलोमीटर की दूरी पर वाइसराय लॉर्ड एल्गिन की कब्र है जो सुंदर कारीगरी वाली शीशे की खिड़कियों सहित प्रस्तर का गिरजाघर है, जिसकी पर्यटक निरंतर यात्रा करते हैं।

डल झील- यह धर्मशाला से 11 किलोमीटर दूर है। यह चारों ओर से देवदार के वृक्षों से घिरी हुई है और प्राकृतिक सुन्दरता का एक मनोहर पिकनिक स्थल है। छुट्टियों में घूमने के लिए एक उत्तम स्थान है।

त्रिलोकपुर- यहाँ एक प्राकृतिक गुफा मंदिर है जो भगवान शिव को समर्पित है और हिन्दुओं के लिए एक धार्मिक स्थल है तथा धर्मशाला से 41 किलोमीटर दूर है।

मसरूर- यह धर्मशाला से 40 किलोमीटर दूर है। इसमें 8वीं शताब्दी के सुन्दर मंदिर मौजूद हैं जिनमें एलोरा के कैलाश मंदिर की शैली में अखंडित पहाड़ के ऊपर नक्काशी की गई है।

धर्मकोट- यह पहाड़ी धर्मशाला से 11 किलोमीटर दूर स्थित है जो विशाल धौलाधर पर्वतमाला के मनोहर दृश्य प्रस्तुत करती है।

भगसुनाथ मंदिर- यह डल झील के पास है जहाँ मैकलोडगंज बाजार से पैदल पहुँच सकते हैं। यह धर्मशाला से 11 किलोमीटर दूर है और यहाँ एक सुन्दर झरना भी है।

चामुंडा देवी मंदिर- यह हिन्दुओं के लिए एक धार्मिक स्थल है। यह धर्मशाला से केवल 15 किलोमीटर दूर स्थित है तथा पहाड़ों का मनोहर दृश्य प्रस्तुत करता है।

चिनमाया तपोवन- यह धर्मशाला से 10 किलोमीटर सारस बिन्दु नाला के पास स्थित है तथा इस आश्रम को स्वामी चिनमायानंद ने स्थापित किया था। आश्रम के परिसर में नौ मीटर ऊँची भगवान हनुमान की मूर्ति है, एक भव्य राम मंदिर है, एक ध्यान केन्द्र है, एक स्कूल तथा एक स्वास्थ्य एवं मनोरंजन केन्द्र है।

बाजार

कोई भी व्यक्ति तिब्बती हस्तशिल्प केन्द्र की दुकानों से तिब्बती गलीचा एवं हस्तशिल्प उत्पाद खरीद सकता हैं। मैकलोडगंज की दुकानों में भी तिब्बती सामान मिलता है जैसे- चाँदी के गहने, बाहरी की वस्तुएँ, घूमने वाले प्रार्थना चक्र, रत्नजड़ित मालाएँ तथा तिब्बती देवताओं की मनोहर मूर्तियाँ।

कुशीनगर

यह सारे संसार से बौद्ध उपसकों को आकर्षित करता है। यहाँ महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन का अंतिम क्षण व्यतीत किया था। उस समय, यह मल्ल जनपद का क्षेत्र था तथा कुसीनारा के नाम से जाना जाता था। बुद्ध के महापिरनिर्वाण के बाद, यह स्थान शीघ्र प्रसिद्ध हो गया था तथा परवर्ती काल में कई स्तूप एवं विहार निर्मित किए गए। सम्राट अशोक ने यहाँ कई विहार बनवाए तथा अनेक चीनी यात्रियों ने इस शहर की यात्रा की थी।

जब देश में बौद्ध धर्म का महत्त्व कम हुआ तो कुशीनगर ने भी अपना महत्त्व खो दिया था। इसकी यात्रा करने वाले लोगों की संख्या में गिरावट आई और बौद्ध स्मारकों का संरक्षण हमेशा निम्न देखा गया। जब सर अलेक्जैंडर कनिघंम ने मुख्य स्थल के अनेक महत्त्वपूर्ण अवशेष की खुदाई करवायी तो कुशीनगर की ख्याति पुनः बढ़ने लगी। आज कुशीनगर उन चार प्रमुख स्थलों में से एक है जिसकी सारे संसार के बौद्धों की एक बार तीर्थयात्रा करने की इच्छा होती है। यह कुशीनगर जिले में नगर एक पंचायत तथा कस्बा है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

महापरिनिर्वाण मंदिर- यह शालवन के शांत क्षेत्र के मध्य में स्थित है तथा बुद्ध की 6 मीटर लंबी मृत्यु शैय्या की मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है। मूर्ति को 1876 ई. की खुदाई के दौरान खोजा गया था। ऐसी मान्यता है कि इस चुनार के लाल बलुआ पत्थर की मूर्ति को मथुरा से पाँचवीं शताब्दी ई. में हरिबल भिक्षु लाया था।

निर्वाण स्तूप- यह महापरिनिर्वाण मंदिर के पास स्थित है। यह धरातल से 2.74 मीटर ऊँचा है जिसे 1867 ई. में कारलेयले ने खोजा था। यहाँ की खुदाई से ताम्र-पत्र निकला जिसके ऊपर ब्राह्मी में एक लेख है। लेख में स्पष्ट बताया गया है कि यहाँ बुद्ध के अवशेष रखे हैं।

रामभार स्तूप- इस स्तूप के विषय में कहा जाता है कि यहाँ बुद्ध का अंत्येष्टि विधान हुआ था। स्तूप के पास एक तालाब है जो गर्मियों में तापमान बढ़ने पर सूख जाता है। यह स्पष्ट नहीं है कि दोनों, स्तूप या तालाब में से कौन सा मौलिक है जिसे रामभार कहा गया था।

जापानी मंदिर- इस मंदिर को अतागो इस्शीन विश्व बौद्ध सांस्कृतिक संघ ने बनवाया था तथा भगवान बुद्ध की अष्टधातु की मूर्ति के लिए विश्व विख्यात है। मंदिर प्रातःकाल से सायंकाल तक यात्रा के लिए खुला रहता है।

कुशीनगर संग्रहालय- यह कुशीनगर बस स्टैंड से लगभग एक किलोमीटर दूर स्थित है। संग्रहालय की मुख्य विशिष्टता भगवान बुद्ध की ध्यान मुद्रा की मूर्ति है। मूर्ति गांधार कला स्कूल के उत्कृष्ट नमूनों में से एक है। इसके अतिरिक्त, आपके देखने के लिए अन्य वस्तुएँ भी प्रदर्शित हैं जिनमें बहुमूल्य पुरावशेष जैसे - सिक्के, प्रतिमाएँ एवं कांस्य मूर्तियाँ । ये बौद्ध

खजाना स्थलों की खुदाई से मिला है। संग्रहालय में कुछ हिन्दू तथा जैन पुरावशेष भी दिखाने के लिए रखे हैं।

जापानी उद्यान- यह बच्चों का उद्यान प्रातःकाल से सायंकाल तक खुला रहता है किंतु वर्तमान में निर्माण कार्य चल रहा है। निर्माण कार्य का निरीक्षण जापानियों की देखरेख में किया जा रहा है। हालांकि, कार्य पूर्ण होने पर इसे उत्तर प्रदेश सरकार को सौंप दिया जाएगा।

म्यांमार विहार- भगवान बुद्ध की धातु की मूर्तियों से सुशोभित है। उत्खनन से बुद्ध तथा उनके अनुयायियों की अस्थियों और अष्टधातुओं का एक अद्वितीय संग्रह भी मिला है।

वाट थाई मंदिर- इसका निर्माण राजा भूमिबोल के सिंहासन के पदग्रहण के 50 वर्ष के प्रतीक में करवाया गया था। मंदिर के आसपास विभिन्न प्रकार के वृक्ष हैं।

ली सून चीनी मंदिर- यह मंदिर चीनी एवं वियतनामी वास्तुकला की शैली का सम्मिश्रण है। मंदिर के भवन में भगवान बुद्ध की सुन्दर चीनी प्रतिमा है। पर्यटकों के लिए मंदिर प्रातःकाल से सायंकाल के बीच खुला रहता है। इसके अलावा, यहाँ रात्रिवास सुविधा भी उपलब्ध है जो मंदिर मुफ्त आवास प्रदान करता है।

बिड़ला मंदिर- यह भगवान शिव को समर्पित है तथा इसे प्रसिद्ध बिड़ला परिवार ने बुद्ध के परिनिर्वाण स्थल पर बनवाया था। यहाँ भगवान शिव की संगमरमर की मूर्ति बाघ की खाल पर आसीन है। मंदिर हिन्दू एवं बौद्ध पर्यटकों को बहुत कम मूल्य पर आवास प्रदान करता है।

मुख्य स्थल पर भगवान शिव की एक संगमरमर की मूर्ति बाघ की खाल पर खड़ी है जिसमें भगवान शिव को ध्यान मुद्रा में दर्शाया गया है। ऐसा माना जाता है कि यह वह अवस्था है जिसमें जीवात्मा का परमात्मा से संवाद संभव है। मंदिर बहुत कम मूल्यों पर हिंदू और बौद्ध पर्यटकों को आवास प्रदान करता है। मंदिर में एक शयनकक्ष भी है जो विशेष रूप से भारतीय बौद्ध पर्यटकों के लिए सबसे कम दरों पर उपलब्ध है।

अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध ट्रस्ट- सन् 1996 में ट्रस्ट को इस ध्येय के साथ स्थापित किया गया था कि योग के माध्यम से जीवात्मा का परमात्मा से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। न्यास प्रत्येक वर्ष लगभग दस दिनों के लिए योग की मुक्त कक्षाएं संचालित करता है। जो लोग कक्षा में भाग लेते हैं उन्हें भोजन एवं मुफ्त आवास प्रदान किया जाता है।

आसपास के स्थल

कुशीनगर से गोरखपुर 53 किलोमीटर दूर है जबकि लुम्बिनी एवं कपिलवस्तु क्रमशः लगभग 108 किलोमीटर तथा 110 किलोमीटर हैं।

मार्ग

वायुमार्ग- कुशीनगर से नजदीक हवाई अड्डा वाराणसी है जो 275 किलोमीटर दूर है। वाराणसी से दिल्ली, कलकत्ता, लखनऊ एवं पटना के लिए उड़ाने जुड़ी हुई हैं।

रेलमार्ग- कुशीनगर के नजदीक गोरखपुर रेलवे जंक्शन है जो 53 किलोमीटर दूर है और प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है जैसे- दिल्ली, मुम्बई तथा कोची।

सड़कमार्ग- कुशीनगर राज्य तथा देश के अनेक महत्त्वपूर्ण शहरों से राजमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। कुशीनगर से गोरखपुर 53 किलोमीटर, श्रावस्ती 254 किलोमीटर, सारनाथ 266 किलोमीटर, आगरा 680 किलोमीटर है।

अध्याय -5

भारत में राज्यवार स्थित बौद्ध मठ

भारत आने वाले प्रत्येक बौद्ध पर्यटक के लिए मठ प्रमुख आकर्षण हैं। कई बौद्ध मठ भारत के बहुत बड़े भू-भाग में फैले हुए हैं और देश की बौद्ध विरासत का प्रमाण हैं। इनमें से कई मठ शताब्दियों पहले निर्मित किए गए थे और तब से आज तक खड़े हुए हैं। हालांकि, अतीत में कई नष्ट हो गए और कई का भव्य पुनः निर्माण किया गया। मठों के अन्दर की वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि यात्रा को रोचक बनाते हैं। इसके अलावा, इनमें से कई मठ मनोहर स्थानों पर स्थित हैं जैसे- पहाड़ी की चोटी, नदियों के किनारे तथा हरियाली के बीच समतल मैदान पर, जो इनके आकर्षण को कई गुणा बढ़ाते हैं। मठों के अंदर भिक्षुओं की उपस्थिति सामान्य रूप से बौद्ध धर्म और संस्कृति को जानने का एक शानदार अवसर प्रदान करती है।

यह खंड आपको मठों के विषय में जानकारी प्रदान करता है, जो यात्रा के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। आप उनके स्थान, इतिहास, वस्तुकला एवं प्रमुख आंतरिक संरचनाओं के साथ-साथ इन मठों में मनाए जाने वाले त्यौहारों का जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके अलावा, आपको इनके आसपास स्थित अन्य बौद्ध आकर्षणों की भी जानकारी प्राप्त होगी जिन्हें आप मठों की यात्रा के दौरान देख सकते हैं। अन्त में, एक भाग ऐसा भी है जो आपका मार्गदर्शन करता है कि आप मठ तक कैसे पहुँचेंगे। संक्षेप में, यदि आप भारत में स्थित मठों के विषय में जानना चाहते हैं या उन्हें देखना चाहते हैं किन्तु सूचना के अभाव के कारण देख नहीं पाते हैं तो यह खंड सबसे उत्तम है।

बिहार में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ

बिहार का बोधगया वह स्थान है जहाँ सिद्धार्थ गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ और वे बुद्ध कहलाए। आज यह सारे संसार के बौद्धों के लिए एक प्रमुख गंतव्य है। बोधगया उन चार प्रमुख स्थलों में से एक है जहाँ तीर्थयात्रियों के समूह भगवान बुद्ध के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए आते हैं। जिन्होंने सत्य की खोज के लिए संसार की सभी सुख-सुविधाओं को त्याग दिया था।

इस धार्मिक स्थल पर बोधिवृक्ष और महाबोधि मंदिर के अलावा, अनेक देशों के मठ हैं जो आपकी बौद्ध तीर्थस्थलों की यात्रा को उपयोगी बनाते हैं। इन मठों में जापानी मठ, थाई मठ, तिब्बती मठ, चीनी मंदिर एवं मठ, भूटान का बौद्ध मठ प्रमुख हैं जो भिक्षुओं ने अपने देश की सरकार के सहयोग से बनवाये हैं जैसे-चीन, थाईलैंड एवं भूटान। इनके दर्शन करने से संबंधित देश पर बौद्ध धर्म के प्रभाव की झलक देखने मिलेगी। इसके अलावा, इन मठों की यात्रा के दौरान आपको जो वास्तुकला की विविधता देखने को मिलेगी, वह आपको पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर देगी।

यह खंड आपको बिहार के सभी महत्त्वपूर्ण मठों का विवरण प्रदान करता है। आपको उनके स्थान के साथ-साथ उनके महत्त्व की भी विस्तार से जानकारी दी गई है। इसके अलावा, इन मठों में मनाए जाने वाले त्यौहारों की जानकारी से आपको अंदाजा हो जाएगा कि मठों की यात्रा के लिए सबसे उत्तम समय क्या होगा। इसका मतलब यह नहीं है कि वर्ष के अन्य दिन यात्रा के लिए अच्छे नहीं हैं। यात्रा को और अधिक लाभदायक बनाने के लिए आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षणों को भी शामिल किया सकता है। अतः इस खंड के माध्यम से आप प्रत्येक मठ के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप बिहार की यात्रा कर रहे हैं तो इन मठों को यात्रा में जरूर शामिल करें।

तिब्बती मठ

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, उनके शिष्य विभिन्न बौद्ध मतों में विभाजित हो गए। हालाँकि, उन सभी ने बुद्ध की शिक्षाओं को आगे बढ़ाने के लिए एक ही उद्देश्य से काम किया, जिनके मार्गदर्शन में दुनियाभर में कई मठों की नींव पड़ी, जिनमें से बोधगया में स्थित तिब्बती मठ एक प्रमुख स्थान रखता है। यह सन् 1938 में स्थापित किया गया था जो महाबोधि मंदिर परिसर के पास स्थित है।

मठ परिसर में एक विशाल प्रार्थना चक्र है जिसमें लाल और सुनहरे रंग में चित्रित 10 मीटर ऊँचा धातु का ढोल है। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई व्यक्ति प्रार्थना चक्र को निरंतर तीन बार बाएं से दाएं घुमाता है, तो वह सभी पापों से मुक्त हो सकता है। मठ के अन्दर मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा है जिसके विषय में कहा जाता है कि वे भविष्य में बुद्ध का अवतार होंगे।

मठ तिब्बती धर्मग्रन्थों के मंत्रों, थांकाचित्रों और बौद्ध प्रतीकों तथा तिब्बती कैलेंडरों से सुसज्जित है। इसमें एक विपस्सना केन्द्र भी है जो बौद्ध धर्म के सिद्धांतों एवं ध्यान पर आधारित पाठ्यक्रम संचालित करता है। यह बौद्ध पर्यटकों के लिए एक आश्रय स्थल भी है जो बोधगया की यात्रा करते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

बोधिवृक्ष- यह मूल बोधिवृक्ष का वंशज है जिसके नीचे बैठकर सिद्धार्थ गौतम ने ज्ञान प्राप्त किया था। 80 फीट ऊँचे तथा 115 वर्ष पुराने बोधिवृक्ष के पास एक लाल ललुआ पत्थर का खंड है। जिसके ऊपर बैठकर बुद्ध ने ध्यान लगाया था।

चंक्रमण चैत्य- यहाँ बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद तीसरे सप्ताह के दौरान ध्यान के दौरान चहल कदमी की थी।

त्यौहार

तिब्बती मठ बौद्ध धर्म से संबंधित महत्त्वपूर्ण दिवसों को त्यौहार के रूप में मनाता है। प्रत्येक वर्ष बुद्ध पूर्णिमा उत्सव वैशाख महीने की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है, जो सबसे महत्त्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है और बुद्ध की संबोधि का प्रतीक है। इस त्यौहार में भाग लेने के लिए दुनियाभर से बौद मतावलंबी बोधगया आते हैं। यह त्यौहार बुद्ध की शिक्षाओं, प्रार्थनाओं, धार्मिक विमर्शों, बौद्ध धर्मग्रन्थों के पाठों, सामूहिक ध्यान, बौद्ध अनुष्ठानों आदि का प्रतीक है।

कालचक्र मठ में आयोजित होने वाला एक प्रमुख त्यौहार है जो प्रत्येक वर्ष जनवरी महीने के अंतिम 10 दिनों में मनाया जाता है। तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा उत्सव के अध्यक्ष होते हैं। ऐसा माना जाता है कि अगर कोई जीवन में एक बार भी इस उत्सव में शामिल होता है तो वह मुक्ति प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक मानव के बीच शांति एवं समरसता के प्रसार के लिए एक शांति प्रार्थना भी आयोजित की जाती है।

थाई मठ

जनसाधारण के बीच बुद्ध की शिक्षाओं और दर्शन के प्रसार के उद्देश्य से थाईलैंड सरकार तथा बौद्ध भिक्षुओं के संयुक्त प्रयास से अनेक मठ स्थापित किए गए, जिनमें से एक बोधगया में स्थापित किया गया। थाई मठ केवल थाई संस्कृति एवं परंपरा के रंगों को ही

प्रस्तुत नहीं करता बल्कि इसके आवासीय भिक्षु बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

थाई वास्तुकला के अनुसार थाई मठ विशिष्ट शैली में निर्मित किया गया है। इसमें बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों पर बौद्ध ग्रंथों के मंत्र उत्कीर्ण हैं, साथ ही मठ के अन्दर बौद्ध प्रतीकों तथा अन्य मांगलिक बौद्ध वस्तुओं को भी देखा जा सकता है।

थाई मठ प्रत्येक वर्ष जनवरी के महीने में आध्यात्मिक साधना के सत्र आयोजित करता है। ये साधना मुख्य रूप से शांत वातावरण में आयोजित की जाती है, केवल कुछ एक अपवाद को छोड़कर जैसे- परस्पर संवाद तथा सामूहिक सभा। इसमें अधिकतम 135 लोगों की क्षमता होती है जिसमें ध्यान अभ्यास, कुंडलिनी जागृति की शिक्षा, विपस्सना, योग, मुक्ति तथा दैनिक जीवन की समस्याओं पर परस्पर संवाद आदि के सत्र शामिल होते हैं। शाम के संवाद में आम लोग भी शामिल हो सकते हैं किन्तु मठ की सभी साधनाओं में धूम्रपान एवं अनैतिक व्यवहार निषेध हैं।

जापानी मठ

बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद संघ में अनेक मतभेद उत्पन्न हुए। परवर्ती काल अनेक परिवर्तन के साक्षी हैं। बौद्ध धर्म के अंदर भिन्न-भिन्न विचारों के स्कूलों का उदय हुआ जैसे- थेरवाद, महायान तथा तंत्रयान। बोधगया में स्थित जापानी मठ, भारत में ज़ेन बौद्ध धर्म के सिद्धांतों तथा व्यवहारों का प्रतीक है।

बोधगया का जापानी मठ मूलतः ध्यान साधना में विश्वास रखने वाला मठ है तथा भिक्षुओं के साथ-साथ अन्य लोगों के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक ध्यान के कार्यक्रमों को संचालित करता है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य ध्यान साधना के माध्यम से, व्यक्ति का हृदय शुद्ध करना ताकि वह निर्वाण प्राप्त कर सके।

आसपास के अन्य प्रमुख आकर्षण

महाबोधि मंदिर- इस मंदिर को मूलतः सम्राट अशोक ने बनवाया था जो वास्तुकला के साथ धर्म के सम्मिश्रण का प्रतीक है। यह बौद्धों का अत्यधिक पूजनीय स्थल है।

शैव मठ- यह महाबोधि मंदिर के पास स्थित है, जिसमें चार मंदिर तथा कई समाधियाँ हैं। वह स्थान है जहाँ हिन्दुओं के धर्म गुरु आदि शंकराचार्य ने मध्यकाल में भिक्षुओं के साथ उच्च स्तर का शास्त्रार्थ किया था।

त्यौहार

जापानी मठ बौद्ध धर्म के महत्त्वपूर्ण दिवसों को त्यौहार के रूप में मनाता है। इन सभी त्यौहारों में बुद्ध पूर्णिमा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। मठ 6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस भी मनाता है।

भूटान का बौद्ध मठ

बोधगया में स्थित भूटान का बौद्ध मठ पगोड़ा शैली में निर्मित प्रमुख मठों में से एक है। मठ भूटानी सरकार एवं बौद्ध भिक्षुओं के सहयोग से बनाया गया था। मठ अपनी विशेष संरचना एवं स्वच्छ वातावरण के कारण तीर्थयात्रियों, पर्यटकों एवं भिक्षुओं के बीच बहुत प्रसिद्ध है। मठ अलंकारिक वास्तुशिल्प शैली से सजाया गया है तथा भूटान के भिक्षुओं के लिए विश्राम गृह के साथ-साथ एक शानदार मंदिर की भी मेजबानी करता है। मठ के अन्दर मंदिर में बुद्ध की सात फीट ऊँची प्रतिमा है। मंदिर की आंतरिक दीवारों पर बुद्ध के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं को दर्शाने वाले चित्र उत्कीर्ण हैं।

भूटान का बौद्ध मठ भी अनेक कार्यों का संचालन करता है जिनमें बुद्ध की शिक्षाओं पर प्रवचन देना, व्यक्तिगत एवं सामूहिक ध्यान का मार्गदर्शन करना, शांति के लिए प्रार्थना कराना, मंदिर में पूजा संचालित करना आदि शामिल हैं।

बोधगया

राजकुमार सिद्धार्थ लोगों को दुखों से पीड़ित देखकर दुखी हो जाते हैं और एक संन्यासी के रूप में जीवन व्यतीत करने के लिए अपने घर, परिवार और महल की सुख-सुविधाओं को त्याग देते हैं। वर्षों बीत गए और यहाँ तक कि प्रार्थना और उपवास भी सिद्धार्थ के सामने जीवन के सत्य को प्रकट नहीं कर सके। फिर वे संन्यासी जीवन त्याग देते हैं और उरुवेला पहुँचे जो मगध राज्य के दक्षिण में स्थित था और एक पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान लगाया और ज्ञान प्राप्त किया तथा बुद्ध कहलाए। ऊरुवेला का नाम बाद में, उन्हीं के नाम के

कारण बोधगया पड़ा। तब से, बोधगया भगवान बुद्ध को समर्पित कई मठों एवं मंदिरों का घर है। यह सारे संसार के बौद्धों के लिए एक पूजनीय स्थल है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

महाबोधि मंदिर- यह बोधगया का सबसे प्रमुख आकर्षण है। यह यूनेस्को द्वारा घोषित एक विश्व विरासत स्थल है। महाबोधि मंदिर मौर्य और गुप्तकालीन वास्तुकला शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

बोधगया पुरातत्त्व संग्रहालय- यह प्राचीन कलाकृतियों का घर है जो बुद्ध और बौद्ध धर्म से संबंधित पुरावशेषों को प्रदर्शित करता है। संग्रहालय में प्रथम शताब्दी ई. से ग्यारहवीं शताब्दी ई. के बीच की अवधि की बौद्ध मूर्तियों का एक बहुत बड़ा संग्रह है।

त्यौहार

बुद्ध पूर्णिमा भूटान के मठ का सबसे प्रमुख त्यौहार है। इसके अलावा, हिरोशिमा दिवस (6 अगस्त) और डॉ. भीमराव अम्बेडकर जयंती (14 अप्रैल) जैसे अन्य त्यौहार भी मठ में मनाए जाते हैं।

चीनी मंदिर एवं मठ

यह मठ चीन की सरकार और भिक्षुओं द्वारा चीनी स्थापत्य शैली में बनवाया गया था। हालांकि, बोधगया में स्थित एक छोटी संरचना है, फिर भी देखने लायक है। मठ के भवन में एक चीनी मंदिर है जो भगवान बुद्ध को समर्पित है। यह धर्म के साथ चीनी वास्तुकला के मिश्रण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह महाबोधि मंदिर परिसर के पास स्थित है और यात्रियों के लिए प्रातः 7 बजे से सायं 5 बजे तक खुला है जिसमें मध्याह्न का भोजन भी शामिल है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

रत्नगृह चैत्य- यह वह स्थान है जहाँ बुद्ध ने अपना चौथा सप्ताह ध्यान में व्यतीत किया था। ऐसी मान्यता है कि जब बुद्ध ध्यान करते थे तो उनके शरीर से अनेक तरंगे निकलती थीं।

त्यौहार

बोधगया के चीनी मठ में बौद्ध धर्म से संबंधित महत्त्वपूर्ण घटनाओं की याद में विभिन्न त्यौहार मनाए जाते हैं। बुद्ध पूर्णिमा सबसे महत्त्वपूर्ण त्यौहार है जो प्रत्येक वर्ष वैशाख महीने की पूर्णिमा के दिन बुद्ध के जन्म तथा ज्ञान प्राप्ति के स्मरण में मनाया जाता है। सारे संसार से बौद्ध, इस त्यौहार में भाग लेने के लिए बोधगया आते हैं जिसमें धार्मिक अनुष्ठान, प्रार्थना, बुद्ध के जीवन-दर्शन पर प्रवचन, बौद्ध धर्मग्रन्थों के पाठ, सामूहिक ध्यान आदि के कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

जम्मू-कश्मीर स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ

जम्मू-कश्मीर सांस्कृतिक भिन्नता एवं स्थलाकृतिक आधार पर तीन क्षेत्रों जम्मू, कश्मीर एवं लद्दाख में विभाजित है। लद्दाख एक ठंडा मरूस्थलीय एवं बौद्ध बहुल क्षेत्र है। इस क्षेत्र के मठ, उन पर्यटकों की यात्रा को सफल बनाते हैं जो राज्य में बौद्ध पर्यटन करने का विचार रखते हैं।

ये ऐतिहासिक मठ, गोम्पाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं तथा भिक्षुओं एवं भिक्षुणियों के लिए आवास, अध्ययन एवं प्रशिक्षण के केन्द्र हैं। ये मठ पहाड़ों की चोटियों के ऊपर विस्मयकारी रूप से स्थित हैं। इनमें से कुछ मैदानी भागों में स्थित हैं, फिर भी उनके आकर्षण में कोई कमी नहीं है। इन मठों में से प्रत्येक के अन्दर आपको थांकाचित्रों और अन्य बौद्ध कलाकृतियों का एक समृद्ध संग्रह मिलेगा। इसके अलावा, मठों की वास्तुकला आपको बौद्ध धर्म की बेहतर समझ प्रदान करेगी।

इन मठों की यात्रा के दौरान कुछ बातों को ध्यान रखना बहुत जरूरी है जैसे- स्थानीय ढंग से शालीनतापूर्वक वस्त्र पहनें तथा मंदिर में प्रवेश करने से पहले जूते उतारना न भूलें। प्रार्थना के समय भिक्षुओं को परेशान नहीं करना चाहिए तथा दरवाजा खटखटाने से पहले अनुमति लेनी अवश्य है। मठ के अंदर धूम्रपान करना, शराब पीना और ड्रग्स लेना मना है। कई बार, महिलाओं को मुख्य प्रार्थना कक्ष में जाने की अनुमति नहीं होती है तो उन्हें अन्दर जाने के लिए अनुमति लेनी आवश्यक है।

लद्दाख में अनेक बौद्ध मठ हैं जिन्हें एक ही यात्रा में शामिल करना किसी भी बौद्ध पर्यटक के लिए बहुत कठिन है, यदि ठहरने की अवधि कम है। किन्तु यदि आपके पास उचित

जानकारी है तो उनकी योजना बना सकते हैं और उनमें से अनेक की यात्रा कर सकते हैं। इस खंड में यही बताने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति या पर्यटक को मठों की उचित जानकारी होनी चाहिए जो उसे अच्छे ढंग से यात्रा की योजना बनाने में सहायता करेगी। इनमें से प्रत्येक मठ में मनाए जाने वाले त्यौहारों की जानकारी, आपको आगे यह पता लगाने में सहायता करेगी कि आपकी यात्रा के दौरान कौन-सा मठ यात्रा को और अधिक आनंददायक बना सकता है। इस खंड को पढ़कर, आप इसे बहुत उपयोगी पाएंगे।

हेमिस मठ

यह लेह से लगभग 45 किलोमीटर दूर स्थित है और द्रुक्पा मत से संबंधित है। मठ के इतिहास में स्पष्ट वर्णित है कि इसकी स्थापना 1630 ई. में स्टैंगसंग रास्पा नवांग ग्यात्सो द्वारा की गई थी। जिसे लद्दाख के राजा सेंग्ये नामग्याल ने आमंत्रित किया तथा संपूर्ण भू-संपत्ति भेंट कर दी थी। इसके अतिरिक्त, राजा ने उन्हें अपना प्रमुख गुरु स्वीकार किया। इस मठ में काग्यूपा संप्रदाय के भिक्षु निवास करते हैं। वास्तव में, इसमें भिक्षुओं की संख्या लगभग एक दर्जन के आसपास है, फिर भी यहाँ हेमिस के अन्य मठों के सैकड़ों लामा रहते हैं।

मठ परिसर के मंदिर

मठ के आंगन में प्रवेश पूर्वोतर दिशा से करते हैं। मुख्य आंगन के दाईं ओर से पत्थर की सीढियाँ दो विशाल मंदिरों- त्शोगखांग तथा दुखांग तक जाती हैं। दुखांग मंदिर में रिम्पोचे का सिंहासन तथा लामाओं के लिए कक्ष हैं। मंदिर की दीवारें शाक्यमुनि के चित्रों से सुशोभित हैं। दुखांग की दीवारों पर अन्य बौद्ध देवताओं एवं तंत्र देवताओं के भी चित्र देखे जा सकते हैं जैसे- हेवज्र और चक्रसंवर।

त्शोगखांग मंदिर में बुद्ध की एक बड़ी प्रतिमा स्थापित है। प्रतिमा के चारों ओर छोटे-छोटे नगीनों से अलंकृत चांदी के कई स्तूप हैं। इस प्रतिमा के ठीक सामने लकड़ी का सिंहासन है जबकि दाईं तरफ बौद्ध साहित्य का भंडार है। सिंहासन हेमिस के राजा द्वारा मठ के अवतारी लामा को भेंट दिया गया था।

त्शोगखांग के अतिरिक्त, पत्थर की सीढ़ियों से त्सोमखांग मंदिर पहुँचते हैं। मठ के संस्थापक स्टैंग्सांग रास्पा की प्रतिमा के अलावा सोने और चाँदी का एक बड़ा स्तूप है जिसमें

उसके अवशेष स्थापित हैं। मठ के शीर्ष पर प्रमुख लामा का कक्ष तथा एक छोटा सा मंदिर स्थित है।

त्यौहार

मठ का मुख्य आकर्षण गुरु पद्मसंभव की बुरी शक्तियों के ऊपर विजय के प्रतीक के रूप में मनाया जाने वाला वार्षिक त्यौहार है, जो हेमिस त्यौहार के रूप में प्रसिद्ध है। यह पाँचवें तिब्बती महीने के 10वें तथा 11वें दिन मनाया जाता है क्योंकि इस दिन तिब्बती बौद्ध धर्म के संस्थापक गुरु पद्मसंभव का जन्म हुआ था। उत्सव के दौरान मुखौटा नृत्य प्रदर्शित किया जाता है।

प्रत्येक बारह साल में एक बार, एक विशेष आकर्षण बौद्ध तीर्थयात्रियों को मठ की ओर आकर्षित करता है, वह एक विशाल थांकाचित्र है जिसे मूल्यवान मोतियों और जवाहरातों से सजाया जाता है। त्यौहार के महत्त्व एवं लोकप्रियता का इस बात से ही पता चलता है कि लद्दाख में उत्सव के दौरान दो दिनो तक सार्वजनिक अवकाश घोषित किया जाता है। सन् 2007 में हेमिस त्यौहार 25 और 26 जून को मनाया गया था।

लेह-हेमिस का प्रवेश द्वार

लद्दाख, जम्मू-कश्मीर राज्य में दो जिलों कारगिल और लेह के भू-सांस्कृतिक क्षेत्रों में से एक है। लेह क्षेत्र का सबसे बड़ा शहर है। इसके अलावा, लेह जिले में 112 गाँव हैं। इसमें इस्लाम के साथ - साथ बौद्ध धर्म भी प्रमुख धर्म है। इसके अलावा, बौद्धों एवं मुस्लिमों में रक्त संबंधों में विवाह करना, एक आम बात है। लेह के आकर्षणों में लेह महल, लेह मस्जिद, स्टोक महल, संग्रहालय, नुब्रा घाटी, पैंगोंग झील आदि शामिल हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

थिकसे मठ- इसकी स्थापना शेरब जांगपो के भतीजे पालदन शेरब ने की थी। मठ को इसकी भव्य वास्तुकला के कारण एक बार जरूर देखना चाहिए। 12 मंजिला मठ के अन्दर कई स्तूप, मूर्तियाँ, थांकाचित्र, भित्तिचित्र, तलवारें, बुद्ध की शिक्षाओं से उत्कीर्ण एक बड़ा स्तंभ आदि शामिल हैं।

माथो मठ- यह थिकसे मठ के आगे सिंधु नदी के तट पर स्थित है। मठ के संग्रह में अमूल्य प्राचीन थांकाचित्र शामिल हैं। इनमें से कुछ थांकाचित्र मंडल के रूप में हैं। मठ प्रत्येक वर्ष मार्च के महीने में भविष्यवक्ताओं का एक महत्त्वपूर्ण उत्सव मनाता है।

अलची मठ

यह लेह से लगभग 67 किलोमीटर दूर अलची नामक एक छोटे से गाँव में स्थित है जो लद्दाख के सबसे पुराने मठों में से एक है। यह सिंधु नदी के तट पर स्थित है। मठ अलची चोस्खोर के नाम से भी जाना जाता है। मठ के निर्माण का श्रेय महान अनुवादक रिंचेन जेंगपो (958 ई.-1055 ई.) को जाता है। यहाँ सबसे पुराने स्मारक संरक्षित हैं जो 12वीं शताब्दी के मध्य युग के हैं। मठ का महत्त्व इस तथ्य में भी निहित है कि यह एकमात्र ऐसा मठ है जो समतल भूमि पर बनाया गया है।

मठ परिसर में दो मुख्य मंदिर हैं- अलची दुखांग तथा सुमत्सेक। इनके अलावा, मठ परिसर की अन्य इमारतों में मंजुश्री, लोत्सवा लखांग, लखांग सोमा तथा तीन प्रवेश द्वार के स्तूप शामिल हैं। आज यह, लिकिर मठ के भिक्षुओं के नियंत्रण में है। मठ परिसर में आने वाले पर्यटकों को अपने साथ टॉर्च लाना आवश्यक है क्योंकि अंदर बिजली नहीं है। इसके अतिरिक्त, मठ के अन्दर फोटो लेना भी मना है।

मठ परिसर के मंदिर

दुखांग मंदिर- यह अलची मठ का मुख्य मंदिर है। यह मठ की सबसे प्राचीन एवं संरक्षित इमारत है। यह समारोहों के समय भिक्षुओं द्वारा उपयोग किया जाने वाला मुख्य क्षेत्र है। दुखांग में प्रवेश आंगन के बरामदे से होता है जिसके दाएं तथा बाएं स्तंभ खड़े हैं। मठ के अन्दर बुद्ध के हजारों भित्तिचित्र अलंकृत हैं जबकि इसके बाहरी द्वार पर महाकाल और भवचक्र के भित्तिचित्र हैं। दुखांग की दीवारें छह विभिन्न मंडल चित्रों से सुशोभित हैं जिनके केन्द्र में वैरोचन बुद्ध हैं और पाँच तथागतों को समर्पित हैं। मंडलों के आसपास संरक्षकों के साथ बुद्ध, बोधिसत्त्व, देवी, उग्र देवता आदि शामिल हैं।

सुमत्सेक मंदिर- यह परिसर का दूसरा महत्त्वपूर्ण मंदिर है। यह तीन मंजिला मिट्टी की बनी इमारत है जिसमें चार सशस्त्र बोधिसत्त्वों की तीन विशाल मूर्तियाँ हैं। मूर्तियाँ इतनी बड़ी हैं कि भूतल की छत तोड़कर शीर्ष का दूसरी मंजिल तक विस्तार किया गया। मंदिर के

अंदर और बाहर की दीवार के आलों में बोधिसत्त्व की मूर्तियाँ हैं, जबकि भूतल के केन्द्र में मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है। जो अभयमुद्रा में 14 फीट ऊँची प्रतिमा है जिसमें दायें हाथ को ऊपर की तरफ तथा हथेली को बाहर की ओर दर्शाया गया है। उनकी बाईं तरफ अवलोकितेश्वर और दाईं तरफ वितर्कमुद्रा में मंजुश्री की प्रतिमा है।

मंजुश्री का मंदिर- इसे जम्पे लखांग के नाम से भी जाना जाता है तथा यह एक बिना आधार की संरचना है। बड़े केन्द्रीय चबूतरे पर एक सिंहासन निर्मित है। इस सिंहासन पर मंजुश्री की चिकनी मिट्टी की चतुर्मुखी प्रतिमा आसीन है।

लोत्सवा लखांग- इसमें बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा वाली प्रतिमा स्थापित है जो इसकी मुख्य प्रतिमा है। यह रिंचेन त्सांगपो के चित्र और मूर्ति का भवन भी है जो मुख्य प्रतिमा के दूसरी तरफ हैं। मुख्य प्रतिमा के दूसरी तरफ अवलोकितेश्वर की प्रतिमा है।

लखांग सोमा- इसे पुराने मंदिरों की तुलना में नवीन शैली के भित्तिचित्रों से सजाया गया है। प्रवेश द्वार के स्तूप अन्दर से खोखले हैं और भित्तिचित्रों से सुशोभित हैं।

अलची

यह एक छोटा सा गाँव है और हिमालय की संस्कृति में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। गाँव में मुख्य मठ परिसर के अलावा, कई ऐतिहासिक इमारतें और चार पृथक बस्ती शामिल हैं। हालांकि, छोटे से गाँव में पर्यटकों के लिए रात को ठहरने की पर्याप्त सुविधाएँ हैं। पर्यटक अलची में खरीददारी भी कर सकते हैं। खरीददारी की वस्तुओं में पश्मीना तथा ऊनी वस्त्र प्रमुख हैं। इस स्थल की यात्रा का सबसे उत्तम समय जून से सिंतबर के मध्य का है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

लिकिर मठ- इसे ग्यारहवीं शताब्दी में क्लू खजिल संप्रदाय ने स्थापित किया था। बाद में, 15वीं शताब्दी ई. में इसे एक अन्य संप्रदाय (पीली टोपी) को समर्पित कर दिया गया। आज जो मठ खड़ा है, वह मूल संरचना नहीं है क्योंकि वह तो आग में जलकर नष्ट हो गया था। मठ में बुद्ध की चिकनी मिट्टी की विशाल प्रतिमा है। इसके अलावा, मठ की अन्य वस्तुओं में अनेक प्राचीन पांडुलिपियां, थांकाचित्रों का समृद्ध संग्रह, प्राचीन धार्मिक एवं घरेलू पोशाकें शामिल हैं।

फ्यांग मठ- इसका महत्त्व इस बात में निहित है कि यही वह पहला मठ था जिसने 16वीं शताब्दी ई. में राजा जामयांग नामग्याल के शासन में लद्दाख को स्काइब जिग्स्टेन गोंबो की देगुनग्पा शिक्षाओं से अवगत कराया था। मठ का वार्षिक त्यौहार तिब्बती कैलेंडर के छठे महीने के दूसरे एवं तीसरे दिन मनाया जाता है जो फ्यांग त्सेरुक के नाम से प्रसिद्ध है।

थिकसे मठ

यह लेह से 17 किलोमीटर दूर स्थित है और लद्दाख का सबसे सुन्दर मठ है। आरंभ में, शेरब जांगपो ने मठ को स्टाकमो में स्थापित किया था। किन्तु बाद में, उनके भतीजे पालदान शेरब ने इसे सिन्धु नदी के उत्तर में एक पहाड़ी पर स्थापित किया। मठ गेलुक्पा संप्रदाय से संबंधित है और 12 मंजिल ऊँचा है तथा ऊपर की मंजिल पर अवतारी लामा का कक्ष है।

मठ परिसर के मंदिर

मुख्य आंगन के दाईं तरफ सीढियाँ हैं जो नए मंदिर तक जाती हैं जिसके भवन में बुद्ध की एक विशाल प्रतिमा है। यह प्रतिमा तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के आदेश पर स्थापित की गई थी जब उन्होंने सन् 1980 में मठ की यात्रा की थी। यह लद्दाख क्षेत्र में बुद्ध की सबसे बड़ी प्रतिमा है और इसके निर्माण में लगभग चार वर्ष लगे थे। इस प्रतिमा को बनाने के लिए स्थानीय शिल्पकारों ने चीनी मिट्टी और गोल्डन पेंट का उपयोग किया था। इस मंदिर के ठीक ऊपर एक छोटा सा कक्ष है जहाँ लामा स्थानीय लड़कों को शिक्षा देते हैं। इनमें से कुछ लड़कों को बाद में लामा बनाने के लिए चुना जाता है।

जब मुख्य आंगन में वापस आते हैं तो वहाँ से सीढियाँ चढकर नए मंदिर पहुँचेंगे जहाँ भवचक्र सहित दो तिब्बती कैलेंडर के भित्तिचित्र हैं। इस दीवार के दाईं ओर मुख्य प्रार्थना कक्ष है जिसमें कई हस्तलिखित और चित्रित पुस्तकें रखी हैं। मुख्य प्रार्थना कक्ष के ठीक पीछे एक छोटा सा कमरा है जिसमें शाक्यमुनि की एक बड़ी मूर्ति है। इसके दूसरी तरफ बोधिसत्त्व की दो छोटी प्रतिमाएँ हैं। बाईं ओर ग्यारह मुख वाली अवलोकितेश्वर की प्रतिमा है।

लामोखांग मंदिर छत पर स्थित है और यहाँ केवल पुरुषों के प्रवेश की अनुमति है। थिकसे पुस्तकालय भी छत पर है जिसमें कांग्यूर तथा तेंग्यूर ग्रन्थों के कई खंडों का संग्रह है। वर्तमान में, मठ लगभग 80 भिक्षुओं का घर है और लद्दाख के कम से कम दस अन्य मठों के लिए प्रमुख मठ है जिनमें डिस्किट, स्पितुक, लिकिर तथा स्टोक आदि शामिल हैं।

त्यौहार

थिकसे मठ का वार्षिक त्यौहार तिब्बती कैलेंडर के नौवें महीने में मनाया जाता है। सन् 2006 में, यह त्यौहार 8 तथा 9 नवम्बर को मनाया गया था जबकि सन् 2007 में, यह 28 और 29 अक्तूबर को मनाया गया था।

लेह

यह लद्दाख की राजधानी है और जम्मू-कश्मीर के तीन भू-सांस्कृतिक भागों में से एक है। इस स्थान पर लेह महल का प्रभुत्व है, जिसका राजा सेंग्ये नामग्याल ने 17वीं शताब्दी में निर्माण करवाया था। इसके अलावा, लेह कई प्रसिद्ध बौद्ध मठों का भ्रमण करने के लिए एक सुविधाजनक आधार है जो दो लोकप्रिय गोम्पा मार्गों पर स्थित हैं जैसे- लेह-मनाली राजमार्ग तथा लेह-श्रीनगर राजमार्ग। प्रथम मार्ग के मुख्य आकर्षण शेय, थिकसे तथा हेमिस मठ हैं, जबकि दूसरे मार्ग के प्रमुख आकर्षण स्पितुक, बासगो तथा अलची मठ हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

शेय मठ- यह लाल टोपी संप्रदाय से संबंधित है। मठ का मुख्य आकर्षण शाक्यमुनि बुद्ध की तांबे की विशाल प्रतिमा है जिस पर सोने की परत चढ़ी है। मठ के चारों ओर पत्थर की मूर्तियाँ और स्तूप हैं जो इसके आकर्षण को बढ़ाते हैं। शेय मठ का वार्षिक उत्सव तिब्बती बौद्ध कैलेंडर के प्रथम महीने के 30वें दिन मनाया जाता है।

सटकना मठ- मठ का मुख्य आकर्षण अवलोकितेश्वर की प्रतिमा है। सटकना मठ में लगभग 30 भिक्षुओं का आवास है। यह एक छोटा सा मठ है। हालांकि, इसके साथ कई अन्य मठ भी जुड़े हुए हैं जिनमें ताबो, खारू, सटक्रीमो, बारदान आदि शामिल हैं।

गुफा मठ

कारगिल से लगभग 40 किलोमीटर दूर, शेरगोल नामक एक छोटा सा गाँव है जो प्राचीन गुफा मठ का घर है। पहाड़ी के मध्य स्थित होने के कारण, यह मठ पहाड़ी से बाहर की ओर निकला सा दिखाई देता है। मठ आकार में छोटा है, फिर भी इसके पास आंगतुकों के लिए कई मनोहर एवं सुन्दर भित्तिचित्र हैं जिन्हें वे अपनी यात्रा के दौरान देख सकते हैं।

कारगिल

प्राचीन काल में कारगिल चीन, तुर्की, यारकंद, अफगानिस्तान तथा भारत के मुख्य मार्ग पर स्थित होने के कारण व्यापारियों के लिए एक प्रमुख स्थान था। यह लद्दाख का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। सुरू घाटी में स्थित कारगिल अपने खुबानी और शहतूत के फलों लिए प्रसिद्ध है। लद्दाख जाने वाले पर्यटक कारगिल को लेह के बाद अन्य क्षेत्रों की तुलना में ठहरने तथा यात्रा के लिए दूसरा सबसे अच्छा विकल्प पाते हैं। इसके अतिरिक्त, कारगिल में कई आकर्षण हैं जो आप को पूरे प्रवास के दौरान व्यस्त रखते हैं।

सटकना मठ

1580 ई. में जब लद्दाख में राजा जामयांग नामग्याल का शासन था और सिन्धु घाटी के मध्य में एक 60 मीटर ऊँची पहाड़ी की चोटी पर कुछ दुखांगों को मिलाकर एक छोटे से मठ का निर्माण किया गया। मठ को विख्यात संत (भिक्षु) चोसजे जामयांग पल्खर ने लेह से 25 किलोमीटर दूर बनवाया था। मठ जिस पहाड़ी पर खड़ा है, वह बाघ की नाक जैसी है। इसलिए इसका नाम सटकना पड़ा, जिसका अर्थ है- बाघ की नाक।

यद्यपि, मठ आकार छोटा है और लाल टोपी संप्रदाय के केवल 35 लामाओं का घर है किन्तु जांस्कर घाटी में इसकी अन्य शाखाओं में लामा रहते हैं जैसे- सोनी, बरदान तथा सटाक्रिमो। इसके अलावा, इसे हाल ही चित्रित किया गया है तथा लद्दाख क्षेत्र का सबसे आकर्षक मठ है।

मठ परिसर के आकर्षण

मुख्य आंगन में ल्हासा की एप्सो प्रजाति का एक कुत्ता है जो आंगतुको का तुरंत ध्यान आकर्षित करता है। यह मठ के पूर्व लामाओं के प्रिय पालतू पशुओं में से एक है। आंगन के ठीक ऊपर दुखांग मंदिर में एक सात फुट ऊँचा स्तूप है जिस पर चाँदी की परत चढ़ी है। इसे 1950 के दशक में तत्कालीन प्रमुख लामा ने बनवाया था। स्तूप में बुद्ध की प्रतिमा के अलावा अनेक बौद्ध ग्रन्थ भी रखे हैं। अंदर की दीवारें त्सेफाकमाद (बौद्ध देवता), शाक्यमुनि बुद्ध (ऐतिहासिक बुद्ध) तथा अमची (चिकित्सक बुद्ध) के भित्तिचित्रों से सुशोभित हैं। इसके अलावा, दुखांग के प्रवेश द्वार की दीवार पर एक बोधिसत्त्व, गुरु पद्मसंभव और तिब्बत के

पूर्व राजा त्सोंग-सान-गोमपो के तीन भित्तिचित्र हैं। यहाँ भूत, वर्तमान और भविष्य के बुद्ध की तीन प्रतिमाओं के साथ-साथ दोनों तरफ बौद्ध साहित्य के खंड भी देखे जा सकते हैं।

दुखांग मंदिर के पीछे बाईं तरफ लकड़ी की अलमारी में बोधिसत्त्व, दोरजे फकमा की एक बड़ी प्रतिमा दिखाई देती है। इसके अलावा, बुद्ध की 8 रूपों वाली प्रतिमा और केन्द्र में अवलोकितेश्वर की छोटी सी प्रतिमा भी देखी जा सकती है।

प्रमुख लामा का कक्ष दुखांग के ऊपर स्थित है और हाल ही में इसे तिब्बती शैली में सजाया गया है। मठ के पुस्तकालय में एक आकर्षक कक्ष है जिसमें रंगीन चित्रों के अलावा सटकना के पूर्व रिंपोचे की सुन्दर मूर्ति है।

लेह

लेह-लद्दाख के क्रियाकलापों का केन्द्र है। लद्दाख की यात्रा से तात्पर्य एक तरह से इसकी राजधानी लेह की यात्रा से है। यह नामग्याल साम्राज्य की पूर्ववर्ती राजधानी थी और लेह में पहाड़ एवं क़िले जैसे मठों का आधिपत्य है। इसके आकर्षक बाजार में घूमते हुए पर्यटक तिब्बती शरणार्थियों, भिक्षुओं और लद्दाखी व्यापारियों को देखकर सत्तर के दशक के काठमाण्डू को महसूस करते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

माथो मठ- मठ में प्राचीन एवं सुन्दर थांकाचित्रों का अद्‌भुत संग्रह है जिनमें से कई मंडल आकार में हैं। मार्च के महीने में मनाया जाने वाला वार्षिक त्यौहार बहुत प्रसिद्ध है और देश- विदेश से असंख्य आगंतुकों को आकर्षित करता है।

चेम्रे मठ- चांगला की ओर फैली सुन्दर घाटी चेम्रे मठ का घर है। मठ के बहुमूल्य खजाने में बौद्ध धर्मगन्थों का एक बड़ा संग्रह है, जिनके शीर्षक चाँदी तथा पाठ स्वर्ण अक्षरों में हैं। निकटवर्ती क्षेत्र में एक गुफा है जिसके विषय में कहा जाता है कि यहाँ गुरु पद्मसंभव ने ध्यान साधना की थी।

हेमिस मठ- यह लेह से लगभग 40 किलोमीटर दूर है और लद्दाख का सबसे प्रसिद्ध मठ है। इसे 17वीं शताब्दी में सेंग्ये नामग्याल के शासनकाल में बनाया गया था और दो भागों में विभाजित है- सभा भवन तथा मुख्य मंदिर। मठ का वार्षिक त्यौहार गर्मियों के दौरान मनाया जाता है जो गुरु पद्मसंभव की जयंती का प्रतीक है।

तकथोक मठ

यह लद्दाख क्षेत्र में एकमात्र मठ है जो निंगमापा संप्रदाय से संबंधित है। लद्दाख में कोई अन्य मठ इस संप्रदाय से संबंधित नहीं है। स्थानीय भाषा में तकथोक नाम का अर्थ है- पत्थर की छत तथा इस मठ में मौजूद एक गुफा मंदिर से इसका संकेत मिलता है।

मठ परिसर के मंदिर

पहली चीज जो मुख्य प्रांगन में प्रवेश करने के बाद आंगतुकों का ध्यान आकर्षित करती है, वह गोम्पा के चारों ओर चट्टान के दृश्यांश हैं। मठ के बाईं तरफ गुफा मंदिर है जिसमें गुरु पद्मसंभव और अवलोकितेश्वर की मूर्तियाँ हैं। मूर्तियों के पीछे एक दरवाजा है जो गुफा में खुलता है। इस गुफा के विषय में ऐसा कहा जाता है यहाँ गुरु पद्मसंभव ने ध्यान साधना की थी। इस गुफा के अन्दर आंगतुकों को प्रवेश की अनुमति नहीं है।

प्रांगण से कुछ कदमों की दूरी पर कंदशुर लखांग मंदिर है। इसमें बुद्ध की दो प्रतिमाओं सहित बौद्ध धर्म के 108 ग्रन्थ संरक्षित हैं। शाक्यमुनि के दोनों तरफ उनके अनुयायियों की मूर्तियाँ खड़ी हैं। दीवारों पर संरक्षक देवताओं के भित्तिचित्र हैं। इस मंदिर के सामने, एक छोटा सा मंदिर है जिसमें बुद्ध की प्रतिमाएँ और धार्मिक ग्रंथ हैं।

मुख्य प्रांगण के दाईं तरफ दुखांग मंदिर है जिसमें प्रवेश बरामदे से होता है। इसमें संरक्षक देवताओं के आकर्षक भित्तिचित्र हैं। हालांकि, पूरे वर्ष उन्हें ढक कर रखा जाता है और केवल मठ के वार्षिक त्यौहार के दौरान खुला रखा जाता है। तब आंगतुक कपड़ों को उठा सकते हैं और उत्कृष्ट कौशल की झलक पा सकते हैं, जिसे शिल्पकारों ने इन भित्तिचित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

दुखांग के अंदर दलाई लामा के लिए एक विशेष सिंहासन है तथा लामाओं के बैठने के लिए नीचे आसन हैं। मंदिर में गुरु पद्मसंभव, शाक्यमुनि बुद्ध तथा संरक्षक देवताओं के भित्तिचित्र हैं। इसमें मैत्रेय बुद्ध, गुरु पद्मसंभव तथा दोरजे टकपोसाल की तीन बड़ी मूर्तियाँ हैं तथा शीशे के डिब्बों में मक्खन एवं जौ के आटे के मिश्रण से बनी छोटी किन्तु आकर्षक मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं।

त्यौहार

मठ में प्रत्येक वर्ष दो त्यौहार मनाए जाते हैं, जिनमें पहला तकथोक-त्से-चु है जो तिब्बती कैलेंडर के छटे महीने के 9वें से 11वें दिन तक मनाया जाता है और दूसरा, तकथोक मांचोग है जो नौवें महीने के 20वें से 29वें दिन तक मनाया जाता है। सन् 2007 में तकथोक-त्से-चु 24 और 25 जुलाई को मनाया गया था।

लेह

यह भारत के सबसे ठंडे रेगिस्तान वाले क्षेत्र, लद्दाख की राजधानी है जो काराकोरम तथा विशाल हिमालय पर्वतमाला तक फैला है। प्राचीन शहर, बाजार, लेह महल, नामग्याल त्सेमो मठ, शांति स्तूप, परिस्थिति केन्द्र, संकर गोम्पा जैसे आकर्षणों के कारण लेह बौद्ध पर्यटन में रूचि रखने वाले पर्यटकों के लिए एक मनोहर स्थल है। वास्तव में, लद्दाख उन स्थलों में से एक है जहाँ आज भी महायान बौद्ध धर्म प्रचलित है। लेह की यात्रा के लिए जून से सितम्बर के मध्य का समय सबसे उचित है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

चेम्रे मठ- लेह से लगभग 40 किलोमीटर दूर सुन्दर चेम्रे घाटी है जो चांगला तक फैली है, वह चेम्रे मठ का घर है। मठ का मुख्य आकर्षण बौद्ध धर्मग्रन्थों का एक सराहनीय संग्रह है जिनके शीर्षक चाँदी तथा पाठ सोने के अक्षरों में लिखित हैं।

माथो मठ

यह सिंधु नदी के किनारे एक पहाड़ी की चोटी पर थिकसे मठ के ठीक सामने स्थित है। इसे सोलहवीं शताब्दी में तुंगपा दोरजे ने अपनी तिब्बत यात्रा के बाद स्थापित किया था। मठ का महत्त्व इसमें निहित है कि यह लद्दाख में शाक्य संप्रदाय से संबंधित अकेला मठ है। इसके अलावा, मठ तिब्बत के शाक्य मठ पर केन्द्रित है। वर्तमान में, मठ परिसर में लद्दाख के मठों के लगभग 60 लामाओं और नवदीक्षितों का निवास है।

मठ परिसर के मंदिर

लखांग सोमा या नए मंदिर के आंतरिक एवं बाहरी भागों की चारों दिशाओं में संरक्षकों के भित्तिचित्र हैं जिनमें विभिन्न रूपों में शाक्यमुनि और शाक्य संप्रदाय के कई लामा- तिलोपा, नारोपा, मारपा और मीला रास्पा शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सिंहासन के पीछे स्थापित शाक्यमुनि बुद्ध की प्रतिमा के चारों ओर कई प्रतिमाएँ है। सिंहासन शाक्य संप्रदाय के प्रमुख लामा का है, जो वर्तमान में देहरादून में रहता है और लखांग मंदिर के सामने स्थित है। दुखांग मंदिर, इसका बरामदा और आंतरिक भाग एक सिंहासन, भित्तिचित्रों तथा मूर्तियों से सुशोभित हैं। सिंहासन के अलावा, मठ के लामाओं के उपयोग के लिए सीटों की दो पंक्तियां हैं। सिंहासन के ठीक पीछे दाईं ओर अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, शाक्यमुनि तथा बुद्ध की प्रतिमाएँ हैं। दुखांग के भित्तिचित्रों में विभिन्न शाक्य लामा, चतुर्मुखी वैरोचन, चार भुजाओं सहित अवलोकितेश्वर, नीले बालों सहित शाक्यमुनि, महाकाल आदि चित्रित हैं।

मठ के गोंखांग मंदिर में महिलाओं का प्रवेश वर्जित है। यहाँ तक कि मठ के अन्दर फोटोग्राफी की भी अनुमति नहीं है। कमरे में भिक्षुओं के वस्त्र, प्राचीन औजारों, थांकाचित्रों, मुखौटों तथा मूर्तियों को देखा जा सकता है।

गोंखांग मंदिर के सामने एक संग्रहालय है जिसमें अनेक वस्तुएँ प्रदर्शित की जाती हैं जैसे- थांकाचित्र, याक एवं हिम तेंदुए के टेडी खिलौने, मुखौटे, प्लास्टर की छोटी मूर्तियाँ तथा अन्य आनुष्ठानिक वस्तुएँ। एक मंदिर लम्द्रे वंश के लामाओं को समर्पित है तथा मठ परिसर का भाग है। इसके भवन में विभिन्न शाक्य लामाओं, बुद्ध और महाकाल के कई भित्तिचित्र हैं।

उपरोक्त संरचनाओं के अलावा, मठ के अन्य आकर्षणों में इसके संस्थापक के चित्रों के साथ शाक्य संप्रदाय के वर्तमान प्रमुख लामा का चित्र भी शामिल है। इसमें महाकाल और चतुर्मुखी वैरोचन के भी चित्र हैं। आप आंगन में प्रवेश करते समय उन सभी को देख सकते हैं।

त्यौहार

मठ का वार्षिक त्यौहार, माथो नारंग के नाम से प्रसिद्ध है और इसे तिब्बती कैलेंडर के प्रथम महीने में आयोजित किया जाता है। दो दिवसीय त्यौहार से पहले मठ के दो भिक्षुओं

को भविष्यवक्ताओं के रूप में कार्य करने के लिए चुना जाता है। एक महीने तक, ये दोनों एकांत में ध्यान करते हैं और फिर समाधि में प्रवेश करते हैं तथा देवताओं का आह्वान करते हैं।

त्यौहार वाले दिन वे अपनी आध्यात्मिक समाधि से जागृत होते हैं और प्रेरणादायक कलाबाजियां करते हैं जैसे- आंखे बंद कर ऊँची दीवार पर चलना तथा छज्जों के बीच कूदना। इन प्रदर्शनों के साथ-साथ भविष्यवक्ताओं से अपने भविष्य को जानने की इच्छा पर्यटकों को दूर-दराज से इस मठ की ओर आकर्षित करती है। सन् 2007 में माथो नारंग उत्सव 4 मार्च को मनाया गया था।

लेह

यह विशाल हिमालय, काराकोरम, लद्दाख और जांस्कर क्षेत्र के मध्य स्थित है और दुनियाभर के पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षक स्थल है। इसकी मनोहर प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक सुन्दरता ही इसे यात्रा के लिए रूचिकर बनाती है। हालांकि, लेह की जलवायु से अभ्यस्त होने में कुछ समय लगता है क्योंकि समुद्र तल से लगभग 11000 फुट की ऊँचाई पर स्थित है जिसके कारण इसका मौसम बदलता रहता है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

स्टोक गोम्पा एवं महल- वर्ष 1825 में जब जोरावर सिंह ने लद्दाख पर कब्जा किया तो राजा त्सेत्पाल तोंडुप नामग्याल ने स्टोक महल और संग्रहालय को निर्मित किया। महल का संग्रहालय शाही पोशाकों, प्राचीन थांकाचित्रों के साथ-साथ राजा के ताज को भी प्रदर्शित करता है। थोड़ी दूरी पर गुरफुक गोम्पा स्थित है जो गुरु त्सेचु त्यौहार के लिए प्रसिद्ध है। यह त्यौहार तिब्बती कैलेण्डर के प्रथम महीने के नौवें और दसवें दिन मनाया जाता है।

सटकना मठ- यह एक पहाड़ी से जुड़ा हुआ है जो बाघ की नाक के आकार जैसी है। इसे 16वीं शताब्दी में संत चोसजे जामयांग पालकर ने स्थापित किया था। मठ का मुख्य आकर्षण अवलोकितेश्वर की प्रतिमा है।

स्पितुक मठ

इस मठ की स्थापना 11वीं शताब्दी में ओड-डे ने सिंधु नदी के पास एक पहाड़ी ऊपर की थी। यह मूलतः कदम्पा संप्रदाय से संबंधित है। हालांकि, राजा ग्रागस्पा बुमीदे के शासन के दौरान मठ गेलुक्पा सम्प्रदाय को समर्पित किया गया। इसी दौरान महान अनुवादक रिंचेन जांगपो ने मठ की यात्रा की और इसे स्पितुक नाम दिया, जिसका अर्थ है - अनुकरणीय।

स्पितुक मठ का मुख्य आकर्षण देवी तारा का मंदिर है जिसमें उनकी 21 उत्कृष्ट मूर्तियाँ हैं। इसके अलावा, मठ प्राचीन मुखौटों, औजारों, मूर्तियों, तथा कई थांकाचित्रों के एक समृद्ध संग्रह का स्वामी होने पर गर्व करता है। मठ से थोड़ा ऊपर पहाड़ी पर एक अन्य मंदिर है जिसमें वज्रभैरव उसके प्रमुख देवता हैं। देवता का भयानक रूप भक्तों को वर्ष में केवल एक बार जनवरी में आयोजित होने वाले उत्सव के दौरान दिखाया जाता है।

मठ परिसर के मंदिर

मुख्य प्रांगण से सीढियाँ चढ़ते हुए दुखांग मंदिर पहुँचते हैं। प्रवेश द्वार के अन्दर और बाहर शक्तिशाली संरक्षक देवताओं के भित्तिचित्र हैं। मंदिर के भीतर लामाओं के बैठने के लिए पाँच पंक्तियां हैं तथा पंक्तियों के अंत में एक उच्च सिंहासन विशेष रूप से तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के लिए आरक्षित है, जिसके पीछे भगवान बुद्ध के अनेक रूपों का चित्र तुरन्त ध्यान आकर्षित करता है।

सिंहासन के पास वाले द्वार से होकर एक कम रोशनी वाले मंदिर में पहुँचते हैं जिसमें त्सोंग-खा-पा की मूर्ति है, जो पीली टोपी संप्रदाय के संस्थापक थे। उनके अलावा, मंदिर के केन्द्र में उनके दो मुख्य अनुयायियों की मूर्तियों सहित भगवान बुद्ध की भी मूर्ति है। मठ के बाईं तरफ बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर की धर्मपत्नी एवं उद्धारक देवी तारा की सुन्दर मूर्ति है जबकि दाईं ओर पूर्ववर्ती प्रमुख लामाओं की मूर्तियाँ हैं।

मुख्य प्रांगण में वापस लौटने पर, आंगतुक दूसरे प्रांगण में प्रवेश कर सकते हैं जो आकार में छोटा है। इस प्रांगण से होकर चोखांग मंदिर पहुँचते हैं जो एक अन्य सभा भवन है और बिल्कुल दुखांग जैसा है किन्तु कई मंजिला ऊँचा है। शाक्यमुनि की विशाल प्रतिमा आंगतुकों को प्रथम दृष्टि में अपनी ओर आकर्षित करती है। शाक्यमुनि के बाईं तरफ गुरु पद्मसंभव की मूर्ति है और दाईं तरफ देवी तारा की मूर्ति है।

चोखांग मंदिर के सामने, डोलमा लोखांग नामक एक छोटा सा मंदिर है जिसमें अवलोकितेश्वर की धर्मपत्नी देवी तारा की मूर्ति स्थापित है। यह मंदिर मठ के प्रमुख आकर्षणों में से एक है जिसमें देवी तारा की 21 उत्कृष्ट प्रतिमाएँ हैं और सभी उनके विभिन्न रूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

गोंखांग मठ का सबसे बड़ा मंदिर है और यह महाकाल को समर्पित है जो एक उग्र संरक्षक देवता हैं। इस मंदिर में अन्य संरक्षकों की भी मूर्तियाँ हैं। मंदिर में आंगतुकों को अपने साथ टॉर्च लाना जरूरी है क्योंकि अंदर बहुत कम रोशनी है जिसमें कुछ भी देख पाना बहुत कठिन है।

त्यौहार

स्पितुक गुस्टर, मठ का वार्षिक त्यौहार है और तिब्बती बौद्ध कैलेंडर के अनुसार प्रत्येक वर्ष 11वें महीने के 17वें से 19वें दिन तक मनाया जाता है। यह त्यौहार एक समारोह के साथ समाप्त होता है जो हत्या के रूप में जाना जाता है। हत्या सभी प्रकार की बुराईयों के विनाश की प्रतीक है। सन् 2007 में त्यौहार 17 तथा 18 जनवरी को मनाया गया था।

लेह

यह पर्यटकों के लिए एक मनोहर गंतव्य स्थल है। यह प्राकृतिक सुन्दरता, सांस्कृतिक समृद्धि और सभी तरह के असमंजस से मुक्त होने तथा साहसी बनने के अवसर प्रदान करता है। लेह में वह सब कुछ है जो इसकी यात्रा को अत्याधिक सार्थक बनाता है।

फ्यांग मठ

श्रीनगर-लेह राजमार्ग से 6 किलोमीटर दूर पहाड़ी पर स्थित एक मठ महल जैसा दिखाई देता है, वह फ्यांग मठ है। जिसका निर्माण 16वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में एक नामग्याल शासक ने करवाया था। संपूर्ण लद्दाख क्षेत्र में, यह पहला मठ था जिसमें स्काइब जिस्टन गोनबो की देगुंग्पा शिक्षाओं को आरंभ किया गया था। स्काईब जिस्टन गोनबो की देंगुग्पा शिक्षाओं को चोसजे दंमा कुंग ने स्थापित किया था।

फ्यांग मठ द्रुक्पा संप्रदाय से संबंधित है और इसके परिसर में लगभग 50 भिक्षु रहते हैं। मठ में बौद्ध देवी एवं देवताओं की लकड़ी एवं कांसे की अनेक मूर्तियाँ हैं। यह मठ बहुत बड़े थांकाचित्रों का भी घर है जिनमें से कोई भी पाँच मंजिल से कम ऊँचा नहीं है।

इसके अलावा फ्यांग संग्रहालय, मठ का एक अन्य आकर्षण है। इसमें चीनी, तिब्बती एवं मंगोलियन आग्नेय शस्त्रों और हथियारों का एक अद्भुत संग्रह है। मठ से थोड़ी दूर, फ्यांग झील का आकार पर्यटकों के लिए एक विशेष प्रकार का आकर्षण है।

त्यौहार

प्रसिद्ध फ्यांग उत्सव जुलाई या अगस्त के महीने में मनाया जाता है। लद्दाख के अन्य मठावासीय त्यौहारों की भांति, छाम नृत्य त्यौहार का प्रमुख आकर्षण है। हालांकि, इससे अधिक उपासकों को आकर्षित करने वाली बात स्काइब जिस्टन गोनबो के विशाल थांकाचित्र की तीर्थ यात्रा है, जिसमें यह दो दिवसीय उत्सव के दौरान प्रदर्शित किया जाता है। सन् 2007 में त्यौहार 16 एवं 17 जुलाई को मनाया गया था।

लेह

बौद्ध बहुल आबादी के कारण लेह- लद्दाख देश के बौद्धों तथा यहाँ तक कि बाहर के बौद्धों के लिए भी एक महत्त्वपूर्ण गंतव्य स्थल है। लगभग सभी प्रमुख बौद्ध मठ दो मार्गों पर स्थित हैं। पहले मार्ग पर, माथो, सटकना, चेम्रे, थिकसे, शेय, तकथोक तथा हेमिस मठ स्थित हैं तो दूसरे मार्ग पर स्पितुक, फ्यांग, लिकिर, अलची, रिजोंग और लामायरू मठ स्थित हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

संकर मठ- यह गेलुक्पा संप्रदाय से संबंधित है। इसका मुख्य आकर्षण अवलोकितेश्वर की एक भव्य प्रतिमा है। जिसमे उन्हें एक हजारों मुखों और अनेक भुजाओं सहित दर्शाया गया है। इसके अलावा, गोम्पा के आधिपत्य में कुछ स्वर्ण मूर्तियाँ, सोने के लघुचित्र तथा सुन्दर चित्र शामिल हैं। यह गोम्पा, स्पितुक मठ की एक शाखा है।

लिकिर मठ

यह लेह-श्रीनगर राजमार्ग से 6 किलोमीटर उत्तर में सस्पोल गाँव से थोड़ा पहले स्थित है। लेह से लगभग 62 किलोमीटर दूर है। लद्दाख के पाँचवें राजा लचेन ग्यालपो के शासनकाल में ध्यान के प्रमुख लामा दुवांग चोसजे को मठ के निर्माण के लिए भूमि दान दी गई। लामा ने 1065 ई. में मठ का निर्माण कर, भूमि की शोभा बढ़ाई।

मठ दो महान सर्प आत्माओं या नाग राजाओं- नंद और तक्षक के शरीर से घिरा हुआ था। इस कारण मठ का नाम लिकिर या नाग का घेरा पड़ा। प्रारंभ में, मठ कदम्पा संप्रदाय से संबंधित था। हालांकि, 1470 ई. में एक तिब्बती भिक्षु लवांग लोटोस ने एक धर्मांतरण देखा। इस धर्मांतरण के परिणामस्वरूप मठ महान लामा त्सोंगखापा के गेलुक्पा संप्रदाय के अधीन हो गया। आज जो मठ खड़ा हुआ है, वह मूल संरचना नहीं है जिसे 11वीं शताब्दी में बनाया गया था। आग ने, मूल मठ को नष्ट कर दिया था और उसके स्थान पर 18वीं शताब्दी में एक नई इमारत निर्मित की गई। इस कारण, मठ ज्यादा पुराना नहीं दिखाई देता है।

दुखांग मंदिर में तीन बुद्धों मर्मे जात (अतीत), शाक्यमुनि (वर्तमान) और मैत्रेय (भविष्य) की चिकनी मिट्टी की प्रतिमाएँ हैं जबकि गोंखांग मंदिर में उग्र संरक्षक त्से-ता-पा की मूर्ति है। इसके अलावा, यमंतक और महाकाल के प्रभावशाली भित्तिचित्र भी गोंखांग मंदिर को सुशोभित करते हैं।

मठ में विभिन्न प्राचीन पांडुलिपियों, थांकाचित्रों, पुरानी घरेलू एवं धार्मिक पोशाकों और उपकरणों का आकर्षक संग्रह भी है। एक विशाल बृहस्पति का वृक्ष अपनी प्रजाति के अन्य वृक्षों के साथ आंगन के मध्य में खड़ा है। लिकिर मठ केवल विशाल ही नहीं है बल्कि बहुत धनवान भी है। लिकिर में लगभग 100 भिक्षु निवास करते हैं और अलची, इसकी शाखा के रूप में एक अन्य प्रमुख मठ है।

मठ परिसर के मंदिर

प्रांगण के दाईं तरफ दुखांग मंदिर स्थित है। इसमें बरामदे के द्वार से होकर पहुँचा जाता है। बरामदे की दीवारों पर संरक्षक देवताओं और यम देवता द्वारा नियंत्रित भवचक्र के मंडल हैं। दुखांग के अंदर एक सिंहासन लिकिर के प्रमुख लामा तथा छह पंक्तियां अन्य गोम्पाओं से आए प्रमुख लामाओं के आसन के लिए आरक्षित हैं।

दुखांग मंदिर में अवलोकितेश्वर तथा अमिताभ की मूर्तियों सहित दो बड़े स्तूप हैं। इसके अलावा, हॉल के सामने बाईं तरफ और केन्द्र में शाक्यमुनि और दाईं तरफ मैत्रेय की तीन बड़ी मूर्तियाँ हैं। इस मंदिर में शीशे की अलमारियों में कंदशुर और थंडशुर के बुकसेल्फ हैं। प्रवेश द्वार पर दो बड़े और घूमते हुए थांकाचित्र लटके हुए हैं। थांकाचित्रों में लिकिर के संरक्षक देवता और शाक्यमुनि के चित्र शामिल हैं जो प्रत्येक वर्ष शीतकालीन त्यौहार के दौरान प्रदर्शित किए जाते हैं।

नए दुखांग का निर्माण 200 वर्ष पूर्व किया गया था जो प्रांगण के प्रवेश द्वार के सामने तिरछा खड़ा है। दुखांग में अवलोकितेश्वर की 1000 भुजाओं और 11 मुख वाली मूर्ति इसकी प्रमुख प्रतिमा है। इस प्रतिमा के दोनों तरफ बुकसेल्फ हैं। इनमें प्रमुख रूप से सुम्बुम के खंडों का संग्रह है जो त्सोंगखापा के जीवन दर्शन का वर्णन करते हैं। नए दुखांग की बाईं दीवार पर 35 कन्फेशन बुद्धों का चित्र है जबकि दाईं दीवार पर केन्द्र में बुद्ध तथा उनके दो प्रमुख शिष्यों के चित्र हैं। प्रमुख चित्र के दोनों ओर 16 अर्हतों के चित्र हैं।

नए दुखांग के बाहर प्रांगण के द्वार के पास एक लोहे की सीढ़ी है जो प्रमुख लामा, जिनचुन के कक्ष तक जाती है। यह वह कक्ष है जहाँ तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा लिकिर की यात्रा के समय निवास करते हैं। कक्ष के अन्दर, कई थांकाचित्रों तथा लामाओं के चित्रों के साथ-साथ तारा देवी का 21 रूपों का चित्र भी देखा जा सकता है।

गोंखांग मंदिर संरक्षक देवताओं को समर्पित है जहाँ मुख्य लामा के कक्ष के बाहर सीढ़ियों से चढ़कर पहुँचा जा सकता है। मंदिर की आंतरिक दीवारें संरक्षक देवताओं, शाक्यमुनि और उनके शिष्यों तथा अनेक लामाओं के चित्रों से सुशोभित हैं। गोंखांग मंदिर के सामने एक शीशे के कक्ष में गोम्पा के संरक्षक देवताओं की मूतियाँ हैं। हालांकि, वे पूरे वर्ष कपड़े से ढकी रहती हैं और केवल गोम्पा के वार्षिक उत्सव के समय दिखाई जाती हैं।

त्यौहार

लिकिर मठ अपना वार्षिक उत्सव तिब्बती कैलेंडर के 12वें महीने के 27वें से 29वें दिन तक मनाता है। त्यौहार में छाम नृत्य के प्रदर्शन के अलावा, मठ में अनुष्ठान के प्रसाद को जलाया जाता है जो दोसमोचे के रूप में जाना जाता है। सन् 2007 में त्यौहार 15 एवं 16 फरवरी को मनाया गया था।

लेह

यह भारत के सबसे ठंडे रेगिस्तान वाले क्षेत्र, लद्दाख की राजधानी है और इसके चारों ओर विशाल हिमालय पर्वत सहित काराकोरम और लद्दाख तथा जांस्कर की उच्च पर्वत मालाएं हैं। पहली बार आने वाले आंगतुक को यहाँ स्वयं को 24 घन्टे अवश्य देने चाहिए ताकि ऊँचे स्थान की जलवायु से अभ्यस्त हो सके। लद्दाख में कारगिल के साथ-साथ लेह एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ टैक्सी उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

मंगीयु मठ- यह प्राचीन मठों में से एक है और इसके परिसर में चार कक्ष हैं। मुख्य मंदिर के अंदर वैरोचन की मूर्ति है। इसमें उत्कृष्ट नक्काशी वाले लकड़ी के दरवाजे से प्रवेश किया जाता है। यहाँ की दीवारों पर वैरोचन के मंडल चित्र हैं। मंदिर की कुछ वस्तुएँ तिब्बत से खरीदी गयी हैं जिनमें पंचेन लामा के दुर्लभ थांकाचित्र भी शामिल हैं।

रिजोंग मठ- लगभग 138 वर्ष पूर्व प्रसिद्ध लामा त्सुलिम निमा ने इस मठ की नींव रखी थी। मठ गेलुक्पा संप्रदाय से संबंधित है।

रिजोंग मठ

युमा चांगचुबलिंग, रिजोंग मठ के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। यह लद्दाख के सबसे पुराने मठों में से नहीं है। वास्तव में, इसका निर्माण दो शताब्दियों से भी कम पुराना है। इसे वर्ष 1829 में बनाया गया था। किसी भी गाँव से दूर घाटी के अंतिम छोर पर मठ का स्थान अत्यंत मोहक है। यह अपने आंगतुकों को एक चट्टानी क़िले का आभास देता है। मठ लेह से लगभग 72 किलोमीटर दूर है।

लामा त्सुलिम निमा द्वारा स्थापित मठ गेलुक्पा संप्रदाय का अनुसरण करता है और अपने उच्च मठ आवासीय नियमों के लिए प्रसिद्ध है। वर्तमान में, यह 6 से 15 साल की आयु वर्ग के लगभग 30 छात्रों का आवास है। मठ का नेतृत्व रिजोंग रिंपोचे - III द्वारा किया जाता है। यद्यपि उनका जन्म माथो में हुआ था और अपना आरंभिक जीवन इस मठ में व्यतीत किया था।

मठ में तीन कमरे हैं जिन्हें यहाँ आने वाले पर्यटक यात्रा के दौरान अत्यधिक महत्त्व देते हैं। इन तीन में से दो कमरों में शाक्यमुनि की मूर्तियाँ हैं जबकि तीसरे में एक स्तूप है। इसके अलावा, लामा त्सुलिम निमा की जीवनी के मुद्रित खंड मठ का अन्य आकर्षण हैं।

रिजोंग मठ, लद्दाख में केवल एकमात्र मठ है जिसमें एक भिक्षुणी आवास है। चोमोलिंग भिक्षुणी आवास मठ से थोड़ा नीचे स्थित है और यहाँ एक आसान रास्ते से पहुँचा जा सकता है। मठ के लामाओं के वस्त्रों को धोने तथा खेतों में काम करने की जिम्मेदारी भिक्षुणियों की होती है। मठ की अन्य विशेषता यह है कि यह एकमात्र ऐसा है जहाँ कोई मुखौटा नृत्य प्रदर्शित नहीं होता है। मठ के नियमों के अनुसार यहाँ कठोर आचरण पर बल दिया जाता है।

रिजोंग मठ को लद्दाख में युमा चांगचुबलिंग मठ भी कहते हैं। यह लामायुरू के मार्ग पर सिंधु नदी के उत्तर तथा अलची के पश्चिम में एक चट्टान के शीर्ष पर स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1831 में लामा त्सुलिम निमा द्वारा गेलुक्पा संप्रदाय के अंतर्गत रिजोंग में की गई थी। मठ में 40 भिक्षु हैं। मठ को 'ध्यान के लिए स्वर्ग' कहा जाता और उच्च नियमों और मानकों के लिए विख्यात है।

मठ से लगभग 2 किलोमीटर दूर भिक्षुणी आवास है जिसे जूलीचेन भिक्षुणी आवास कहते हैं जहाँ वर्तमान में 20 भिक्षुणियाँ निवास करती हैं। ऐसी मान्यता है कि मठ के निर्माण से बहुत पहले गुरु पद्मसंभव ने रिजोंग की गुफाओं में वर्षों तक ध्यान साधना की थी। ऐसा भी कहा जाता है कि लामा गाँवों के आश्रय से दूर प्रायः एकांत में आसपास की छोटी गुफाओं में वर्षों तक ध्यान लगाते थे। वे दिन में केवल एक बार भोजन ग्रहण करते थे जो उन्हें स्थानीय लोगों द्वारा गुफा में 1 फुट वर्गाकार खिड़की खोलकर दिया जाता था।

मठ का इतिहास

वर्ष 1831 में मठ के निर्माण से पूर्व, यह भिक्षुओं को बौद्ध धर्म की शिक्षा देने के लिए एक आश्रम के रूप में शुरु किया गया था जिसमें ब्रह्मचर्य जीवन के कठोर नियमों के साथ-साथ मठ के कठोर नियमों का पालन करना होता था। 18वीं शताब्दी में लामा त्सुलिम निमा जो रिजोंग के पहाड़ों पर ध्यान लगाते थे, यहाँ उन्होंने भिक्षुओं को ध्यान एवं बुद्ध की शिक्षाओं को सीखाने के लिए मठ के रूप में एक आश्राम (वर्तमान मठ के निर्माण से पहले) स्थापित करने का फैसला किया।

प्रारंभ में, कई भिक्षुओं के सहयोग से कुछ मिट्टी की झोपड़ियां बनाई गईं जहाँ वे ग्सो-श्योंग का पाठ करते थे। उन्होंने बहाचर्य के कठोर नियम बनाए, जिन्हें विनय के नियम कहा जाता था जिनका यहाँ ध्यान करने वाले प्रत्येक भिक्षु को पालन करना पड़ता था। संक्षेप में नियमों का समुच्चय (सेट) निम्नलिखित है-

- बीमारी की अवस्था को छोड़कर भिक्षुओं को मठ छोडने की अनुमित नहीं थी।
- रात में सोने के लिए आरामदायक बिस्तर की अनुमति नहीं थी।
- भिक्षुओं को स्त्रियों द्वारा नियंत्रित किसी भी वस्तु को छूना मना था।
- पानी लाने के अलावा, भिक्षु सूर्योदय से पहले या सूर्यास्त के बाद अपने कक्षों से बाहर नहीं जा सकते थे।
- भिक्षुओं को सुईं के बराबर भी संपत्ति रखने की अनुमति नहीं थी।
- अपने कमरों में आग नहीं जला सकते थे।
- प्रत्येक भिक्षु को अपने घर से प्राप्त किसी भी प्रकार के दान को मठ के दूसरे भिक्षुओं के साथ सांझा करना होता था।
- अपराधों के विषय में किसी भी प्रकार की अफवाह जो भिक्षु ने फैलायी है, उसका परिणाम मठ से निष्कासन था।

उपरोक्त नियमों के दायरे में, मठ के भिक्षु कभी - कभी अनजाने में कीट पर पैर रखने या घास की पत्ती काटने पर भी बहुत भावुक हो जाते थे। पिछले कुछ वर्षों में, आश्रम लद्दाख के सभी बौद्धों के लिए एक तीर्थस्थल बन गया है। यह कहा जाता है कि लद्दाख के राजा ने आश्रम को एक आध्यात्मिक केन्द्र में बदलने के लिए बहुत दान दिया था और यहाँ तक कि लद्दाख की रानी ने भी इस तीर्थस्थल की यात्रा की थी। इस स्थल पर, जैसे ही आश्रम में

भिक्षुओं की संख्या में वृद्धि हुई तो इस अवस्था में लामा त्सुलिम निमा ने एक बड़े मठ के निर्माण के लिए तत्कालीन आश्रम के स्थान के अपर्याप्त होने के कारण एक बहुत बड़ा मठ बनाने का निर्णय किया।

मठ का निर्माण

लामा त्सुलिम निमा ने भव्य मठ के निर्माण के लिए एक ऐसे स्थान का चयन किया जो गाँवो से दूर था। उस समय स्थान पर पर्याप्त पानी की आपूर्ति तथा ईंधन की उपलब्धता थी। उन्होंने मठ के निर्माण के लिए एक दान अभियान चलाया और इसके निर्माण के दौरान ग्रामीणों ने स्वैच्छिक श्रमदान भी किया। कई मंदिरों सहित मठ 1831 ई. में बनकर तैयार हुआ। मठ में तीन बड़े कमरे हैं। इनमें से दो कक्षों में बुद्ध की प्रतिमाएँ हैं। तीसरे कक्ष में एक स्तूप है। स्पष्ट शब्दों में कहें तो आश्रम विनय के नियमों की प्रतिष्ठा कायम रखे हुए है और इस मठ के लामा मुखौटा नृत्य या अनुचित रीति-रिवाजों के कार्यों में शामिल नहीं होते हैं।

मठ को दो अवतारी लामाओं त्सुलिम निमा और उनके बेटे श्रास रिंपोचे का गौरव प्राप्त है। पहला मठ का प्रधान है जो प्रायः मनाली में रहता है जबकि दूसरा रग्युद-समाद द्रात्सांग का मठाधीश है तथा मठाधीश का दो वर्ष का कार्यकाल पूरा करने के बाद, सभी तिब्बती विद्वानों के प्रमुख के पद पर आसीन होगा। मठ के इन दो अवतारी लामाओं की अनुपस्थिति में कार्यों को अन्य भिक्षुओं को अच्छी तरह आवांटित किया जाता है और सबसे वरिष्ठ भिक्षु मठ के कार्यों की देखरेख करता है जबकि उसका सहायक गृह-व्यवस्था के कार्यों में उपस्थित होता है जैसे- भिक्षुओं को भोजन एवं अन्य सुविधाएं प्रदान करना। मठ में तीन समूह के लोग हैं जिनका मठ की सभी आर्थिक गतिविधियों पर नियंत्रण होता है। पहला समूह लामाओं (भिक्षुओं) का है, दूसरा भिक्षुणियों का है और तीसरा समूह सामान्य लोगों का है। प्रत्येक समूह के कर्त्तव्यों और उनके आपसी संबंधों को अच्छी तरह से पारिभाषित किया गया है।

मठ परिसर के मंदिर

मठ परिसर में कई मन्दिर हैं -

अवशेष मंदिर

मठ के केन्द्र में अवशेष मंदिर है जिसे स्थानीय भाषा में स्कु-गदुंग कहते हैं। इसमें मठ के संस्थापक के अवशेष स्थापित हैं। यह धर्मराज और अन्य देवताओं के अनेक भित्तिचित्रों से सुशोभित है।

सभा भवन

सभा भवन के मध्य में शाक्यमुनि की प्रतिमा है और उनके पास दाईं ओर त्से-द्पाग-मेड, रजे-रिंपोचे तथा श्रास रिंपोचे, ईशा रब-रगिस तथा यमकंतक और अन्य देवों की मूर्तियाँ हैं। प्रमुख देवता के बाईं ओर भगवान अवलेकितेश्वर और महाकाल की मूर्तियाँ हैं। इसके अलावा, मुख्य भवन में डलाम-मकोद-पा और लाम-रिक्स के थांकाचित्र और भित्तिचित्र हैं।

इसमें कांग्यूर और तेंग्यूर ग्रन्थों के कई खंड व्यवस्थित रूप से रखे हैं। मठ का मुख्य सिंहासन संस्थापक के लिए आरक्षित है और साथ के सिंहासन श्रास रिंपोचे तथा मखान-पो के लिए आरक्षित हैं। यहाँ लामा स्तुलिम निमा की जीवनी के मुद्रित खंड और उस समय की कई वस्तुएँ तथा प्रथम श्रास रिंपोचे द्वारा लिखित ग्रन्थों को रखा गया है।

पवित्र कक्ष

पवित्र कक्ष में महाकाल (मठ के संरक्षक देवता) की प्रतिमा, मठ के संस्थापक की प्रतिमा, दूसरे अवतारी लामा की प्रतिमा और एक स्तूप है। इसमें दो प्रमुख लामाओं की प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

थीन चेन मंदिर

इस मंदिर में शाक्यमुनि बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं के भित्तिचित्र, सोने तथा चाँदी का चेंगचुब स्तूप, अवलेकितेश्वर की मूर्ति, पद्मासन मुद्रा में मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा,कांग्यूर ग्रन्थों का खंड आदि शामिल हैं।

अन्य मंदिर

पूर्वी कक्ष में रजे-तज़ोन-खापा, मखास-द्रुब-रजे और रग्याल-त्सबर्जे की प्रतिमाएँ हैं। यहाँ उनके 30 खंडो में लिखित ग्रन्थ भी रखे हैं। मंडल मंदिर, सभा भवन की छत के ऊपर है जिसमें भगवान यमकंतक और बटरा-शिस-ग्यी-सक्योंग के मंडल चित्र हैं। मंडल मंदिर की चारों दिशाओं में अनेक मूर्तियाँ हैं।

जूलीचेन भिक्षुणी आवास

जूलीचेन भिक्षुणी आवास मुख्य मठ के अधीन है। यह मठ की जरूरतों को पूरा करता है। यहाँ रखने वाली 26 भिक्षुणियों की देखभाल मुख्य मठ की शासी निकाय द्वारा किया जाता है। भिक्षुणियाँ मठ की आर्थिक गतिविधियों में पूर्ण रूप से भाग लेती हैं और मठ के आर्थिक उद्यमों में पूरे दिन कार्य करती हैं। ऐसा कहा जाता है कि जो युवा भिक्षुणियाँ उच्च शिक्षित और स्पष्टवादी होती हैं, उन्हें ध्यान और तिब्बती दर्शन के पाठयक्रम का कार्य दिया जाता है जबकि वृद्ध भिक्षुणियाँ खेतों में कठिन परिश्रम कर, मठ की आर्थिक गतिविधियों में सहयोग करती हैं। भिक्षुणियों को कताई-बुनाई, गायों के दूध दोहन, खुबानी की गिरी से तेल निकालने का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। भिक्षुणी आवास में भिक्षुणियों के कठिन परिश्रम और असहाय जीवन की दशा का अन्ना गुत्शॉ द्वारा स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है-

भिक्षुणियाँ मठ आवास रूपी छत्ते में श्रमिक मधुमक्खियों की तरह काम करती हैं जो वहाँ आनुष्ठानिक सेवा में लगे भिक्षुओं द्वारा संचालित होता है। भिक्षुणियाँ सुबह से शाम तक काम करती हैं और मठ की विशाल धन-संपत्ति अनाज, सेब, खुबानी तथा ऊन का प्रसंस्करण करती हैं। जबकि मानव आजीविका के विकर्षणों से बहुत दूर गगनचुंबी मठ का रामशकल भिक्षुणी आवास, खेतों तथा फलों के उद्यान के मध्य एकांत में स्थित है। भिक्षुणियों के आवास जौ के ढेर, सूखी खुबानी, हाथ से काते हुए ऊन से भरे हुए हैं जबकि कई राज्यों में हथकरघा और हल चलाना अब समाप्त हो चुका है। भिक्षुणियाँ दिन में अपना अधिकतर समय मठ आवास के लिए खाना पकाने या ऊन कातने में व्यतीत करती हैं और धार्मिक प्रतीकों से वंचित कक्षों में रहती हैं।

जूलीचेन भिक्षुणी आवास में जहाँ मठ संबंधी ब्रह्मचर्य के अनुसार आचरण करना होता है। वहाँ अन्ना गुत्शॉ ने अपने पीएच.डी. थीसिस के एक भाग के रूप में ‘जूलीचेन

भिक्षुणी आवास की भिक्षुणियों के सामाजिक एवं आर्थिक पक्षों’ का विस्तार से अध्ययन किया। यह प्रकट किया कि ब्रह्मचारी भिक्षुणियों द्वारा कृषि एवं पशुपालन के कार्य किए गए परन्तु मठ की तरफ से किसी भी प्रकार का भुगतान नहीं किया गया।

उनके उपयोग के लिए निर्धारित राशन की खाद्य सामग्री के साथ उनका शोषण किया गया। अन्ना आगे कहती हैं कि भिक्षुणियों को फसल का एक हिस्सा दिया जाता था जिसके बदले में आध्यात्मिक संरक्षण और अनुष्ठान के अवसरों पर भोज के लिए साल भर व्यवस्था करनी होती थी। उन्हें आध्यात्मिक प्रार्थना के भी बहुत कम अवसर दिए जाते थे।

इस मुद्दे पर एक सम्मेलन आयोजित होने के बाद, भिक्षुणी आवासों में बौद्ध नारीवाद को बढ़ावा मिला। एक विदेशी महिला, पाल्मो ने बौद्ध धर्म अपना लिया और उनके प्रयासों से बौद्ध भिक्षुणी आवासों में भिक्षुणियों के लिए लड़ाई लड़ी गई। सम्मेलन से जागरूकता पैदा होने के बाद सन् 1995 और 1998 के मध्य वकाहल भिक्षुणी आवास के अलावा, जेलिचुंग में भिक्षुणी आवास का विस्तार किया गया।

इस अवधि के दौरान, लदाख भिक्षुणी संघ के अधीन लद्दाख और जांस्कर में चार नए भिक्षुणी आवास बनाए गए जिन्हें पाल्मो ने स्थापित किया था। इसने लद्दाख में भिक्षुणियों की शिक्षा, दृश्यता और प्रतिष्ठा को बढ़ावा दिया।

पर्यटक सूचना

यह लेह शहर से लगभग 73 किलोमीटर दूर स्थित है। लेह देश के अन्य भागों से सड़कमार्ग एवं वायुमार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है।

लेह

लद्दाख, उत्तर भारत का सबसे उच्च पठार है जो तिब्बत, पी.ओ.के., कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से घिरा हुआ। लेह, लद्दाख शहर की राजधानी है और सिंधु नदी के किनारे पर स्थित है जो पठार को विभाजित करती है। निर्विवादित रूप से, शहर का मुख्य आकर्षण भव्य लेह महल है जो शहर के किसी भी भाग से देखा जा सकता है। लेह की यात्रा के दौरान पर्यटकों को जो कुछ भी चाहिए, वह सब लेह के जीवंत और मुख्य बाजार में आसानी से उपलब्ध है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

लिकिर मठ- आज मठ की जो इमारत खड़ी है, वह 11वीं शताब्दी में निर्मित मूल इमारत जैसी नहीं है। मठ प्रारंभ में कदम्पा संप्रदाय का अनुयायी था। हालांकि, बाद में यह गेलुक्पा संप्रदाय में परिवर्तित हो गया। मठ का आकर्षण भगवान बुद्ध की पच्चीस फुट ऊँची सोने की ढकी हुई प्रतिमा है। इसके अतिरिक्त, मठ का वार्षिक उत्सव 12वें तिब्बती महीने के 27वें से 29वें दिन तक मनाया जाता है। यह पर्यटकों के लिए बहुत बड़ा आकर्षण है।

मंगीयु मठ- यह लद्दाख के सबसे पुराने मठों में से एक है। इसके प्रमुख अकर्षणों में पंचेन लामा के दुर्लभ थांकाचित्र और वैरोचन की प्रतिमा है।

लामायुरु मठ

यह लेह से 120 किलोमीटर दूर स्थित है और लद्दाख के सबसे पुराने मौजूदा मठों में से एक है। यह गाँव और घाटी से दिखाई न देने वाले एक उच्च स्थान पर स्थित है। इसके अतिरिक्त, मठ युंग-डुंग के रूप में भी प्रसिद्ध है तथा इसके साथ एक रोचक किंवदंती जुड़ी हुई है। इस कथा के अनुसार मठ आज जिस स्थान पर खड़ा है वह स्थान शाक्यमुनि के समय झील के पानी से ढका हुआ था। हालांकि, 11वीं शताब्दी में योगी नरोपा ने यहाँ एक गुफा में कई वर्षों तक ध्यान साधना की और फिर संभवत झील का पानी कम हो गया जिससे मठ के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ। बाद में रिचेन त्संगपो ने न केवल मठ का विस्तार किया बल्कि इसे सजाया भी।

सोलहवीं शताब्दी में, मठ की प्रतिष्ठा एक पवित्र स्थल के रूप में बढ़ने लगी है। यहाँ तक कि अपराधी भी डर की आशंका के बिना यहाँ शरण ले सकते थे। इस वजह से, लद्दाखियों के बीच मठ 'थारपा लिंग' या 'स्वतंत्रता का स्थान' के रूप में जाना जाने लगा। आज मुख्य सभा भवन (दुखांग) तथा कुछ इमारतों को छोड़कर अधिकांश मठ खंडहर है। मठ ड्रीकुंग काग्यू संप्रदाय से संबंधित है जो काग्यू संप्रदाय का एक उप-संप्रदाय है।

मठ परिसर के मंदिर

दुखांग मंदिर प्रांगण के दाईं ओर स्थित है जिसमें प्रवेश बरामदे से होता है और चारों दिशाओं में संरक्षक देवताओं का सजीव चित्रण है। बाईं दीवार पर बने भित्तिचित्र लामा का

मार्गदर्शन करते है कि उन्हें अपना जीवन किस तरह से व्यतीत करना चाहिए। दीवार के दाईं तरफ एक छोटी सी गुफा है जिसे नरोपा की गुफा के रूप में जाना जाता है। इस स्थान पर नरोपा ने कई वर्षों तक ध्यान किया था। इसलिए, उनकी प्रतिमा गुफा में एक प्रमुख स्थान पर स्थापित है। गुफा में उनके साथ, उनके छात्र मारपा और उनके छात्र के छात्र मीला रास्पा की भी मूर्तियाँ स्थापित हैं।

दुखांग के अंदर दाईं ओर शीशे की अलमारियों में कंदशुर के तीन सेट संरक्षित हैं जिनमें बुद्ध की शिक्षाओं के 108 खंड हैं। किताबों की अलमारियों के शोकेस ऊपर और नीचे विभिन्न चित्रों से सुशोभित हैं जिससे बहुत आकर्षक लगते हैं। दीवार के दाईं तरफ केन्द्र में शाक्यमुनि की प्रतिमा स्थापित है।

दुखांग के बाहर ठीक सामने प्रांगण में एक सिंहासन है जो विशेष रूप से लामायुरू के प्रमुख लामा के लिए आरक्षित है। सिंहासन के दाईं ओर एक स्तूप है जिसमें गुरु पद्मसंभव तथा तुंगदुप तशोग-ग्याल की प्रतिमा है जो मठ के आरंभिक प्रमुख लामाओं में से थे। इसके पीछे, भगवान बुद्ध के अवतार को दर्शाने वाले थांकाचित्रों को देखा जा सकता है। सिंहासन के बाईं ओर लाल टोपी संप्रदाय के लामाओं की पाँच मूर्तियाँ हैं। इन मूर्तियों के सामने अमिताभ, पद्मसंभव और शाक्यमुनि की मूर्तियाँ हैं।

गोंखांग, दुखांग के पीछे स्थित है। यह एक मंदिर है जो बौद्ध धर्म के संरक्षक देवताओं को समर्पित है। मंदिर में सामने शीशे वाले बॉक्स में उग्र संरक्षक देवता, महाकाल, गोम्पा के संरक्षक, अप्सी, राधाश्री जो एक संप्रदाय के संस्थापक हैं तथा लामायुरू से संबंधित हैं, तीन संरक्षक देवताओं और अंत में घोड़े पर सवार अन्य अप्सी की प्रतिमाएँ प्रदर्शन के लिए रखी हैं। बॉक्स के सामने अवलोकितोश्वर की धर्मपत्नी, देवी तारा की मूर्ति उनके 21 रूपों को प्रदर्शित करती है। गोंखांग के सामने तीन स्तूप हैं जिनमें बड़ा केन्द्र में स्थित है।

दुखांग के मुख्य भवन के अलावा, एक छोटा सा मंदिर अवलोकितेश्वर को समर्पित है। प्रवेश द्वार के सामने एक कोने में अवलोकितेश्वर की 1000 भुजाओं तथा 11 मुखों वाली आठ फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित है जो उनकी भयंकर शक्ति की प्रतीक है तथा 11 मुखों में से 9 मुख बोधिसत्त्व के हैं, एक मुख संसार में दुखों पर क्रोधित है तथा शीर्ष पर बुद्ध का मुख है।

अवलोकितेश्वर की प्रतिमा के साथ गुरु पद्मसंभव और 8 बोधिसत्त्व की छोटी-छोटी मूर्तियाँ रखी हैं। दाईं और बाईं दीवार पर क्रमशः बुद्ध के अवतारों के साथ पुनः अवलोकितोश्वर के 11 मुखों और 1000 भुजाओं वाले भित्तिचित्र हैं। इसके अतिरिक्त, दाईं ओर की दीवार पर विभिन्न देवताओं का भित्तिचित्र है, जो किसी बौद्ध को मृत्यु के बाद दिखाई देगा। सिंघे घंग मंदिर का बहुत महत्त्व है। यह माना जाता है कि जब नरोपा ने झील को खाली किया था तो उन्हें एक मृत शेर मिला था। यहाँ उन्होंने मठ का प्रथम मंदिर बनवाया और उसका नाम सिंह टीला रखा था। मंदिर का प्रमुख आकर्षण वैरोचन की प्रतिमा है। वैरोचन की प्रतिमा शेर के सिंहासन पर आसीन है और उनके मुख के पास एक गरुड़ ('पौराणिक पक्षी') तथा एक समुन्द्री राक्षस है। इसके पीछे, दीवार पर चारों दिशाओं में बुद्ध के प्लास्टर के भित्तिचित्र बने हुए हैं। बाईं दीवार पर 11 मुखों सहित अवलोकितेश्वर का एक भित्तिचित्र है और साथ में वैरोचन का मंडल चित्र है। लेकिन, दाईं दीवार के भित्तिचित्र पूरी तरह पानी से धुल गए हैं।

त्यौहार

मठ का वार्षिक त्यौहार युरु काबग्यात दो दिनों तक मनाया जाता है और जिसमें दर्शकों के सामने एक भयानक दृश्य प्रस्तुत किया जाता है। मुखौटा नृत्य भिक्षुओं द्वारा ड्रिंगुंगपा पैंथियन के संरक्षक देवताओं के मुखौटे पहनकर प्रदर्शित किया जाता है। जैसा कि सभी मठों के मुखौटा नृत्य के अंत में प्रदर्शित किया जाता है अर्थात बुराई का अंत और अच्छाई की विजय होती है। त्यौहार गर्मियों में दूसरे तिब्बती महीने के 28वें और 29वें दिन मनाया जाता है। सन् 2007 में त्यौहार 2 और 3 जुलाई को मनाया गया था।

लेह- लामायुरू मठ का प्रवेश द्वार

लेह, लद्दाख क्षेत्र का सबसे महत्त्वपूर्ण शहर है और इसके प्रमुख आकर्षण के रूप में सेंग्ये नामग्याल का नौ मंजिला महल है। महल की तिब्बती वास्तुकला को इतना सराहा गया है कि आधी सदी बाद भी, यह ल्हासा के प्रसिद्ध पोटाला महल को प्रेरित करने में कामयाब रहा है। महल के अलावा, लेह का मुख्य बाजार घूमना पर्यटकों की सूची में सबसे ऊपर होता है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

वानला मठ- यह लामायुरु मठ के पास स्थित है और इसे 1000 ई. में बनाया गया था। छोटे से मठ के भवन में 11 मुखों सहित अवलोकितेश्वर की एक प्रसिद्ध प्रतिमा है। प्रतिमा दो मंजिलों से भी अधिक ऊँची है। मठ की दीवारें बुद्ध, बोधिसत्त्वों के मंडल चित्रों से सुशोभित हैं। मठ में चोवो-जे-पालदन, आतीश की एक अत्यधिक पूजनीय प्रतिमा भी देखी जा सकती है।

रिजोंग मठ- इसे 17वीं शताब्दी में महान लामा त्सुलिम निमा ने बनवाया था और एकांत में स्थित है। मठ से केवल 2 किलोमीटर नीचे जूलिचेन नामक एक भिक्षुणी आवास है। भिक्षुणी आवास में लगभग 20 भिक्षुणियों का निवास है जबकि मठ में लगभग 40 भिक्षुओं का निवास है।

बरदान मठ

एक प्रभावशाली मठ जो एक विशाल चट्टान से जुड़ा हुआ है और लिंगती नदी के ऊपर स्थित है, वह बरदान मठ है। पद्म शहर से दक्षिण में लगभग 12 किलोमीटर है तथा इसे 17वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था और जांस्कर घाटी में दुग्पा-कर्ग्युद संप्रदाय का पहला केन्द्र था।

मठ में एक बड़ा सभा भवन है जो छोटे स्तूपों और बौद्ध देवताओं की चिकनी मिट्टी, कांसे, लकड़ी एवं तांबे की मूर्तियों को प्रदर्शित करता है। मठ के अन्य मंदिर सभा भवन के चारों ओर स्थित हैं। एक मंदिर भविष्य के बुद्ध, मैत्रेय को समर्पित है जो पहली मंजिल पर स्थित है। मठ का मुख्य आकर्षण इसका विशाल प्रार्थना चक्र है जो लगभग 1.8 मीटर ऊँचा है। मठ में 50 भिक्षुओं का निवास है। यह सटकना मठ की एक शाखा है तथा सनी जैसे अन्य छोटे मठों के कामकाज की देखरेख करता है।

पद्म

यह लेह के दक्षिण-पश्चिम में और कारगिल के दक्षिण-पूर्व में स्थित है और जांस्कर घाटी का एक प्रशासनिक मुख्यालय है। लगभग 1500 लोगों की कम आबादी के बावजूद भी

आज यह जांस्कर घाटी का सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। पद्म ने देर से ही सही पर एक प्रमुख ट्रैकिंग स्थल के रूप में ख्याति अर्जित कर ली है। ट्रैकिंग अभियान पर्यटकों को मठों सहित क्षेत्र के मनोहर स्थलों की यात्रा के लिए आकर्षित करते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

मोने मठ- यह बरदान मठ के पास स्थित है और तुलनात्मक रूप से छोटा है। फिर भी, यह तिब्बती वास्तुकला का एक उत्तम उदाहरण है।

सनी मठ- यह पद्म से 6 किलोमीटर दूर सनी नामक छोटे से गाँव में स्थित है और लद्दाख के अन्य मठों से इस मायने में अलग है कि यह समतल जमीन पर बना है न कि किसी पहाड़ की चोटी पर। मठ परिसर का मुख्य आकर्षण कनिका स्तूप है जो परिसर के पिछले भाग में स्थित है।

फुकतल मठ- इसका स्थान लद्दाख क्षेत्र में अत्यधिक भयानक माना जाता है। मठ पहाड़ी के ऊपर स्थित है और मठ परिसर गुफा के मुंह से बाहर निकला हुआ दिखाई देता है। मठ की उत्पत्ति का 12वीं शताब्दी से पूर्व पता लगता है।

मार्ग

वायुमार्ग- श्रीनगर हवाई अड्डा 463 किलोमीटर दूर है जबकि लेह हवाई अड्डा पद्म से 465 किलोमीटर दूर है।

सड़कमार्ग- कारगिल से होकर उपरोक्त दोनों हवाई अड्डों में से किसी से भी सड़कमार्ग द्वारा पद्म शहर तक पहुँचा जा सकता है। कारगिल से पद्म सुरू घाटी, पनिखर एवं रंगदुम मार्ग से 234 किलोमीटर दूर है। पद्म से बरदान मठ केवल 12 किलोमीटर दूर है। वैकल्पिक रूप से, मठ तक पहुँचने के लिए चार घंटे की लंबी यात्रा करनी पड़ सकती है।

कर्शा मठ

पद्म शहर से 10 किलोमीटर दूर कर्शा नामक एक छोटा सा गाँव है जो जांस्कर क्षेत्र के सबसे बड़े और सबसे धनी मठ का घर है। यह माना जाता है कि मूल मठ 10वीं शताब्दी में महान अनुवादक रिंचेन जेंगपो ने स्थापित किया था और इसके अवशेष अभी भी दोरजे

दजोंग भिक्षुणी आवास के चारों ओर दिखाई देते हैं। यह भिक्षुणी आवास, मठ के पश्चिम में एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है। वर्तमान संरचना का निर्माण 14वीं शताब्दी में किया गया था।

गोम्पा परिसर गाँव के ऊपर पहाड़ी से जुड़ा हुआ है और कई चैपलों के साथ-साथ आवासीय कक्षों से युक्त सफेद इमारतों का प्रभावशाली समूह है। आवासीय कक्षों पर लगभग 150 लामाओं का अधिकार है जो परम्परागत तिब्बती बौद्ध धर्म और दलाई लामा से संबंधित गेलुक्पा संप्रदाय का अनुसरण करते हैं।

मठ परिसर के आकर्षण

मठ परिसर के केन्द्र में सभा भवन है जिसमें एक सिंहासन मुख्य लामा के लिए आरक्षित है। पास में तीन चैपल हैं जिनमें कई मूर्तियाँ हैं। यहाँ चाँदी एवं तांबे के स्तूपों का अद्‌भुत समूह देखने लायक है। परिसर में लब्रांग नामक एक बड़ा मंदिर भी है जिसकी छत पर एक द्वार के माध्यम से पहुँचा जाता है। इस मंदिर की दीवारों को तीन शताब्दियों से अधिक पुराने भित्तिचित्रों से सजाया गया है जो बुद्ध के पाँच अलग-अलग रूपों को प्रदर्शित करते हैं।

त्यौहार

गुस्टर त्यौहार कर्शा मठ में प्रत्येक वर्ष जुलाई-अगस्त के महीने में 28वें तथा 29वें दिन मनाया जाता है। गुस्टर का शाब्दिक अर्थ है- त्याग। यह गेलुक्पा संप्रदाय का अनुसरण करने वाले मठों में मनाया जाता है। छाम नृत्य, इस त्यौहार का प्रमुख कार्यक्रम है जो लामाओं द्वारा आध्यात्मिक संगीत के साथ प्रदर्शित किया जाता है। सन् 2007 में त्यौहार 11 एवं 12 जुलाई को मनाया गया था।

पद्म

यह 3505 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और पूर्ववर्ती जांस्कर राज्य की राजधानी थी। आज, यह जांस्कर का प्रशासनिक मुख्यालय है और संपूर्ण घाटी में सबसे अधिक आबादी वाला क्षेत्र है। शहर के प्रमुख आकर्षणों में पुरानी बस्ती के ठीक नीचे नदी के किनारे एक विशाल शिलाखंड पर प्राचीन शैलकर्त आकृतियों का समूह है। दर्शनीय स्थलों की यात्रा से

अधिक, जो पर्यटकों को पद्म के लिए आकर्षित करता है, वह आसपास के क्षेत्रों में रोमांचक ट्रैकिंग अभियानों के अवसर प्रदान करना है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

स्टोंगडे मठ- यह पहाड़ी के ऊपर बुर्जों पर स्थित है जबकि गाँव नीचे है। मठ की नींव तिब्बती योगी मारपा द्वारा रखी गई थी और वर्तमान में यह जांस्कर घाटी का दूसरा सबसे बड़ा मठ है। मठ तक पहुँचना थोड़ा मुश्किल है, फिर भी आसपास से विशेष मनोहर दृश्यों को देखने के लिए किसी व्यक्ति द्वारा किए गए कठिन श्रम की तुरंत सराहना करनी चाहिए।

सनी मठ- यह पद्म शहर से लगभग 6 किलोमीटर दूर है और समतल जमीन पर खड़ा है। मान्यताओं के अनुसार, मठ की नींव राजा कनिष्क के शासनकाल में रखी गई थी। इस मान्यता को कनिका स्तूप की मौजूदगी से विश्वनीयता मिलती है जो अभी भी मठ परिसर के पिछले भाग में खड़ा है। स्तूप के नीचे मुख्य प्रार्थना भवन है जिसमें एक छोटा सा कमरा है जिसमें योगी नरोपा की एक कांसे की मूर्ति है जिन्होंने यहाँ विगत युग में ध्यान साधना की थी। इसके अतिरिक्त, इस मठ के थाकांचित्रों और भित्तिचित्रों में एक अलग आकर्षण है।

मार्ग

वायुमार्ग- श्रीनगर (463 किलोमीटर) और लेह (465 किलोमीटर) के हवाई अड्डे पद्म शहर से लगभग समान दूरी पर हैं। यहाँ से उड़ानें जम्मू, दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे प्रमुख शहरों से जुड़ी हुई हैं।

सड़कमार्ग- सड़कमार्ग द्वारा यात्रा करने वाले पर्यटकों को पहले कारगिल पार करना पड़ता है। फिर वहाँ से बस, टैक्सी, जीप द्वारा पद्म शहर की यात्रा की जाती है। पद्म से कर्शा मठ तक स्टड नदी पर बने लोहे के पुल के पार 9 किलोमीटर के मुख्य मार्ग को तय करके पहुँचा जा सकता है। यहाँ कारगिल-पद्म मार्ग से भी यात्रा करते हुए पहुँचा जा सकता है। पर्यटकों को 17 किलोमीटर लम्बे सड़कमार्ग पर पहुँचना होगा जो कारगिल-पद्म मार्ग से टंगरी पर पद्म से लगभग 12 किलोमीटर पहले अलग होता है।

फुग्तल मठ

फुग्तल या फुकतल मठ खड़ी चट्टान पर बनी एक विशाल गुफा के ऊपर फैला हुआ है जो किसी मधुमक्खी के छत्ते की तरह दिखाई देता है। इसका स्थान, इसे जांस्कर घाटी के अन्य मठों से पूरी तरह से अलग करता है। इसके अलावा, मठ की विशेष संरचना के कारण इसे फुग्तल नाम दिया गया, जिसका अर्थ है- मुक्ति की गुफा। मिट्टी और लकड़ियों से बने मठ की नींव 12वीं शताब्दी में रखी गई थी। आज मठ में लगभग 70 भिक्षुओं का निवास है जो बहुत मिलनसार हैं और सभी पर्यटकों के प्रति प्यार दर्शाते हैं। यहाँ तक कि वे गोम्पा में आंगतुको के ठहरने की व्यवस्था की परेशानी भी स्वेच्छा से उठाते हैं।

मठ के मुख्य आकर्षणों में एक पुराने चैपल के भित्तिचित्र एवं छत की सजावट शामिल हैं जो उसी युग से संबंधित लगते हैं जिससे ताबो मठ और अलची मठ हैं। यहाँ तीन बड़े और एक छोटा सा प्रार्थना कक्ष तथा एक पुस्तकालय भी है। मठ के ऊपर गुफा की चट्टान में एक खोल (कोटर) है जो यहाँ का प्रमुख आकर्षण है। इस कोटर से कितनी भी मात्रा में पानी निकालने के बावजूद, कभी भी पानी का स्तर कम नहीं होता है। इसके अलावा, ऐसा माना जाता है कि इस पानी में रोगनाशक शक्तियां हैं। हंगरी निवासी अलेक्जेंडर कोस्मो डी कोरोस जिसने तिब्बत की यात्रा की और बाद में 1826-27 ई. की अवधि के बीच इस मठ में रहा भी था। उसके द्वारा छोड़ी गई पत्थर की मेज को मठ की यात्रा करने वाले पर्यटकों को अवश्य देखना चाहिए।

त्यौहार

मठ के भिक्षु गुस्टर उत्सव के दौरान छाम नृत्य प्रदर्शित करते हैं जो 12वें तिब्बती महीने के 18वें और 19वें दिन मनाया जाता है

पद्म

यह जम्मू-कश्मीर में जांस्कर तहसील का प्रशासनिक मुख्यालय है और लगभग 1500 की अल्प आबादी वाला क्षेत्र है। इस आबादी का काफी प्रतिशत मुस्लिम हैं जबकि शहर के बौद्ध मुख्य रूप से तिब्बती मूल के हैं। पर्यटकों को यह आवश्यक जान लेना चाहिए कि पद्म शहर में लेह या कारगिल की भांति आवास और होटल के अधिक विकल्प उपलब्ध नहीं है।

उन्हें उपलब्ध सीमित विकल्पों में से ही कोई एक विकल्प चुनना होगा। जम्मू-कश्मीर के पर्यटक बंगले और होटल इबेक्स को वरीयता दी जा सकती है।

रंगदुम मठ

कारगिल से पनिकर और परकुत्से की यात्रा करते समय पर्यटकों के सामने जो पहला बौद्ध मठ पड़ता है, वह रंगदुम है। रंगदुम मठ पहाड़ की चोटी पर स्थित है तथा रंगदुम गाँव से कुछ ही मील की दूरी पर है। एक खंदक की तरह इसके चारों ओर एक नदी की जल धारा बहती है। मठ की संरचना किसी प्राचीन क़िले की भांति दिखाई देती है जो घाटी पर बुर्जों से सुरक्षित है।

मठ का इतिहास स्पष्ट नहीं है और 8वीं शताब्दी में इसकी स्थापना के संबंध में कुछ मतभेद हैं। 18वीं शताब्दी में और अधिक सर्वसम्मति मिली। इसके अलावा, यह स्पष्ट है कि मठ की स्थापना गेलुक्पा संप्रदाय द्वारा की गई थी। मठ का मुख्य आकर्षण इसका केन्द्रीय प्रार्थना भवन है जिसमें मूर्तियों और कलाकृतियों का अद्भुत संग्रह है। मठ के दोनों तरफ दो छोटी बस्तियां-युल्डो और ताशी टोंग बसी हुई हैं। बस्तियों के चारों ओर स्तूपों की पंक्तियां हैं।

मठ में लगभग 40 भिक्षुओं का निवास है और आसपास की जमीन, चारागाहों और यहाँ तक कि पहाड़ियों और नदियों पर भी स्वामित्व रखता है। स्वामित्व स्थायी है और उन लोगों के लिए है जो मठ के आसपास रहते हैं और यहाँ काम करते हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से वह भूमि अभी तक उनकी संपत्ति नहीं है।

रंगदुम

यह गाँव 3657 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और सुरू घाटी का सबसे शांत क्षेत्र है। क्षेत्र के अन्य भागों से अलग-थलग होने के कारण, स्थान ने अपनी वन्य सुन्दरता को बनाए रखा है। इस स्थान के चारों तरफ सुन्दर पहाड़ियां, विशाल पर्वत और ग्लेशियर हैं जिनसे इसकी सुन्दरता कई गुणा बढ़ जाती है।

रंगदुम ट्रैकिंग के प्रेमियों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है और सबसे प्रसिद्ध ट्रैक मार्ग में से एक यहाँ से आरंभ होता है तथा कांजी घाटी के भयानक मार्ग से होते हुए लामायुरू के

पास हेनस्कुट की ओर जाता है। यह बड़े ट्रैकिंग मार्ग का भी भाग है जो कश्मीर और लद्दाख के बीच फैला है।

पर्यटकों के लिए रंगदुम में रात को ठहरने के लिए नवनिर्मित पर्यटक परिसर है जिसमें 5 सुसज्जित कमरें और शयन कक्ष हैं। वैकल्पिक रूप से, वे मठ प्रबंधन द्वारा संचालित तंबू के आवास का विकल्प भी चुन सकते हैं। भोजन पास की कैन्टीन से खरीदा जा सकता है।

सनी मठ

मान्यताओं के अनुसार, सनी मठ की नींव दूसरी शताब्दी में सम्राट कनिष्क के शासनकाल में रखी गई थी। मान्यता को कनिका स्तूप की मौजूदगी से बल मिलता है जो अभी भी मठ परिसर के पिछले भाग में खड़ा है। इसके अतिरिक्त, यह भी माना जाता है कि सनी संसार के आठ पवित्र बौद्ध स्थलों में से एक है और यही कारण है कि गुरु पद्मसंभव, नरोपा एवं मारपा जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने सनी के दर्शन किए।

कनिका स्तूप के अलावा, मुख्य भवन में एक विशाल बहु-स्तंभित प्रार्थना भवन भी है जो सनी मठ का प्रमुख आकर्षण है। प्रार्थना भवन प्रमुख बौद्ध देवताओं और द्रुग्पा संतों की अनेक मूर्तियों को प्रदर्शित करता है। 17वीं शताब्दी में बने प्रार्थना भवन की दीवारें भित्तिचित्रों और थांकाचित्रों से सुशोभित हैं।

हालांकि, यह छोटा है और मुख्य भवन के चैपल की भांति इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है जो मनोहर भित्तिचित्रों और प्लास्टर भित्तिचित्रों को संरक्षित रखता है। इनमें प्राकृतिक दृश्यों और फूल-पत्तियों की बनावट के साथ-साथ विषयवस्तु के रूप में गुरु पद्मसंभव के जीवन का चित्रण है।

यह माना जाता है कि कनिका स्तूप वह स्थान है जहाँ विक्रमशिला के विख्यात योगी नरोपा ने ध्यान साधना की थी। आज स्तूप के नीचे निर्मित कक्ष में उसी स्थान पर नरोपा की कांसे की मूर्ति स्थापित है जो पर्दे से ढकी रहती है। दो दिवसीय त्यौहार के दौरान वर्ष में केवल एक बार प्रतिमा से पर्दा हटाया जाता है।

मठ परिसर की दीवारों के बाहर कुछ कदम की दूरी पर एक पुराना शमशान है जो तिब्बती बौद्धों के लिए आठ सबसे महत्त्वपूर्ण शमशान घाटों में से एक माना जाता है। शमशान प्राचीन प्रस्तर की नक्काशी का एक अद्‌भुत उदाहरण है।

त्यौहार

मठ में प्रत्येक वर्ष नारो नेज्जल त्यौहार जुलाई के महीने में मनाया जाता है। यह वह समय होता है जब दो दिवसीय त्यौहार के दौरान मठ में भाग लेने के लिए संपूर्ण जांस्कर घाटी से लोग आते हैं और बरदान मठ के लामाओं द्वारा प्रदर्शित मुखौटा नृत्य का आनंद लेते हैं। इस त्यौहार के दौरान जनसाधारण के देखने के लिए योगी नरोपा की कांसे की मूर्ति से पर्दा हटाया जाता है।

पद्म

यह सनी मठ के सबसे नजदीक है। यह जांस्कर साम्राज्य की पूर्ववर्ती राजधानी होने के साथ-साथ ऐतिहासिक रूप से भी महत्त्वपूर्ण है। पद्म में जो ध्यान देने योग्य बात है, वह इसकी आबादी है। यह संपूर्ण जांस्कर घाटी में बौद्ध बहुल क्षेत्र है। इसके विपरीत, पद्म गैर-बौद्ध आबादी वाला क्षेत्र है जिसमें मुस्लिम प्रमुख हैं। पर्यटकों को व्यस्त रखने के लिए पद्म के पास कई आकर्षण हैं। उनमें से एक पुरानी बस्ती के ठीक नीचे, नदी के किनारे के पास एक विशाल शिलाखंड पर 8वीं शताब्दी की शैलकर्त नक्काशी है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

स्टैग्रिमो मठ- यह पुराने पद्म शहर में एक पहाड़ी पर स्थित है और पेड़ों से छिपा हुआ है। भिन्न-भिन्न प्रजाति के फूलों से सुसज्जित पहाड़ियों के बीच एक घन्टे की पैदल यात्रा तय कर, इस मठ तक पहुँचा जा सकता है।

कर्शा मठ- यह जांस्कर क्षेत्र का सबसे बड़ा मठ है। मठ का मुख्य आकर्षण बहुमूल्य थांकाचित्र और उतने ही मूल्यवान सूचीचित्र और मूर्तियाँ हैं। कर्शा मठ के मार्ग पर एक 14वीं शताब्दी का भिक्षुणी आवास स्थित है। इस भिक्षुणी आवास की भिक्षुणियाँ कर्शा मठ के खेतों में कार्य करती हैं।

जोंगखुल मठ- यह एक गुफा के पास स्थित है और यह माना जाता है कि योगी नरोपा ने ध्यान साधना के लिए इस मठ उपयोग किया था। यह अपने भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध है। मठ पद्म-किश्तवार ट्रैकिंग मार्ग पर स्थित है।

तोंडे मठ

यह तोंडे गाँव में स्थित है और मारपा लिंग मठ के नाम से प्रसिद्ध है। आरंभ में, यह लाल टोपी संप्रदाय से संबंधित था, हालांकि बाद में यह पीली टोपी संप्रदाय में बदल गया। मठ के बुर्ज रोंडे मार्ग पर स्थित एक गाँव से भी ऊँचे हैं और यहाँ लगभग 50 भिक्षुओं का निवास है।

पद्म

यह जांस्कर घाटी का सबसे अधिक आबादी वाला शहर है। यह जांस्कर क्षेत्र का प्रशासनिक मुख्यालय है और आधार भी है जहाँ से साहसिक पर्यटक क्षेत्र के जादू को उजागर करने के लिए अपने ट्रैकिंग अभियानों को प्रारंभ करते हैं। ये ट्रैकिंग अभियान इस स्थान की सुन्दरता को प्रकट करने के अलावा, आपको प्राचीन बौद्ध मठों तक भी ले जाते हैं।

जांगला मठ

यह पद्म से लगभग 35 किलोमीटर दूर स्थित है और जांस्कर साम्राज्य का तत्कालीन राज्य था। जांगला का प्रचीन महल एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है जो किसी समय राजकीय परिवार का आवास था और अब एक खंडहर है। हालांकि, अभी भी शांत घाटी में एक छोटे से मंदिर के अवशेष हैं जो ऊपर से दिखाई देते हैं। निकटवर्ती क्षेत्र में एक भिक्षुणी आवास है जहाँ आप भिक्षुणियों की सरल एवं संयमित जीवन शैली देख सकते हैं।

जांगला गाँव से स्टोंगडे मठ की ओर बढ़ते हुए, त्साज़र गाँव में एक प्राचीन मठ देखने लायक है। इस मठ में कई संरक्षित भित्तिचित्र हैं जो इसे एक मनोहर स्थान बनाते हैं।

पद्म

यह कारगिल के दक्षिण में 240 किलोमीटर है। इसमें बौद्ध और सुन्नी मुसलमानों की मिश्रित आबादी है। यह जांस्कर घाटी के उन स्थानों में से एक है जहाँ पर्यटन फिर से शुरू हो रहा है। पद्म ही वह आधार है जहाँ से आप ट्रैकिंग अभियानों पर निकल सकते हैं और मार्ग में पड़ने वाले बौद्ध मठों का पता लगा सकते हैं। पद्म में आवास के विकल्प सीमित हैं किन्तु संतोषजनक हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

मारपा लिंग मठ- जांगला से तोंडे गाँव सिर्फ चार से पाँच घंटे की पैदल दूरी तय कर पहुँचा जा सकता है। तोंडे, मारपा लिंग मठ का घर है। मठ में लगभग 50 भिक्षु निवास करते हैं।

कर्शा मठ- कर्शा जांस्कर घाटी में सबसे बड़ा और सबसे धनी मठ है तथा पद्म से पैदल चलकर भी पहुँचा जा सकता है। मठ में गेलुक्पा संप्रदाय के लगभग 150 भिक्षु रहते हैं और प्रत्येक वर्ष जुलाई-अगस्त के महीने में तीन दिवसीय गुस्टर त्यौहार को बड़े उत्साह से मनाते हैं। मठ परिसर में लब्रांग मंदिर देखने लायक है जिसके भित्तिचित्र तीन शताब्दी पुराने हैं।

मार्ग

वायुमार्ग- श्रीनगर और लेह हवाई अड्डे द्वारा कारगिल पहुँचा जा सकता है।

सड़कमार्ग- कारगिल से प्रत्येक दूसरे दिन सुबह तीन बजे पद्म के लिए बस जाती है। पद्म तक पहुँचने में दो दिन लगते हैं जिसमें एक रात रंगदुम बस डिपो पर ठहरती है। पद्म से जांगला तक घुड़सवारी से 5 घन्टे या जीप से 1 घन्टे में पहुँचा जा सकता है।

चेम्रे मठ

चेम्रे घाटी में लेह से 40 किलोमीटर दूर इसी नाम से एक मठ है जो हिमालय पर्वत की चोटियों के बीच स्थित है। यद्यपि यह एक अस्वच्छ रेगिस्तान है किन्तु मठ के चारों ओर सीढ़ीदार खेतों को देखा जा सकता है। व्यापक रूप से स्वीकृत, मठ के इतिहास के अनुसार यह मठ सेंग्ये नामग्याल के संरक्षण में महान लामा स्टैग्त्संग रास्पा द्वारा स्थापित किया गया था। हालांकि, प्रसिद्ध प्रोफेसर लुसियानों का मत थोड़ा अलग है। मठ का निर्माण वास्तव में 1644- 46 ई. के बीच सेंग्ये नामग्याल के स्मारक के रूप में उनकी मृत्यु के बाद हुआ था।

वर्तमान में, मठ पीछे से एक मध्यकालीन यूरोपीय महल की तरह दिखाई देता है और यह लाल टोपी संप्रदाय के लगभग 120 लामाओं का घर है। इसके अलावा, चूंकि चेम्रे की स्थापना उसी लामा ने की थी जिसने हेमिस मठ की नींव रखी थी इसलिए दोनों मठों का मुख्य लामा एक ही व्यक्ति है।

मठ परिसर के मंदिर

मठ का मुख्य सभा भवन या दुखांग मंदिर आंगन के दाईं ओर स्थित है और इसके भवन में चेम्रे के संस्थापक स्टैग्त्संग रास्पा के चौथे तथा पाँचवें अवतार की प्रतिमा स्थापित है। अपने दो मुख्य अनुयायियों के साथ शाक्यमुनि के भित्तिचित्र, स्टैग्त्संग रास्पा की मूर्ति के ठीक पीछे की दीवार पर बने हैं। इसके अलावा, दुखांग में कालचक्र और अक्षोभ्य के दो मंडल चित्रों के साथ-साथ बौद्ध ग्रन्थों के 29 खंड हैं। इन ग्रन्थों में शीर्षक चाँदी और पाठ सोने में लिखे हुए हैं। दुखांग के बाहर दाईं तरफ की सीढियाँ लामा मंदिर तक जाती हैं। यह मंदिर विभिन्न लामाओं के चित्रों, भगवान बुद्ध की विभिन्न रूपों की मूर्तियों, बौद्ध देवताओं की मूर्तियों और बौद्ध धार्मिक ग्रन्थों को भी संरक्षित रखता है।

ऊपर की तरफ कुछ और कदम चढ़कर मठ के नए मंदिर, गुरु लखांग पहुँचते हैं। मंदिर महान अनुवादक गुरु पद्मसंभव को समर्पित है और उसी रूप में उनकी मूर्ति प्रमुख कक्ष में स्थापित है। इस मंदिर में उनकी विभिन्न रूपों की मूर्तियाँ भी शामिल हैं जिनमें उनकी भयानक रूप में शैतान को पराजित करने वाली मूर्ति प्रमुख है। मंदिर में पद्मसंभव के विकराल रूप की प्रतिमा के अलावा, बुद्ध के भी अनेक रूपों की प्रतिमाएँ देखी जा सकती हैं। मंदिर की दीवारों के भित्तिचित्र वर्ष 1977 में एक लद्दाखी कलाकार द्वारा बनाए गए जो लद्दाख क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ शिल्पकारों में से एक है।

त्यौहार

चेम्रे का वार्षिक त्यौहार प्रत्येक वर्ष जनवरी महीने में मनाया जाता है। त्यौहार नृत्य, संगीत एवं जुलूस का प्रतीक है।

लेह

लद्दाख की यात्रा की योजना बना रहे किसी पर्यटक के लिए लेह अनिवार्य रूप से एक गंतव्य स्थल है। इसका प्रमुख कारण शहर में पर्यटकों के लिए उपलब्ध बड़ी दुकानें तथा इसकी सुगम्यता, आवास की सुविधाएँ और जनजातीय जीवन का आकर्षण हैं। मठ में तिब्बत

के लोगों की मौजूदगी और उनकी जीवन शैली, रोमांच के अवसर और कई झीलें एवं झरने उनमें से कुछेक हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

सटकना मठ- यह एक चट्टान पर खड़ा है जो बाघ की नाक जैसी है और इसी कारण इसका यह नाम पड़ा। मठ का मुख्य आकर्षण अवलोकितेश्वर की मूर्ति है। सटकना मठ में अन्य मठ इसकी शाखाओं के रूप में स्थित हैं जिनमें सनी, बरदान और स्टाक्रिमो प्रमुख हैं।

हेमिस मठ- यह राजा सेंग्ये नामग्याल के शासनकाल में बनाया गया था। यह द्रुक्पा संप्रदाय से संबंधित है। मठ का वार्षिक त्यौहार जून-जुलाई के महीने के दौरान मनाया जाता है। यह पर्यटकों के लिए आनन्द का समय होता है। त्यौहार गुरु पद्मसंभव की जयंती के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।

मार्ग

वायुमार्ग- लेह निकटतम हवाई अड्डा है जिसमें दिल्ली, जम्मू, श्रीनगर और चंडीगढ़ जैसे गंतव्यों को जोड़ने वाली उड़ाने हैं।

सड़कमार्ग- लेह जून और अक्टूबर महीनों के बीच दो मार्गों श्रीनगर-लेह राजमार्ग और मनाली-लेह राजमार्ग से पहुँचा जा सकता है। लेह से तकथोक जा रही बस चेम्रे गाँव में रुकती है। इस गाँव से एक घंटे की पैदल दूरी तय कर मठ तक पहुँचा जा सकता है।

दिस्कित एवं हुंदुर मठ

दिस्कित मठ एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है। मठ को चांगजेम त्सेरब जंगपो ने स्थापित किया था जो 15वीं शताब्दी में त्सोंग-खा-पा के छात्र थे। किंवदंती के अनुसार, एक राक्षस की हत्या गोम्पा के पास की गई थी लेकिन मृत्यु के बाद उसका शरीर मठ में वापस आ गया। व्यापक रूप से, यह माना जाता है कि आज भी मठ में राक्षस का सिर और हाथ संरक्षित हैं। शरीर के दोनों भाग एक संरक्षक देवता की विशाल प्रतिमा के हाथ में देखे जा सकते हैं जो गोंखांग मंदिर में अन्य उग्र संरक्षकों की मूर्तियों के साथ रहस्यात्मक और भयानक रूप में खड़े हैं।

ऊपर की ओर बढ़ते हुए आप छोटे से लाचुंग मंदिर पहुँचेंगे। ऐसा माना जाता है कि यह मठ का सबसे पुराना मंदिर है जिसके भवन में त्सोंग खा-पा की विशाल प्रतिमा है जो गेलुक्पा संप्रदाय की पीली टोपी पहने हुए है। मूर्ति के ठीक सामने भित्तिचित्र हैं जो कालिख से क्षतिग्रस्त हो गए हैं। इसके अलावा, दुखांग मंदिर में भित्तिचित्र देखे जा सकता हैं जिनमें तिब्बत के ताशीलुंपो गोम्पा के पंचेन लामा को ऊंटों, घोड़ों और गाड़ियों पर आने वाले अतिथियों के एक बड़े वर्ग का स्वागत करते हुए दिखाया गया है।

गोम्पा में दो अन्य मंदिर- कांग्यु-लंग तथा त्सांग्यु-लंग भी देखने लायक हैं। दोनों मंदिरों में कई मंगोलियन और तिब्बती ग्रन्थों को लाल एवं पीले रंग के रेशमी कपड़े में लपेट कर रखा हुआ है।

गोंखांग की छत से हुंडुर, कोबत चोटी तथा सुमुर गाँव के आसपास के मनोहर दृश्य दिखाई देते हैं। हुंडुर गाँव, दिस्कित से 7 किलोमीटर दूर है और नुब्रा घाटी के इस भाग में पर्यटकों के लिए सुदूर एक खुला स्थान है। इस छोटे से गाँव में दो मठ मिले हैं जिनमें से एक आमतौर पर बंद रहता है और दूसरा खंडहर है।

त्यौहार

लेह और लिकिर के अलावा दिस्कित मठ में भी दोसमोचे त्यौहार मनाया जाता है। जिनमें छाम नृत्य के अलावा, लोक नृत्य भी प्रदर्शित किया जाता है। सन् 2007 में दोसमोचे त्यौहार 15 एवं 16 फरवरी को मनाया गया था।

दिस्कित और हुंडुर

नुब्रा घाटी का मुख्य शहर, दिस्कित पहली बार देखने पर शांत या बेज़ान दिखाई देता है। हालांकि, शीघ्र ही यह अपने आकर्षण को प्रकट करना शुरू कर देता है। नीची छत वाले घर, पुरानी बस्ती और बाजार शहर का प्रमुख आकर्षण हैं। हुंडुर, थोड़ी सी दूरी पर जंगल में स्थित एक छोटा-सा (झोपड़ियों का) गाँव है जो अपने बैक्ट्रियन ऊंटों के लिए प्रसिद्ध है। भले ही, दिस्कित में आवास अधिक नही हैं पर पर्याप्त जरूर हैं किन्तु हुंडुर से समान उम्मीद न करें।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

सुमुर गोम्पा- सुमुर गाँव से आधे घण्टे की पैदल दूरी तय कर आप नुब्रा घाटी के सबसे महत्त्वपूर्ण समस्टानलिंग मठ पहुँचते हैं। 1841 ई. में निर्मित मठ गेलुक्पा संप्रदाय से संबंधित है। मठ का मुख्य आकर्षण दुखांग में स्थापित शाक्यमुनि की सोने की परत चढ़ी एक विशाल प्रतिमा के साथ-साथ मैत्रेय और संरक्षक देवता महाकाल की प्रतिमाएँ हैं। गोंखांग के भवन में 84 महासिद्धों और संरक्षक देवताओं के चित्र हैं, जिनके सिर में बड़ी आँखें हैं। दिस्कित से सुमुर गाँव के लिए बस सप्ताह में दो बार जाती है।

पैनामिक गोम्पा- सुमुर गाँव से 30 किलोमीटर दूर पैनामिक नामक एक छोटा सा गाँव है जहाँ एक गर्म पानी का चश्मा है। एन्सा गोम्पा इसका मुख्य आकर्षण है। पोपलर के पेड़ों से ढके मठ तक पहुँचना थका देने वाला है क्योंकि यात्रा के दौरान प्रत्येक मार्ग से तीन घंटे लगते हैं। हालांकि, मठ आमतौर पर बंद रहता है। लेकिन यदि आप किसी भिक्षु से मिलते हैं तो आप कुछ आंतरिक संरक्षित भित्तिचित्रों और त्सोंग-खा-पा के पदचिह्नों को देख सकते हैं। यह माना जाता है कि पदचिह्न चौदहवीं शताब्दी के हैं जब त्सोंग-खा-पा अपनी तिब्बत यात्रा से लौटे थे। भले ही, आपको अंदर से मठ को देखने का अवसर नहीं मिले लेकिन आसपास के स्तूपों के अवशेषों के दृश्य आपके प्रयास को सफलता में बदल देते हैं।

शेय मठ

1645 ई. में डेलटन नामग्याल ने लेह से 15 किलोमीटर दक्षिण में एक पहाड़ी पर शेय महल बनवाया था। तब यह स्थान लद्दाख के राजा का ग्रीष्मकालीन निवास था। एक दशक बाद, 1655 ई. में उसने अपने पिता सेंग्ये नामग्याल की स्मृति में शेय मठ की नींव रखी जो महल से जुड़ा हुआ था।

मठ के निचले तल पर अनेक ग्रन्थों के संग्रह सहित एक पुस्तकालय है। मठ की दीवारें बुद्ध के भित्तिचित्रों से सुशोभित हैं जिसमें हाथ के संकेतों के माध्यम से शिक्षा, उपदेश, आशीर्वाद और भवचक्र के वर्णन को दर्शाया गया है।

मुख्य प्रांगण दूसरी मंजिल पर स्थित है। इसके दाईं ओर भवन में बुद्ध की 12 मीटर ऊँची प्रतिमा है जिस पर सोने की परत चढ़ी है। यह प्रतिमा तब स्थापित की गई थी जब

गोम्पा निर्मित की गई थी और तब यह सबसे बड़ी प्रतिमा थी जब तक कि थिकसे मठ में बुद्ध की 15 मीटर ऊँची चिकनी मिट्टी की प्रतिमा स्थापित नहीं हुई थी।

बुद्ध के दाईं ओर गुरु पद्मसंभव की मूर्ति है जिसके पास दोजैंग गुरु लिम्बुने की मूर्ति है। बुद्ध की प्रतिमा के सामने एक बड़े पात्र में मोम की जलती लौ है जो पवित्रता और दिव्यता का प्रतिनिधित्व करती है और साल भर प्रज्वलित रहती है, जब तक कि उसके स्थान पर दूसरी प्रज्वलित नहीं की जाती है। दाईं ओर एक नीले घुड़सवार, पाल्दन लामो की मूर्ति है और बाईं ओर लाल घुड़सवार चकमेन की मूर्ति है जो लद्दाख के राजा का प्रतिनिधित्व करता है।

दीवारों पर दोनों तरफ 16 अर्हतों, बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों एवं पीली टोपी संप्रदाय के संस्थापक त्सोंग-खा-पा के भित्तिचित्र हैं। वर्तमान में शेय मठ में केवल दो लामा निवास करते हैं और इसकी देखरेख के लिए उत्तरदायी हैं।

त्यौहार

स्टोक गुरु त्से-चू त्यौहार प्रत्येक वर्ष फरवरी-मार्च के महीने में मनाया जाता है। त्यौहार में दो स्टोक भविष्यवक्ता लोगों की भविष्यवाणी करते हैं। इसी तरह के रीति-रिवाजों का पालन माथो मठ के भविष्यवक्ता भी करते हैं। हालांकि, दोनों के बीच का अंतर इस तथ्य में निहित है कि स्टोक के भविष्यवक्ता साधारण व्यक्ति होते हैं जबकि माथो के भिक्षु होते हैं। देवताओं की आत्मा का सामना करने के लिए इन भविष्यवक्ताओं को तैयार करने का उत्तरदायित्व स्पितुक मठ के लामाओं पर होता है। सन् 2007 में स्टोक गुरु त्से-चू त्यौहार 25 एवं 26 फरवरी को मनाया गया था।

लेह

यह जम्मू-कश्मीर के ट्रांस हिमालय क्षेत्र में स्थित है जो लद्दाख के ठंडे रेगिस्तान के बीच में 3505 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। लेह में पर्यटकों के लिए नौ मंजिला भव्य लेह महल प्रमुख आकर्षण है जो 17वीं शताब्दी में बनाया गया था। बौद्ध पर्यटकों के लिए लेह के आसपास देखने और आनंद लेने के लिए बहुत कुछ है। इस तथ्य को देखते हुए यहाँ अनेक बौद्ध मठ देखने लायक हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

थिकसे मठ- इसका मुख्य आकर्षण नए मंदिर के भवन में मैत्रेय बुद्ध की प्रतिमा है। मूर्ति सिंहासन पर आसीन नहीं है जैसा कि आमतौर पर प्रचलित है बल्कि यह कमल में अवस्थित है। मैत्रेय के जीवन को दर्शाने वाले चमकीले भित्तिचित्र दीवारों पर लिंग्शेद मठ के भिक्षुओं की कलाकारी है।

स्टोक महल एवं मठ- इसमें शाही परिवार के अवशेषों के साथ शाक्यमुनि की जीवनशैली का प्रतिनिधित्व करने वाले थांकाचित्र प्रदर्शित हैं। स्टोक मठ छाम नृत्य के दौरान पहने जाने वाले कई मुखौटों के साथ-साथ लिंग्शेद मठ के भिक्षुओं द्वारा चित्रित आधुनिक थांकाचित्रों को प्रदर्शित करता है। लेह से स्टोक मठ के लिए नियमित रूप से बसें चलती हैं।

मार्ग

वायुमार्ग- लेह हवाई अड्डा भारतीय एयरलाइंस और जेट एयरवेज द्वारा दिल्ली, जम्मू, चंडीगढ़ तथा श्रीनगर जैसे गंतव्य स्थलो से जुड़ा हुआ है।

सड़कमार्ग- लेह सड़कमार्ग द्वारा जून से अक्तूबर के बीच सुगम्य है क्योंकि उस समय तक श्रीनगर और मनाली को जोड़ने वाला राजमार्ग खुला होता है। लेह से नियमित रूप से मिनी बसें शेय मठ तक चलती हैं। शेय मठ और थिकसे मठ तक बसें उपलब्ध हैं।

स्टोंगडे मठ

पद्म से जांगला सड़कमार्ग पर लगभग 18 किलोमीटर की यात्रा कर, स्टोंगडे मठ पहुँचते हैं। मठ चट्टान पर बुर्जों के ऊपर स्थित है जिसकी छाया नीचे गाँव पर पड़ती है। स्टोंगडे को जांस्कर घाटी में दूसरा सबसे बड़ा मठ होने का गौरव प्राप्त है जिसमें लगभग 60 गेलुक्पा संप्रदाय के भिक्षु रहते हैं। मठ का महत्त्व भी इसमें निहित है कि यह तिब्बती योगी मारपा से संबंधित है।

मठ परिसर में कई मंदिर हैं जिनमें से प्रत्येक आपके देखने और प्रशंसा करने के लिए बौद्ध अवशेषों का खजाना खोल देता है। इसका गोंखांग मंदिर विशेष उल्लेखनीय है जो बौद्ध धर्म के संरक्षक देवताओं को समर्पित है।

स्टोंगडे मठ तक पहुँचना थोड़ा थका देने वाला हो सकता क्योंकि आपको लगभग चार घण्टे तक पैदल ही ऊपर की ओर चलना होता है। हालांकि, एक बार ऊपर चढ़ने पर आप संपूर्ण घाटी के शानदार दृश्यों का आनंद ले सकते हैं।

पद्म

यह नदी के विशाल उपजाऊ क्षेत्र के दक्षिणी सिरे तथा विशाल मलबे (चट्टानों के छोटे-छोटे विघटित कण) के ढेर और हिमावृत पहाड़ों (बर्फ से ढके पहाड़ों) के मध्य स्थित है, जो अद्‌भुत प्रेरणा उत्पन्न करता है। पद्म दर्शनीय स्थलों की बहुत अधिक भेंट प्रस्तुत नहीं करता है किन्तु जो पेश करता है, वह ट्रैकिंग के लिए उत्कृष्ट हैं। इसके अतिरिक्त, पद्म वह स्थान है जहाँ परिवहन और आवास के विकल्प संतोषजनक हैं। इस तथ्य के बावजूद कि ये सीमित हैं और लेह या कारगिल की तुलना में कुछ भी नहीं हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

सनी मठ- संपूर्ण जांस्कर क्षेत्र में यह एकमात्र मठ है जो घाटी में समतल भूमि पर बनाया गया है। मठ परिसर का प्रमुख आकर्षण कनिका स्तूप है। इसके अलावा, स्तूप के नीचे मुख्य प्रार्थना भवन है जिसमें एक कक्ष योगी नरोपा को समर्पित है। यह माना जाता है कि इस कक्ष में नरोपा ने लगभग नौ सौ वर्ष पूर्व ध्यान साधना की थी।

जोंगखुल मठ- यह मठ भी नरोपा से जुड़ा हुआ है जो एक प्रसिद्ध योगी थे। ऐसा माना जाता है कि नरोपा ने एकांत में ध्यान के लिए मठ के आसपास की दो गुफाओं को चुना था। मठ का मुख्य आकर्षण इसके भित्तिचित्र हैं जो प्राचीन काल की उत्कृष्ट कला की ओर संकेत करते हैं।

सिक्किम में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ

सिक्किम, खूबसूरत पूर्वोत्तर राज्यों में से एक है और इसमें लगभग 200 बौद्ध मठ या गोम्पा हैं। इन मठों की एक यात्रा आपको देश के बौद्ध स्थलों की यात्रा के दौरान अवश्य करनी चाहिए। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण रुमटेक मठ है जिसमें तिब्बत के निर्वासित करमापा का निवास है। इसके अलावा, राज्य में कई अन्य देखने योग्य मठ हैं जिनमें फोदोंग मठ, फेनसांग मठ, पेमायंगत्से मठ, ताशीदिंग मठ, रालोंग मठ, एंचेय मठ, युकसोम मठ आदि शामिल हैं।

ये मठ आपके सामने उन बौद्ध अनुष्ठानों और रीति-रिवाजों को प्रदर्शित करते हैं जो वर्षों से चले आ रहे हैं। प्राचीन बौद्ध कथाओं के सजीव भित्तिचित्र, दुर्लभ रेशम एवं ज़रीदार थांकाचित्र, प्राचीन तिब्बती पांडुलिपियां, उत्कृष्ट नक्काशीदार लड़की का काम तथा सोने एवं चाँदी की मूर्तियाँ आदि मठों के प्रमुख आकर्षण हैं। इसके अलावा, आप पारम्परिक पोशाक में घूमने वाले समर्पित लामाओं से मिल सकते हैं और संवाद कर सकते हैं। यह परस्पर संवाद आपको बौद्ध धर्म के विषय में ज्ञान प्रदान करता है और सामान्य रूप से मठ के इतिहास एवं महत्त्व से अवगत कराता है।

इस खंड में, आपको इन मठों के विषय में विस्तार से जानकारी मिलेगी। इससे प्राप्त जानकारी के माध्यम से यात्रा करें और किसी एक मठ को चुनें जिसकी आप राज्य की अपनी बौद्ध यात्रा के दौरान सैर करना चाहते हैं।

रुमटेक मठ

तिब्बत पर चीन के अधिकार के बाद, 16वें करमापा रंगजुंग रिगपे दोरजे को भारत भागने के लिए मजबूर होना पड़ा। सन् 1959 में वे सिक्किम पहुँचे और अपने मुख्य निर्वासन स्थान के रूप में अन्य सभी स्थलों की अपेक्षा रुमटेक को चुना। आरंभ में रुमटेक मठ का निर्माण 9वें करमापा वांगचुक दोरजे द्वारा 1740 ई. में किया गया था और नष्ट होने से कुछ समय पहले तक, सिक्किम में करमा काग्यू वंश का मुख्य स्थान था। फिर, 16वें करमापा के आने के साथ ही रुमटेक ने अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त किया। सन् 1961 में ग्यालवा करमापा द्वारा नए मठ का निर्माण कार्य शुरू किया गया और उन्हें सिक्किम के राज परिवार के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा उनके कार्य में सहायता प्रदान की गई। आखिरकार, सन् 1966 में तिब्बती नववर्ष (लोसर) के दिन नए स्थान का उद्घाटन किया गया और उसे यशस्वी करमापा का धर्मचक्र केन्द्र नाम दिया गया जो आध्यात्मिक सिद्धता और विद्वत्ता का स्थान है जिसे 16वें करमापा द्वारा आधिकारिक रूप से पूरा किया गया था।

रुमटेक मठ समुद्र तल से 5500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और इसका स्थान 16वें करमापा के लिए निर्वासन के मुख्य आसन के रूप में, इसके चयन के लिए काफी हद तक जिम्मेदार था। करमापा ने महसूस किया कि सामने बर्फ की पर्वतमाला तथा बहती धाराएं, पीछे पहाड़ और नीचे एक नदी से धन्य स्थान उनके नए आसन के लिए अत्यन्त शुभ था।

मठ परिसर के आकर्षण

मुख्य मंदिर एक चार मंजिला भवन है और भिक्षुओं के कक्षों से घिरा हुआ है जिसमें एक स्वर्ण मूर्ति, घांजीरा छत पर सुशोभित है। घांजीरा पाँच अलग-अलग आकृतियों का एक संयोजन है जो पाँच बुद्ध परिवारों का प्रतिनिधित्व करता है जैसे- वैरोचन (घंटी), अमिताभ (चक्र), अमोघसिद्धि (कलश), अक्षोभ्य एवं रत्नसम्भव (रत्न)।

मंदिर के प्रवेश द्वार को भित्तिचित्रों से सजाया गया है। सृष्टि के चार संरक्षकों विरूदका, विरूपाक्ष, धृतराष्ट्र तथा वैश्रमण की आदमकद की मूर्तियाँ चारों दिशाओं की रखवाली करती हैं। इसके अलावा, एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि यहाँ भगवान गणेश का भी चित्र है। 16वें करमापा के दिव्य दर्शन के कारण यहीं उन्हें एक स्थान मिला जहाँ उन्होंने हाथी के सिर वाले देवता को निर्माण कार्य में सहायता करते हुए देखा था।

मंदिर का भवन लाल स्तंभों पर खड़ा है जिसमें लम्बे, गोल रेशम के झंडे तथा प्राचीन थांकाचित्र लटके हुए हैं। भवन की दीवारें काग्यू वंश, आठ महान बोधिसत्त्वों, सोलह अर्हतों और गेंडुक चोगंगी के चित्रों से सुसज्जित हैं। ग्यालवा करमापा के पवित्र सिंहासन के साथ-साथ उनके रीजेंट और अन्य प्रमुख अवतार टुल्कुस का सिंहासन भवन का मुख्य आकर्षण हैं। पवित्र सिंहासन के पीछे, सारीपुत्र और मौद्गल्यायन के साथ शाक्यमुनि की 10 फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित है। आरंभ में, इस स्थान पर बुद्ध का एक बड़ा चित्र था, किन्तु सन् 1989 में भवन का विस्तार किया गया और चित्र को किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित कर दिया। मुख्य मंदिर के दाएं और पिछले भाग का कक्ष दोनों महाकाल और देवी काली को समर्पित हैं। भवन के बाईं ओर गोंखांग मंदिर में काग्यू संप्रदाय की महिला संरक्षक, त्सेरिंग चे नगा तथा गुरु पद्मसंभव, दोरजे द्रोल की उग्र रूप की प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

मठ परिसर के अंदर करमा श्री नालंदा बौद्ध अध्ययन संस्थान और एक स्वर्ण स्तूप है। वर्ष 1984 में निर्मित संस्थान परिसर की सबसे सुन्दर इमारत है। संस्थान दुनियाभर के अनेक छात्रों को आकर्षित करता है जो यहाँ कम से कम नौ वर्ष अध्ययन करते हैं। इसके बाद, तीन साल तक एकांत में ध्यान लगाते हैं। इस संस्थान में तीसरी मंजिल पर स्थित मुख्य हॉल

को अवश्य देखना चाहिए। इस हॉल को शाक्यमुनि बुद्ध और 16वें करमापा की प्रतिमा के साथ-साथ मनोहर भित्तिचित्रों से सजाया गया है।

संस्थान के प्रवेश द्वार के सामने, एक छोटे से हॉल में चार मीटर ऊँचा एक स्वर्ण स्तूप है जिसमें 16वें करमापा के अवशेष रखे हैं। स्तूप के पीछे, वज्रधारा की मूर्ति चार महान काग्यू शिक्षकों-तिलोपा, नरोपा, मारपा, और मिलरपा के साथ केन्द्र में स्थापित है। पूर्व 16 करमापा की प्रतिमाएँ भी हॉल में क्रमबद्ध रूप में दिखाई देती हैं। यह हॉल हमेशा खुला नहीं रहता है। इसलिए यह सुनिश्चित कर लें कि अंदर जाने के लिए आप या तो द्वार जोर से खटखटाएं या किसी भिक्षु को साथ ले जाएं।

मूल रुमटेक मठ

मूल रुमटेक मठ को नौवें करमापा ने 1740 ई. में स्थापित किया था जो नए मठ से आधा किलोमीटर आगे स्थित है। पुराना मठ सादा है किन्तु आकर्षक इमारत है जिसमें वर्तमान में पुनरुद्धार का कार्य चल रहा है। मठ का मुख्य आकर्षण एक छोटा सा मंदिर है जो काग्यू संप्रदाय के संरक्षक देवता महाकाल को समर्पित है। देवता की प्रतिमा इतनी भयानक है कि इसे पर्दे से ढक कर रखा जाता है।

त्यौहार

रुमटेक मठ में प्रत्येक महीने एक या दो सप्ताह में पूजा आयोजित की जाती है। तिब्बती नव वर्ष, लोसर बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। उत्सव के अनुष्ठान दो दिनों तक लामाओं के प्रदर्शन के साथ जारी रहते हैं। हालांकि, लोसर के उत्सव से पहले मठ के भिक्षु महाकाल के सम्मान में एक सप्ताह तक पूजा करते हैं। अंतिम दो दिनों तक पारंपरिक नृत्य लोसर की पूर्व संध्या पर होता है। हाल ही में, मठ के इतिहास में पहली बार नृत्य प्रदर्शन को जनसाधारण के देखने के लिए खुली जगह पर प्रदर्शित किया गया।

चौथे तिब्बती चंद्र महीने में आयोजित होने वाली दुंगद्रुब पूजा में भिक्षु समुदाय द्वारा एक लाख मंत्रों का पाठ किया जाता है। पाठ 15वें दिन से आरंभ होता है और समापन तक जारी रहता है। पूजा विश्व शांति के लिए आयोजित की जाती है तथा बुद्ध की शिक्षाओं को अपनाकर लोगों में शांति और करुणा विकसित करने में सहायता करती है।

प्रत्येक दूसरे वर्ष चौथे तिब्बती महीने के दौरान एक सप्ताह तक वज्रकिलय या गुरु पद्मसंभव त्सेचु पूजा के साथ-साथ पारंपरिक छाम नृत्य का आयोजन किया जाता है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा, प्रत्येक वर्ष 26 जून को 17वें करमापा का जन्म दिवस भी मनाया जाता है।

पेमायंगत्से मठ

यह मठ सिक्किम का दूसरा सबसे पुराना मठ है और निंगमापा संप्रदाय का मुख्यालय है। यह बर्फ की सफेद चादर से ढकी हिमालय की मनोहर चोटी से घिरी रंजीत नदी के ऊपर एक पर्वत पर स्थित है। मठ के इतिहास से ज्ञात होता है कि इसकी स्थापना 17वीं शताब्दी में लहात्सुन चेंपों द्वारा की गई थी जो युकसोम के तीन लामाओं में से एक था और 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में उनके पुनः अवतार ने इसका विस्तार किया। मठ का यह नाम 'पद्म यांग त्से' से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है- परम शुद्ध कमल।

पेमायंगत्से मठ उसी युग में निर्मित अन्य मठों से भिन्न है। इसका अर्थ है कि यह केवल ता-सांग लामाओं के लिए है। लहात्सुन चेंपों ने ता-सांग लामाओं को तिब्बती मूल, अविवाहित तथा बिना किसी शारीरिक अक्षमता के रूप में परिभाषित किया था। समय के साथ, पेमायंगत्से मठ का महत्त्व कई गुना बढ़ गया और अंत में, यह वह स्थान बन गया जिसके भिक्षुओं को पवित्र जल से क्षेत्र के शासक के अभिषेक का अधिकार प्राप्त था।

आज भी, इस मठ को सिक्किम के प्रमुख मठों में गिना जाता है जिसमें सभी पर्यटकों को भ्रमण के लिए पैसे देने पड़ते हैं। इसके अतिरिक्त, अब तक इस मठ के भिक्षु ही एकमात्र हैं जो "ता-संग" की उपाधि का दावा कर सकते हैं। मठ अपने धार्मिक अनुष्ठान मिंद्रोलिंग मठ से प्राप्त करता है जो तिब्बत में स्थित है।

मठ परिसर के आकर्षण

पेमायंगत्से मठ एक सादा मठ है किन्तु बहुत आकर्षक संरचना है जिसमे अनेक सुन्दर कक्ष हैं। कक्षों के दरवाजों, खिड़कियों, जाली एवं बीम पर सुन्दर नक्काशी की गई है। मुख्य गोम्पा एक तीन मंजिला इमारत है जिसके केन्द्र में एक हॉल है। हॉल में गुरु रिम्पोचे और लहात्सुन चेंपो की प्रतिमाओं के साथ-साथ कुछ सुन्दर थांकाचित्र और भित्तिचित्र भी हैं। मठ के शीर्ष तल पर पूर्व प्रमुख लामा दुंगजिन रिम्पोचे की कलात्मक प्रतिमा स्थापित है। केवल

पाँच वर्षों की अवधि में, उन्होंने नरक के स्थान से ऊपर उठते हुए, गुरु पद्मसंभव के स्वर्ग के निवास सांग ठोक पालरी को लकड़ी की भव्य मूर्तियों पर निर्मित और चित्रित किया था। लकड़ी के गहन काम का विवरण आपके सामने राक्षसों, जानवरों, पक्षियों, बुद्ध, बोधिसत्त्वों, उड़ने वाले ड्रेगनों, स्तूपों के रूप में प्रस्तुत है।

त्यौहार

मठ का त्यौहार तिब्बती चंद्र कैलेंडर के 12वें महीने के 28वें और 29वें दिन मनाया जाता है। धार्मिक छाम नृत्य दो दिवसीय त्यौहार का प्रतीक है। नृत्य का समापन तीसरे दिन ग्यो-कु तथा एक विशाल बूटेदार बौद्ध थांकाचित्र के फहराने के साथ होता है।

गेजिंग

यह गंगटोक के पश्चिम में लगभग 110 किलोमीटर दूर है और एक छोटा सा शहर है। यह मुख्य रूप से एक बाजार है। यह वास्तव में कुछ आधारभूत होटलों के साथ पश्चिमी सिक्किम का एक परिवहन केन्द्र है जहाँ आप ठहर सकते हैं। लगभग 30 मिनट की पैदल दूरी पर एक छोटा सा मठ है जहाँ से आप कंचनजंगा पर्वत के कुछ शानदार दृश्यों का आनंद ले सकते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

हिन शान गोम्पा- यह एक छोटा सा मठ है जहाँ लगभग 30 मिनट पैदल चलकर पहुँचा जा सकता है। यहाँ कुछ भूटानी भिक्षु रहते हैं।

सांगचोलिंग मठ- यह पेमायंगत्से मठ से लगभग 7 किलोमीटर दूर है। इसे 1697 ई. में निर्मित किया गया था। मठ के नाम का अर्थ है- 'गूढ शिक्षा का द्वीप' तथा सिक्किम का सबसे प्राचीन मठ माना जाता है।

निंगमापा दुब्दी मठ- योकसुम छोटा और शांत कस्बा है तथा यह मठ पेमायंगस्ते मठ से उत्तर में लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित है। इसे 1701 ई. में निर्मित किया गया था जहाँ से योकसुम दिखाई देता है। अस्पताल की ओर जाने वाली सड़क के अंत में शुरू होने वाले मार्ग पर आगे बढ़ते हुए मठ तक पहुँचा जा सकता है। यह मार्ग पनचक्कियों और एक छोटी सी नदी की ओर जाता है और जंगल से होते हुए अंत में गोम्पा तक पहुँचता है। 20वीं

शताब्दी के आरंभ में, मठ में लगभग 25 भिक्षु थे। किन्तु आज सिर्फ एक भिक्षु है जो मठ की देखभाल करता है। मठ के चारों ओर सुन्दर उद्यान हैं।

नोरबुगंग स्तूप- यह सफेद स्तूप युकसोम में स्थित है और सिक्किम के विभिन्न भागों से लाए गए पत्थर और मिट्टी से बना है। यह माना जाता है कि इस स्तूप में लहात्सुन चेंपो का अंत्योष्टि विधान किया गया था। यहाँ से एक रास्ता सिक्किम के पहले चोग्याल राजा के सिंहासन की ओर जाता है। राजा के राज्याभिषेक में भाग लेने वाले तीन लामाओं में से एक के पदचिह्न सामने की चट्टान पर अंकित हैं। मुख्य मार्ग का अनुगमन करके स्तूप तक पहुँचा जा सकता है जिसके अंत में सड़क दो भागों में विभाजित होती है और वहाँ से ऊपर की ओर जाने वाले मार्ग को चुनें।

फेनसांग मठ

यह उत्तरी सिक्किम में तीव्र ढलान पर स्थित है जो काबी से फोदोंग तक फैला है। मठ का प्राकृतिक दृश्य हर तरह से सिक्किम के संपूर्ण क्षेत्र में सबसे मनोहर दृश्यों में से एक है। मठ के इतिहास को खोजने पर आपको पता चलेगा कि इसे 1721 ई. में जिग्मे पावो के शासनकाल में बनाया गया था। हालांकि, सन् 1947 में भयंकर आग ने मठ को नष्ट कर दिया था। एक साल बाद, लामाओं के समर्पण और दृढ़ता के परिणामस्वरूप मठ का पुनः निर्माण किया गया। आज मठ में निंगमापा बौद्ध संप्रदाय के लगभग 300 लामा रहते हैं।

त्यौहार

मठ का मुख्य त्यौहार तिब्बती कैलेंडर के 10वें महीने के 28वें और 29वें दिन मनाया जाता है। सिक्किम के नव वर्ष से दो दिन पहले काग्यद नृत्य प्रदर्शित किया जाता है, जो बुराई के विनाश और शांति एवं समृद्धि के उदय का प्रतीक है।

गंगटोक

गंगटोक 1572 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। अपनी खूबसूरत स्थिति और बौद्ध अतीत के साथ-साथ रोमांच के आनंददायक अवसर प्रदान करने के कारण प्रत्येक वर्ष असंख्य पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसके अलावा, गंगटोक अपने आवास और परिवहन

सुविधाओं के कारण भी, राज्य के आसपास के क्षेत्रों की खोज करने के लिए एक सुविधाजनक आधार है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

लब्रांग मठ- फोडोंग से चार किलोमीटर आगे लब्रांग नामक मठ है। मठ अपने वास्तुशिल्प डिजाइन के कारण अद्भुत है। फोडोंग और लब्रांग मठों के बीच स्थित कई स्तूप 19वीं शताब्दी में सिक्किम की राजधानी तुमलांग की याद दिलाते हैं।

फोडोंग मठ

यह सिक्किम के छह सबसे महत्त्वपूर्ण मठों में गिना जाता है और गंगटोक से लगभग 38 किलोमीटर दूर स्थित है। मठ मुख्य सड़क से एक किलोमीटर दूर पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। मठ का इतिहास बताता है कि पहली बार इसे 18वीं शताब्दी में चोग्याल ग्यूरमेद नामग्याल ने निर्मित किया था। हालांकि, जो इमारत आज आप देखेंगे, वह मूल नहीं है। नई इमारत का निर्माण हाल ही में किया गया है और इसलिए यह बहुत अधिक पुरानी नहीं दिखाई देती है। इस मठ को राज्य के सबसे सुन्दर मठों में से एक माना जाता है।

मठ के इतिहास से यह भी पता चलता है कि यह किसी समय सिक्किम में तीन काग्यू मठों में सबसे महत्त्वपूर्ण था। किन्तु जब 16वें करमापा तिब्बत से पलायन के बाद, रुमटेक में बस गए तो इस मठ का महत्त्व कम हो गया।

वर्तमान में, फोड़ोंग मठ पर्यटकों द्वारा सबसे अधिक भ्रमण किए जाने वाले मठों में से एक है। यह काग्यू वंश के लगभग 260 भिक्षुओं का घर है। मठ मुख्य मंदिर सहित अनेक भवनों और आवासीय कक्षों का एक समूह है। इसके अंदर के मनोहर भित्तिचित्र आपको पूर्ण रूप से अभिभूत कर देंगे।

त्यौहार

लोसूंग मठ का मुख्य त्यौहार है जो तिब्बती वर्ष के समापन और नव वर्ष के आरंभ का प्रतीक है। यह 10वें तिब्बती महीने के 28वें और 29वें दिन मनाया जाता है। त्यौहार में धार्मिक छाम नृत्य और तीरादांजी प्रतियोगिता के साथ-साथ भोज का भी आयोजन होता है।

फोडोंग

यह शहर गंगटोक के पास स्थित है। इसलिए यह सुगम्य है। यह दो मठों-फोडोंग एवं लब्रांग के लिए प्रसिद्ध है और दोनों एक दूसरे से कुछ दूरी पर एकांत में स्थित हैं। फोडोंग के लोग मुख्य रूप से खेती करते हैं। हालांकि, देर से ही सही लोगों ने पर्यटन को एक विकल्प रूप में चुनना शुरू कर दिया है। आज, आप जैसे पर्यटकों के लिए फोडोंग मुख्य रूप से एक खाने की जगह (भोजनालय) है। यहाँ पर्यटक अपनी यात्रा के दौरान उत्तरी सिक्किम को खोजने और स्वस्थ भोजन का आनंद लेने के लिए ठहरते हैं। यदि आप रात को ठहरने का फैसला करते हैं तो फोडोंग ठहरने के लिए कुछ अच्छे विकल्प भी प्रदान करता है। होटल 'याक और येति' तथा होटल 'नार्थवे' ऐसे स्थान हैं जहाँ आप स्थानीय लोगों के मिलनसार आतिथ्य-सत्कार का आनंद ले सकते हैं और गर्म 'छांग' (एक स्थानीय पेय) का स्वाद ले सकते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

लब्रांग मठ- फोडोंग मठ से पहाड़ी की ओर 4 किलोमीटर की पैदल दूरी तय कर लब्रांग मठ तक पहुँचेंगे। यह निंगमापा संप्रदाय से संबंधित है और इसके नाम का शाब्दिक अनुवाद है- लामाओं का निवास। यह मठ विशेष है क्योंकि यह राज्य के उन मठों में से एक है जो मूल इमारत को संरक्षित करने में कामयाब रहे हैं। इसके आसपास का खुला स्थान धार्मिक समारोहों के लिए एकदम उपयुक्त है। इसे तिब्बत के कोंगपु के लत्सुन चेम्बो की याद में पवित्र स्थल घोषित किया गया था, जिसने सिक्किम में निंगमापा संप्रदाय का न केवल परिचय कराया बल्कि प्रचार भी किया था।

तुमलोंग- यह सिक्किम की पूर्ववर्ती राजधानी थी और इसके अवशेष फोडोंग एवं लब्रांग मठ के आसपास फैले हुए हैं। यहाँ का महल अच्छी तरह से संरक्षित नहीं है, वास्तव में वह एक खंडहर है। फिर भी, आसपास के स्तूप आपकी यात्रा को सार्थक बनाते हैं। समय बीतने के बावजूद, इसके स्तूप आज भी उसी आकर्षण के साथ खड़े हैं।

रालोंग या रालंग मठ

यह सिक्किम के दक्षिणी भाग में रवांगला से लगभग 6 किलोमीटर दूर स्थित है। जीप से रवांगला में मुख्य बाजार की सड़क को पार करने में लगभग 20 मिनट लगते हैं। इस सड़क का अनुसरण करके आप अंत में रालोंग मठ पहुँच जाएँगे।

रालोंग मठ के इतिहास के अनुसार, इसका निर्माण चौथे चोग्याल की तीर्थयात्रा के बाद किया गया था। उनके वापस लौटने पर, करमापा ने आशीर्वाद दिया। तिब्बत के त्सुर्फु मठ (करपामा का मुख्य स्थान) से फेंका अनाज रालंग की जमीन पर गिरा और उपासकों द्वारा देखा गया। इस तरह यहाँ रालोंग मठ बना। सन् 1975-81 की अवधि के बीच मठ के पुनर्निर्माण का कार्य किया गया। यह प्राचीन रालोंग मठ सिक्किम में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं पवित्र मठों में से एक है जो काग्यूपा संप्रदाय का अनुसरण करता है। नया मठ 'पालचेन चोलिंग मठ' वर्ष 1995 में अस्तित्व में आया। इसका निर्माण 12वें ग्यालत्सब रिंपोचे ने किया था, जिन्हें काग्यूपा संप्रदाय के चार रीजेण्ट में गिना जाता है। इसके हाल के निर्माण के बावजूद, मठ की संरचना सिद्ध करती है कि प्रामाणिक तिब्बती वास्तुकला को बनाए रखने के लिए इसकी सावधानीपूर्वक देखभाल की गई है। इसके अलावा, मठ की चित्रकला इसके मुख्य आकर्षणों में से एक है। मठ में लगभग 100 भिक्षुओं का आवास है।

त्यौहार

तिब्बती बौद्ध कैलेंडर के 7वें महीने के 15वें दिन पुराने रालोंग मठ में वार्षिक त्यौहार पांग ल्हाबसोल मनाया जाता है, उस समय कंचनजंगा पर्वत की पूजा की जाती है तथा 10वें महीने के 29वें दिन काग्यद, छाम नृत्य उत्सव सिक्किम के नव वर्ष, लोसूंग से दो दिन पहले मनाया जाता है। पवित्र "महाकाल नृत्य" प्रत्येक वर्ष नवम्बर के महीने में आयोजित किया जाता है।

रवांगला

यह शहर दक्षिणी सिक्किम में स्थित है जो नामची से 22 किलोमीटर (सिक्किम-पश्चिम बंगाल सीमा के पास) और सिलिगुड़ी से 120 किलोमीटर दूर है। यह 8000 फीट की ऊँचाई

पर स्थित है और हाल के दिनों में एक पर्यटक स्थल के रूप में उभरा है। इसकी अद्भुत सुन्दरता सभी के मन को लुभाती है। विशाल हिमालय की हिम पर्वतमालाओं की मोहक सुन्दरता के अलावा कंचनजंगा पर्वत, सिनिओल्चु पर्वत, पंदिम पर्वत, कबुर पर्वत भी आकर्षक हैं। यदि आप अप्रैल और मई के महीनों के दौरान यात्रा करते हैं तो इस स्थान के हजारों ज्ञात एवं अज्ञात फूलों के दृश्यों की बहार आपका स्वागत करेगी। इस खूबसूरत यात्रा में मठों को सम्मिलित करें और एक संतोषजनक यात्रा का आनंद लें।

यदि आप यहाँ रात को ठहरना चाहते हैं तो रवांगला में आवास के कुछ विकल्प उपलब्ध हैं। विकल्प के रूप में, आप नामची में भी ठहर सकते हैं। याद रखें, यहाँ किसी भी होटल में क्रेडिट कार्ड स्वीकार नहीं किए जाते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

क्यूजिंग मठ- यह मठ दक्षिणी सिक्किम में क्यूजिंग के पास स्थित है और इसे चोग्याल थुतोब नामग्याल के शासनकाल में बनाया गया था। यह रवांगला से 5 किलोमीटर दूर है।

डल्लिंग मठ- इस मठ का निर्माण वर्ष 1840 ई. में किया गया था। यह क्यूजिंग गाँव के पास स्थित है। डल्लिंग शब्द का अर्थ है- वज्रपात।

मंगब्रू गोम्पा- यह मठ पहाड़ों और चोटियों के मनोहर दृश्यों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है। यह क्यूजिंग मठ से 8 किलोमीटर दूर है।

यांगयांग मठ- यह मठ रवांगला से 10 किलोमीटर दूर पहाड़ी के तल पर स्थित है और इसे 1840 ई. में निर्मित किया गया था। मठ के नाम का अर्थ है- भाग्य की चोटी।

ताशीदिंग मठ- यह राज्य के सबसे प्रसिद्ध मठों में से एक है और रवांगला से लगभग 39 किलोमीटर दूर स्थित है। इस मठ में बुमचु वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। इस त्यौहार में पवित्र जल से भरे कलश को खोलने की विशेष परंपरा है। कलश के खुलने पर पानी का स्तर देखा जाता है जो आगामी वर्ष के प्रकार का सूचक है।

नामची मठ- यह मठ चोग्याल ग्यूरमेद नामग्याल के शासन के दौरान बनाया गया था तथा दक्षिणी सिक्किम का जिला मुख्यालय नामची में स्थित है।

एंचेय मठ

यह गंगटोक शहर से लगभग 3 किलोमीटर दूर एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि जिस स्थान पर मठ खड़ा है, उसे प्रसिद्ध तांत्रिक गुरु द्रुप्टोब कारपो का आशीर्वाद प्राप्त है। ऐसा कहा जाता है कि इस तांत्रिक ने दक्षिणी सिक्किम की मयनम पहाड़ी से इस स्थल के लिए उड़ान भरी थी और एक छोटा सा आश्रम बनाया था। बाद में, 19वीं शताब्दी के मध्य सिक्योंग तुल्कु के शासनकाल में मठ का निर्माण एक चीनी पगोडा के आकार में किया गया।

एंचेय मठ बौद्ध धर्म के निंगमापा संप्रदाय का प्रमुख मठ है जिसमें लगभग 90 भिक्षु हैं। मठ का भवन छोटा है और एक सादा दो मंजिला इमारत है जिसके चारो ओर ऊँचे देवदार के वृक्ष हैं। मठ का मुख्य आकर्षण द्वारमंडप पर संरक्षक देवता और धर्मचक्र के भित्तिचित्र हैं। इसके अतिरिक्त, शंख कवच भी देखे जा सकते हैं जो शुभ बौद्ध प्रतीक माने जाते हैं। इस मठ में बुद्ध, लोकी शरीया और गुरु पद्मसंभव तीन पूजनीय देवता हैं।

त्यौहार

तिब्बती कैलेंडर के 12वें महीने के 18वें और 19वें दिन मठ का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। यह त्यौहार भिक्षु नृत्य या छाम नृत्य के नाम से जाना जाता है। हालांकि, जो उतना व्यापक और भव्य नहीं है, जैसा कि मठ में प्रत्येक वर्ष प्रदर्शित संघे नृत्य है, फिर भी आनंददायक है। मठ पांग ल्हाबसोल का त्यौहार भी मनाता है जो भूटिया और लेपचा जनजाति के साथ आने का प्रतीक है।

गंगटोक

गंगटोक एंचेय मठ की यात्रा के लिए सबसे सुविधाजनक आधार है। यह पहाड़ी की चोटी पर स्थित है जिस कारण इसे गंगटोक नाम दिया गया है। गंगटोक का अर्थ है- पहाड़ की चोटी। गंगटोक शहर पर्यटकों को अधिकतर अपने बौद्ध अतीत के कारण अत्यधिक आकर्षित करता है और उन्हें विशाल कंचनजंगा पर्वत देखने का अवसर मिलता है। इसके

अलावा, इस शहर में बौद्ध थांकाचित्रों तथा अन्य वस्तुओं की खरीदारी के लिए दुकानें भी उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

नामग्याल तिब्बत अध्ययन संस्थान- यह संस्थान गंगटोक में स्थित है और विश्व में बौद्ध धर्म के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। दुनियाभर के विद्वान इस संस्थान का प्रायः भ्रमण करते हैं और विज्ञान, चिकित्सा और ज्योतिष पर प्राचीन तिब्बती ग्रन्थों और पांडुलिपियों के इसके विशाल भंडार की छानबीन करते हैं। इसके अलावा, केन्द्र में लेपचा और संस्कृत पांडुलिपि के साथ-साथ विभिन्न थांकाचित्रों का भंडार है। एक संग्रहालय संस्थान से जुड़ा हुआ है जो 200 से अधिक मूर्तियों, थांकाचित्रों और आनुष्ठानिक वस्तुओं को प्रदर्शित करता है। संस्थान सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक खुला रहता है।

दो द्रुल स्तूप- यह नामग्याल संस्थान से थोड़ी दूरी पर स्थित है जिसकी चोटी पर सोने की परत चढ़ी हुई है। निर्वाण मंदिर की ओर मीनार की परवर्ती तेरह सीढियाँ अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। शीर्ष पर सूर्य और चंद्रमा जैसे विपरीत प्रतीक हैं जो धरती और आकाश के एक साथ आने को दर्शाते हैं। स्तूप के चारों ओर कुल 108 प्रार्थना चक्र हैं जिन्हें उपासक स्तूप की परिक्रमा के दौरान घुमाते हैं। स्तूप में गुरु पद्मसंभव को समर्पित एक प्रार्थना हॉल है।

त्सुगलगखांग मंदिर- यह मंदिर शाही महल के पास स्थित है जो पर्यटकों के लिए बिना अनुमति के नहीं खुलता है। हालांकि, कभी-कभी उन लोगों को मंदिर में प्रवेश दे दिया जाता है जो बिना किसी कैमरे के होते हैं। पीले रंग की छत के अलावा मंदिर के प्रमुख आकर्षणों में मनोहर भित्तिचित्र, बौद्ध मूर्तियाँ, पांडुलिपियों का सराहनीय संग्रह आदि शामिल हैं। दिसम्बर के अंत में प्रदर्शित काग्यद, लामा नृत्य इस मंदिर का एक और अन्य आकर्षण है। इसके अलावा, यह नृत्य आम लोगों के देखने और मनोरंजन के लिए प्रदर्शित किया जाता है।

ताशीदिंग मठ

यह मठ चोटीदार पहाड़ी के ऊपर स्थित है जो घने जंगल और दो नदियों रातोंग और रंगित से घिरी हुई है। यह युकसोम से 19 किलोमीटर दूर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि जिस स्थान पर मठ खड़ा है उसे गुरु पद्मसंभव का आशीर्वाद प्राप्त है। किंवदंतियों के अनुसार,

उन्होंने हवा में एक तीर चलाया और घोषणा की कि जिस स्थान पर तीर गिरेगा वहाँ वे ध्यान साधना करेंगे। निस्संदेह, वह स्थान ताशीदिंग मठ था, जिसे 18वीं शताब्दी के आरंभ में तीसरे चोग्याल चैकदोर नामग्याल के शासन के दौरान नगदक सेमपा चेम्बो ने बनवाया था, जो उन तीन विद्वानों में से एक था जिन्होंने प्रथम लामा का अभिषेक किया था।

इसके निर्माण के बाद, मठ का महत्त्व इतना बढ़ गया कि संपूर्ण संसार के बौद्ध इसे अपना मक्का मानने लगे। बस इसकी एक झलक, किसी आत्मा को शुद्ध करने के लिए पर्याप्त थी। आज ताशीदिंग मठ, बौद्ध समुदाय के प्रमुख स्थलों में से एक है और उनसे असीम सम्मान प्राप्त करता है। सिक्किम के लोग इस स्थल पर परिनिर्वाण की लालसा रखते हैं।

प्रार्थना झंडों से युक्त एक चौड़े मार्ग का अनुगमन करते हुए, आप मठ परिसर तक पहुँच जाएंगे। मुख्य मंदिर पारंपरिक इमारतों, स्तूपों और प्रभावशाली पवित्र मणि पत्थरों से घिरा हुआ है। हाल ही में, मुख्य मंदिर का पुनरुद्धार किया गया है। मणि पत्थरों पर पवित्र बौद्ध मंत्र 'ऊँ मणि पद्मे हूँ' प्रसिद्ध शिल्पकार यानचोंग लोदिल द्वारा उत्कीर्ण किया गया है।

मठ परिसर के अंतिम छोर पर स्थित स्तूपों में सिक्किम के चोग्याल और लामाओं के अवशेष संरक्षित हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध 'थोंग-वा-रंग-दोल' है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- बुरी दृष्टि से बचाने वाला। ऐसा कहा जाता है कि इस स्तूप की एक झलक पाने से व्यक्ति की आत्मा शुद्ध हो जाती है। यह मठ निंगमापा संप्रदाय से संबंधित है।

त्यौहार

भूमचू त्यौहार ताशीदिंग मठ का सबसे महत्त्वपूर्ण उत्सव है और तिब्बती चंद्र कैलेंडर के पहले महीने के 14वें और 15वें दिन केवल इस मठ में मनाया जाता है। भूमचू समारोह दूर-दूर से भक्तों को आकर्षित करता है जो यहाँ पवित्र जल का आर्शीवाद प्राप्त करने के लिए आते हैं।

गेजिंग

यह शहर अपने आप में आकर्षक नहीं है और केवल इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह पश्चिमी सिक्किम का परिवहन केन्द्र है। हालांकि, बौद्ध पर्यटकों के लिए वहाँ एक छोटा सा मठ, हिन शान है जिसकी आप यात्रा कर सकते हैं।

युकसोम मठ

युकसोम सिक्किम के लोगों के लिए एक महत्त्वपूर्ण मठ है क्योंकि यहाँ राज्य के पहले चोग्याल (धार्मिक राजा), फुनत्सोग नामग्याल का 1641 ई. में राज्याभिषेक हुआ था। तीन लामा राज्याभिषेक समारोह को सम्पन्न करने के लिए नीचे आए जिनकी भविष्यवाणी रिम्पोचे द्वारा लगभग 900 वर्ष पूर्व की गई थी।

निंगमापा दुब्दी मठ, आश्रम की झोपड़ी के रूप में भी प्रसिद्ध है और पहला मठ था जो इस राज्याभिषेक समारोह के बाद अस्तित्व में आया था। इसका निर्माण वर्ष 1701 में निंगमापा संप्रदाय के अनुयायियों द्वारा किया गया था। शहर से, एक विशाल धार्मिक ध्वज देखा जा सकता है जो निंगमापा दुब्दी मठ के स्थान को चिन्हित करता है। दुब्दी शब्द का अर्थ है- आश्रम। इसलिए, यह मठ ध्यान के लिए एकांत की तलाश करने वाले लामाओं के लिए एकदम उत्तम स्थान है।

युकसोम

यह पेमायंगत्से से 42 किलोमीटर दूर एक छोटा सा सुंदर शहर है। युकसोम का अर्थ है- तीन लामाओं का मिलन स्थल। यह नाम उस घटना की याद दिलाता है जब युकसोम को सिक्किम की प्रथम राजधानी बनाया गया था। यहाँ स्थित मठ पूरे सिक्किम राज्य में सबसे प्राचीन है। युकसोम एक पवित्र बौद्ध स्थल होने के अलावा, साहसिक उत्साही लोगों के लिए भी आकर्षण है और इसका कारण ट्रैकिंग के अवसर होना है। युकसोम उन लोगों के लिए आरामदायक निवास का विकल्प भी प्रदान करता है जो यहाँ कुछ दिनों तक रहना चाहते हैं और आसपास के क्षेत्रों को जानना चाहते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

नोरबूगंग स्तूप- यह सफेद गुबंद के आकार जैसा स्तूप है और इसका निर्माण पूरे सिक्किम से एकत्रित मिट्टी और पत्थरों से किया गया था। यहाँ लहात्सुन चेंपो का दाह संस्कार किया गया था। यहाँ से एक मार्ग का अनुगमन करते हुए आप उस स्थान पर पहुँचेंगे जहाँ सिक्किम के प्रथम चोग्याल राजा का सिंहासन और तीन लामाओं में से एक के पदचिह्न चट्टान पर अंकित हैं जो राजा के सिंहासन का अग्रभाग है।

मेल्ली मठ- मेल्ली शब्द का अर्थ है- लेपचा गाँव। यह युकसोम शहर के पास स्थित है।

सिनोन मठ- मठ के नाम का अर्थ है- तीव्र भय का दमन करने वाला। इस मठ को वर्ष 1716 में बनाया गया था तथा यह ताशीदिंग मठ से लगभग 10 किलोमीटर दूर स्थित है।

हिमाचल प्रदेश में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ

लंबे समय से हिमाचल प्रदेश बौद्ध धर्म के प्रभाव में रहा है। विगत युग में, बुद्ध के अनेक अनुयायी शांति की तलाश में इस राज्य में आए और यह एक ऐसा स्थान था जहाँ वे ध्यान साधना कर सकते थे। सन् 1949 में तिब्बत पर चीनी आक्रमण के बाद, तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा हिमाचल प्रदेश के मैकलोडगंज शहर में बस गए। इसलिए हिमाचल प्रदेश की यात्रा भारत में आपके बौद्ध पर्यटन के दौरान सर्वोपरि है।

अपनी बौद्ध यात्रा के दौरान जब आप राज्य की छानबीन करते हैं, तो आपको मठों पर बहुत अधिक ध्यान और समय देना होगा। इनमें ताबो, काई, नामग्याल, रिवालसर, धनकर, गुरु घंटाल, शशुर, कर्दांग, तामुल, थांग युग, कुंगरी, नाको, ताशिगंज, लिप्पा आदि प्रमुख मठ हैं। हिमाचल प्रदेश के इन मठों का न केवल बौद्ध समुदाय बल्कि अन्य धर्म के लोग भी सम्मान करते हैं। इसके अलावा, इन मठों में से कुछ को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है। मूलतः अनावृत्त पर्वत के ऊपर निर्मित मठ ऐसे प्रतीत होते हैं मानो वे हिमालय क्षेत्र का हिस्सा हों। मठों के अंदर की बौद्ध कला एवं कलाकृतियों का खजाना आपको विस्मय में डाल देगा जैसे- मनोहर भित्तिचित्र तथा उत्कृष्ट थांकाचित्र। उपर्युक्त सभी मठों से संबंधित जानकारी इस खंड में दी गई है और जितनी जल्दी हो सके अपनी हिमाचल यात्रा की योजना बनाएं।

नामग्याल मठ एवं संस्थान

नामग्याल मठ एक तिब्बती संस्थान है जो दलाई लामा और उनकी गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। पहली बार मठ की स्थापना 16वीं शताब्दी में तीसरे दलाई लामा सोनम ग्यात्सो द्वारा की गई थी और दलाई लामा के रूप में पारंपरिक अनुष्ठानों को प्रभावी ढंग से पूर्ण करने के उद्देश्य से की गई थी। उस समय मठ तिब्बत के पोताला महल में स्थित था और जहाँ लगभग 175 भिक्षु पारंपरिक अनुष्ठानों को प्रदर्शित करते थे।

किन्तु सन् 1959 के चीनी आक्रमण ने 14वें दलाई लामा को अपने हजारों तिब्बती अनुयायियों (उनमें नामग्याल मठ के 55 भिक्षु शामिल थे) के साथ भारत भागने के लिए मजबूर कर दिया। यहाँ उन्हें हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला के ऊपरी भाग मैकलोडगंज में भारत सरकार द्वारा शरण दी गई थी। मैकलोडगंज अब नामग्याल मठ का केन्द्र बन गया है जो दलाई लामा के निजी आवास के पास स्थित है।

इस मठ का एक अनूठा पहलू इसके अनुष्ठानों की विविधता है। यह तिब्बती बौद्ध धर्म के सभी प्रमुख संप्रदायों की प्रार्थना और अनुष्ठानों को प्रदर्शित करता है। यह भिक्षुओं के लिए शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। इसमें किसी भी भिक्षु को प्रवेश परीक्षा के विभिन्न स्तर पास करने के बाद ही प्रवेश दिया जाता है। इसके बाद, उन्हें पारंपरिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके अलावा, चूंकि भिक्षु अक्सर दलाई लामा के साथ विदेशी स्थानों पर जाते हैं, इसलिए उन्हें सूत्र और तंत्र का महत्त्व भी सिखाया जाता है।

वर्ष 1992 में 14वें दलाई लामा ने अपनी इथाका, न्यूयॉर्क की यात्रा के लिए छह भिक्षुओं को चुना और वहाँ एक मठ की स्थापना की थी। इस मठ ने उन्हें उत्तरी अमेरिका में अपने विश्वासों और शिक्षाओं को अधिक आसानी से प्रचारित करने में सहायता की है।

मैकलोडगंज

यह हिमाचल प्रदेश के ऊपरी क्षेत्र धर्मशाला में स्थित है। यह शहर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्थापित किया गया था और इसका नाम तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर सर इयान मैक लोड के नाम पर रखा गया था। मैकलोडगंज का मुख्य आकर्षण तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थान है। अंग्रेजों के प्रभुत्व वाले शहर से अब यह छोटे ल्हासा में बदल गया है। आप में से जो भी इस सुंदर शहर में कुछ दिन ठहरना चाहते हैं, उनके लिए बहुत सारे होटल उपलब्ध हैं और वे अलग-अलग बजट के हैं। इसके अलावा, बाहर खाने के विकल्प भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

त्सुगलगखांग परिसर- इस परिसर में तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निजी आवास, कार्यालय और मंदिर है और यह दो मंजिला इमारत है जिसे क्षेत्र की प्राकृतिक वनस्पति को कोई हानि पहुँचाये बिना बनाया गया है। कमल के आसन से ऊपर उठती हुई

बुद्ध की 9 फीट ऊँची भव्य प्रतिमा, इसकी प्रमुख प्रतिमा है। इसके अलावा, अवलोकितेश्वर और गुरु पद्मसंभव की 12 फीट ऊँची मनोहर प्रतिमा भी देखी जा सकती है। अवलोकितेश्वर की प्रतिमा को छोड़कर अधिकांश प्रतिमाएँ निर्वासित कारीगरों द्वारा बनाई गई थीं। यह प्रतिमा 7वीं शताब्दी की है तथा इसे राजा सोंगत्सेन ने ल्हासा के मंदिर में स्थापित किया था।इस परिसर में एक धर्मोपदेश का आसन है जहाँ से दलाई लामा अपने उपदेश देते हैं।

नामग्याल स्तूप- यह स्तूप बाजार में स्थित है और तिब्बती सैनिकों को समर्पित है जिन्होंने चीनियों से अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना जीवन त्याग दिया था। इसे मिश्रित इंडो-तिब्बत शैली में बनाया गया है और स्तूप के चारों ओर कई प्रार्थना चक्र हैं।

तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान- अपने हजारों तिब्बती अनुयायियों के साथ तिब्बत से भाग कर भारत आने के बाद दलाई लामा की दूरदर्शिता ने यह सुनिश्चित किया कि अद्‌भुत तिब्बती प्रदर्शन कला बाहर समाप्त नहीं होनी चाहिए। तब शरणार्थियों के बीच केवल एक ही पुराना बढ़ई था जो जानता था कि ओपेरा के लिए उपकरण कैसे बनाया जाता है। हालांकि, एक दशक के अंदर तिब्बती प्रदर्शन कला संस्थान न केवल तिब्बतियों बल्कि पर्यटकों के लिए भी दर्शनीय स्थल बन गया है।

नोरबुलिंगका संस्थान- यह संस्थान मैकलोडगंज से लगभग 14 किलोमीटर दूर है और इसका यह नाम ल्हासा में दलाई लामा के ग्रीष्मकालीन निवास के नाम के कारण रखा गया है। संस्थान तिब्बत की समृद्ध कला और संस्कृति को संरक्षित रखता है जो तिब्बत में ही अपनी पहचान खो रही है। थांका चित्रकला विभाग न केवल इस अद्‌भुत कला का प्रशिक्षण प्रदान करता है बल्कि संग्रहालय में थांकाचित्रों की बिक्री भी करता है। इसके अलावा, शिल्प विभाग और लोसल डॉल संग्रहालय भी देखने लायक हैं।

काई मठ

यह समुद्र तल से 13500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और लाहौल एवं स्पीति जिले का सबसे प्राचीन और बड़ा मठ है। मठ के इतिहास को खोजने पर आपको पता चलेगा कि यह 1000 वर्ष पुराना है। इतिहास में मठ को नष्ट करने के कई प्रयास किए गए जैसे 17वीं शताब्दी में मंगोलों ने मठ पर हमला किया। 19वीं शताब्दी में भी शत्रुओं द्वारा कई आक्रमण किए गए।

जब भी मठ पर आक्रमण हुआ तो इसे क्षति का सामना करना पड़ा जिससे हर बार छोटी-मोटी मरम्मत की आवश्यकता हुई। इस क्रमिक विनाश और बाद में मरम्मत के कार्य के कारण, मठ ने अपनी बनावट और वास्तुकला का समन्वय खो दिया, जिसके लिए वह प्रसिद्ध था। यहाँ तक कि आज मठ की संरचना एक क़िले की तरह दिखाई देती है।

मठ का महत्त्व इस बात में निहित है कि यह राज्य के उन कुछ मठों में से एक है जो अपने अस्तित्व के 1000 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं। वर्ष 2000 में, जब मठ ने 1000 वर्ष पूरे किए तो भव्य कालचक्र समारोह का आयोजन किया गया। बौद्धों के लिए, कालचक्र से तात्पर्य 1000 वर्षों से है। तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा स्वयं मांगलिक समारोह की शोभा बढ़ाने के लिए उपस्थित थे। यह आयोजन पूजा और धार्मिक सभा का प्रतीक था।

मठ का महत्त्व इसमें भी निहित है कि यह लामाओं के लिए एक प्रतिष्ठित धार्मिक प्रशिक्षण केन्द्र है। अंतिम पर कम नहीं, यह स्पीति की पश्चिमी आबादी के लिए विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि यह उनके धार्मिक क्रियाकलाप को प्रदर्शित करता है।

मठ परिसर के आकर्षण

मठ परिसर के अंदर छोटे कमरे, संकीर्ण गलियारे, अंधकारपूर्ण मार्ग, कठिन सीढियाँ और छोटे दरवाजे हैं जो प्रार्थना कक्ष तक मार्गदर्शन करते हैं। ये प्रार्थना कक्ष भी वास्तुकला की किसी एक शैली का अनुकरण नहीं करते हैं। हालांकि, इन सभी कमियों के बावजूद, मठ की अपनी कुछ विशेषताएं भी हैं। उदाहरण के लिए, दीवारों के चित्र और भित्तिचित्र तुरंत आपका ध्यान आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त, मठ के अन्दर शाक्यमुनि की ध्यान मुद्रा वाली प्रतिमा है।

मठ परिसर में थांकाचित्रों, अमूल्य पांडुलिपियों, प्लास्टर प्रतिमाओं, विशेष सुषिर वाद्यों और उपर्युक्त सभी वस्तुओं का एक उत्कृष्ट संग्रह है। ये वस्तुएँ निरंतर आपको उस अतीत की याद दिलाते हैं जब मठ पर अक्सर आक्रमण होते थे। आज भी ग्रीष्मकाल में छाम नृत्य के प्रदर्शन के दौरान सुषिर वाद्य का उपयोग किया जाता है।

त्यौहार

काई मठ में जून-जुलाई के महीने में छाम नृत्य का त्यौहार मनाया जाता है। उसके बाद एक जुलूस निकाला जाता है जो मठ के अनुष्ठान को नीचे के क्षेत्र तक पहुँचाता है। यहाँ मक्खन से बनी राक्षस की बड़ी प्रतिमा को जलाया जाता है। बड़ी संख्या में उपासक केवल त्यौहार को देखने ही नहीं आते हैं बल्कि स्वयं जुलूस मार्ग पर लेट भी जाते हैं ताकि लामा उनके ऊपर से गुजरें।

स्पीति

स्पीति घाटी, हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले का उप-मंडल मुख्यालय है तथा पूर्वी एवं पश्चिमी घाटी में विभाजित है। घाटी में कई गाँव और क्षेत्र ऐसे हैं जिसके निवासी केवल जौ, कुट्टू, मटर एवं सब्जियां उगाते हैं। यहाँ के अधिकतर लोग बौद्ध हैं। इसका मुख्यालय काज़ा में स्थित है जहाँ से काई मठ केवल 12 किलोमीटर दूर है। काज़ा शहर दुकानों, होटलों एवं आश्रय स्थलों की मेजबानी करता है। इसलिए, वे सभी पर्यटक जो यहाँ ठहरने के इच्छुक हैं, उन्हें किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

धनकर मठ- यदि थांग युग मठ स्पीति घाटी की पश्चिमी आबादी के लिए कार्य करता है तो धनकर मठ स्पीति घाटी की पूर्वी आबादी के लिए कार्य करता है। यहाँ वैरोचन बुद्ध की प्रतिमा का अत्यधिक महत्त्व है। इसके अतिरिक्त, मठ में बौद्ध स्मृति चिह्न भी हैं जैसे-चित्र और मूर्तियाँ।

ताबो मठ- यह एक और अन्य मठ है जिसे 10वीं शताब्दी में बनाया गया था और अपने अस्तित्व के 1000 वर्ष पूर्ण कर चुका है। इसका महत्त्व इस तथ्य से और अधिक बढ़ जाता है कि प्रसिद्धि में यह तिब्बत के थोलिंग मठ के बाद दूसरे स्थान पर है। काज़ा शहर से लगभग 50 किलोमीटर दूर है और 60 लामाओं का घर है। मठ के भित्तिचित्र अत्यधिक आकर्षक हैं और ये महाराष्ट की अजंता की गुफाओं के चित्रों से काफी समानता रखते हैं।

धनकर मठ

धनकर का अर्थ है- पहाड़ों पर स्थित वह स्थान जो आंगतुकों के लिए दुर्गम है। इस स्थान पर महान अनुवादक रिचेंन जंगपो से जुड़ा एक मठ है। यह मठ काज़ा शहर से लगभग 24 किलोमीटर दूर है और 12774 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। 16वीं सदी पुराने क़िलेनुमा मठ ने तत्कालीन युग में एक जेल के रूप में भी कार्य किया था। नया मठ, प्राचीन मठ के नीचे छोटे से गाँव शिचलिंग के पास स्थित है। पुराने मठ परिसर में एक साथ कई बहु-मंजिला इमारतें हैं। यह पुराना परिसर ल्हा-ओ-पा गोंपा के नाम से भी प्रसिद्ध है जिसमें कंजूर, लखांग और दुखांग सहित पाँच पृथक् भवन शामिल हैं। वज्रधारा की फूलों और गुलबंदों से सुसज्जित एक विशाल आदमकद वाली चाँदी की प्रतिमा काँच की वेदी में रखी है। इस मठ के लखांग भवन में एक बार अवश्य जाना चाहिए, जो एक छोटा सा मंदिर है और मठ की चोटी पर स्थित है। इस मंदिर की दीवार शाक्यमुनि, त्सोंगखापा और लामा चोद्रांग के सुन्दर भित्तिचित्रों से सुशोभित हैं।

यह मठ गेलुक्पा संप्रदाय से संबंधित है और इसमें लगभग 150 लामाओं का निवास है। मठ का मुख्य आकर्षण वैरोचन बुद्ध की एक चतुर्मुखी प्रतिमा है। इसके अलावा, मठ में भोटी भाषा के बौद्ध धर्मग्रन्थ, चिकित्सक बुद्ध और संरक्षक देवताओं के भित्तिचित्र हैं।

स्पीति

यह घाटी 100 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैली हुई है और इसकी 10000 से भी कम आबादी आपको आश्चर्य-चकित कर सकती है। इसका कारण यह है कि हिमालय के क्षेत्रों को सामान्यतः हरा माना जाता है किन्तु इसके विपरीत स्पीति घाटी एक बंजर क्षेत्र है। बंजरता के बावजूद, स्पीति घाटी की सुंदरता प्रशंसनीय है। जिला उप-मंडल मुख्यालय काज़ा में स्थित है जिसमें आवास के अच्छे विकल्प उपलब्ध हैं। हालांकि, भोजन मूलतः उतर भारतीय और तिब्बती व्यंजन तक ही सीमित है।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

ताबो मठ- यह काज़ा शहर से 12 किलोमीटर दूर ताबो गाँव में स्थित है, जो घाटी में सबसे पुराना एवं सबसे बड़ा मठ है। यहाँ शाक्यमुनि और बोधिसत्त्वों की सुन्दर मूर्तियाँ और चित्र हैं। मठ ने वर्ष 2000 में अपने हजार वर्ष पूर्ण किए और इस स्मरणोत्सव को मनाने के लिए एक भव्य कालचक्र समारोह का आयोजन किया गया।

कर्शा मठ- कर्शा जांस्कर घाटी में सबसे बड़ा और सबसे धनाढ्य मठ है और पद्म शहर से पैदल भी पहुँचा जा सकता है। इस मठ में गेलुक्पा संप्रदाय के लगभग 150 भिक्षु रहते हैं और प्रत्येक वर्ष जुलाई-अगस्त के महीने में तीन दिनों तक गुस्टर त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। मठ परिसर में लब्रांग मंदिर घूमने लायक है जिसकी दीवार के भित्तिचित्र तीन शताब्दी पुराने हैं।

रिवालसर मठ

रिवालसर झील, शहर से लगभग 20 किलोमीटर दूर मंडी जिले में स्थित है। यह स्थान अपने आसपास के सघन जंगल और झील के कारण एक नई ताजगी प्रदान करता है। इसके अलावा, यह भारत के तीन धार्मिक समुदायों-हिन्दू, सिख और बौद्ध के लिए एक तीर्थस्थल है।

गुरु पद्म्संभव से जुड़ा होने के कारण, यह बौद्धों के लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे 8वीं एवं 9वीं शताब्दी में उड्डियन के एक योगी थे और तांत्रिक साधना में कुशल थे। किंवदंतियों में कहा गया है कि वे ध्यान में स्थानीय राजा की बेटी को प्रशिक्षित करना चाहते थे किन्तु राजा इतना अधिक क्रोधित था कि उसने पद्मसंभव को आग की लपटों में फेंक दिया था। हालांकि, पद्मसंभव इतने शक्तिशाली थे कि उन्होंने स्वयं को पानी से घिरे एक कमल के फूल के रूप में प्रकट किया। इस युक्ति ने राजा को प्रभावित किया और तब उसने अपनी बेटी को उनकी शिष्या बनाने की अनुमति प्रदान कर दी।

बाद में, गुरु पद्मसंभव ने बाघ पर बैठकर तिब्बत के लिए उड़ान भरी। वहाँ, उन्होंने स्थानीय देवताओं को वश में किया और उन्हें बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में परिवर्तित कर दिया। इसके बाद, उन्होंने तिब्बत का पहला मठ समये में स्थापित किया। बौद्ध धर्म के प्रचार

के लिए उन्होंने जिस स्थान से तिब्बत के लिए प्रस्थान किया था, वह निस्संदेह रिलावसर था। इसलिए, इस स्थान को तीर्थस्थल का दर्जा प्राप्त है। यह माना जाता है कि झील के आसपास की गुफाओं में गुरु पद्मसंभव के पदचिह्न अंकित हैं। रिवालसर निंगमापा संप्रदाय के कई मठों का घर है, जिनमें ड्रिकुंग काग्यू मठ, त्सो-पेमा ओग्येन हेरू काई निंगमापा मठ और जिगर द्रुक्पा काग्यू मठ शामिल हैं। लाल, पीले और सफेद रंग की गोम्पाओं में सुनहरी झालरों सहित पगोडा (मंदिर) हैं।

मठों के अन्य आकर्षणों में भारत-चीनी शैली के मिश्रित भित्तिचित्र और गुरु पद्मसंभव की एक विशाल प्लास्टर की प्रतिमा शामिल हैं। त्सो-पेमा ओगेन हेरू-काई निंगमापा मठ में मनोहर भित्तिचित्रों सहित एक संग्रहालय भी है। ऐसा माना जाता है कि झील में तैरने वाले ईख के टीलों में गुरु पद्मसंभव की आत्मा का निवास है। प्रायः ऐसा कहा जाता है कि प्रार्थना और मंद हवा की गति से ईख के टीले तैरना आरंभ कर देते हैं।

रिवालसर

यह गाँव अत्यधिक शांत क्षेत्र है और आध्यात्मिक आत्म् को जगाने के लिए एक आदर्श स्थान है। झील के पास स्थित गाँव में सौ से भी कम घर हैं जिनकी प्रस्तर की छत नीची हैं। रिवालसर में आधारभूत आवास और भोजन के विकल्प उपलब्ध हैं। रिवालसर में हिमाचल प्रदेश पर्यटन विभाग निगम की सराय और ड्रिकुंग काग्यू गोम्पा का शांति स्मारक है जिन्हें आप ठहरने के लिए चुन सकते हैं। विकल्प के रूप में, आप मंडी में भी ठहरने का निश्चय कर सकते हैं।

गुरु घंटाल मठ

यह लाहौल और स्पीति जिले में टुंडे गाँव के पास एक पहाड़ी पर स्थित है। यह लगभग 800 वर्ष पुराना है। मठ को त्रिलोकीनाथ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इसे गुरु पद्मसंभव ने स्थापित किया था। गाँव और पहाड़ी चंद्रा और भागा नदी के संगम स्थल पर स्थित हैं जो पिन घाटी में गोंडला गाँव के पास है।

मठ द्रुक्पा संप्रदाय से संबंधित है और लकड़ी से बना है। मठ में अवलोकितेश्वर की प्रतिमा प्रमुख आकर्षण है जिसका सफेद संगमरमर का शीर्ष भाग को स्वयं गुरु पद्मसंभव ने स्थापित किया था। हालांकि, अब इसे सुरक्षित निगरानी में रखा हुआ है ताकि यह चोरी न

हो। इसके अतिरिक्त, इस मठ में गुरु पद्म्संभव, बृजेश्वरी देवी और कई अन्य लामाओं की मूर्तियाँ हैं।

दीवारों पर संगमरमर पत्थर लगा हुआ है, किन्तु उचित संरक्षण के अभाव में इसके रंग धुल गए हैं। इस स्राव के कारण ही, मठ की बहुमूल्य वस्तुओं को तुपचिलिंग मठ में स्थानांतरित किया गया है। अजीब बात है, किन्तु यह एक तथ्य है कि मठ में काली देवी की एक प्रतिमा है जो इसके अंतिम कक्ष में स्थापित है। यह इस विश्वास को मजबूत करता है कि बौद्ध धार्मिक स्थल में परिवर्तित होने से पहले यह मठ एक मंदिर था।

त्यौहार

मठ प्रायः जून के मध्य में 15वें चंद्र दिवस पर एक त्यौहार मनाता है, जिसे घंटाल कहते हैं। इस त्यौहार में अतिथि लामा और ठाकुर दिन भर चलने वाली दावत का आनंद लेते हैं। हालांकि, अब त्यौहार का आयोजन बंद हो चुका है।

लाहौल

लाहौल घाटी लगभग 13835 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है तथा विशाल पर्वतों और प्रभावशाली ग्लेशियरों के लिए प्रसिद्ध है। केलांग में अपने जिला मुख्यालय सहित घाटी उन सभी लोगों के लिए एक अद्भुत स्थान है जो बौद्ध मठों की यात्रा करना चाहते हैं। इस क्षेत्र के मठों में भित्तिचित्रों, थांकाचित्रों, लकड़ी पर नक्काशी और गुरु पद्मसंभव की स्वर्णिम प्रतिमाओं के समृद्ध भंडार हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

मारिची वज्रवाराही- उदयपुर में एक स्थान है जहाँ चंद्रभागा नदी और मियार नदी मिलती हैं, वहाँ मारिची वज्रवाराही के नाम से एक प्राचीन मंदिर है। मंदिर के विषय में कहा जाता है कि घाटी में भारतीय बौद्ध धर्म का सबसे प्राचीन अवशेष है और महिषासुरमर्दनी की पीतल की मूर्ति का घर है। यह मंदिर आज भी बौद्ध समुदाय के प्रमुख धार्मिक केन्द्रों में से एक है।

मार्ग

भुंतर हवाई अड्डा लाहौल पहुँचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा है जबकि शिमला और पठानकोट लाहौल के निकटतम रेलवे जंक्शन हैं। गर्मियों में केलांग मनाली से राज्य परिवहन तथा निजी बस सेवा द्वारा जुड़ा होता है। मनाली से केलांग पहुँचने के लिए किराए पर भी टैक्सी ली जा सकती है।

कर्दांग मठ

यह कर्दांग गाँव के ऊपर भागा नदी के तट पर स्थित है जिसे 12वीं शताब्दी में स्थापित किया गया था। मठ रंगचा पर्वत श्रेणी के अनावृत पर्वतों की मनोहर पृष्ठभूमि पर स्थित होने के कारण सुनिश्चित है कि यहाँ सर्दियों में अत्यधिक धूप आती है।

कर्दांग मठ एक खंडहर था जब तक कि वर्ष 1912 में लामा नोरबू ने इसके जीर्णोद्धार का निश्चय नहीं किया था। मठ की वास्तुकला उस शैली को दर्शाती है जो सामान्यतः लाहौल और स्पीति से संबंध रखती है। मठ के अंदर सुन्दर भित्तिचित्र हैं। इसके अलावा, मठ में कुछ उत्कृष्ट थांकाचित्रों, प्राचीन औजारों और संगीत वाद्ययंत्रों जैसे- वीणा, ढोल, तुरही आदि का भी संग्रह है।

मठ में एक पुस्तकालय और एक बड़ा ढोल भी देखा जा सकता है। पुस्तकालय में भोटी भाषा में बौद्ध धर्मग्रन्थों के कांग्यूर एवं तेंग्यूर खंडों का भंडार है जबकि ढोल के ऊपर कागज की पट्टियों पर पवित्र मंत्र 'ऊँ मणि पद्मे हूँ' एक लाख बार लिखा हुआ है।

मठ लाल टोपी संप्रदाय से संबंधित है और नोरबू इसके प्रमुख लामा हैं। भिक्षुओं और भिक्षुणियों को समान अधिकार दिए गए हैं और लामाओं को विवाह करने की अनुमति है। लामा ग्रीष्मकाल में अपने परिवार के साथ रहते हैं और सर्दियों में मठ लौटकर अपने सांसारिक एवं धार्मिक जीवन को संतुलित रखते हैं। अपने परिवार के साथ रहते हुए, लामा खेत में काम करते हैं। हालांकि, एक बार जब वे मठ में लौट आते हैं तो ध्यान साधना उनका मुख्य केन्द्र बिन्दु बन जाती है। चाँदी का स्तूप मठ के संस्थापक लामा नोरबू को समर्पित है जिनका सन् 1952 में परिनिर्वाण हो गया था। मठ के स्तूप में लामा नोरबू के शारीरिक अवशेष संरक्षित हैं।

लाहौल

हिमाचल प्रदेश का लाहौल और स्पीति जिला 12210 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है जो पहले दो अलग जिले थे। लाहौल की राजधानी केलांग थी और स्पीति की राजधानी धनकर थी। आज वही केलांग लाहौल उप-मंडल की राजधानी है। इसके लोग एक ऐसे धर्म का पालन करते हैं जो हिन्दू और तिब्बती बौद्ध धर्म का मिश्रित रूप है। इसलिए यह मंदिरों और मठों दोनों का संगम स्थल है। हालांकि, केलांग मुख्यालय अपने आप में कोई आकर्षक स्थल नहीं है, फिर भी पर्यटकों द्वारा अक्सर इस शांत क्षेत्र की यात्राएँ की जाती हैं। इस छोटे से शहर में आवास और भोजन की सुविधाएं उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

शशुर मठ- यह लाल टोपी संप्रदाय से संबंधित है और इसमें 84 सिद्धों के इतिहास को दर्शाने वाला सुन्दर भित्तिचित्र है। मठ जून-जुलाई के महीने में अपना वार्षिक त्यौहार मनाता है जिसमें लामा शैतान नृत्य प्रदर्शित करते हैं।

शशुर मठ

यह लाहौल घाटी में केलांग से केवल 3 किलोमीटर दूर है और हिमाचल प्रदेश का दूसरा महत्त्वपूर्ण मठ है। इसे 16वीं शताब्दी में लद्दाख के लामा देवा त्यत्सो ने स्थापित किया था जो भूटान के राजा नवांग नामग्याल का दूत था। तत्पश्चात, लामा देवा ग्यात्सो द्वारा पुनरुद्धार किया गया। मठ गेलुक्पा संप्रदाय से संबंधित है और भूटान के शेर गुफा मंदिर से आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हुआ है। जैसे ही आप कठिन मार्ग से होकर मठ के मार्ग पर पहुँचते हैं तो मणि पत्थरों की सुन्दर दीवार और स्तूप आपका ध्यान आकर्षित करेंगे। इन पत्थरों पर पवित्र बौद्ध मंत्र 'ॐ मणि पद्मे हूँ' उत्कीर्ण है।

तीन मंजिला मठ घाटी में 600 मीटर ऊँची पहाड़ी पर एक संकीर्ण स्थान पर बनाया गया है। इस संकीर्णता के कारण मठ लंबवत निर्मित किया गया है। हालांकि, इसके बावजूद मठ प्राचीन मंडल अवधारणा के अनुरूप निर्मित है। मठ के अंदर के आकर्षणों में एक 15 मीटर का थांकाचित्र, 84 सिद्धों का सुन्दर भित्तिचित्र और नामग्याल की एक मूर्ति शामिल

हैं। वास्तव में, यहाँ मिलने वाला थांकाचित्र पूरे लाहौल क्षेत्र में प्रसिद्ध है और सिर्फ इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

त्यौहार

शशुर मठ जून-जुलाई के महीने में अपना वार्षिक उत्सव मनाता है। शैतान नृत्य पारंपरिक कपड़े पहने और मुखौटा लगाए भिक्षुओं द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इस नृत्य का आनंद लेने के लिए बड़ी संख्या में स्थानीय लोग तथा पर्यटक आते हैं।

लाहौल

हिमाचल प्रदेश में स्पीति और किन्नौर के साथ लाहौल घाटी में बौद्ध बहुसंख्यक उपस्थिति में हैं। लाहौल और स्पीति मिलकर हिमाचल प्रदेश के एक जिले का निर्माण करते हैं जबकि किन्नौर एक अलग जिला है। एक जिला होने के बावजूद, लाहौल और स्पीति को कुंजम-ला मार्ग अलग करता है। केलांग केवल लाहौल और स्पीति का जिला प्रशासनिक मुख्यालय ही नहीं है बल्कि लाहौल उप-मंडल का मुख्यालय भी है। केलांग अपने आप में आकर्षक स्थान नहीं है लेकिन निश्चित रूप से कुछ दिनों तक शांति से रहने और आसपास के मठों का पता लगाने के लिए एक अच्छा स्थान है। यहाँ रहने और खाने के प्राथमिक विकल्प उपलब्ध हैं। होटलों, विश्राम गृहों और पर्यटक बंगलों के रूप में आवास उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

तायुल मठ- इसमें गुरु पद्मसंभव की 5 मीटर ऊँची मूर्ति के साथ-साथ कांग्यूर ग्रन्थों के 101 खंड संरक्षित हैं।

गेमुर मठ- यह मठ केलांग से लगभग 18 किलोमीटर दूर है और इसका शैतान नृत्य बहुत प्रसिद्ध है।

कर्दांग मठ- 12वीं शताब्दी पूर्व, कर्दांग मठ लाल टोपी संप्रदाय से संबंधित था। मनोहर भित्तिचित्रों के अलावा, मठ में एक बड़ा ढोल है जिसके ऊपर कागज की पट्टियों पर 'ऊँ मणि पद्मे हूँ' मंत्र एक लाख बार लिखा हुआ है। मठ परिसर के पुस्तकालय में भोटी भाषा में बौद्ध धर्मग्रन्थों के कांग्यूर और तेंग्यूर खंडों का संग्रह भी उपलब्ध है।

तायुल मठ

यह केलांग से 6 किलोमीटर दूर है और स्टिंगरी गाँव के पास लाहौल क्षेत्र के सबसे पुराने मठों में से एक है। तिब्बती भाषा में तायुल का अर्थ है- चुनी हुई जगह। मठ के निर्माण और नामकरण के साथ एक रोचक कथा जुड़ी हुई है। यह कहा जाता है कि 17वीं शताब्दी में तिब्बत के ख़ाम क्षेत्र के लामा सेरजंग रिचेन ने पवित्र चोटी ड्रिलबुरी की परिक्रमा करते हुए घाटी के सामने क्योर और ताशीगंग गाँवों के ऊपर जुनिपर वन का एक छोटा हरित क्षेत्र देखा। उन्होंने अपने साथियों की तरफ इशारा किया और कहा कि मठ के निर्माण के लिए यह स्थान पवित्र है। इस प्रकार, मठ और उसका नाम तायुल अस्तित्व में आया।

मठ का विस्तार तथा पुनरुद्धार एक शताब्दी बाद तुल्कु ताशी तानफेल नामक एक लद्दाखी द्वारा किया गया जो तगना मठ से संबंधित था। उसने भित्तिचित्रों और प्लास्टर चित्रों से मठ की दीवारों को अलंकृत किया और पुस्तकालय में तिब्बत के कांग्यूर के नर्थांग संस्करण को भी जोड़ा।

इसके अलावा, मठ के भवन में बुद्ध के जीवन का चित्रण करने वाले थांकाचित्र और गुरु पद्मसंभव की 5 मीटर ऊँची प्रतिमा के साथ-साथ उनके सिंहमुखी और वज्रवाही रूप भी हैं। हालांकि, मठ का प्रमुख आकर्षण एक प्रार्थना चक्र था और आज भी है जिसके ऊपर 'ऊँ मणि पद्मे हूँ' मंत्र एक लाख बार लिखा हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि प्रार्थना चक्र को घुमाने से ज्ञानशील लोगों को भगवान की कृपा से सौभाग्य प्राप्त होता है। इसके अलावा, मणि चक्र स्वयं घूमने के रूप में भी प्रसिद्ध है। इसका अर्थ है कि शुभ और विशेष अवसर पर चक्र स्वयं घूमता है। अंतिम बार, यह मणि चक्र सन् 1986 में स्वयं घूमा था।

लाहौल

यह हिमाचल प्रदेश के उत्तर-पूर्वी जिले लाहौल-स्पीति का एक क्षेत्र है और इसको चार भागों में बांटा जा सकता है- चंद्र नदी की घाटी, भागा नदी की घाटी, चन्द्रभागा की घाटी और सिंधु नदी का जलग्रहण क्षेत्र। लाहौल और स्पीति का जिला मुख्यालय केलांग, भागा घाटी में स्थित है। केलांग 3350 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और लाहौल में एक

मात्र स्थान है जहाँ नियमित बाजार लगता है। हिमाचल प्रदेश पर्यटन विभाग निगम के होटल, पी.डब्लू.डी. के विश्राम गृह और सैनिक विश्राम गृह सहित केलांग में भी ठहरने के कुछ अन्य विकल्प उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

गेमुर मठ- केलांग से लगभग 18 किलोमीटर दूर गेमुर नामक एक छोटा सा गाँव है और यह गुशल गाँव के पूर्ववर्ती ठाकुरों का क्षेत्र है। मठ इस गाँव में स्थित है और जून-जुलाई के महीने में मनाए जाने वाले त्यौहार के दौरान प्रदर्शित शैतान नृत्य के लिए जाना जाता है।

शशुर मठ- शशुर का अर्थ है- नीले देवदार। अपने नाम के अनुसार यह मठ नीले देवदार के वृक्षों के मध्य स्थित है। इसे देवा त्यात्सो ने स्थापित किया था और देवा ग्यात्सो द्वारा पुनरुद्धार का कार्य किया गया। इसमें 84 सिद्धों को दर्शाने वाला अमूल्य भित्तिचित्र, नामग्याल की प्रतिमा और 15 फीट ऊँचा थांकाचित्र देखने लायक हैं। मठ का वार्षिक त्यौहार जून-जुलाई के महीने में मनाया जाता है।

थांग युग मठ

यह काज़ा से लगभग 14 किलोमीटर दूर है जिसका निर्माण 14वीं शताब्दी में किया गया था। मठ शाक्य संप्रदाय से संबंधित है और अपने ऐतिहासिक महत्त्व के लिए प्रसिद्ध है। इतिहास के अनुसार, बौद्ध विद्वानों का एक समूह गुप्त रूप से तंत्र को स्वीकार कर लेता है और तेंग्यूर धर्मग्रन्थों के संशोधन कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करता है। तेंग्यूर तिब्बती धर्मग्रन्थों का एक वर्ग है जिसमें 87 खंड हैं।

मठ के इतिहास से पता चलता है कि पहले यह हिक्किम गाँव में स्थित था, किन्तु सन् 1975 में भूकंप के कारण इमारत को भारी क्षति हुई। इसके बाद, ग्रामीणों ने इस मठ को कामिक गाँव के पास इसके वर्तमान स्थान पर स्थानांतरित कर दिया। पुराने मठ के अवशेष आज भी हिक्किम गाँव में देखे जा सकते हैं। मठ का प्रमुख लामा तिब्बत मूल का होता है।

स्पीति

स्पीति का अर्थ है- मणि का स्थान। सी का अर्थ है- मणि और पीती का अर्थ है- स्थान। स्पीति अंतिम शांगरी दर्रा के रूप में जाना जाता है। इसके दक्षिण-पूर्व में किन्नौर, पूर्वोत्तर में

तिब्बत, उत्तर में लद्दाख, दक्षिण में कुल्लू और पश्चिम में लाहौल स्थित है। लाहौल घाटी के साथ मिलकर स्पीति घाटी हिमाचल प्रदेश के एक पूर्वोत्तर जिले का गठन करती है।

काज़ा, स्पीति उप-मंडल का मुख्यालय है और नए तथा पुराने काज़ा में विभाजित है। पहले में स्थानीय लोगों का निवास है जबकि बाद वाले के घरों में प्रस्तर की छत वाली सरकारी इमारतें हैं। काज़ा आने वाले पर्यटकों के लिए ठहरने के विकल्प के रूप पी.डब्ल्यू.डी. का विश्राम गृह, हिमाचल प्रदेश पर्यटन विभाग निगम का होटल और कुछ बजट होटल उपलब्ध हैं। वैकल्पिक रूप से, काज़ा उन सभी लोगों के लिए शिविर लगा कर रहने के लिए भी उपयुक्त है जो आसपास के क्षेत्रों की खोज करना चाहते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

लालुंग मठ- यह एक छोटा सा मठ है जो लालुंग गाँव में प्रमुख स्थान रखता है। अपने आकार के बावजूद, मठ अपनी अत्यधिक नक्काशीदार लकड़ी की चौखट के कारण पर्यटकों को बहुत अधिक संख्या में आकर्षित करता है।

काई मठ- यह स्पीति घाटी का सबसे बड़ा मठ है। मठ के इतिहास से पता चलता है कि 17वीं शताब्दी में आक्रांताओं ने इसे बहुत क्षति पहुँचायी थी। इस वजह से और बाद में क्षेत्र में आए भूकंप के कारण मठ की इमारत सुव्यवस्थित नहीं रही है। फिर भी, इसमें बहुत सारे आकर्षण हैं जिनमें संगीत वाद्ययंत्र और थांकाचित्र शामिल हैं। इस मठ में लगभग 300 लामाओं ने अपना धार्मिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

किब्बर- यह गाँव काज़ा से 18 किलोमीटर दूर दुनिया की सबसे ऊँची बस्ती है जो सड़कमार्ग से जुड़ी हुई है जिसमें बिजली, डिश टी.वी. एंटिना आदि हैं। यहाँ एक मठ है जिसका नाम ताबो के सरकोंग रिम्पोचे के नाम पर रखा गया है। वर्ष 1983 में उनका इस मठ में परिनिर्वाण हुआ और जिस स्थान पर उनका अंत्येष्ठि विधान किया गया, वहाँ एक जल स्रोत निकला। आज भी, उस स्रोत से निकलने वाले पानी का उपयोग किब्बर गाँव के लोगों द्वारा किया जाता है।

कुंगरी मठ

यह अटारगो से लगभग 10 किलोमीटर और पिन घाटी में गुल्लिंग से 3 किलोमीटर दूर है। अटारगो स्वयं स्पीति के उप-मंडल मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूर स्थित है। पिन घाटी तक पहुँचने के लिए स्पीति नदी को पार करना पड़ता है, जिसके अधिकांश भाग को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया जा चुका है।

इसे केवल स्पीति घाटी में दूसरा सबसे प्राचीन मठ होने का ही गौरव प्राप्त नहीं है बल्कि घाटी में निंगमापा संप्रदाय का एकमात्र मठ भी है। निंगमापा तिब्बती बौद्ध धर्म का सबसे पुराना संप्रदाय है। कुंगरी मठ 14वीं शताब्दी में बनाया गया था। इसमें तीन अलग-अलग भवन हैं। हाल ही में, कुंगरी ने विदेशी अनुदान के कारण ध्यान आर्केषित किया जो इसे अपने पुनरुद्धार कार्य के लिए प्राप्त हुआ है। हालांकि पुनरुद्धार कार्य के अलावा, मठ तांत्रिक संप्रदाय के गहरे प्रभाव को दर्शाता है जिसका बीते युग में पिन घाटी में प्रभुत्व था।

मठ के आंतरिक आकर्षणों में दीवार पर बने विभिन्न बोधिसत्त्वों के रेशम चित्र, बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ तथा पवित्र तिब्बती ग्रन्थों कांग्यूर और तेंग्यूर के 300 से अधिक खंड शामिल हैं जिन्हें सफेद मलमल के कपड़े में सावधानीपूर्वक सुरक्षित रखा हुआ है। इसके अतिरिक्त, मठ में बुजेन तलवार नृत्य प्रदर्शित करते हैं। बुजेन घुमक्कड़ भिक्षु हैं जिनमें से कुछ पिन नदी के दाएं किनारे पर स्थित मुद गाँव में रहते हैं

त्यौहार

मठ में जून-जुलाई के महीने के दौरान शैतान नृत्य प्रदर्शित किया जाता है।

स्पीति

यह लाहौल और स्पीति जिले का उप-मंडल है और यहाँ एक ठंडा रेगिस्तान है जहाँ कभी-भी मानसून वर्षा नहीं होती है। संकरी घाटियों और ऊँचे पहाड़ों के लिए प्रसिद्ध स्पीति की मनमोहक सुन्दरता ने रूडयार्ड किपलिंग जैसे प्रसिद्ध लेखक को भी प्रभावित किया है और उन्होंने कहा “दुनिया के भीतर एक दुनिया है और एक जगह है जहाँ देवता रहते हैं।”

स्पीति का मुख्य आकर्षण पिन घाटी है जो इसके कई महत्त्वपूर्ण मठों का घर है। इनमें से कुंगरी मठ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। कुंगरी मठ की यात्रा के इच्छुक पर्यटकों के लिए काज़ा, सगनम, गुल्लिंग और ताबो में आवास उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

ताबो मठ- यह स्पीति का गौरव है और हिमालय की अंजता जैसे उपनामों सहित, निश्चित रूप से घाटी के सबसे महत्त्वपूर्ण मठों में से एक है। मठ को 996 ई. में रिंचेन जंगपो ने स्थापित किया था और इसका एक पूजा स्थल से कहीं अधिक महत्त्व है। बल्कि, यह शिक्षा और वाद-विवाद के केन्द्र के अलावा बौद्ध कला का भंडार भी है।

काई मठ- यह स्पीति घाटी के सबसे प्राचीन मठों में से एक है। इसका इतिहास आक्रमणों से भरा रहा है। 17वीं शताब्दी के बाद, तीन आक्रमणों और 1975 में आए भूकंप ने मठ पर इतना अधिक प्रभाव डाला कि आज यह एक क़िले के समान दिखाई देता है। हालांकि, आज भी यह क्षेत्र के सबसे प्रमुख मठों में से एक है। 10वीं शताब्दी में बना काई मठ दुर्लभ थांकाचित्रों, चित्रों और संगीत वाद्ययंत्रों को प्रदर्शित करता है।

नाको मठ

नाको 3660 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और नाको हंगरांग घाटी में सबसे ऊँचा गाँव है जिसके चारों ओर बंजर भूमि और रेत के विशाल टीलों जैसे पहाड़ों के परिदृश्य हैं। नाको मठ परिसर शहर के पश्चिमी किनारे पर स्थित है और इसमें चार मंदिरों के अलावा अन्य भवन भी हैं। बाहर से यह चूने की एक सामान्य संरचना जैसा दिखाई देता है लेकिन जब आप अन्दर से देखेंगे तो यह इसके ठीक विपरीत है।

यहाँ दो मंदिर सबसे महत्त्वपूर्ण हैं- मुख्य मंदिर और ऊपरी मंदिर। इन दोनों मंदिरों को सभी संरचनाओं में से सबसे पुराना माना जाता है और अभी भी अपनी मौलिक चिकनी मिट्टी की मूर्तियों, भित्तिचित्रों और छत के पैनलों को सुरक्षित रखे हुए हैं। सबसे बड़े मंदिर या मुख्य मंदिर को अनुवादक का मंदिर भी कहा जाता है। यह गाँव का सबसे पुराना स्मारक है। मठ परिसर में तीसरी इमारत एक छोटा सा सफेद मंदिर है जो हालांकि अच्छी स्थिति में नहीं हैं, लेकिन इसके दरवाजे की चौखट पर उत्कीर्ण चित्र देखने लायक हैं। चौथी इमारत

बिल्कुल ऊपरी मंदिर के आकार के जैसी है और इसके नजदीक स्थित है। मंदिर को आज व्यापक अनुपात के मंदिर के नाम से जाना जाता है।

किन्नौर

किन्नौर पूर्व में तिब्बत, दक्षिण में गढ़वाल हिमालय, उत्तर में स्पीति घाटी और पश्चिम में कुल्लू से घिरा हुआ है और हिमाचल प्रदेश का एक जिला है जिसका मुख्यालय रिकांग पिओ है। क्षेत्र में कई किंवदंतियां और पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि किन्नौर पूरे वर्ष सुगम्य नहीं है। इसका कारण यह है कि सर्दियों का मौसम अपने साथ भारी हिमपात लाता है जो अंत में जिले को सभी स्थलों से काट देता है। किन्नौर की यात्रा के लिए सबसे उचित समय अप्रैल से अक्तूबर के बीच होता है जब गर्मियाँ होती हैं। नाको गाँव में पर्यटकों के ठहरने के लिए एक झोपड़ी भी है।

ताशीगंग मठ

यह हिमाचल प्रदेश के लाहौल और स्पीति जिले में सतलुज और स्पीति नदी के संगम पर स्थित है। लाहौल और स्पीति में स्थित होने के बावजूद, किन्नौर जिले में नामग्या से मठ तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 22 पर खाब गाँव से मार्ग बदल कर नामग्या मार्ग और नामग्या मार्ग से ताशीगंग मठ पहुँचा जा सकता है। नामग्या, नाको से अधिक दूर नहीं है।

मठ में नई और पुरानी दो गोम्पा हैं। नई गोम्पा अत्यधिक सुन्दर है जिसमें मनोहर भित्तिचित्र, बौद्ध ग्रन्थों का एक छोटा सा संग्रह, बौद्ध मूर्तियाँ और एक बड़ा तिब्बती ढोल है। पुरानी गोम्पा, नई गोम्पा से कुछ भवन नीचे है। सबसे जरूरी बात यह है कि जब आप नए गोम्पा को देखने जाएं तो हो सकता है कि यह बन्द मिले। हालांकि, पुराने गोम्पा के खुले होने की संभावना अधिक होगी। यहाँ, आप उपासकों को प्रार्थना करने के लिए आते हुए भी देख सकते हैं।

नाको

यह एक छोटा किन्तु सुन्दर गाँव है जो आचरण में बहुत ज्यादा तिब्बत शैली जैसा है। यह किन्नौर जिले की हंगरांग घाटी में लगभग 3662 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। इस

छोटे से गाँव का मुख्य आकर्षण एक झील है जो सर्दियों में बर्फ की चादर में बदल जाती है। यहाँ एक मंदिर भी है जो स्थानीय देवताओं को समर्पित है। यदि आप ताशीगंग मठ की यात्रा करना चाहते हैं तो नाको ठहरने के लिए एक अच्छा स्थल है। लगभग 3:30 घण्टे की पैदल यात्रा तय कर आप मठ तक पहुँच जाएंगे।

लिप्पा मठ

यह तैती नदी के तट पर स्थित है जो किन्नौर जिले में जंगी गाँव से 14 किलोमीटर दूर है। यह लम्बे समय से बौद्ध धर्म का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। मठ की नींव ज्योतिषी लामा देवाराम ने रखी थी। हालांकि, मठ इनके बेटे के प्रयासों से पूर्ण हुआ था। मठ परिसर में तीन मंदिर हैं। इन तीन मंदिरों में से, दो में कांग्यूर और तेंग्यूर धर्मग्रन्थों के खंडों का भंडार है। तीसरा और अंतिम 'गोलदंग चाकोदर' मंदिर है।

किन्नौर

यह भारत-तिब्बत सीमा पर स्थित है और तिब्बती बौद्ध धर्म से बहुत अधिक प्रभावित है। इस तथ्य के बावजूद है कि यहाँ रहने वाले अधिकांश लोग हिन्दू हैं। वास्तव में, इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ हिन्दू और बौद्ध धर्म का मिश्रित रूप दिखाई देता है।

एक जिले के रूप में किन्नौर, हिमाचल प्रदेश के अन्य जिलों की भांति अधिक प्रसिद्ध नहीं है। हालांकि, यह लगभग 33 मठों और मंदिरों का घर है। किन्नौर निंगमापा, द्रुक्पा, गेलुक्पा आदि संप्रदायों का प्रतिनिधित्व करता है। रिकांग पिओ, किन्नौर का जिला मुख्यालय है और कल्पा इसका मुख्य गाँव है। पर्यटकों की सुविधा के लिए कल्पा में आवास के कुछ विकल्प उपलब्ध हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

जंगी मठ- यह किन्नौर क्षेत्र में एक गुफा मठ है और एक प्रमुख बौद्ध आकर्षण है। गुफा में चार स्तूप संरक्षित हैं। किंतु इनके निर्माण के वर्ष का अब तक पता नहीं चला है। फिर भी, शिलालेख पर उत्कीर्ण कुटीला बोली से पता चलता है कि ये 10वीं-11वीं शताब्दी पूर्व के हैं।

चेंगो मठ- यह हंगरांग घाटी में स्पीति नदी के तट पर स्थित है और माना जाता है कि इसे गुरु पद्मसंभव ने बनवाया था। मठ में एक महान अनुवादक की प्रतिमा का आधिपत्य है।

मार्ग

वायुमार्ग से किन्नौर पहुँचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा जुब्बर हट्टी में स्थित है जो लगभग 244 किलोमीटर दूर है। निकटतम रेलवे जंक्शन शिमला में स्थित है जो लगभग 250 किलोमीटर दूर है। सड़कमार्ग से भी किन्नौर आसानी से पहुँचा जा सकता है। आपको कालका से किन्नौर तक पहुँचाने के लिए टैक्सी और जीप उपलब्ध हैं। आपको किन्नौर के किसी भी गंतव्य तक ले जाने के लिए हिमाचल रोडवेज परिवहन निगम की बसें भी उपलब्ध हैं।

ताबो मठ

एक मठ जो तिब्बत के थोलिंग गोम्पा के बगल में स्थित है और जिसे भारत का ऐतिहासिक खजाना माना जाता है, वह ताबो मठ है। इस मठ को 996 ई. में महान शिक्षक एवं अनुवादक लोत्सवा रिंचेन जैंगपो ने स्थापित किया था जो तिब्बती कैलेंडर के अनुसार एक वानर वर्ष था। मठ हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। इसे बौद्ध शिक्षा के उच्च केन्द्र के रूप में विकसित किया गया था और आज भी यह उसी दृढ़ता के साथ बौद्ध विरासत को संरक्षित करने में सफल रहा है। ताबो मठ का स्थान, इसके आकर्षण को और बढ़ाता है। मठ एक सुनसान, समतल, बंजर भूमि के 6300 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को घेरे हुए है। इसके चारों ओर ईंटों की ऊँची चारदीवारी है।

मठ परिसर के मंदिर

मठ परिसर में 9 मंदिरों और 23 स्तूपों सहित भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए पृथक् कक्ष हैं। माना जाता है कि मंदिरों के एक समूह का निर्माण पहले हुआ था जबकि दूसरे समूह का बाद में हुआ था। पहले समूह से संबंधित मंदिरों में प्रबुद्ध देवों का मंदिर, स्वर्ण मंदिर, रहस्यवादी मंडल मंदिर, बोधिसत्त्व मैत्रेय मंदिर और ड्रोमटन मंदिर शामिल हैं। दूसरे समूह में बहुमूल्य चित्रों का कक्ष, ड्रोमटन का बड़ा मंदिर, महाकाल वज्रभैरव मंदिर और सफेद मंदिर शामिल हैं।

प्रबुद्ध देवताओं का मंदिर- यह मठ परिसर का सभा भवन या दुखांग मंदिर है जिसमें वैरोचन की चतुर्मुखी प्रतिमा, इसकी प्रमुख प्रतिमा है। प्रतिमा फर्श से 2 मीटर ऊपर पद्मासन मुद्रा में स्थापित है जिसमें धर्मचक्र को घूमते हुए दर्शाया गया है। वज्रधातु मंडल के रूप में उल्लिखित 33 आदमकद की प्लास्टर की मूर्तियों को दीवार के ताकों में रखा गया है। मंदिर की दीवारें भित्तिचित्रों से अलंकृत हैं जिनमें तथागत के जीवन को विभिन्न चरणों में दर्शाया गया है। इन भित्तिचित्रों को उन कलाकारों ने बनाया था जो कश्मीर मार्ग से इस स्थान पर आए थे। गर्भगृह सभा भवन के ठीक पीछे है जिसमें पाँच बोधिसत्त्वों की मनोहर प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

स्वर्ण मंदिर- आरंभ में मंदिर पर सोने की परत चढ़ी हुई थी। हालांकि, 16वीं शताब्दी में लद्दाखी शासक सेंग्ये नामग्याल के आदेश पर पुनरुद्धार का कार्य किया गया। आज मंदिर, अपने मनोहर भित्तिचित्रों के कारण देखने लायक है।

रहस्यवादी मंडल मंदिर- इस मंदिर में आठ बोधिसत्त्वों से घिरे वैरोचन के भित्तिचित्र का आधिपत्य है। भित्तिचित्र को दरवाजे के सामने वाली दीवार पर देखा जा सकता है। पूरे मंदिर पर रहस्यवादी मंडल का अधिकार है। मंदिर का महत्त्व इस बात में निहित है कि इस स्थान पर भिक्षुत्व का सूत्रपात हुआ था।

बोधिसत्त्व मैत्रेय मंदिर- मंदिर एक हॉल, द्वारमंडप और गर्भगृह में विभाजित है। बोधिसत्त्व मैत्रेय की 6 मीटर ऊँची प्रतिमा, इस मंदिर का प्रमुख आकर्षण है। भित्तिचित्र इस मंदिर के आकर्षण को और बढ़ाते हैं, विशेषकर जिनमें ताशी-चुनपो मठ और पोताला महल को दर्शाया गया है।

ड्रोमटन मंदिर- ऐसा माना जाता है कि मठ परिसर के उतरी भाग में स्थित ड्रोमटन मंदिर आतीश के शिष्य ड्रोमटन (1008 ई.-1064 ई.) द्वारा बनवाया गया था। मंदिर तक पहुँचने के लिए आपको एक लम्बे मार्ग के बाद द्वारमंडप से होकर जाना पड़ता है। दरवाजों पर उत्कृष्ट नक्काशी देखी जा सकती है जबकि आंतरिक भाग सुन्दर भित्तिचित्रों से सुशोभित हैं।

बहुमूल्य चित्रों का कक्ष- यह कक्ष प्रबुद्ध देवताओं के मंदिर से जुड़ा है और तिब्बती शैली में बुद्ध, उनके शिष्यों तथा संरक्षक देवताओं के भित्तिचित्रों का घर है।

बड़ा ड्रोमटन मंदिर- यह मठ का दूसरा बड़ा मंदिर है। 42 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को द्वारमंडप और ताकों ने घेरा हुआ है। सामने की दीवार पर बुद्ध के साथ उनके शिष्यों सारीपुत्र एवं मौद्गल्यायन के भी भित्तिचित्र देखे जा सकते हैं। बाहर की दीवार आठ चिकित्सक बुद्धों और संरक्षकों के भित्तिचित्र से सुशोभित हैं।

महाकाल वज्रभैरव मंदिर- यह गेलुक्पा संप्रदाय के अनेक उग्र संरक्षक देवताओं का घर है। यही कारण है कि इसे 'भय का मंदिर' कहा जाता है।

सफेद मंदिर- इस मंदिर की दीवारें अलंकृत हैं। इसके प्रति भिक्षुओं या भिक्षुणियों का झुकाव कम है।

स्पीति

यह घाटी उत्तर में लद्दाख क्षेत्र, पश्चिम में लाहौल उप-मंडल, दक्षिण-पूर्व में कुल्लू जिले और पूर्व में किन्नौर जिले से सीमाबद्ध है। घाटी देश के कई महत्त्वपूर्ण मठों का घर है और इसलिए इसने 'मठों की घाटी' का नाम स्वयं अर्जित किया है। यदि आप क्षेत्र के किसी भी मठ की यात्रा करना चाहते हैं तो याद रखें कि घाटी केवल जून से अक्तूबर के महीनों के दौरान सुगम्य है, जब मौसम की स्थिति अनुकूल होती है। शेष महीनों में, घाटी बर्फ के कारण दुनिया से कट जाती है। शांत ताबो गाँव में कुछ ही आवास उपलब्ध हैं। अन्य विकल्प के रूप में आप काज़ा में भी ठहर सकते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

काई मठ- यह ऐसा मठ है जो लद्दाख क्षेत्र में थिकसे मठ के सामने स्थित है। इसके अतिरिक्त, मठ शंक्वाकार पहाड़ी पर स्थित है और स्पीति घाटी में सबसे बड़ा है। इसमें कई लामाओं ने अपना धार्मिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इसके मुख्य आकर्षणों में सुन्दर भित्तिचित्र, थांकाचित्र, दुर्लभ पांडुलिपियां, प्लास्टर चित्र और विशेष सुषिर वाद्ययंत्र शामिल हैं। इनमें से अंतिम को अब भी छाम नृत्य के प्रदर्शन के दौरान उपयोग किया जाता है।

धनकर मठ- यह मठ स्पीति नदी के बाएं किनारे पर एक शंक्वाकार पहाड़ी के ऊपर स्थित है, जबकि नया मठ शिचलिंग गाँव में स्थित है। पुराने मठ परिसर में कई बहुमंजिला

इमारतें हैं, जैसे- ल्हा-ओ-पा गोम्पा और लखांग गोम्पा। नये परिसर की मुख्य दीवार शाक्यमुनि, त्सोंगखापा और लामा चोद्राग के भित्तिचित्रों के कारण बहुत आकर्षक है।

मार्ग

वायुमार्ग- निकटतम हवाई अड्डा जुब्बर हट्टी है जो शिमला में स्थित है और लगभग 365 किलोमीटर दूर है।

रेलमार्ग- निकटतम रेलवे जंक्शन कालका में स्थित है और लगभग 455 किलोमीटर दूर है।

सड़कमार्ग- शिमला से राष्ट्रीय राजमार्ग 22 चुनें जो नारकंडा, रामपुर, बुशहर, सरहान और वांगतू होते हुए करचम मार्ग तक जाता है। करचम से राज्य राजमार्ग चुनें जो रिब्बा से होकर ताबो तक पहुँचाता है। यदि आप मनाली से आ रहे हैं तो कोठी, रोहतांग मार्ग, ग्राम्फू, बाटल, कुंजुम मार्ग, लोसर, रंग्रिम और काज़ा मार्ग से राज्य राजमार्ग का अनुगमन करें।

अरुणाचल प्रदेश में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ

अरुणाचल प्रदेश, पूर्वोत्तर का सबसे बड़ा राज्य है और वास्तव में अनेक महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठों का घर है। राज्य में उनकी यात्रा किसी भी बौद्ध पर्यटक की सूची में पहले स्थान पर होती है। इन मठों में सबसे महत्त्वपूर्ण तवांग मठ, बोमडिला मठ और उर्गेल्लिंग मठ हैं। इनमें से तवांग वर्ष 1860-61 में स्थापित किया गया था जो भारत का सबसे बड़ा मठ है और एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मठ है। उर्गेल्लिंग मठ, तवांग से सिर्फ 5 किलोमीटर दूर है और छठे दलाई लामा का जन्म स्थान है। ये दोनों मठ महायान संप्रदाय की लामावादी परंपरा से संबंधित हैं और बोमडिला भी इसी विश्वास का अनुसरण करता है। इन तीनों के अतिरिक्त, अरुणाचल प्रदेश के अन्य मठों में तक्त्संग मठ और रिग्याल्लिंग मठ शामिल हैं।

इस खंड में, इन सभी मठों के विषय में विस्तार से विवरण दिया गया है। वास्तव में, वहाँ जाने से पहले इन मठों की जानकारी आपको मठों के विषय में ओर अधिक जानने में

सहायता करेगी। इस खंड से प्राप्त जानकारी के माध्यम से यात्रा करें जो आपकी अरुणाचल प्रदेश की यात्रा को ओर अधिक रोचक बनाएगी।

तवांग मठ

यह अरुणाचल प्रदेश में बौद्ध धर्म का ताज है और क्षेत्र में महायान संप्रदाय के लामावादी विश्वास का प्रमुख ढाँचा है जो इसे भारत का सबसे बड़ा मठ और एशिया का दूसरा सबसे बड़ा मठ बनाता है। यह 'गाल्डेन नामग्याल ल्हात्से' के नाम से भी विख्यात है। इसकी स्थापना वर्ष 1860-61 ई. में मेराक लामा लोद्रे ग्यात्सो द्वारा की गई थी। मठ पूर्व की ओर ढलान वाली हिमालय की मनोहर पर्वतमाला के बीच समुद्र तल से 10000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है और तवांग-चु घाटी के मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है। मठ 300 से अधिक भिक्षुओं (वास्तविक क्षमता 700) का घर है। तवांग के आसपास के लोगों के लिए आध्यात्मिकता का मुख्य केन्द्र है।

मठ परिसर के आकर्षण

विशाल मठ में काकलिंग द्वार से प्रवेश किया जाता है जो इसकी उत्तरी दिशा की पर्वत श्रेणी के पास है और एक झोपड़ी जैसी संरचना है और जिसकी दीवारें पत्थर से बनी है। काकालिंग की छत को मंडलों से चित्रित किया गया है जबकि अंदर की दीवारें संतों और बौद्ध संरक्षकों के भित्तिचित्रों से सुशोभित हैं। काकलिंग के बाद, इसकी उत्तरी दिशा में मठ का मुख्य द्वार है। इसकी पूर्वी दीवार लगभग 925 फीट लंबी है जबकि ऊँचाई 10 से 20 फीट के बीच है।

तवांग मठ परिसर में अनेक भवन हैं जिनमें दुखांग सबसे प्रमुख है। दुखांग मठ का मुख्य भवन है और प्रांगण की उत्तरी दिशा में स्थित है। इस तीन मंजिला परिसर में लब्रांग नामक एक मंदिर है जिसकी स्थापना मठाधीश ने की थी। दुखांग का आंतरिक भाग उत्कृष्ट कलाकृतियों के लिए जाना जाता है। इसकी भीतरी दीवारों पर कई संतों, बोधिसत्त्वों के भित्तिचित्र हैं। जबकि भवन की उत्तरी दीवार के पास एक वेदी ढकी हुई है, जिसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों के दौरान किया जाता है और फिर इसके आगे बाईं तरफ एक चाँदी की मंजूषा में थांकाचित्र रखा है। थांकाचित्र मठ की प्रमुख देवी, पैल्डन ल्हामो को समर्पित है। इस थांकाचित्र को पाँचवें दलाई लामा की नाक के खून से चित्रित किया गया था, जिसे स्वयं

पाँचवें दलाई लामा ने मेराक लामा को दिया था। इसके अतिरिक्त, भवन के उत्तरी भाग में बुद्ध की 26 फीट ऊँची प्रतिमा है जो हॉल के मध्य में स्थापित है।

मुख्य भवन मठ की अन्य प्रमुख संरचना है जो मठ परिसर के पिछले भाग में स्थित है। मुख्य भवन मोनपा जनजाति द्वारा आयोजित किए जाने वाले धार्मिक नृत्यों और अन्य समारोहों की मेजबानी करता है। मुख्य भवन के पश्चिम में एक तीन मंजिला पुस्तकालय है जो प्रखांग के नाम से प्रसिद्ध है। इस पुस्तकालय में अनेक बौद्ध धर्मग्रन्थ के साथ-साथ अन्य ग्रन्थ भी हैं। यह दो मंजिला इमारत प्रांगण में स्थित है जिसके एक तल पर भिक्षुओं का सामान भंडार गृह में रखा हुआ है जबकि दूसरा तल द्रा-त्सांग बक और उनके सहयोगियों के अधिकार में है। अंत में, मुख्य भवन के पूर्वी भाग में रुमखांग नामक दो मंजिला इमारत स्थित है। त्यौहार के दिन भिक्षुओं के लिए जलपान तथा सात्विक भोजन के लिए रुमखांग का उपयोग किया जाता है।

झोपड़ी मठ की अन्य महत्त्वपूर्ण संरचना है जिसका उपयोग भिक्षुओं द्वारा आवासीय कक्षों के रूप में किया जाता है। बौद्ध सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र, मठ का एक अभिन्न भाग है और युवा भिक्षुओं के लिए एक शिक्षा केन्द्र है जिसमें अंग्रेजी, हिंदी, अंकगणित एवं अन्य विषयों सहित पारंपरिक मठवासी शिक्षा दी जाती है।

तवांग

यह मोनपा जनजाति की मनोहर भूमि है और समुद्र तल से 3500 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। विशाल हिमालय पर्वत, शांत गाँवों, सुदूर क्षेत्रों, सुन्दर जलप्रपातों, शांत झीलों और लामावादी मठों के मनोहर दृश्य एक आकर्षण उत्पन्न करते हैं। तवांग मठ के कारण इस स्थान का नाम तवांग पड़ा है। यह पर्यटकों द्वारा खोजी जाने वाली सबसे अच्छी जगहों में से एक है जो यहाँ आध्यात्मिकता, संस्कृति, परंपरा और प्रकृति के साथ समय व्यतीत करने के लिए आते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

उर्गेल्लिंग मठ- यह राज्य के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक होने का विशेषाधिकार रखता है। यह वही मठ है जहाँ 17वीं शताब्दी में छठे दलाई लामा का जन्म हुआ था। इसे

15वीं शताब्दी में लामा उर्गेन संगपो ने स्थापित किया था। उर्गेल्लिंग मठ ध्यान साधना के लिए एक उत्तम स्थान है।

तक्त्संग मठ- यह मठ बाघ की मांद के रूप में प्रसिद्ध है तथा तवांग से 45 किलोमीटर दूर है। मठ सघन शंकुधारी जंगल और बर्फीले पहाड़ों से घिरा हुआ है जिससे इस स्थान का चित्र प्रस्तुत होता है, जो इसे ध्यान के लिए एक आदर्श केन्द्र बनाता है। इस मठ के विषय में ऐसा कहा जाता है कि 8वीं शताब्दी ई. में गुरु पद्मसंभव ने भी इसकी यात्रा की थी।

तवांग युद्ध स्मारक- यह 40 फीट ऊँची बहुमंजिला स्तूप के जैसी इमारत है, जिसे उन शहीदों की याद में बनाया गया है जिन्होंने सन् 1962 के भारत-चीन युद्ध में अपने प्राणों की आहूति दी थी। तवांग युद्ध स्मारक, तवांग जिले में खूबसूरत तवांग-चु घाटी के सामने स्थित है। इसमें सैनिकों की बहादुरी की प्रशंसा में एक शिलालेख स्थापित है।

पैंगोगत्सो झील- यह झील तवांग से 17 किलोमीटर दूर है और चारों तरफ से रंग-बिरंगे फूलों और विशाल हिमालय की पर्वतमालाओं से घिरी हुई है। जो मनोहर प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करती है और न केवल पर्यटकों को आकर्षित करती है बल्कि यह पशुओं और पक्षियों को भी लुभाती है।

त्यौहार

लोसर और तोरग्या तवांग मठ में मनाए जाने वाले प्रमुख त्यौहार हैं जो न केवल बौद्धों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। बल्कि उस समय क्षेत्र के सभी लोग एकत्रित होते हैं और अपनी सभ्यता और संस्कृति का उत्सव बनाते हैं।

लोसर त्यौहार जनवरी के महीने में मनाया जाता है और मोनपा या चंद्र कैलेंडर के अनुसार नव वर्ष के आरंभ का प्रतीक है। यह त्यौहार 15 दिनों तक दीपों को जलाने, प्रार्थना करने और झंडे फहराने के द्वारा मनाया जाता है। मठ के लामाओं द्वारा एक अन्य त्यौहार भी मनाया जाता है जिसे तोरग्या कहते हैं। यह त्यौहार चंद्र कैलेंडर के 11वें महीने के 28वें दिन शुरू होता है और तीन दिनों तक चलता है। इस अवसर पर लामा एक तोरग्या बनाते हैं जो जौं के आटे से बनी एक पिरामिडनुमा संरचना होती है। इसके अलावा, मठ में धार्मिक अनुष्ठान प्रदर्शित करते हैं तथा मठ की सफाई करते हैं और बुराई पर अच्छाई की जीत को छाम नृत्य द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

मठ में मनाए जाने वाले अन्य त्यौहारों में वैशाख दिवस है जो बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति का प्रतीक है और चंद्र कैलेंडर के चौथे महीने में मनाया जाता है। द्रुक्पा त्से-शि दिवस बुद्ध के प्रथम उपदेश का प्रतीक है और चंद्र कैलेंडर के छठे महीने में मनाया जाता है। ल्हाबाब दुचेन दिवस बुद्ध के शाक्यमुनि के रूप में पुनर्जन्म का प्रतीक है और 9वें महीने में मनाया जाता है। लामा त्सोंगखापा दिवस-गेलुक्पा संप्रदाय के संस्थापक त्सोंगखापा के परिनिर्वाण का प्रतीक है।

बोमडिला मठ

यह मठ अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमी कमेंग जिले में स्थित है और बोमडिला के लामाओं और भिक्षुओं का घर है। यह महायान की लामावादी परंपरा के प्रमुख केन्द्रों में से एक है। बोमडिला मठ दक्षिणी तिब्बत में स्थित त्सोन गोंत्से मठ की प्रतिकृति है जिसे त्सोन गोंत्से के 12वें अवतार ने स्थापित किया था। पश्चिमी कमेंग में स्थित मोर्सिंग में जन्म लेने वाले अवतार ने अपनी मृत्यु (वर्ष 1966) से पूर्व वर्ष 1965 में इस मठ की स्थापना की थी। हालांकि, रिंपोचे और 13वें अवतार त्सोन गोंत्से ने मठ का पुनरुद्धार और विस्तार किया जिसमें एक विशाल प्रार्थना भवन शामिल है जिसे वर्ष 1997 में 14वें दलाई लामा ने आशीर्वाद दिया।

भिक्षुओं और लामाओं द्वारा प्रार्थना के लिए भवन का उपयोग किया जाता है। इसमें शाक्यमुनि का मंदिर है और भिक्षुओं के लिए आवासीय कक्ष हैं। मठ के लामाओं द्वारा युवा भिक्षुओं को प्रार्थना और तंत्र साधना के अलावा, मठ आवासीय जीवन और परंपरा के साथ-साथ अन्य विषयों की भी शिक्षा दी जाती है।

बोमडिला

यह विशाल हिमालय की पर्वतमालाओं के बीच स्थित है और पश्चिमी कमेंग जिले का मुख्यालय है। बोमडिला की छोटी और मनोहर भूमि दुनियाभर के पर्यटकों के लिए एक आकर्षक स्थल है, जो यहाँ प्रकृति से प्रेम करने और बौद्ध परम्परा एवं पूर्वोत्तर भारत की स्थानीय मेहमाननवाज़ी को करीब से देखने के लिए आते हैं। बोमडिला की भूमि ट्रैकिंग के लिए एक उत्तम स्थान है और इसकी संस्कृति पर तिब्बती संस्कृति एवं परम्परा का गहरा प्रभाव है। यह कई मठों का भी घर है।

आसपास के अन्य आकर्षण

शिल्प केन्द्र- बोमडिला जिला एक प्रमुख शिल्प केन्द्र का घर है जो स्थानीय लोगों के अद्‌भुत कलात्मक कौशल को प्रस्तुत करता है। शिल्प केन्द्र व्यापक स्तर पर डिजाइन ड्रैगन गलीचों, दीवार पर लटकाने वाले थांकाचित्रों और अनेक चित्रों को प्रदर्शित करता है।

टीपी ऑर्किड अनुसंधान केन्द्र- यह पश्चिमी कमेंग जिले में भराली नदी के तट पर स्थित है जो बोमडिला से कुछ किलोमीटर की दूरी पर है। टीपी भारत के सबसे बड़े ऑर्किड अनुसंधान केन्द्रों में से एक है और साथ ही एशिया के सबसे बड़े ऑर्किड का घर है। सदाबहार घने जंगलों से घिरा टीपी डेन्ड्रोबियम और डैन्टी जैसी ऑर्किड की 500 से अधिक प्रजातियों का घर है।

भालुकपोंग- यह आका पर्वतमाला की तलहटी में बोमडिला से लगभग 85 किलोमीटर दूर है और एक पिकनिक स्थल है। इसके अलावा, जिया भराली नदी और एक गर्म पानी के झरने का स्थल है, जिसके विषय में कहा जाता है कि इसका औषधीय महत्त्व है।

त्यौहार

बोमडिला मठ बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय का अनुयायी है और बौद्धों के जीवन में विशेष महत्त्व रखने वाले कई त्यौहारों को मानता है। मोनपा कैलेंडर के अनुसार लोसर उनमें सबसे प्रमुख त्यौहार है जो नव वर्ष के आरंभ होने के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। यह त्यौहार 15 दिनों तक मनाया जाता है और मठ में प्रार्थनाएं की जाती हैं तथा झंडे फहराए जाते हैं। वैशाख दिवस एक अन्य त्यौहार है जो चंद्र कैलेंडर के अनुसार चौथे महीने में मनाया जाता है, जो बुद्ध के संबोधि प्राप्ति का प्रतीक है। तोरग्या तीन दिनों तक मनाया जाने वाला एक अन्य त्यौहार, जो चंद्र कैलेंडर के 11वें महीने में मनाया जाता है और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। द्रुक्पा त्से-शी, चन्द्र कैलेंडर के अनुसार छठे महीने में मनाया जाता है, जब बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था जबकि ल्हाबाब दुचेन बुद्ध के शाक्यमुनि के रूप में अवतार का प्रतीक है और 9वें महीने में मनाया जाता है।

उर्गेल्लिंग मठ

यह छठे दलाई लामा का जन्म स्थान है और पूर्वोत्तर राज्य, अरुणाचल प्रदेश में शांत तवांग शहर के दक्षिण में लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मठ विशाल हिमालय और मनोहर तवांग-चु घाटी से घिरा हुआ है। इसके आधार का 15वीं शताब्दी में पता चला जब 1489 ई. के आसपास उर्गेन संगपो द्वारा इसे एक बौद्ध आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में स्थापित किया गया था।

यह मठ उन लामाओं और भिक्षुओं का घर है जो लामावादी परंपरा का अनुसरण करते हैं। मठ 1683 ई. से बौद्धों के लिए एक पवित्र स्थान बन गया, जिस वर्ष छठे दलाई लामा नवांग ग्यामतो का उर्गेल्लिंग के लामा ताशि-तेनजिन (पिता) और बेखर की त्सेवांग ल्हामो (माता) के घर जन्म हुआ था। 1699 ई. में सेंग्ये ग्यामत्सो द्वारा मठ का जीर्णोद्धार और विस्तार किया गया। अब इसकी पुनः निर्मित संरचना में दो मंजिला मुख्य मंदिर, आठ स्तंभों सहित एक सभा भवन, चार स्तंभों सहित एक वेदी कक्ष, दो स्तंभों सहित संरक्षक का मंदिर, छठे दलाई लामा के लिए एक आवासीय कक्ष, तांत्रिक अनुष्ठानों के अभ्यास के लिए एक मंदिर, कांग्यूर कक्ष और लामाओं और भिक्षुओं के लिए 20 आवासीय कक्षों सहित एक प्रांगण शामिल है।

लेकिन मठ के गौरवशाली दिन शीघ्र ही 1706 ई. में समाप्त हो गए जब छठे दलाई लामा को लजांग खान ने पदच्युत कर दिया था और बाद में 1714 ई. में उसकी सेना द्वारा मठ को नष्ट कर दिया गया। इस आक्रमण ने मठ को विरान कर दिया और इसके धर्मग्रन्थों, मूर्तियों एवं पवित्र वस्तुओं की निधि (कोष) के सभी अधिकार तवांग मठ को दे दिए गए। इतने सारे उतार-चढ़ाव से गुजरने के बाद, आज भी उर्गेल्लिंग मठ में एक मंदिर है और भिक्षुओं के कुछ आश्रय स्थल हैं जो यहाँ सादा जीवन व्यतीत करते हैं और ध्यान एवं बौद्ध अनुष्ठानों का अभ्यास करते हैं।

तवांग

यह मोनपा जनजाति की खूबसूरत भूमि है। विशाल हिमालय पर्वत, शांत वातावरण, सुन्दर झरनों, सुनसान गाँवों, मनोहर झीलों और सुन्दर मठों के आकर्षक दृश्य सम्मोहन पैदा

करते हैं। तवांग शहर का नाम प्रसिद्ध तवांग मठ के कारण पड़ा। यह पर्यटकों द्वारा सबसे अधिक देखी जाने वाली जगहो में से एक है जो आसानी से इस स्थान की संस्कृति, परंपरा और सुन्दरता से प्यार कर बैठते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

तवांग मठ- 400 वर्ष पुराना तवांग मठ अपने चारो ओर एक मध्यकालीन आभा को संभाले हुए है। अरुणाचल प्रदेश में महायान की लामावादी परंपरा का केन्द्र है। यह हिमालय के बीच तवांग जिले में तवांग-चू घाटी के सामने स्थित है। तवांग मठ 300 से अधिक भिक्षुओं का घर है और क्षेत्र में लोगों के लिए धर्म एवं आध्यात्मिकता का एक प्रमुख केन्द्र है।

रिग्याल्लिंग मठ- यह हरे-भरे वृक्षो एवं तवांग जिले के शांत वातावरण के बीच स्थित है। यह ध्यान एवं आत्म् की खोज के उपयुक्त स्थान है।

त्यौहार

उर्गेल्लिंग मठ लोसर और तोरग्या जैसे कई त्यौहार मनाता है जो न केवल बौद्ध कैलेंडर में महत्त्वपूर्ण दिनों के प्रतीक हैं, बल्कि उसी समय में लोगों को उनकी संस्कृति, परंपरा और सबसे महत्त्वपूर्ण उन्हें भाईचारे के साथ एकत्रित होने और उत्सव मनाने का सुनहरा अवसर प्रदान करते हैं।

मार्ग

वायुमार्ग- तवांग से उर्गेल्लिंग मठ तक पहुँचने के लिए निकटतम हवाई अड्डा 370 किलोमीटर दूर असम के तेजपुर में स्थित है, जो दो साप्ताहिक उड़ानों द्वारा कलकत्ता से सीधे जुड़ा है। अन्य विकल्प 560 किलोमीटर दूर असम में गुवाहाटी के लिए उड़ान भरना है जो देश के प्रमुख शहरों से दैनिक उड़ानों द्वारा जुड़ा हुआ है।

रेलमार्ग- निकटतम रेलवे जंक्शन असम के गुवाहाटी शहर (560 किलोमीटर) में स्थित है जो राजधानी एक्सप्रेस एवं अन्य ट्रेनों द्वारा देश के प्रमुख शहरों जैसे- दिल्ली, कलकत्ता एवं मुम्बई से जुड़ा हुआ है।

सड़कमार्ग- तवांग में स्थित उर्गेल्लिंग मठ तक बोमडिला, तेजपुर या गुवाहाटी में से किसी एक स्थान से राज्य परिवहन या निजी बस या जीप लेकर सीला राजमार्ग से होकर पहुँचा जा सकता है।

अध्याय-6

बौद्ध स्मारक

मठों के अलावा, भारत में अनेक बौद्ध स्मारक हैं जिन्हें आपको बौद्ध यात्रा के दौरान अवश्य देखना चाहिए। स्मारकों में शैलकर्त गुफा, स्तूप, विहार, चैत्य, पुरातात्त्विक संग्रहालय आदि शामिल हैं। इन स्मारकों को देखने से आपको इस बात की बहुत अच्छी जानकारी हो जाएगी कि उस क्षेत्र में बौद्ध धर्म कैसे फैला और कैसे इसने स्थानीय लोगों के जीवन पर अपनी छाप छोड़ी। इसके अलावा इन स्मारकों की वास्तुकला, नक्काशी, बौद्ध प्रतिमाएँ, अवशेष, चित्रकारी आदि बहुत आकर्षक हैं।

बौद्ध स्मारकों पर आधारित यह खंड आपको विभिन्न बौद्ध स्मारकों के विषय में जानकारी प्रदान करता है, जो देश के भिन्न-भिन्न भागों की शोभा बढ़ाते हैं। इस भाग में आपको स्मारकों और उनकी वास्तुकला, आधिपत्य, स्थान, मार्ग और यात्रा के लिए सबसे उपयुक्त समय से संबंधित जानकारी भी मिलेगी। इसलिए, इस खंड में दी गई जानकारी के माध्यम से यात्रा करें और किसी एक स्मारक को चुने जो आपको यात्रा के लिए आकर्षित करता है। इस खंड में दी गई जानकारी आपका हर कदम पर मार्गदर्शन करेगी।

64 योगिनी मंदिर, हीरापुर (ओडिसा)

64 योगिनी या महामाया मंदिर परिसर ओडिसा की राजधानी भुवनेश्वर के हीरापुर में स्थित है। 64 योगिनी मंदिर, देवी के रहस्यवादी रूप का प्रतीक है। मंदिर ओडिसा की धार्मिक प्रथाओं में स्त्री शक्ति की भूमिका को दर्शाता है। महामाया मंदिर की प्रमुख एक देवी है, जो सिंदूर और लाल वस्त्र धारण किए हुए है जबकि अन्य देवियां अलंकृत कमरबंद सहित लहंगा पहने हुए हैं। सभी 64 योगिनियों को हार, माला, बाजूबंद, चूड़ियां, पायल, झुमके और अन्य आभूषण पहने हुए दर्शाया गया है। इसी तरह, मंदिर की कुछ योगनियों को धनुष और तीर सहित शिकारी के रूप में दर्शाया गया है जबकि अन्य को दो पहियों पर संतुलन बनाते या ढोल बजाते हुए दर्शाया गया है। भारत के सबसे छोटे योगिनी मंदिर की इन देवियों को हीरापुर के स्थानीय लोग आज भी पूजते हैं।

मंदिर की संरचना

हीरापुर के 64 योगिनी मंदिर को 9वीं शताब्दी में ओडिसा के भौम और सोमवंशी शासकों ने बनवाया गया था, जो मंदिर की विशिष्ट वास्तुकला एवं मूर्तिकला शैली को दर्शाता है। चर्च जैसी इमारत 8 फीट ऊँची है, जिसका व्यास 30 फीट और गोलाकार दीवार 2 मीटर ऊँची है। मंदिर में योगिनियों की प्रतिमाओं को उत्तम ग्रे क्लोराइट पत्थर से तराश कर बनाया गया है। मंदिर की भीतरी दीवारों में 60 योगिनियों की मूर्तियों सहित 64 आलें हैं और 8 आलें नवनिर्मित छोटे से केन्द्रीय मंडप में हैं। इन 8 आलों में से 4 में शेष योगिनियों की मूर्तियाँ हैं जबकि अन्य 4 में भगवान शिव की मूर्तियाँ हैं। योगिनियों के मुख को मधुर मुस्कान के साथ दर्शाया गया है।

आसपास के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल

धौली- यह भुवनेश्वर से 8 किलोमीटर दूर है और अपने बौद्ध स्मारकों जैसे- गुफाओं, मंदिरों और मठों के लिए प्रसिद्ध है। वह धौली था जहाँ कलिंग के भीषण युद्ध ने सम्राट अशोक के हृदय को परिवर्तित कर दिया और वे बौद्ध बन गए तथा बौद्ध धर्म को संरक्षण देकर, इसके प्रसार में योगदान दिया। धौली का प्रसिद्ध शिलालेख हाथी की प्रतिमा है जो ओडिसा में बौद्ध धर्म की लोकप्रियता को दर्शाता है।

मार्ग

हीरापुर, भुवनेश्वर से 15 किलोमीटर दूर है और वायुमार्ग, रेलमार्ग एवं सड़कमार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। भुवनेश्वर कलकत्ता, दिल्ली, चेन्नई, मुम्बई जैसे अन्य शहरों से नियमित उड़ानों द्वारा जुड़ा हुआ है। भुवनेश्वर रेलमार्ग द्वारा भी अन्य प्रमुख भारतीय शहरों से सीधे जुड़ा हुआ है। सड़कमार्ग इसे चिल्का, कटक, कोणार्क, पारादीप, पुरी, राउरकेला, संबलपुर और अन्य स्थानों से जोड़ता है। भुवनेश्वर से हीरापुर सड़कमार्ग द्वारा भी पहुँचा जा सकता है।

उदयगिरि बौद्ध परिसर

उदयगिरि की बौद्ध धरोहर को देखना न भूलें। उदयगिरि एक पहाड़ी के तल पर स्थित है। यह रत्नागिरि और ललितगिरि के साथ राज्य के तीन प्रमुख बौद्ध आकषर्णों का ढाँचा है। यह पहाड़ी उदयगिरि बौद्ध परिसर को एक अत्यंत सुन्दर पृष्ठभूमि प्रदान करती है।

उदयगिरि बौद्ध परिसर का इतिहास अधिक ज्ञात नहीं है। हालांकि, यह सुनिश्चित है कि यह रत्नागिरि या ललितगिरि जितना पुराना नहीं है। संभवतः यह 7वीं-12वीं शताब्दी के बीच फला-फूला और मौजूद था। हाल ही में किए गए उत्खनन कार्य ने कई बौद्ध खजानों को उजागर किया है। यहाँ से ईंटों के एक बड़े विहार सहित कई बौद्ध मूर्तियों को खोदकर बाहर निकाला गया है। एक सीढ़ीदार कुएँ और शैलकर्त्त मूर्तियों के अतिरिक्त, ईंटों का एक अन्य विहार है जिसकी अभी तक खुदाई नहीं हुई है।

उदयगिरि बौद्ध परिसर में अभी भी उत्खनन का कार्य चल रहा है। यह एक बड़ा क्षेत्र है जिसकी अभी भी खुदाई होनी बाकी है। यह अपने पर्यटकों को रोमांच और प्रत्याशा से मंत्रमुग्ध करता है। वे जानना चाहते हैं कि इस स्थल के नीचे क्या है? इसका इतिहास क्या है? जो स्थल की खुदाई से किसी समय प्रकट होगा।

स्थल के विषय में यह तथ्य भी रोचक है कि रत्नागिरि के बहुत करीब होते हुए भी उदयगिरि से खुदाई के दौरान वज्रयान मूर्तियाँ प्रकट नहीं हुईं। साहसिक उत्साही लोगों के लिए पीछे की पहाड़ी पर चढ़ना एक अतिरिक्त आकर्षण है।

अन्य बौद्ध आकर्षण

रत्नागिरि और ललितगिरि के बौद्ध स्मारक बहुत पास हैं और उदयगिरि बौद्ध परिसर की यात्रा के दौरान देखे जा सकते हैं।

मार्ग

उदयगिरि बौद्ध परिसर ओडिसा के जाजपुर जिले में स्थित है और यहाँ भुवनेश्वर या कटक को आधार बनाकर पहुँचा जा सकता है। भुवनेश्वर में एक घरेलू हवाई अड्डा है और यह दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, विशाखापट्टनम, नागपुर और हैदराबाद जैसे शहरों से जुड़ा हुआ है। यह शहर दिल्ली, कोलकाता, गुवाहाटी, चेन्नई, मुम्बई, हैदराबाद, बैंगलोर और थिरूवंतपुरम सहित देश के सभी महत्त्वपूर्ण स्थलों से फास्ट और सुपरफास्ट ट्रेनों से भी

जुड़ा हुआ है। भुवनेश्वर से उदयगिरि बौद्ध परिसर कार, टैक्सी और ऑटोरिक्शा से भी पहुँचा जा सकता है।

रत्नागिरि बौद्ध परिसर

यह ओडिसा के प्रसिद्ध बौद्ध स्थलों में से एक है। रत्नागिरि का शाब्दिक अर्थ है- रत्न की गिरि (पहाड़ी)। यहाँ किए गए उत्खनन कार्य ने दो बड़े विहारों, एक बड़े स्तूप, बौद्ध मंदिरों, मूर्तियों और कई मन्नत स्तूपों को प्रकट किया है। दो मठों में से बड़े में 60 स्तम्भ और प्रवेश द्वार अलंकृत हैं।

यहाँ से निकले बौद्ध खजाने में बुद्ध की कांस्य और पत्थर की मूर्तियों के साथ-साथ, बोधिसत्त्वों की अनेक मूर्तियाँ भी शामिल हैं। बुद्ध की ध्यान मुद्रा वाली विशाल प्रतिमा का विशेष महत्त्व है जो पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित है। स्थल के उत्खनन से प्राप्त अवशेषों को एक संग्रहालय सुरक्षा प्रदान करता है और प्रदर्शित करता है।

खुदाई का कार्य, स्थल को छठी शताब्दी के गुप्तकाल से जोड़ता है। तब यह बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था और 12वीं शताब्दी तक समृद्ध रहा। ह्वेनसांग ने अपने यात्रावृत्तांत में पुष्पगिरि विश्वविद्यालय का उल्लेख किया है जो रत्नागिरि में स्थित था। प्रारंभिक काल में यहाँ महायान फला-फूला। हालांकि, 8वीं-9वीं शताब्दी तक वज्रयान अधिक प्रभावशाली हो गया।

अन्य बौद्ध आकर्षण

ललितगिरि और उदयगिरि बौद्ध स्थल बहुत करीब हैं और रत्नागिरि की यात्रा के दौरान वहाँ अवश्य जाना चाहिए। कटक से ललितगिरि 55 किलोमीटर और उदयगिरि 60 किलोमीटर दूर है।

मार्ग

रत्नागिरि, कटक से 70 किलोमीटर और भुवनेश्वर से 90 किलोमीटर दूर ओडिसा के जाजपुर जिले में स्थित है। निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर में स्थित है। यहाँ से उड़ानें दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, मुम्बई, हैदराबाद, विशाखापट्टनम, बैंगलोर और थिरुवंतपुरम जैसे शहरों से जुड़ी हुई हैं। रत्नागिरि से निकटतम रेलवे स्टेशन कटक में स्थित है। यहाँ से ट्रेनें

देश के प्रमुख शहरों से जुड़ी हुई हैं। बसें कटक को राज्य के सभी प्रमुख शहरों से जोड़ती हैं। कटक या भुवनेश्वर से आप रत्नागिरि पहुँचने के लिए बस या टैक्सी भी ले सकते हैं।

ललितगिरि बौद्ध परिसर

उदयगिरि और रत्नागिरि के साथ मिलकर ललितगिरि डायमंड त्रिभुज का निर्माण करती है। तीनों पहाड़ियाँ बौद्ध परिसर के अवशेषों को संरक्षित करती हैं जो किसी समय ओडिसा राज्य में विकसित हुए थे। ललितगिरि की बलुआ पत्थर की पहाड़ियाँ प्रथम शताब्दी ई. की हैं और कटक में स्थित हैं।

यहाँ किए गए उत्खनन से सुन्दर नक्काशी सहित एक विहार के खंडहर, धनुष के आकार का मंदिर, चार विहार और एक विशाल स्तूप जमीन से निकले हैं। स्थल की खुदाई से निकले बौद्ध खजाने में बड़ी संख्या में सोने एवं चाँदी की वस्तुएँ, एक पत्थर का पात्र, मिट्टी के बर्तन, कुषाण वंश के ब्राह्मीलिपि के शिलालेख भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, बुद्ध की भूमिस्पर्श मुद्रा वाली एक बड़ी प्रतिमा प्राप्त हुई है।

यहाँ एक संग्रहालय आसपास की खुदाई से प्राप्त पुरावशेषों को प्रदर्शित करता है। इसमें कई महायान मूर्तियाँ हैं जिनमें बोधिसत्त्व,देवी तारा और जांभल की मूर्तियाँ शामिल हैं। इनमें से लगभग सभी प्रदर्शित मूर्तियों पर एक अभिलेख है। ललितगिरि में पाए गए अवशेष गांधार और मथुरा शिल्प कला की याद दिलाते हैं।

अन्य बौद्ध आकर्षण

रत्नागिरि और उदयगिरि बौद्ध स्थल बहुत पास हैं और इनकी यात्रा अवश्य करनी चाहिए।

मार्ग

ललितगिरि, कटक शहर से लगभग 55 किलोमीटर दूर है। भुवनेश्वर से लगभग 100 किलोमीटर दूर है। निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर है जो दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई, चेन्नई, नागपुर और हैदराबाद जैसे शहरों से जुड़ा हुआ है। कटक रेलवे जंक्शन सबसे नजदीक है। यहाँ से ट्रेनें नियमित रूप से दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, मुम्बई जैसे शहरों से जुड़ी हुई हैं। बसें भी कटक को भुवनेश्वर, कोणार्क, पुरी, कोलकाता सहित राज्य एवं देश के अन्य शहरों से

जोड़ती हैं। भुवनेश्वर और कटक के बीच अनेक बसें चलती हैं और यात्रा में लगभग 40 मिनट लगते हैं।

लंगुदी बौद्ध स्थल

यह ओडिसा के जाजपुर जिले में लंगुदी की पहाड़ियों के पास स्थित है और ओडिसा के सबसे प्रमुख बौद्ध स्थलों में से एक माना जाता है। जिसने सम्राट अशोक को बौद्ध धर्म के संरक्षक के रूप में परिवर्तित कर, एक नए बौद्ध युग का आरंभ किया था। 20वीं-21वीं शताब्दी में आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया द्वारा बौद्ध स्थलों की खुदाई की गई और लंगुदी के आसपास विहारों के अवशेष, बुद्ध की प्रतिमाएँ और अनेक स्तूप प्राप्त हुए जो भारत में बौद्ध धर्म के स्वर्णिम इतिहास को दर्शाते हैं।

लंगुदी

यह पहाड़ी का निचला क्षेत्र है जो जाजपुर जिले में महानदी डेल्टा के मैदानों तक फैला है और भुवनेश्वर से 90 किलोमीटर दूर है। लंगुदी उड़ीसा के उन कुछ स्थानों में से एक है जिसने प्राचीन एवं मध्यकालीन युग में बौद्ध धर्म के इतिहास में अपनी छाप छोड़ी है। लंगुदी कई प्रारंभिक मध्यकालीन बौद्ध मंदिरों और शैलकर्त्त स्तूपों का घर है तथा बौद्ध धर्म के प्रमुख संप्रदायों का अच्छी तरह से संरक्षित क्षेत्र है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

शैलकर्त्त स्तूप- शैलकर्त्त स्तूप संख्या में 34 हैं जिनकी लंगुदी पहाड़ी की उत्तरी दिशा से खुदाई की गई। ये भारत की आरंभिक बौद्ध कला का अद्वितीय उदाहरण हैं जिनमें एक बेलनाकार गुम्बद, एक बड़ा ढोल तथा एक आयताकार हर्मिका शामिल हैं।

बुद्ध की प्रतिमा- यहाँ बुद्ध की समाधि मुद्रा में एक प्रतिमा है, जिसमें उन्हें मधुर मुस्कान के साथ चित्रित किया गया है जो बुद्ध की दुर्लभ शैलकर्त्त प्रतिमाओं में से एक है तथा 7वीं शताब्दी ई. की है।

लंगुदी पहाड़ी- यह दंतपुरा के पास स्थित है जो प्राचीन काल में कलिंग की राजधानी थी। इसमें बौद्ध अवशेषों के अद्वितीय भंडार हैं जैसे- विहार तथा गुफा।

देवियों की मूर्तियाँ- विभिन्न देवियों की शैलकर्त्त मूर्तियाँ हैं जैसे - देवी तारा जिनके मुख पर मंद मुस्कान के अलावा अस्त्र और आभूषण धारण किए हुए हैं। एक अन्य मूर्ति प्रज्ञापारमिता की है जिसके हाथ में कमल है जो स्पष्ट रूप से प्राचीन एवं मध्यकाल में देवी उपासना के महत्त्व को इंगित करती है। इन मूर्तियों और अन्य अवशेषों के अतिरिक्त, लंगुदी के आसपास कैमा जैसी शैलकर्त्त गुफाएँ हैं जो प्रारंभिक काल में ओडिसा में पूर्व-मठवासी संचलन को दर्शाती हैं।

मार्ग

लंगुदी तक पहुँचने के लिए कोई भी व्यक्ति 90 किलोमीटर दूर भुवनेश्वर से उड़ान भर सकता है। भुवनेश्वर से या तो सड़क या रेल मार्ग से गंतव्य तक पहुँचा जा सकता है। लंगुदी का निकटतम रेलवे स्टेशन 35 किलोमीटर दूर केसिंगा में स्थित है, जो दक्षिण-पूर्वी रेलवे जंक्शन पर है। जहाँ तक सड़कमार्ग का सवाल है, तो निकटतम शहर भुवनेश्वर (90 किलोमिटर) और कटक (92 किलोमीटर) या जराका तथा चंड़ीखोल से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 5 से लंगुदी आसानी से पहुँचा जा सकता है।

धौली के स्मारक

आपने सम्राट अशोक की कहानी तो सुनी होगी जो युद्ध के विनाश से इतने अधिक दुखी हो गए थे कि उन्होंने बौद्ध धर्म की आध्यात्मिक शांति से प्रभावित होकर हिंसा को त्याग दिया था। हालांकि, वह वास्तविक स्थान जहाँ इस महान सम्राट का हृदय परिवर्तन हुआ था, वह बहुत से लोगों को ज्ञात नहीं है। यह स्थान एक छोटे से गाँव धौली के आसपास का क्षेत्र है जो भुवनेश्वर से 8 किलोमीटर से दूर है।

कलिंग का भीषण युद्ध धौली के आसपास लड़ा गया और आज यह भारत में सबसे अधिक देखे जाने बौद्ध स्थलों में से एक है। धौली के स्मारकों को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग पंक्ति बनाकर आगे बढ़ते हैं। गाँव के निकट एक दूसरे के समानांतर दिखने वाली छोटी पहाड़ी की दो छोटी श्रेणियों से घिरे हुए हैं।

अशोक के शिलालेख

अशोक के शिलालेख धौली के प्रमुख बौद्ध आकर्षण हैं। ये शिलालेख दक्षिणी पर्वतमाला के उतरी फलक पर हैं और मुख्य रूप से स्थानीय शासकों को सौम्यता और न्याय से शासन करने के निर्देश देते हैं। शिलालेख पर राजाज्ञा का अर्थ है-

"ये मेरे निर्देश हैं। आप हजारों जीवित प्राणियों के प्रभारी हैं। आपको प्राणियों का स्नेह प्राप्त करना चाहिए। सभी प्राणी मेरे बच्चे हैं और जैसे कि मैं अपने बच्चों के लिए इच्छा करता हूँ कि वे इस दुनिया में और आगे, दोनों में कल्याण और खुशी प्राप्त करें, वही मैं सभी प्राणियों से इच्छा रखता हूँ।"

शिलालेख पहाड़ी के ऊपर स्थित है जिसके दाहिनी ओर एक हाथी के अग्रभाग की प्रतिमा है। प्रतिमा को एक चट्टान से तराश कर बनाया गया है और इसे व्यापक रूप में भारत की सबसे पुरानी मूर्तियों में से एक माना जाता है। बौद्ध धर्म में हाथी प्रायः बुद्ध के साथ या तो एक ऐसे रूप में जुड़े हुए हैं, जिसमें उन्होंने अपनी मां के गर्भ में प्रवेश किया था या फिर धार्मिक प्रतीक के रूप में जुड़े हुए हैं। इसलिए, यहाँ हाथी की मूर्ति श्रद्धा की वस्तु है। हाथी की यह मूर्ति भी पर्यटकों का ध्यान शिलालेख की ओर आकर्षित करने में सहायता करती है।

शांति स्तूप, धौली

जब राजगीर के शांति स्तूप का उद्घाटन किया गया था तो धौली से भी इसी तरह के स्तूप के निर्माण का सुझाव आया। सुझाव स्वीकृत किया गया और सन् 1971 में कलिंग निप्पॉन बौद्ध संघ के निरीक्षण में धौली में स्तूप का निर्माण कार्य शुरू हुआ। संघ का नेतृत्व जापान के निप्पोज़ेन मायोहोजी के संस्थापक गुरुजी फ़ूजी ने किया था। शांति स्तूप पहाड़ी के ऊपर स्थित है जिसमें बुद्ध की कई प्रतिमाएँ और उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं के चित्र शामिल हैं। आज स्तूप पर्यटकों के बीच इतना अधिक लोकप्रिय है कि यह लोकप्रियता के मामले में अशोक के शिलालेखों से आगे निकल गया है। यहाँ से पर्यटक धान के खेतों से गुजरती हुई दया नदी के अद्भुत दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। शांति स्तूप के अलावा, सद्धर्म नामक एक मठ है जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। यहाँ के अन्य आकर्षणों में कई छोटी-छोटी शैलकर्त्त गुफाएँ और भगवान विष्णु को समर्पित धवलेश्वर मंदिर शामिल हैं।

मार्ग

धौली एक छोटा सा गाँव है जो भारत के पूर्वी राज्य ओडिसा में दया नदी के तट पर स्थित है। धौली पहुँचने से पहले आपको भुवनेश्वर पहुँचना होगा। भुवनेश्वर में एक घरेलू हवाई अड्डा है जो भारत के प्रमुख शहरों-दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और चेन्नई के अलावा कई अन्य शहरों से भी जुड़ा हुआ है। भुवनेश्वर रेलवे जंक्शन देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, यह कोरोमंडल एक्सप्रेस द्वारा कोलकाता से, नीलांचल एक्सप्रेस और पुरी एक्सप्रेस द्वारा दिल्ली से और कोणार्क एक्सप्रेस द्वारा मुम्बई से जुड़ा हुआ है। भुवनेश्वर सड़क मार्ग से भी सुगम्य है। कोलकाता से राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 6 और फिर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 5 भुवनेश्वर की ओर जाता है। यह राज्य परिवहन निगम की बसों द्वारा राज्य के अन्य प्रमुख स्थलों से भी जुड़ा हुआ है।

बौद्ध स्थल, सिरपुर (छत्तीसगढ़)

सिरपुर में स्थित बौद्ध मठ आठवीं शताब्दी ई. का है और भारत में सबसे बड़े और महत्त्वपूर्ण मठों में से एक था, शायद नालंदा से भी अधिक महत्त्वपूर्ण। स्थल पर हुए उत्खनन कार्य से अनेक अवशेष प्राप्त हुए हैं। इसके अलावा, नौ कक्षों के एक विशेष क्षेत्र की भी खुदाई की गई जिसकी आठ सीढियाँ कक्षों की तरफ जाती हैं।

ऐसा माना जाता है कि महाशिवगुप्त बालार्जुन द्वारा निर्मित मठ में हरीतिका नामक एक स्त्री रहती थी। जो प्रायः शिशुओं का अपहरण कर, उनकी हत्या कर देती थी। ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध ने अन्य माताओं की पीड़ा को महसूस कराने के लिए उसके बच्चे को चुरा लिया था। इस घटना ने उसका हृदय परिवर्तित कर दिया और वह भिक्षुणी बन गई। हरीतिका की मूर्ति भी प्राचीन भारत में देवी भक्ति की प्रसिद्धि को दर्शाती है।

सिरपुर

यह रायपुर से 78 किलोमीटर दूर है और भारत का एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध स्थल है। स्थल छठी से दसवीं शताब्दी ई. के दौरान बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केन्द्र था। सातवीं शताब्दी ई. में ह्वेनसांग ने इस स्थान की यात्रा की थी और अपने यात्रावृत्तांत में मध्य क्षेत्र में बौद्ध धर्म के स्तंभ के रूप में शहर का उल्लेख किया है। आधुनिक सिरपुर में प्राचीन एवं मध्ययुगीन बौद्ध कला के अवशेष शामिल हैं।

आसपास के अन्य आकर्षण

लक्ष्मण मंदिर- यह मंदिर राजा बालार्जुन की माता वासता द्वारा स्थापित किया गया जो भगवान विष्णु को समर्पित है। मंदिर उत्कृष्ट मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला से समृद्ध है और आज भी हिन्दुओं के लिए एक पूजनीय स्थल है।

हीरापुर संग्रहालय- यह लक्ष्मण मंदिर के पास स्थित है। इसमें बौद्ध, हिन्दू, जैन आदि धर्मों की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली मूर्तियों का एक दुर्लभ संग्रह शामिल है।

मार्ग

सिरपुर, रायपुर से 78 किलोमीटर है। वायुमार्ग से इस स्थान तक पहुँचने के लिए कोई भी व्यक्ति रायपुर से घरेलू उड़ान भर सकता है, जहाँ से सिरपुर की दूरी या तो रेलमार्ग या सड़कमार्ग द्वारा तय की जा सकती है। निकटतम रेलवे जंक्शन 29 किलोमीटर दूर महासमुंद में स्थित है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 6 रायपुर से सिरपुर को जोड़ता है और बसों का एक अच्छा नेटवर्क इन दोनों स्थानों को संबलपुर मार्ग से जोड़ता है।

भरहुत स्तूप, मध्य प्रदेश

भरहुत स्तूप को सम्राट अशोक ने बनवाया था, जो अपने जीवन के अंतिम वर्षों में बौद्ध बन गए थे। यह बौद्ध धर्म के साथ मौर्यकालीन वास्तुकला के संबंध का प्रतीक है। इसका निर्माण तीसरी शताब्दी ई.पू. में किया गया था और बाद में शुंग शासकों द्वारा पुनरुद्धार का कार्य किया गया जिन्होंने दूसरी शताब्दी ई.पू. में अपनी कला को भी जोड़ा। भरहुत स्तूप में बुद्ध के पुनर्जन्म से संबंधित जातक कथाएँ चित्रित हैं जिनमें उन्हें बोधिवृक्ष, धम्मपद, धर्मचक्र आदि के रूप में दर्शाया गया है। यह आरंभिक बौद्ध कला का उद्भुत उदाहरण है। बौद्धों द्वारा इसकी निरंतर यात्राएँ की जाती हैं।

भरहुत

यह सतना जिले में एक छोटा सा गाँव है। भरहुत पहले रेवा रियासत का हिस्सा था। आज मुख्य रूप से स्तूपों के लिए जाना जाता है।

आसपास के अन्य स्थल

चित्रकूट- यह सतना से 80 किलोमीटर दूर है और भरहुत के नजदीक एक प्रमुख पर्यटक स्थल है। चित्रकूट कई मंदिरों का घर है और माना जाता है कि यहाँ भगवान राम, देवी सीता और उनके भाई लक्ष्मण ने अयोध्या से निर्वासन के बाद कई वर्ष व्यतीत किए थे।

मार्ग

भरहुत पहुँचने का सबसे अच्छा मार्ग सतना जिले से होकर जाता है, जहाँ भरहुत स्थित है। सतना और भरहुत के बीच की दूरी 14 किलोमीटर है, जिसे बस या टैक्सी द्वारा तय किया जा सकता है। सतना, मध्य प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण रेलवे स्टेशन है और मुम्बई-हावडा रेलमार्ग से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। सतना मैहर-अमरपाटन राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 7 और राज्य के छत्तरपुर-रेवा राजमार्ग पर स्थित है। लेकिन अगर कोई वायुमार्ग का विकल्प चुनता है तो निकटतम हवाई अड्डा सतना से 130 किलोमीटर दूर खजुराहो में स्थित है।

कुषाण बौद्ध स्थल, तक्षशिला

कुषाण मूलरूप से चीन के निवासी थे। उन्होंने चौथी शताब्दी ई.पू. के बाद, पूरे गांधार क्षेत्र सहित समृद्ध शहर तक्षशिला पर विजय प्राप्त कर ली और 230 ई.पू. तक शासन किया। कुषाण उदार थे और उन्होंने बौद्ध धर्म के साथ-साथ भारतीय कला को भी प्रोत्साहित किया। तक्षशिला के स्वर्ण युग में कुषाणों ने न केवल बौद्ध धर्म का समर्थन किया बल्कि तक्षशिला के आसपास अनेक स्तूप और मठ भी बनवाए। यद्यपि 230 ई.पू. में दुर्भाग्य से, गांधार पर ससैनियन शासकों के आमक्रणों ने कुषाणों के शासन को समाप्त कर दिया। उन्होंने पूर्ववर्ती शासकों की तरह बौद्ध धर्म की रक्षा की, किन्तु बाद में पाँचवीं शताब्दी ई. में तक्षशिला पर हूणों के आमक्रणों ने तक्षशिला शहर के स्तूपों, मंदिरों एवं विहारों को नष्ट कर दिया।

तक्षशिला

प्राचीन तक्षशिला शहर ने दक्षिणी तथा मध्य एशिया में अपने रणनीतिक स्थान के कारण कई शासकों जैसे ग्रीक्स, सीथियन, पार्थियन और कुषाण को इस स्थान पर आक्रमण

करते और विजय प्राप्त करते देखा। यह पाकिस्तान में एक प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। यह मंदिरों, मठों एवं प्राचीन शहर के खंडहरों का घर है। तक्षशिला में आज भी पुरात्तत्वविद से लेकर पर्यटक तक सभी को देने के लिए बहुत कुछ है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

मोहरा मुरुदु मठ- किसी समय यह बौद्धों की ध्यान साधना का स्थल था, जो तक्षशिला में सर्कप और जुलियन के बीच एक छोटी सी घाटी में स्थित है। 20वीं शताब्दी के आरंभ में प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद सर जॉन मार्शल की देखरेख में स्थल की खुदाई के दौरान मठ का पता चला और उन्होंने खुलासा किया कि संभवतः खजाने की तलाश में बाहरी आक्रमणकारियों ने मठ को क्षतिग्रस्त किया। हालांकि, स्तूप का आधार अभी भी पूर्ण है और इसकी बौद्धों द्वारा पूजा की जाती है।

धर्मराजिक स्तूप- इसे सम्राट अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के एक भाग को स्थापित करने के लिए बनवाया था। इसको पाकिस्तान में सबसे प्राचीन बौद्ध स्मारक होने का गौरव प्राप्त है। हालांकि, आज यह स्तूप खंडहर है, किन्तु किसी समय इसके ऊपर चूने के प्लास्टर पर सोने की परत चढ़ी हुई थी और शीर्ष पर प्रस्तर का सात परत वाला छत्र था। चबूतरे पर स्थापित स्तूप 15 मीटर ऊँचा और 50 मीटर व्यास है। आज धर्मराजिक स्तूप और इसके चारों ओर मठ के अवशेष फैले हुए हैं। यह एक प्रमुख पर्यटक स्थल है।

आसपास के अन्य आकर्षण

भीर टीला- यह तक्षशिला में एक क़िलेबंद शहर का अवशेष है जो छठी शताब्दी ई. पू. से दूसरी शताब्दी ई. पू. के मध्य युग का है। शहर के अवशेषों से पता चलता है कि यह स्थान मध्य एशिया के व्यापार मार्ग पर स्थित था। इसलिए दक्षिण एशिया के मार्ग से आने वाले सभी विदेशियों के लिए एक शिकार था। पत्थर और लकड़ी से बने मकानों के साथ संकरी गलियों से पता चलता है कि यह स्थान सुनियोजित नहीं था। हालांकि, बस्ती के भीर टीले का अंत बैक्ट्रियन जाल में गिरने से हुआ और जिसके बाद एक नए शहर, सिरकप की स्थापना हुई।

सिरकप शहर- यह तक्षशिला (पाकिस्तान) का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। सिरकप, तक्षशिला का मुख्य शहर है जो दूसरी शताब्दी ई.पू. से तीसरी शताब्दी ई. के मध्य कई

राजवंशों जैसे- ग्रीक, सीथियन, पार्थियन और अंत में कुषाण के शासनकाल के दौरान फला-फूला और विकसित हुआ। सिरकप के अवशेषों जैसे- मंदिरों, स्तूपों, भवनों और महलों से पता चलता है कि शहर का नगर नियोजन यूनानी वास्तुकला से प्रभावित था और सुरक्षा की दृष्टि से सुनियोजित था।

दो मुखी चील का मंदिर- सिरकप शहर के खंडहरों में मुख्य सड़क के बीच दो मुखी चील का मंदिर स्थित है जिसमें एक पक्षी की उभारदार मूर्ति धनुष पकड़े हुए है। स्मारक बैक्ट्रियन यूनानी और भारतीय वास्तुकला का एक अद्वितीय मिश्रण है जिसका फलक यूनानी और प्रवेश द्वार भारतीय कला से अलंकृत है।

जैन स्तूप- इसके खंडहर दूसरी शताब्दी ई.पू. के हैं। यह दो मुखी चील के मंदिर के पास स्थित है।

जांडियाल मंदिर- यह एक पारसी संरचना है, जो जांडियाल में स्थित है और मध्य एशिया की भव्य संरचनाओं में से एक है। मंदिर के केन्द्र में एक गर्भगृह है जिसका द्वारमंडप चार आयनिक स्तंभों की सहायता से खड़ा है जो मूलतः यूनानी शैली में निर्मित है।

मार्ग

तक्षशिला, पाकिस्तान में स्थित है जो इस्लामाबाद से 35 किलोमीटर और रावलपिंडी से 32 किलोमीटर दूर है। यहाँ वायुमार्ग, रेलमार्ग एवं सड़कमार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। इस्लामाबाद हवाई अड्डे (अंतर्राष्ट्रीय) और रावलपिंडी हवाई अड्डे (घरेलू) से सभी प्रमुख शहरों तक पहुँचा जा सकता है। तक्षशिला में एक छोटा सा रेलवे स्टेशन है। इसलिए सबसे अच्छा सौदा रावलपिंडी के लिए ट्रेन लेना होगा। तक्षशिला बसों, कोचों एवं निजी टैक्सी से भी पहुँचा जा सकता है।

शैलकर्त्त मूर्तियाँ, भागलपुर

गुप्तकाल की उत्कृष्ट शैलकर्त्त मूर्तियाँ जो 5वीं-7वीं शताब्दी ई. के मध्य काल की हैं और विभिन्न देवताओं का चित्रण किया गया है जिनमें केवल बुद्ध की नहीं बल्कि अनेक हिन्दू और जैन देवता भी शामिल हैं। ये कलात्मक मूर्तियाँ बिहार के भागलपुर क्षेत्र में सुल्तानगंज और कहलगाँव के उत्खनन से प्राप्त हुई हैं।

भागलपुर

यह बिहार में स्थित है और राज्य के प्रमुख शहरों में से एक है। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि आधुनिक भागलपुर शहर 5वीं शताब्दी ई.पू. में अंग प्रदेश की राजधानी चंपावती थी, जो 16 महाजनपदों में से एक था। ऐसा माना जाता है कि सम्राट अशोक की माता सुभद्रांगी भागलपुर (चंपा) से संबंध रखती थी जिन्होंने अपने बेटे को इस प्रांत का शासक बनाया था। भगवान बुद्ध ने भी चम्पा का दौरा किया था जहाँ बड़ी संख्या में लोग उनके अनुयायी बन गए थे। बुद्ध ने यहाँ अनेक उपदेश दिए जिनमें से *चरियापिटक* एक है। यह वह स्थान है जहाँ भिक्षुओं ने बुद्ध को चरण पादुकाओं के उपयोग की अनुमति देने के लिए बाध्य किया था। चीनी यात्री ने भी अपने देश लौटते समय मार्ग में चम्पा का दौरा किया था और अपने यात्रा विवरण में अनेक बौद्ध स्थलों का उल्लेख किया है।

यहाँ तक कि पालों के शासनकाल में भी चंपावती की स्वर्णिम छवि आरंभिक मध्यकाल तक बनी रही, जिन्होंने कला और संस्कृति के क्षेत्र में अपने योगदान के साथ-साथ बौद्ध धर्म को भी समृद्ध किया। भागलपुर का गौरवशाली इतिहास 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक बना रहा और बाद में अंग्रेजों ने इसे एक छोटा सा प्रांत बना दिया था। किन्तु 1947 में अंग्रेजों के जाने के बाद इसका जीर्णोद्धार हुआ और आज यह एक जीवंत और समृद्ध 'रेशम के शहर' के रूप में प्रसिद्ध है।

आसपास के अन्य आकर्षण

भागलपुर और इसके आसपास के क्षेत्र जैसे- सुल्तानगंज, कहलगाँव, विक्रमशिला आदि इसके इतिहास को प्रकट करते हैं जो हाल के दिनों तक समय के काल से बचा हुआ है।

टिल्हाकोठी- यह भागलपुर में एक प्रसिद्ध स्थल है जो कभी ब्रिटिश अधिकारी क्लीवलैंड का आवास था।

शाहजंगी- यह भागलपुर में एक मंदिर है जो पहाड़ी पर स्थित है जिसके नीचे एक लंबी ईदगाह है।

सुल्तानगंज- यह भागलपुर से 28 किलोमीटर दूर स्थित है जो शैलकर्त्त मूर्तियों और गंगा नदी के तट पर स्थित बाबा अजगैबीनाथ मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पहले एक स्तूप

था जिसमें बुद्ध की 7 फीट ऊँची कांस्य प्रतिमा थी, जिसकी 1861 ई. में खुदाई की गई थी। अब यह प्रतिमा इंग्लैंड के बर्मिंघम शहर के संग्रहालय में रखी है।

मार्ग

परिवहन के सभी साधनों से भागलपुर पहुँचा जा सकता है। कोई भी व्यक्ति पटना से गंगा नदी नाव द्वारा पार कर भागलपुर पहुँच सकता है। भागलपुर हवाई अड्डा भी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। सड़कमार्ग भागलपुर पहुँचने के लिए एक अन्य साधन है क्योंकि शहर अच्छे सड़क नेटवर्क द्वारा दूसरे शहरों से जुड़ा हुआ है और गंगा नदी पर बने लम्बे पुल से मार्ग सुगम्य है। भागलपुर रेलवे स्टेशन भारत के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।

अमरावती स्तूप, आंध्र प्रदेश

यह स्तूप, महाचैत्य के नाम से भी विख्यात है। भारत में बौद्ध धर्म का सबसे बड़ा स्तूप (95 फीट ऊँचा) होने का गौरव प्राप्त है। स्तूप को दूसरी शताब्दी के दौरान बनाया गया था और इसकी खोज 1797 ई. में एक ब्रिटिश पुरातत्त्वविद कर्नल कॉलिन मैकेंजी ने की थी। पहले स्तूप चूना-पत्थर और सामान्य नक्काशी की एक साधारण संरचना थी लेकिन जब सातवाहन शासकों द्वारा पुनरुद्धार किया गया तो वास्तुकला का एक विख्यात स्मारक बन गया।

अमरावती

पूर्व मध्यकालीन युग में, यह सातवाहन शासनकाल के परवर्ती शासकों की राजधानी थी। यह कृष्णा नदी के तट पर स्थित है। अमरावती को अमरेश्वरम के रूप में भी जाना जाता है। यह प्राचीन बौद्ध अवशेषों का घर है जो इस स्थल को बौद्धों के लिए एक महत्त्वपूर्ण तीर्थ बनाते हैं। कई विद्वानों ने इस स्थान की पहचान धान्यकटक के रूप में भी की है जो अमरावती को कई तांत्रिक विद्याओं, विशेष रूप से कालचक्र की उत्पत्ति से जोड़ते हैं।

आसपास के अन्य आकर्षण

अमरावती में भारत के सबसे बड़े स्तूप अर्थात महाचैत्य के अलावा, अन्य पवित्र स्थल भी हैं जैसे- अमरेश्वर मंदिर, नागार्जुनकोंडा और धरणकोटा।

अमरेश्वर मंदिर- यह मंदिर भगवान अमरेश्वर को समर्पित है और अमरावती में एक प्रमुख स्थल है। मंदिर में एक विशाल लिंगम है जिसे भगवान शिव से संबंधित माना जाता है।

पोटाला- यह एक प्रमुख बौद्ध स्थल है जिसे अवलोकितेश्वर के निवास स्थान के रूप में जाना जाता है जो बोधिसत्त्व के दयालु अवतार हैं। लेकिन हमें इसका उल्लेख केवल शास्त्रों में मिलता है और इसके ठीक स्थान की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। हालांकि, इनके सही स्थान के बारे में अभी तक कोई सर्वसम्मति नहीं है।

नागार्जुकोंडा- यह अमरावती के पास स्थित है और महान भारतीय दार्शनिक नागार्जुन से संबंधित है जिन्होंने 150 ई. और 250 ई. के दौरान प्रज्ञापारमिता सूत्र के आधार पर माध्यमिक मत का प्रचार किया था। उनकी शिक्षाओं को महायान संप्रदाय के इतिहास में एक प्रमुख ऐतिहासिक घटना माना गया है।

धारणीकोटा- यह कालचक्र से संबंधित एक प्रमुख स्थल है जो तंत्रयान का एक अनुष्ठान है। यह माना जाता है कि बुद्ध ने अपने शिष्य आनंद को यहाँ तांत्रिक साधनाओं की शिक्षा दी थी।

मार्ग

अमरावती सड़कमार्ग से पहुँचा जा सकता है क्योंकि टैक्सी और बसें गुंटुर (32 किलोमीटर दूर) और राज्य के अन्य स्थानों से अमरावती के लिए उपलब्ध हैं। निकटतम रेलवे जंक्शन गुंटुर और विजयवाड़ा हैं। दोनों रेलवे स्टेशन आंध्र प्रदेश, दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता और बैंगलोर के सभी स्थानों से अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। यदि आप वायुमार्ग के विकल्प का चयन करते हैं तो निकटतम हवाई अड्डा विजयवाडा में स्थित है।

पितलखोरा की गुफाएँ, महाराष्ट्र

ये गुफाएँ सतमाला पहाड़ियों के ऊपर गौताला अभयारण्य में स्थित हैं। जो दूसरी शताब्दी ई.पू. से पहली शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। ये गुफाएँ, एलोरा की गुफाओं से 40 किलोमीटर और औरंगाबाद से 78 किलोमीटर दूर हैं तथा चैत्यों और विहारों का एक अद्वितीय सम्मिश्रण हैं। इन गुफाओं में मुख्य रूप से विहार शामिल हैं। ये गुफाएँ बौद्ध धर्म के आरंभिक थेरवाद संप्रदाय से संबंधित बड़ी संरचनाएं हैं।

औरंगाबाद

औरंगाबाद शहर का नाम मुगल बादशाह औरंगजेब के नाम के कारण पड़ा है। यह महाराष्ट्र में ख़ाम नदी के दाएं तट पर स्थित है। यह महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में से एक है। यह कई बौद्ध स्थलों जैसे- अंजता, एलोरा और पितलखोरा का प्रवेश द्वार है।

आसपास के अन्य आकर्षण

गौताला अभयारण्य- यह पितलखोरा की गुफाओं की यात्रा के दौरान एक प्रमुख गंतव्य स्थल है क्योंकि अभयारण्य के परिसर में ही गुफाएँ स्थित हैं। मनोहर अभयारण्य एक वर्णपाती जंगल है जो पशु-पक्षियों से भरा है जबकि एक झरने की उपस्थिति, इस स्थान को एक उत्तम पिकनिक स्थल बनाती है।

अंतुर क़िला- यह मध्यकालीन युग से संबंधित है और अभयारण्य के भीतर एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्मारक है।

मार्ग

पीतलखोरा पहुँचने के लिए सबसे अच्छा तरीका है कि आप पहले औरंगाबाद पहुँचें। यह औरंगाबाद से 78 किलोमीटर दूर है। औरंगाबाद, महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में से एक है और वायुमार्ग, रेलमार्ग एवं सड़कमार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। कोई भी व्यक्ति मुम्बई से अंतर्राष्ट्रीय उड़ानें भर सकता है जबकि औरंगाबाद हवाई अड्डे पर केवल घरेलू उड़ानों की सुविधा है। औरंगाबाद सीधे रेलमार्ग द्वारा मनमाड होकर भारत के प्रमुख शहरों जैसे- मुम्बई, सिकंदराबाद, नासिक एवं अन्य शहरों से जुड़ा हुआ है। एक अच्छा सड़क नेटवर्क भी औरंगाबाद को अन्य महत्त्वपूर्ण शहरों से जोड़ता है। औरंगाबाद से पीतलखोरा पहुँचने के लिए कोई भी व्यक्ति टैक्सी किराए पर ले सकता है।

बोधिवृक्ष, बिहार

यह मूल वृक्ष के पाँचवीं पीढ़ी का वृक्ष है जिसके नीचे सिद्धार्थ गौतम ने 9 वर्षों के संन्यासी जीवन के बाद 528 ई.पू. में निर्वाण प्राप्त किया था। यह बौद्धों के प्रमुख स्थलों में से एक है। इतिहास में वर्णित है कि अशोक की पुत्री संघमित्रा मूल बोधिवृक्ष का पौधा श्रीलंका के अनुराधापुरम ले गई थीं जिसका पौधा फिर बोधगया लाया गया और मूल वृक्ष के नष्ट

होने के बाद यहाँ लगाया गया। यह संपूर्ण संसार के बौद्ध धर्मावलंबियों की आस्था का केन्द्र है।

बोधगया

यह बौद्ध समुदाय के चार पवित्र स्थलों में से एक है। वह बोधगया था जिसने एक युवक को बुद्ध बनते देखा था। बोधगया अपने ज्ञानोदय के समय से ही बौद्धों, संघ और लामाओं के साथ-साथ, अन्य मतों के लोगों के लिए भी आस्था का एक जीवंत केन्द्र है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

चंक्रमण- यह भगवान बुद्ध के उन्नीस पदचिह्नों के रूप में चित्रित कमलों से सुसज्जित एक चबूतरा है जो महाबोधि मंदिर के सामानांतर उत्तर दिशा में स्थित है। इसे बुद्धपाद के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि बुद्ध ने संबोधि प्राप्ति के बाद दूसरे सप्ताह यहाँ पर ध्यान साधना की थी। इस स्थान पर अनिमेषलोचन स्तूप बनाया गया था जो चक्रमण के उत्तर में स्थित है।

महाबोधि मंदिर- इस मंदिर का महाबोधि नाम बुद्ध के कारण पड़ा और यह बौद्धों के लिए पूजनीय स्थल है। मंदिर भारतीय वास्तुकला का प्रतीक है। बोधिवृक्ष मंदिर के सामने स्थित है तथा ऐसा लगता है कि जैसे पवित्र स्थान पर श्रद्धा अर्पित कर रहा हो।

मार्ग

बोधगया में स्थित बोधिवृक्ष तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। यह पटना से 100 किलोमीटर दूर है। यहाँ रेलमार्ग, सड़कमार्ग या वायुमार्ग द्वारा कोई भी व्यक्ति आसानी से पहुँच सकता है। गया, बोधगया से 12 किलोमीटर दूर है और बोधगया के स्टेशन तक पहुँचने का मुख्य मार्ग है। यह वायुमार्ग द्वारा श्रीलंका एवं थाईलैंड जैसे बौद्ध देशों से जुड़ा हुआ है। गया में रेलवे जंक्शन भी है, जहाँ से भारत के अन्य शहरों के लिए रेल सेवाएं उपलब्ध हैं। गया और बोधगया दोनों भारत और नेपाल के प्रमुख शहरों से पटना और रांची के सड़क नेटवर्क द्वारा अच्छी तरह से जुड़े हुए हैं। बोधगया नियमित और निरंतर परिवहन सेवाओं द्वारा गया से जुड़ा हुआ है और 12 किलोमीटर की न्यूनतम दूरी आधे घंटे में तय करके पहुँचा जा सकता है।

शांति स्तूप, लेह

बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष के सम्मान और विश्व शांति के उद्देश्य से जापानी बौद्ध संघ ने वर्ष 1985 में शांति स्तूप स्थापित किया। तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा ने इस शांति स्मारक का उद्घाटन किया था।

स्तूप चांगस्पा में एक पहाड़ी के शार्ष पर स्थित है और सफेद रंग की एक सुन्दर गुंबद जैसी संरचना है। खड़ी सीढियाँ स्तूप तक जाती हैं जिसके चारों ओर एक चबूतरा है। इसके आसपास के शांत दृश्य बहुत मनोहर हैं। प्रशंसा करने और आनंद लेने के लिए लगभग पूरी लेह घाटी आपके सामने प्रकट है। उच्च और शुष्क रेगिस्तान के विपरीत सिंचाई से हरी-भरी लेह की घाटी एक अद्‌भुत शांति प्रदान करती है। घाटी आपके सामने सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सबसे अच्छे दृश्य प्रस्तुत करती है। पर्यटकों को सुबह 5 बजे से रात्रि 9 बजे के बीच स्तूप में जाने की अनुमति है। पर्यटकों के जलपान के लिए चोटी पर एक चाय की दुकान भी है।

लेह

यह लद्दाख की राजधानी है। लेह पर्यटकों के लिए एक मनोहर स्थल है, विशेष रूप से यदि वे बौद्ध धर्म और बौद्ध मठों को खोजने और आनंद लेने का इरादा रखते हैं। इस तरह एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल होने के नाते, यह स्पष्ट है कि लेह में खाने के साथ-साथ ठहरने के लिए भी कई स्थान हैं। लेह शहर के प्रत्येक दूसरे घर को गेस्ट हाउस में बदल दिया गया है ताकि यहाँ आने वाले पर्यटकों को आवास चुनने के लिए कई विकल्प मिल सकें। होटल विभिन्न प्रकार के भोजन प्रदान करते है जिनमें तिब्बती से लेकर यूरोपीय, कश्मीरी और इज़राइली व्यंजन तक शामिल हैं।

आसपास के बौद्ध आकर्षण

शेय महल और मठ- यह तिब्बती युग में लद्दाखी राजाओं की राजधानी थी। यहाँ का मुख्य आकर्षण नया महल है जिसमें बुद्ध की सोने की प्रतिमा है। हालांकि, पुरानी संरचना में शाक्यमुनि की प्रतिमा अधिक प्रभावशाली है।

नामग्याल त्समो गोम्पा- यह भव्य लेह महल के आगे स्थित है जिसे 1430 ई. में राजा ताशी नामग्याल ने नामग्याल त्समो चोटी पर बनवाया था। मठ के प्रमुख आकर्षणों में मैत्रेय बुद्ध की तीन मंजिला ऊँची ठोस सोने की मूर्ति, अवलोकितेश्वर और मंजुश्री की एक मंजिला ऊँची मूर्ति तथा कुछ प्राचीन पांडुलिपियां और भित्तिचित्र शमिल हैं जो पर्यटकों को अवश्य देखने चाहिए।

संकर मठ- इस मठ को स्काईबजे बकुला के प्रथम अवतार ने स्थापित किया था, जो स्पितुक मठ का प्रमुख भिक्षु था। संकर मठ, स्पितुक मठ की एक शाखा है। इसका प्रमुख आकर्षण बोधिसत्त्व अवलोकितेश्वर पद्मपाणि की प्रतिमा है। इसके अतिरिक्त, यहाँ कई सोने की मूर्तियाँ, सोने की एक लघु मूर्ति और आकर्षक चित्र भी देखे जा सकते हैं। मठ लेह से कुछ ही किलोमीटर दूर है।

सोमा गोंपा- यह लेह के मुख्य बाजार के मार्ग पर भारतीय स्टेट बैंक के सामने स्थित है। इसका निर्माण वर्ष 1957 में लद्दाख बौद्ध संघ द्वारा किया गया था। मठ सप्ताह के सातों दिन खुला रहता है। इसलिए कभी भी भ्रमण के लिए जा सकते हैं।

रतनगर, बिहार

यह महाबोधि मंदिर के पास एक छोटा-सा मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि यहाँ बुद्ध ने एक सप्ताह व्यतीत किया था और उनके शरीर से पाँच रंगों की तरंगें निकली थीं। यह स्थान कई मंदिरों और मठों का घर है तथा संपूर्ण संसार के बौद्धों के लिए एक तीर्थस्थल है।

बोधगया

यह सदियों से बुद्ध के ज्ञानोदय का स्थल है। 528 ई.पू. में बोधगया को एक ऐसे युवक पर ज्ञान का दिव्य प्रकाश बरसाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसने सत्य की खोज के लिए अपने आनंदपूर्ण जीवन और राजसी सुख-सुविधाओं को त्याग दिया था। आज यहाँ हजारों तीर्थयात्री बुद्ध के ज्ञानोदय की स्मृति में आते हैं।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

मठ- रतनगर और बोधगया में अनेक बौद्ध मठ और मंदिर हैं जैसे- चीनी, जापानी और तिब्बती मठ। जो प्रार्थना के अलावा ध्यान और अन्य क्रियाओं को भी आयोजित करते हैं।

मार्ग

रतनगर, बोधगया के पास स्थित है जहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। गया से कोई भी व्यक्ति उड़ान भर सकता है जो सभी प्रमुख भारतीय शहरों से जुड़ा हुआ है और कोलंबो तथा बैंकोक जैसे अंतर्राष्ट्रीय स्थानों के लिए सीधी उड़ाने हैं। गया, बोधगया से 12 किलोमीटर दूर है और यहाँ एक रेलवे स्टेशन भी है, जहाँ से भारत के प्रमुख शहरों के लिए रेल सेवाएं उपलब्ध हैं। सड़कमार्ग रतनगर पहुँचने का एक अन्य मार्ग है क्योंकि सड़कों का अच्छा नेटवर्क बोधगया को अन्य शहरों से जोड़ता है जैसे- गया और पटना।

नालंदा संग्रहालय, बिहार

सन् 1971 में स्थापित नालंदा संग्रहालय, नालंदा महाविहार के खंडहरों के सामने स्थित है। संग्रहालय में बौद्ध धर्म से संबंधित वस्तुओं का भंडार है। इसमें कांस्य प्रतिमाओं, ताम्रपत्रों, पांडुलिपियों, मिट्टी के पुराने बर्तनों, शिलालेखों, सिक्कों का एक दुर्लभ और सुंदर संग्रह है। संग्रहालय में दो टेराकोटा के बर्तनों सहित एक स्थान पर जले हुए चावल के दाने रखे हुए हैं जो 12 शताब्दी ई. के हैं। संग्रहालय शुक्रवार को बंद रहता है जबकि अन्य दिनों में पर्यटकों को सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक संग्रहालय देखने की अनुमति है।

नालंदा

नालंदा का शाब्दिक अर्थ है- वह स्थान जहाँ ज्ञान के क्षेत्र में अंत नहीं होता था। यह एक प्रमुख बौद्ध स्थल है। इसे 5वीं शताब्दी ई.पू. में स्थापित किया गया था और प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म का आधार स्तंभ था। 12वीं शताब्दी ई. में इसके पतन के साथ ही, भारत में बौद्ध धर्म का भी पतन हो गया।

आसपास के अन्य बौद्ध आकर्षण

नालंदा संग्रहालय के अतिरिक्त, नालंदा में कई आकर्षण हैं जैसे- नालंदा महाविहार के खंडहर, नव नालंदा महाविहार और ह्वेनसांग मेमोरियल हॉल।

मार्ग

नालंदा, दक्षिणी बिहार में स्थित है और यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। निकटतम हवाई हड्डा पटना में स्थित है जो नालंदा से 93 किलोमीटर दूर है। पटना हवाई अड्डे से घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार की उड़ाने भरी जा सकती हैं। पटना से कोई भी व्यक्ति रेलमार्ग या सड़कमार्ग द्वारा नालंदा पहुँच सकता है।

नालंदा से निकटतम रेलवे स्टेशन 38 किलोमीटर दूर बख़्तियारपुर में स्थित है। हालांकि, लूप लाइनें भी नालंदा और बख़्तियारपुर को जोड़ती हैं। अंत में, अगर कोई व्यक्ति सड़कमार्ग का विकल्प चुनना चाहता है तो अच्छी तरह से निर्मित राजमार्ग नालंदा को पटना, बोधगया तथा अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों से जोड़ते हैं।

धम्मेख स्तूप (सारनाथ), उत्तर प्रदेश

धम्मेख स्तूप को न केवल सारनाथ बल्कि पूरे विश्व में सबसे बड़ी और पवित्रतम बौद्ध संरचनाओं में से एक होने का सौभाग्य प्राप्त है। धम्मेख स्तूप 28.3 मीटर के व्यास के साथ 31.3 मीटर ऊँचा खड़ा है। यहाँ भगवान बुद्ध अपने पहले पाँच शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया था, जो पहले उनके साथ थे जब वे एक तपस्वी का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

सारनाथ

सारनाथ को बौद्ध धर्म के इतिहास में एक प्रमुख ऐतिहासिक घटना माना जाता है, क्योंकि यह वह प्रथम स्थल था जिसने 528 ई. पू. में भगवान बुद्ध के प्रथम उपदेश को सुना था। सारनाथ में बुद्ध की शिक्षाओं के कारण भिक्षु संघ की स्थापना हुई। सारनाथ अपने संग्रहालय, मंदिरों और मठों के कारण अन्य धर्म के लोगों को भी आकर्षित करता है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

सारनाथ संग्रहालय- यह संग्रहालय सिंह शीर्ष, बौद्ध पुरावशेषों, पांडुलिपियों एवं मूर्तियों की देखरेख करता है। यह सारनाथ का एक प्रमुख बौद्ध आकर्षण है।

मार्ग

धम्मेख स्तूप सारनाथ में स्थित है और वायुमार्ग, सड़कमार्ग एवं रेलमार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। निकटतम हवाई अड्डा वाराणसी के बाबतपुर में स्थित है, जो सारनाथ से सिर्फ 20 मिनट की दूरी पर है। बाबतपुर से आप या तो टैक्सी या ऑटोरिक्शा किराए पर ले सकते हैं या सारनाथ पहुँचने के लिए बस का उपयोग कर सकते हैं। यदि आप सारनाथ ट्रेन से जाना चाहते हैं तो निकटतम रेलवे स्टेशन 10 किलोमीटर दूर वाराणसी में है जो थोड़ी सी दूर है जिसे सड़कमार्ग द्वारा तय किया जा सकता है। सड़कमार्ग सारनाथ तक पहुँचने का एक अन्य मार्ग है क्योंकि यह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 29 द्वारा वाराणसी और गोरखपुर से जुड़ा हुआ है।

धर्मराजिक स्तूप, सारनाथ

यह सारनाथ में धम्मेख स्तूप से थोड़ी-सी दूरी पर स्थित है। मूल स्तूप वृत्ताकार आधार पर खड़ा था जिसे गुप्तकाल के दौरान परिवर्धित किया गया, फिर भारत पर बार-बार विदेशी आक्रमणों के कारण नष्ट हो गया और ब्रिटिश काल में पुनः निर्मित किया गया। समय के उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद, आज यह बौद्धों के प्रमुख पूजनीय स्मारकों में से एक है।

सारनाथ

बुद्ध ने प्रथम उपदेश के प्रतिपादन के लिए सारनाथ को चुना था जो उत्तर प्रदेश में स्थित है। बुद्ध द्वारा प्रतिपादित धर्मचक्र प्रवर्तन का स्रोत सारनाथ है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

धम्मेख स्तूप- यह सारनाथ में बुद्ध के पवित्र आसन को दर्शाता है और सबसे बड़ी एवं पवित्रतम बौद्ध संरचना है। स्तूप का आकार ऊँचाई में 31.3 मीटर और व्यास में 28.3

मीटर है जबकि इसका निचला भाग पत्थरों से तराशा गया है और पक्षियों, फूलों, पत्तियों तथा अन्य चित्रों से अलंकृत है।

मृगदाव उपवन- यह जैनियों के लिए एक पवित्र स्थल है क्योंकि यह 11वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ का जन्म स्थल है। यह बौद्धों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है क्योंकि निर्वाण प्राप्ति के बाद बुद्ध सबसे पहले बोधगया से सारनाथ गए थे।

मार्ग

सारनाथ, वाराणसी से 10 किलोमीटर दूर है और वायुमार्ग, सड़कमार्ग और रेलमार्ग द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। सारनाथ से निकटतम हवाई अड्डा वाराणसी में है जहाँ से कोई व्यक्ति टैक्सी या ऑटोरिक्शा किराए पर ले सकता है या सारनाथ पहुँचने के लिए 20 मिनट की छोटी सी यात्रा को तय करने के लिए बस की सवारी कर सकता है। कोई भी व्यक्ति वाराणसी के लिए ट्रेन ले सकता है जो रेल नेटवर्क द्वारा भारत के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है।

सारनाथ पुरातत्त्व संग्रहालय, उत्तर प्रदेश

यह संग्रहालय, सारनाथ की एक संपत्ति है जहाँ बुद्ध ने 528 ई.पू. में अपना पहला धर्मोपदेश दिया था। संग्रहालय मौर्य, गुप्त और कुषाण काल से संबंधित कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा, सारनाथ में मिली बुद्ध की सबसे प्राचीनतम प्रतिमा के साथ साथ हिंदु देवी-देवताओं की मूर्तियाँ संग्रहालय की अन्य कलाकृतियां हैं। किन्तु संग्रहालय का ताज अशोक का सिंह शीर्ष स्तंभ है जिसके शीर्ष पर सिंह की चतुर्मुखी प्रतिमा है। सिंह शीर्ष 2.31 मीटर ऊँचा है जिसका शेर, हाथी, घोड़ा और बैल प्रतिनिधित्व करते हैं। शेर बहादुरी का प्रतीक है। हाथी रानी महामाया के स्वप्न का प्रतीक है जो भगवान बुद्ध की माता ने उनके जन्म के पूर्व देखा था। बैल वृष राशि के प्रतीक को दर्शाता है जिस महीने में सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ था। घोड़ा अश्व कंथक का प्रतीक है जिसका बुद्ध ने राज्य से बाहर जाने के लिए उपयोग किया था, जब उन्होंने पारिवारिक जीवन त्यागा था। कभी बुद्ध के प्रथम उपदेश स्थल के रूप में उपयोग किया जाने वाला सिंह शीर्ष स्तंभ अब भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है। सारनाथ पुरातत्त्व संग्रहालय पर्यटकों के लिए प्रत्येक दिन सुबह 10 बजे से शाम 4:30 बजे तक खुलता है किन्तु शुक्रवार को बन्द रहता है।

सारनाथ

यहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था। यह वाराणसी से 10 किलोमीटर दूर है और बौद्ध संसार में अपने शिक्षा केन्द्रों के लिए प्रसिद्ध है। सारनाथ विहारों एवं स्तूपों के कारण एक प्रमुख बौद्ध स्थल है।

अन्य बौद्ध आकर्षण

श्रेयांसनाथ मंदिर- एक जैन मंदिर है जो 19वीं शताब्दी ई. का है और जैन समुदाय के लिए एक तीर्थस्थल है।

अभिमेषलोचन चैत्य, बोधगया

यह बोधिवृक्ष के पास स्थित है जहाँ बुद्ध संबोधि प्राप्ति करने के बाद खड़े हुए और बोधिवृक्ष को कृतज्ञता के साथ धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया। आज यह स्थान उपासकों के लिए एक प्रार्थना भवन से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

बोधगया

एक युवा बचपन से व्याकुल था कि उसने कष्टों के रूप में कुछ भी नहीं देखा। उसकी मनःस्थिति ने उसे सत्य की खोज के लिए सभी विलासताओं को छोड़ने के लिए इतना मजबूर कर दिया कि उसने नौ वर्ष तक एक संन्यासी जैसा जीवन व्यतीत किया। लेकिन कुछ भी उसे संतुष्ट न कर सका और एक दिन उसने तपस्वी जीवन त्याग दिया और एक ऐसे स्थान पर पहुँचा, जहाँ एक वृक्ष के नीचे उसने ध्यान साधना की और अन्त में स्वयं के अन्दर आत्मज्ञान का अलौकिक प्रकाश अनुभव किया। वह स्थान बोधगया था और युवा महात्मा बुद्ध थे। तब से बोधगया, बौद्ध समुदाय के लिए एक तीर्थस्थल बन गया। हालांकि, अक्सर अन्य धर्मों के लोगों द्वारा भी यहाँ की यात्राएँ की जाती हैं।

ईटानगर बौद्ध मंदिर, अरुणाचल प्रदेश

यह अरुणाचल प्रदेश में पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित है। मंदिर के पीले रंग की छत व्यापक रूप से तिब्बती प्रभाव को दर्शाती है। मंदिर के सामने एक स्तूप है जिसमें एक भिक्षु की मूर्ति है। पर्यटकों द्वारा अक्सर मंदिर का भ्रमण किया जाता है। मंदिर में एक वृक्ष है जिसे चौदहवें दलाई लामा ने लगाया था।

ईटानगर

यह अरुणाचल प्रदेश की राजधानी है जिसे सूर्योदय के पहाड़ों की भूमि के नाम जाना जाता है। यह समुद्र तल से 350 मीटर की ऊँचाई पर पहाड़ी के तलपर स्थित है। यह एक आधुनिक शहर है जो 14वीं-15वीं शताब्दी ई. से पहले विकसित नहीं था। आज ईटानगर जो भारत में उगते सूर्य की किरणों को गले लगाता है और पर्यटकों के समूह द्वारा अत्यधिक पसंद किया जाने वाला स्थान है।

अन्य आकर्षण

बौद्ध मंदिर के अतिरिक्त, ईटानगर के आसपास कई आकर्षण हैं जैसे- ईटा क़िला, बौद्ध मठ, जवाहरलाल नेहरू स्मारक संग्रहालय, गंगा सेखी झील और चिड़ियाघर।

गंगा सेखी झील- यह ईटानगर से केवल 6 किलोमीटर दूर है और मानव को प्रकृति का एक उपहार है। बाँस के वृक्षों और फर्न के पौधों से घिरा सघन जंगल और झील के दृश्य इसे एक उत्तम पिकनिक स्थल बनाते हैं।

जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल संग्रहालय- ईटानगर का राजकीय संग्रहालय, जिसे जहवाहरलाल नेहरू स्मारक संग्रहालय भी कहते हैं। अनेक पुरातात्त्विक कलाकृतियों, आभूषणों, टोकरी, औजारों और आदिवासियों की कई घरेलू वस्तुओं का केन्द्र है।

ईटा क़िला- यह क़िला मध्यकालीन युग से संबंधित है और ईटानगर के प्रमुख आकर्षणों में से एक है।

बोमडिला मठ- यह मठ और शिल्प केन्द्र विशाल हिमालय पर्वत के दृश्य प्रस्तुत करते हैं और ईटानगर के भ्रमण करने लायक स्थान हैं।

मार्ग

ईटानगर बौद्ध मंदिर, ईटानगर में स्थित है और यहाँ आसानी से पहुँचा जा सकता है। ईटानगर से निकटतम हवाई अड्डा 67 किलोमीटर दूर लीलाबारी में स्थित है और एक अन्य हवाई अड्डा 216 किलोमीटर दूर तेजपुर में है। लीलाबारी एक छोटा हवाई अड्डा है और यहाँ से उड़ाने केवल कुछ ही गंतव्यों के लिए संचालित होती हैं जबकि तेजपुर हवाई अड्डा

कोलकाता और अन्य शहरों से उड़ानों का स्वागत करता है। ईटानगर से निकटतम रेलवे जंक्शन 32 किलोमीटर दूर हरमुट्टी, असम में है और दूसरा 60 किलोमीटर दूर उतरी लखमीपुर, असम में है। असम की राजधानी गुवाहाटी से ईटानगर तथा अन्य पूर्वोत्तर स्थानों तक पहुँचने के लिए बस सेवा भी उपलब्ध है।

अध्याय-7

बौद्ध गुफाएँ

गुफाएँ बहुत से लोगों में अंधेरे की भावना उत्पन्न कर सकती हैं किन्तु कुछ लोग मानते हैं कि किसी गुफा में प्रवेश करने से ज्ञान रूपी प्रकाश भी मिल सकता है। अगर आप आश्चर्य चकित हैं कि कैसे, तो फिर आपको बात दें कि इनमें से कई गुफाओं में देश की उत्कृष्ट कलाकृतियाँ शामिल हैं। ये कलाकृतियाँ विगत युगों से संबंधित हैं जो लोगों, उनकी जीवन शैली, विश्वासों, धर्मों और उस समय के देवी-देवताओं के विषय में पूर्ण जानकारी प्रकट करती हैं, जब वे उत्कीर्ण की गई थीं।

देश की बौद्ध गुफाएँ भी इनका अपवाद नहीं हैं। शायद आपको अभी तक पता नहीं होगा कि ये गुफाएँ जनता के लिए लगभग खोल दी गई हैं। ये गुफाएँ देश की शैलकर्त्त कलाकृतियों का उत्तम उदाहरण हैं और अनेक रूपों में बुद्ध के चित्रों और मूर्तियों को सुरक्षित रखती हैं। इन गुफाओं का निर्माण विभिन्न युगों में किया गया और इनका उपयोग यात्रियों के विश्राम स्थल के साथ-साथ, भिक्षुओं के निवास तथा ध्यान स्थल के रूप में किया जाता था। इनके पास जाना उस युग की यात्रा करने जैसा है, जिस युग में इनका निर्माण किया गया था।

आपकी यात्रा को सुविधाजनक और मनोरंजक बनाने के लिए बौद्ध गुफाओं पर आधारित यह खंड आपको गुफाओं, उनकी वास्तुकला, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थान, मार्ग तथा अन्य आकर्षणों के विषय में जानकारी प्रदान करता है। इस खंड के माध्यम से प्राप्त जानकारी के आधार पर यात्रा करें जो आपकी यात्रा को बहुत ज्यादा आनंददायक बना देगी।

अजंता की गुफाएँ, महाराष्ट्र

ये गुफाएँ औरंगाबाद शहर से 108 किलोमीटर दूर स्थित हैं और भारत में उत्कृष्ट बौद्ध वास्तुकला, मनोहर चित्रों और रचनात्मक मूर्तियों का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। अजंता की गुफाएँ मुख्य रूप से भगवान बुद्ध और उनके कई अवतारों की मूर्तियों के कारण पूजनीय हैं। ये गुफाएँ 200 ई.पू. से 250 ई. के मध्य युग की हैं। गुफा संख्या 30, पहली बार संयोग से

1819 ई. में एक ब्रिटिश अधिकारी जॉन स्मिथ द्वारा खोजी गई थी जिसमें कई विहार और चैत्य शामिल हैं। अजंता की गुफाओं को दो भागों में बांटा जा सकता है-

प्रथम चरण- इसमें दूसरी शताब्दी ई.पू. से प्रथम शताब्दी ई. की गुफा संख्या 9 और 10 के चैत्य हॉल तथा गुफा संख्या 12 और 13 के विहार शामिल हैं। इन गुफाओं में प्रारंभिक थेरवादी परंपरा के अनुसार बुद्ध को प्रतीकों के रूप में चित्रित किया गया है।

द्वितीय चरण- इसमें पाँचवीं शताब्दी ई. से छठी शताब्दी ई. के मध्य युग की गुफा संख्या 19, 26 और 29 चैत्य हॉल हैं जबकि गुफा संख्या 1 से 7, 11, 14 से 18, 20 से 25, 27 से 28 तक विहार हैं। इन गुफाओं में महायान परंपरा के अनुसार बुद्ध को मानव आकृति में दर्शाया गया है। गुफा संख्या 8 और कुछ गुफाएँ अपूर्ण हैं।

वास्तुकला

सभी बौद्ध गुफाएँ जो अजंता की गुफाओं के रूप में प्रसिद्ध हैं, प्राचीन बौद्ध कला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। अजंता की गुफाओं में मुख्य रूप से चैत्य हॉल और विहार शामिल हैं। इनका उपयोग बौद्ध भिक्षु आवास और ध्यान संबंधी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करते थे।

इन गुफाओं में रहने वाले भिक्षुओं ने बुद्ध और उनके अवतारों के चित्रों की नक्काशी के लिए छेनी और हथौड़े जैसे सामान्य औजारों का प्रयोग किया तथा गुफाओं की दीवारों पर जातक कथाएं उत्कीर्ण कीं। चैत्य हॉल के रूप में उपयोग की जाने वाली गुफाएँ धर्म पर आधारित वास्तुकला का एक पारिभाषित रूप प्रस्तुत करती हैं। उदाहरण के लिए गुफा संख्या 17 एक विहार है जिसके 8 गलियारों में बुद्ध से संबंधित कई भित्तिचित्र बने हैं जैसे- इंद्र देवता नृतकियों के साथ आकाश में उड़ रहें हैं, बुद्ध नालगिरि हाथी को वश में कर रहे हैं और कुछ जातक कथाओं से संबंधित दृश्य हैं। अजंता की गुफाओं के भित्तिचित्रों में भिन्न - भिन्न प्रकार की बनावट, सूचियां, ज्योमति आकृतियां, बुद्ध की माता का स्वप्न, बुद्ध का जन्म और शिशु बुद्ध से उपहार लेती महिला श्रद्धालुओं का जुलूस भी शामिल हैं।

अजंता का प्रवेश द्वार-औरंगाबाद

औरंगाबाद नाम मुगल बादशाह औरंगजेब के कारण पड़ा और यह ख़ाम नदी के तट पर स्थित है। पहले यह खड़के के रूप में जाना जाता था और आधुनिक औरंगाबाद मुम्बई

और पुणे के बाद महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में से एक है। दो प्रमुख शैलकर्त्त गुफाओं- अजंता (108 किलोमीटर) और एलोरा (26 किलोमीटर) का प्रवेश द्वार होने के अलावा, शहर में कई पर्यटन आकर्षण हैं जैसे- बेनी बेगम उद्यान, बीवी का मकबरा और संग्रहालय।

आसपास की बौद्ध गुफाएँ

औरंगाबाद की गुफाएँ- ये गुफाएँ चौथी से आठवीं शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। संपूर्ण औरंगाबाद की गुफाएँ 9 शैलकर्त्त गुफाओं का एक समूह है जिनमें से अधिकांश को चालुक्य तथा वाकाटक राजाओं ने निर्मित किया था। इन गुफाओं को पूर्वी तथा पश्चिमी गुफाओं में वर्गीकृत किया गया है जिनमें एक थेरवादी गुफा (गुफा संख्या 4) को छोड़कर बाकि सभी महायान संप्रदाय से संबंधित हैं। छठी गुफा एक मंदिर है जो भगवान गणेश को समर्पित है।

कार्ले की गुफाएँ- ये गुफाएँ तीसरी से दूसरी शताब्दी ई.पू. के मध्य युग की हैं। भिक्षुओं द्वारा निर्मित इन गुफाओं की सुंदरता, इनकी आंतरिक बनावट में निहित है और उसका कारण लगभग 2500 वर्ष प्राचीन काष्ठशिल्प शैली का योगदान है जिसमें रोशनदान, स्तंभ और गुबंद के आकार की छत शामिल हैं।

पितलखोरा की गुफाएँ- ये गुफाएँ सतमाला की पहाड़ियों के गौताला अभयारण्य में स्थित हैं। ये गुफाएँ विहारों और चैत्यों का एक अद्‌भुत संगम हैं। इन गुफाओं में मुख्यतः विहार शामिल हैं। ये गुफाएँ बौद्ध धर्म के थेरवादी संप्रदाय से संबंधित बड़ी संरचनाएं हैं।

जुन्नार की गुफाएँ- ये गुफाएँ, जुन्नार में स्थित हैं जो छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म स्थान है। ये गुफाएँ दूसरी शताब्दी ई.पू. से तीसरी शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। ये गुफाएँ एक बड़े भू-भाग में फैली हुई हैं और इन्हें तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया है। प्रथम, तुलिजा लेना समूह है जिसमें चैत्य हाल या गुफा संख्या 3 में गोल गुंबद वाली छत है। गुफाओं का दूसरा समूह, मनमोदी की पहाड़ियों तक फैला हुआ है और इसका अग्रभाग अच्छी तरह से संरक्षित है। तीसरा, गणेश लेना समूह के रूप में जाना जाता है और मुख्य रूप से गुफा संख्या 6 में छोटे-छोटे कक्ष और विहार हैं।

भाजा की गुफाएँ- ये गुफाएँ संख्या में 18 हैं और दूसरी शताब्दी ई.पू. की हैं। चैत्यों और विहारों सहित ये गुफाएँ भारतीय मूर्तिकला और वास्तुकला शैली का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। गुफा संख्या 12 एक चैत्य हॉल है और सभी गुफाओं में सबसे बड़ी है जबकि गुफा संख्या 1 की वास्तुकला उत्कृष्ट है। अंतिम गुफा में एक राजकुमार हाथी पर बैठा है तथा एक राजकुमार रथ पर सवार है और तीन सशस्त्र सहित आकृतियों के चित्र हैं, ये सभी भगवान बुद्ध से संबंधित हैं।

एलिफेंटा की गुफाएँ- ये गुफाएँ, भारत के प्रवेश द्वार मुम्बई से 9 मील दूर समुद्र के मध्य एक द्वीप पर स्थित हैं और अजंता की गुफाओं से लगभग 400 किलोमीटर दूर हैं। यह उत्कृष्ट शैलकर्त्त गुफाओं का घर है। ये गुफा मंदिर सातवीं शताब्दी ई. के हैं और भगवान शिव को समर्पित हैं और उन्हें सृष्टिकर्ता, संरक्षक एवं विध्वंसक के रूपों में चित्रित किया गया है।

एलोरा की गुफाएँ, महाराष्ट्र

ये गुफाएँ प्राचीन एवं आरंभिक मध्यकालीन भारतीय युग की हैं और औरंगाबाद से 28 किलोमीटर दूर हैं, जो महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में से एक है। ये गुफाएँ संख्या में 34 हैं और बौद्ध, जैन एवं हिन्दू गुफाओं का सम्मिश्रण हैं। भारत में सभी धर्मों के प्रति प्रेम और सम्मान का प्रतीक हैं।

एलोरा की गुफाओं का वर्गीकरण

एलोरा की सभी उत्खनित शैलकर्त्त गुफाओं को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है-

बौद्ध गुफाएँ

गुफा संख्या 1 से 12 तक बौद्ध गुफाएँ हैं और पाँचवीं शताब्दी ई. से सातवीं शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। इन गुफाओं में अधिकतर विहार हैं जिनका उपयोग भिक्षुओं द्वारा आवास और ध्यान साधना संबंधी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता था। ये गुफाएँ एलोरा के उतरी छोर तक फैली हुई हैं। विहार बुद्ध को समर्पित हैं जिनमें बुद्ध, बोधिसत्त्वों एवं अन्य महापुरुषों के चित्र भी शामिल हैं।

वास्तुकला

ये गुफाएँ एलोरा की गुफाओं का अभिन्न अंग हैं और भारतीय उप-महाद्वीप में गुफा और चैत्य वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। एलोरा के विहार बड़े और बहुमंजिला संरचनाएं हैं। इन सभी गुफा चैत्यों में सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा संख्या 10 है जो एक चैत्य हॉल है जिसमें अभय मुद्रा में शाक्यमुनि की 15 फीट बड़ी प्रतिमा है। यह गुफा बढ़ई की गुफा के नाम से भी प्रसिद्ध है। गुफा गिरिजाघर के बड़े हॉल की तरह है जिसकी छत लकड़ी के बीम का आभास देती है। इन सभी गुफाओं की मूर्तिकला, बुद्ध के विभिन्न रूपों को समर्पित है।

हिन्दू गुफाएँ

गुफा संख्या 13 से 29 तक हिन्दू गुफाएँ हैं तथा प्रारंभिक मध्ययुगीन युग की हैं जो आठवीं शताब्दी से दसवीं शताब्दी ई. के मध्य काल की हैं। एलोरा की गुफाओं के मध्य में हिन्दू गुफाओं के मंदिर हैं। हिन्दू गुफाओं के मंदिर मुख्य रूप से भगवान शिव और विष्णु को समर्पित हैं जिन्हें विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है।

वास्तुकला

एलोरा की गुफाओं के हिन्दू मंदिरों पर गौरव करने का मुख्य कारण इन गुफाओं की अद्वितीय वास्तुकला और रचनात्मक मूर्तिकला के पक्ष हैं। ये गुफाएँ भारतीय योजना और वास्तुकला का एक उत्कृष्ट प्रतीक हैं। जो किसी सीढ़ी की तरह ऊपर से नीचे की ओर निर्मित हैं। ये मंदिर एलोरा की गुफाओं की उत्कृष्ट संरचनाएं हैं।

इनमें गुफा संख्या 16 सबसे अच्छी संरचना है जो कैलाश मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है और दुनिया में सबसे बड़ी अखंड संरचना है जो भगवान शिव को समर्पित है। यद्यपि, कैलाश मंदिर की बहुमंजिला संरचना एक विशाल क्षेत्र को घेरती है, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि यह एक ही पहाड़ी को तराश कर बनायी गयी है। मंदिर का प्रवेश द्वार भी दो मंजिला है और एक यू-आकार के आंगन में खुलता है जो तीन बड़ी गैलरियों से घिरा हुआ है जिसमें विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियाँ है। मुख्य मंदिर के सामने नन्दी बैल की प्रतिमा है। नन्दी मंडप और शिव मंदिर दोनों लगभग 7 मीटर ऊँचे हैं जिनका निर्माण दो मंजिला तक किया गया है। नन्दी मंडप का निचला भाग ठोस है और जिसे अनेक नक्काशियों से सजाया गया है। गुफा में कक्षों, भवनों, खम्भों, खिड़कियों और मूर्तियों के अलावा ताक, प्लास्टर, मिथुन और

भगवान शिव और विष्णु से संबंधित मूर्तियों की नक्काशी की गई है। गुफा संख्या 16 अद्वितीय और उत्कृष्ट वास्तुकला का उदाहरण है और स्पष्ट वर्णित है कि क्यों इस गुफा को बनाने में लगभग 100 साल लगे थे। अन्य हिन्दू गुफाओं में रामेश्वर गुफा और दस अवतार गुफा (विष्णु के 10 अवतारों का चित्रण) के बीच में कई अन्य गुफाएँ शामिल हैं।

जैन गुफाएँ

गुफा संख्या 30 से 34 तक जैन गुफाएँ हैं और नौवीं से ग्यारहवीं शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं जो जैन दर्शन और मूल्यों के विशाल आयामों को दर्शाती हैं। जैन परम्परा कठोरता से वैराग्य धर्म का पालन करती है और यह सभी जैन गुफाओं में स्पष्ट दिखाई देता है।

वास्तुकला

जैन गुफाएँ अपने तपस्वी सिद्धांत के साथ एक विशेष शिल्प को दर्शाती हैं जिससे संभवतः इनकी विशिष्टता बढ़ जाती है। गुफा संख्या 32 एक जैन मंदिर है जिसकी छत पर कमल की नक्काशी की गई है जो भारतीय वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। जैन गुफाओं में एक समृद्ध चित्र है जो एक यक्षणी से संबंधित है जिसमें वह आम के पेड़ के नीचे शेर पर आसीन है।

एलोरा की गुफाओं का प्रवेश द्वार- औरंगाबाद

यह महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में से एक है और भारतीय विरासत, एलोरा की गुफाओं के साथ-साथ अजंता की गुफाओं का प्रवेश द्वार है। औरंगाबाद ख़ाम नदी के तट पर स्थित है और अनेक पर्यटन स्थलों का भी घर है।

आसपास के अन्य आकर्षण

अजंता की गुफाएँ- ये गुफाएँ संख्या में 30 हैं और एलोरा तथा एलिफेंटा के साथ-साथ महाराष्ट्र के प्रमुख विरासत स्थलों में शामिल हैं। अजंता की गुफाएँ, औरंगाबाद के पास एलोरा की गुफाओं से 70 किलोमीटर की दूरी पर सहयाद्री की पहाड़ियों पर स्थित हैं। इनमें भिक्षुओं द्वारा उपयोग किए गए चैत्य हॉल एवं विहार शामिल हैं।

कार्ले की गुफाएँ- इन गुफाओं का समूह दूसरी शताब्दी ई.पू. का है और प्राचीन काल की भव्य वास्तुकला शैली का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कार्ले की गुफाएँ, लोनावला से 11 किलोमीटर दूर हैं और मूल रूप से अपने लकड़ी के काम की 2500 वर्ष प्राचीन वास्तुशिल्प की शैली के कारण जानी जाती हैं।

भाजा की गुफाएँ- भाजा की गुफाएँ 18 गुफाओं का एक समूह है जो दूसरी शताब्दी ई.पू. की हैं। ये गुफाएँ भारतीय वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

पितलखोरा की गुफाएँ- भारतीय उप-महाद्वीप में थेरवाद की सबसे बड़ी गुफाएँ हैं। ये गुफाएँ दूसरी शताब्दी ई. पू. से प्रथम शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं जिनमें विहार तथा चैत्य शामिल हैं।

कन्हेरी की गुफाएँ, महाराष्ट्र

कन्हेरी नाम का शाब्दिक अर्थ है- काली पहाडी। जो मुम्बई से 40 किलोमीटर दूर बोरिवली संजय गांधी राष्टीय उद्यान में काली गुफाओं में रूप में अपने नाम को प्रमाणित करती हैं। ये गुफाएँ समुद्र तल से 1500 फीट मीटर ऊँचाई पर स्थित हैं। इन गुफाओं से विशाल अरब सागर और वसई क्रीक का सुदूर का मनोहर दृश्य भी दिखाई देता है।

कन्हेरी की गुफाएँ दूसरी शताब्दी ई. पू. से नौवीं शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं और मौर्य तथा कुषाण राजाओं के शासनकाल में निर्मित की गई थीं। कन्हेरी की 109 गुफाएँ मूल रूप से सोपारा-कल्याण मार्ग पर यात्रियों के लिए एक विश्राम गृह के रूप में निर्मित की गई थीं और भिक्षुओं द्वारा अपने आवासीय और ध्यान प्रयोजनों के रूप में उपयोग किए जाने के कारण जल्द ही विहारों में बदल गईं। ये गुफाएँ कल्याण, नासिक, सोपारा और उज्जैन के प्राचीन घने जंगलों के बीच स्थित हैं और आगे सारे संसार के बौद्धों के बीच लोकप्रिय स्थल बन गईं और जल्द ही बौद्ध गुफाओं के रूप में विख्यात हो गईं।

आरंभ में, बौद्ध भिक्षुओं द्वारा कन्हेरी की गुफाओं का उपयोग उनके प्राकृतिक रूप में किया जाता था। भिक्षुओं ने इनके प्राकृतिक पदार्थों का दोहन किए बिना जल संचय के लिए कुण्डों और शयन के लिए पत्थर की परतों का उपयोग किया। लेकिन समय के साथ सब कुछ बदलने लगा। भिक्षुओं ने विशाल चट्टानों पर बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की मूर्तियों, चैत्यों और

विहारों की इतनी अधिक नक्काशी आरंभ की कि तीसरी शताब्दी ई. तक कोकंण तट के पास स्थित गुफाएँ एक प्रमुख बौद्ध बस्ती में बदल गईं।

वास्तुकला

कन्हेरी की गुफाएँ, अन्य बौद्ध मंदिरों की तरह प्राचीन एवं प्रारंभिक मध्ययुगीन भारतीय स्थापत्य शैली में ध्यान साधना का प्रतीक हैं। सभी 109 गुफाएँ पहाड़ी को काटकर बनाई गई हैं और इनमें भगवान बुद्ध को विभिन्न रूपों में दर्शाया गया है।

इन सभी गुफाओं में गुफा संख्या 3 सबसे महत्त्वपूर्ण है जो छठी शताब्दी ई. से संबंधित है। जिसमें बुद्ध की 6.5 फीट ऊँची दो मूर्तियाँ हैं और 34 स्तंभों सहित एक हॉल है, जिसमें थेरवाद संप्रदाय को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाया गया है। इसी तरह गुफा संख्या 11 सभा भवन है जिसमें हिन्दू और बौद्ध भिक्षुओं के मध्य बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है। गुफा संख्या 34 एक अंधेरा कक्ष है जिसकी छत पर बुद्ध के चित्र हैं। गुफा संख्या 41 एक बड़ी गुफा है जिसमें अन्य संरचनाओं के अतिरिक्त ग्यारह मुख वाली अवलोकितेश्वर की मूर्ति बनी हुई है। गुफा संख्या 67 भी एक बड़ी गुफा है और इसके बरामदे में दो देवियों की मूर्तियों के पास उद्धारक के रूप में अवलेकितेश्वर की मूर्ति है। कुछ चित्रों में तथागत द्वारा श्रावस्ती में किए गए चमत्कारों को दर्शाया गया है।

कन्हेरी की गुफाओं का प्रवेश द्वार- मुम्बई

महाराष्ट्र की राजधानी-मुम्बई सपनों और ग्लैमर का शहर है और भारत के प्रमुख महानगरों में से एक है। मुम्बई अरब सागर के तट पर स्थित है और अपने कई ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और अन्य पर्यटक केन्द्रों जैसे- एलिफेंटा, जुहू बीच और मरीन ड्राइव के कारण जीवंत शहर है।

अन्य गुफा आकर्षण

जुन्नार की गुफाएँ- ये गुफाएँ, मुम्बई-औरंगाबाद मार्ग पर स्थित हैं और मुम्बई से 177 किलोमीटर दूर हैं। ये गुफाएँ दूसरी शताब्दी ई. पू. से तीसरी शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। ये गुफाएँ बौद्ध मूर्तिकला की सबसे अच्छी गुफाओं में से एक हैं।

औरंगाबाद की बौद्ध गुफाएँ- ये गुफाएँ चौथी से आठवीं शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं और चालुक्य और वाकाटक शासकों द्वारा निर्मित की गई थीं। औरंगाबाद की गुफाएँ मुख्य रूप से महायान संप्रदाय से संबंधित हैं।

कार्ले की गुफाएँ, महाराष्ट्र

ये गुफाएँ भिक्षुओं द्वारा निर्मित की गई थीं और भारत में प्राचीन शैलकर्त्त गुफाओं के उत्कृष्ट नमूमों में से एक हैं। ये गुफाएँ तीसरी शताब्दी ई. से दूसरी शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। ये शातवाहन शासकों के शासनकाल में बनाई गई थीं और वर्षावास में थेरवादी बौद्ध भिक्षुओं की मेजबानी करती थीं। हालांकि, ये गुफाएँ जल्द ही बौद्ध मत के सभी संप्रदायों के लिए विहारों में बदल गईं।

वास्तुकला

सदियों पुरानी कार्ले की गुफाएँ भारतीय शैलकर्त्त वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्रारंभिक कार्ले की गुफाएँ सीढ़ी की तरह ऊपर से नीचे की ओर निर्मित हैं और बुद्ध को मानव आकृति में नहीं बल्कि प्रतीकों में चित्रित करती हैं। हालांकि, 7वीं शताब्दी के आसपास महायान अपने उदार सिद्धांतों के कारण अधिक प्रसिद्ध हो गया। बाद में, कार्ले की गुफाओं में बुद्ध को मानव आकृति में दर्शाया गया जिसमें बुद्ध एक शेर के सिंहासन पर बैठकर उपदेश दे रहे हैं और साथ में तीन हाथियों की शानदार नक्काशी की गई है।

कार्ले की गुफाओं में मुख्य रूप से दो प्रकार की संरचनाएं शामिल हैं- चैत्य हाल और विहार। चैत्य हॉल जिनमें बड़े आकार के चैत्य (जिनमें से एक 148 फुट ऊँचा है) शामिल हैं। इनका उपयोग सामूहिक पूजा के लिए किया जाता था जबकि विहार निवास स्थान थे। हॉल के दोनों तरफ कक्ष होते थे और भिक्षुओं द्वारा उनका आवास और ध्यान साधना के लिए उपयोग किया जाता था।

गुफाओं के अंदर बने हॉलों के स्तंभों पर स्त्रियों, पुरुषों, फूलों एवं हाथियों की आकृतियों की नक्काशी की गई है। हालांकि, इन हॉलों के बाहर के स्तंभों पर शेर उत्कीर्ण हैं जो सम्राट अशोक के मुकुट सिंह शीर्ष का प्रतीक हैं।

गुफाओं में प्रवेश चैत्यगृह से होता है जिसे कुछ साल पहले बनाया गया था और चैत्यगृह के साथ एक प्राचीन स्तम्भ खड़ा है। खिड़की और दरवाजे उत्कृष्ट वास्तुकला के अन्य उदाहरण हैं तथा जिसमें उनके पैनलों पर एक-दूसरे को आलिंगन करते युगल चित्रित हैं।

कार्ले की गुफाओं का प्रवेश द्वार- लोनावला

यह महाराष्ट्र का एक हिल स्टेशन है तथा सहयाद्री की पहाड़ियों पर स्थित है। इसे सहयाद्री की पहाड़ियों की मणि (रत्न) के रूप में भी जाना जाता है। यह कार्ले की शैलकर्त्त गुफाओं का प्रवेश द्वार है।

अन्य गुफा आकर्षण

भाजा की गुफाएँ- भाजा की गुफाएँ 18 गुफाओं का एक समूह है और दूसरी शताब्दी ई.पू. की हैं। ये गुफाएँ प्राचीन भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनमें गुफा संख्या 12 सबसे बड़ी है।

जुन्नार की गुफाएँ, महाराष्ट्र

जुन्नार पहाड़ी महाराष्ट्र में एक छोटे से स्थान जुन्नार में स्थित है जो प्राचीन बौद्ध गुफाओं के एक समूह के रूप में प्रसिद्ध है। ये गुफाएँ अपनी वास्तुकला के कारण पर्यटकों, बौद्धों तथा पुरातत्त्वविदों को आकर्षित करती हैं। जुन्नार की गुफाओं को तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया है-

- तुलिजा लेना समूह
- मनमोदी पहाड़ी समूह
- गणेश लेना समूह

तुलिजा लेना समूह जो जुन्नार से 5 किलोमीटर दूर स्थित है। इसमें चैत्य हॉल शामिल हैं और गुफा संख्या 3 के चैत्य हॉल की छत गुबंद जैसी है। दूसरा समूह, मनमोदी पहाड़ी समूह है जो जुन्नार से 1.5 किलोमीटर दूर स्थित है। इनका अग्रभाग अच्छी तरह से संरक्षित है। तीसरा समूह, गणेश लेना समूह है जो जुन्नार से 4 किलोमीटर दूर स्थित है जिसमें कई विहार और छोटे-छोटे कक्ष शामिल हैं। इस समूह के मुख्य विहार के नाम के कारण, बाद में समूह का नाम गणेश लेना समूह रखा गया।

अन्य गुफा आकर्षण

अजंता की गुफाएँ- भारत की प्रमुख धरोहरों में से एक हैं। इनकी संख्या 30 हैं। इनमें मुख्यतः चैत्य और विहार शामिल हैं जिनमें बुद्ध एवं बोधिसत्त्वों के चित्र शामिल हैं।

भाजा की गुफाएँ, महाराष्ट्र

ये गुफाएँ मौर्य शासकों द्वारा निर्मित की गई थीं। ये गुफाएँ बौद्ध धर्म के आरंभिक थेरवाद चरण की उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

वास्तुकला

भाजा की गुफाएँ आरंभिक थेरवादी मत से संबंधित हैं और बौद्ध वास्तुकला की आरंभिक अवस्था का उत्तम उदाहरण हैं। इन गुफाओं में बुद्ध को प्रतीकों में दर्शाया गया है। हालांकि जिन गुफाओं को चौथी शताब्दी ई. के बाद बनाया गया था, उनमें बुद्ध को मानव आकृति में चित्रित किया गया है।

इन गुफाओं के स्तंभों को नीचे की ओर झुका हुआ देखा जा सकता है। जिनमें से कुछ के ऊपर फूलों, पत्तियों और अन्य चित्रों की आकृतियां उत्कीर्ण हैं। गुफा संख्या 12 एक चैत्य हॉल है जो सभी गुफाओं में सबसे बड़ी है और गुंबद आकार की उत्कृष्ट संरचना है। अंतिम गुफा दक्षिण दिशा में स्थित है। इस गुफा में नृत्य करते दंपति का चित्र, हाथी पर बैठे राजकुमार और अन्य चित्र शामिल हैं। गुफा संख्या 1 आवास गृह है और अन्य 10 गुफाएँ विहार हैं। ये गुफाएँ धार्मिक पृष्ठभूमि सहित वास्तुकला की उत्कृष्ट कलाकृतियां हैं। शेष 7 गुफाओं में दाताओं के विषय में अभिलेख हैं।

भाजा की गुफाओं का प्रवेश द्वार - लोनावला

यह सहयाद्री के रत्न के रूप में भी प्रसिद्ध है और महाराष्ट्र के प्रसिद्ध हिल स्टेशनों में से एक है। लोनावला कई पहाड़ी स्थलों और झीलों का घर है और प्राचीन बौद्ध गुफाओं का प्रवेश द्वार है।

अन्य गुफा आकर्षण

कार्ले की गुफाएँ- ये गुफाएँ तीसरी से दूसरी शताब्दी ई.पू. के मध्य युग की हैं। बुद्ध विहारों और चैत्यों से युक्त, ये गुफाएँ आरंभिक बौद्ध वास्तुकला का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत करती हैं।

नागार्जुनकोंडा की गुफाएँ, आंध्र प्रदेश

नागार्जुनकोंडा, आंध्र प्रदेश में कृष्णा नदी के तट के पास एक मानव निर्मित झील के आगे एक द्वीप पर स्थित है। इसका यह नाम महान दार्शनिक नागार्जुन के कारण पड़ा, जिन्होंने घाटी में बौद्ध मत के प्रचार के लिए एक बौद्ध अध्ययन केन्द्र स्थापित किया था। ये गुफाएँ प्राचीन चैत्यों एवं विहारों का घर हैं और दक्षिण भारत में समृद्ध बौद्ध स्थल हैं।

नागार्जुनकोंडा की गुफाएँ तीसरी शताब्दी ई. की हैं जिनकी 1950 के दशक में खुदाई की गई और प्राचीन भारत में महायान मत की शिक्षाओं का एक प्रमुख केंद्र थी। भौतिक रूप में तथागत के प्रतिनिधित्व से न केवल उनके जीवन के विभिन्न चरणों का पता चलता है, बल्कि इन गुफाओं की शानदार वास्तुकला भी प्रदर्शित होती है। स्तंभों पर हाथियों और फूलों की सुन्दर नक्काशी, गुफा मंदिरों में बुद्ध के चित्र, एक स्तूप की मौजूदगी जिसमें बुद्ध के अवशेष रखे हैं आदि नागार्जुनकोंडा की गुफाओं की वास्तुकला के कुछ उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

नागार्जुनकोंडा का प्रवेश द्वार - विजयवाड़ा

विजयवाड़ा एक प्रसिद्ध वाणिज्यिक केन्द्र है जो कृष्णा नदी के किनारे पर स्थित है तथा आंध्र प्रदेश के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक है। विजयवाड़ा अनेक मंदिरों और स्मारकों जैसे- कनक दुर्गा मंदिर, गांधी स्तूप एवं अन्य स्थलों का घर है और हैदराबाद से 265 किलोमीटर दूर है तथा नागार्जुनकोंडा की गुफाओं का प्रवेश द्वार है।

अन्य गुफा आकर्षण

बेलम की गुफा- नागार्जुनकोंडा की गुफाओं के विपरीत बेलम की गुफा मूलतः एक भूमिगत गुफा है। एक क्षैतिज गुफा है जो 3229 मीटर लंबी है और भारतीय उप-महाद्वीप में दूसरी सबसे बड़ी गुफा है। बेलम की गुफा, आंध्र प्रदेश में कर्नूल से 106 किलोमीटर दूर है।

बेलम की गुफा में लंबे मार्ग, बड़े-बड़े कक्ष, ताजा पानी की गैलरियां और अनेक नालियां शामिल हैं।

मोगलराजपुरम की गुफाएँ- ये गुफाएँ विजयवाड़ा में स्थित हैं और राज्य का प्रमुख आकर्षण हैं। ये गुफाएँ पाँचवीं शताब्दी ई. की हैं जिनमें भगवान नटराज, विनायक और अर्धनारीश्वर की मूर्तियाँ शामिल हैं।

उन्डवल्ली की गुफाएँ- उन्डवल्ली की गुफाओं का नाम विजयवाड़ा के पास उन्डवल्ली गाँव के नाम के कारण पड़ा। ये भारत में शैलकर्त्त गुफा कला की प्रमुख कलाकृतियों में से एक हैं। ये गुफाएँ मूल रूप से चार मंजिला संरचना हैं, जो चौथी-पाँचवी शताब्दी ई. के मध्य युग की हैं। ये गुफाएँ भगवान विष्णु की विश्व प्रसिद्ध 5 मीटर लंबी मूर्ति मृत्यु शैय्या की मेजबानी करती हैं जो बुद्ध की मूर्ति के साथ ग्रेनाइट पत्थर के एक खण्ड से तराश का बनायी गयी है।

यागंती की गुफाएँ- यागंती में रोकला, संका और वेंकटेश्वर की गुफाओं का एक समूह है जो आंध्र प्रदेश में कर्नूल से 100 किलोमीटर दूर है और एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

बराबर की गुफाएँ, बिहार

बराबर की गुफाएँ, गया से 20 किलोमीटर दूर बराबर की पहाड़ियों पर स्थित हैं जिनमें काले ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित कई गुफाएँ शामिल हैं। ये गुफाएँ पहली बार अशोक के शासनकाल में बनाई गई थीं जिनमें परवर्ती काल में परिवर्धन किए गए। ये गुफाएँ दूर से लकड़ी की तरह दिखाई देती हैं। बराबर की गुफाएँ मुख्यतः तीन प्रकार की हैं-

- नागार्जुन की गुफाएँ
- पाँच पांडवों की गुफाएँ
- झोपड़ी के आकार की गुफाएँ

नागार्जुन की गुफाएँ आकार में बड़ी हैं और जातक कथाओं को दर्शाती हैं। ये गुफाएँ वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण हैं जिनमें धनुषाकार प्रवेश द्वार, वृत्ताकार हॉल और छोटी गुफाएँ शामिल हैं। ये सभी गुफाएँ अंदर से चिकनी हैं। सुदामा गुफा दो कक्षों की संरचना है और अंदर से पॉलिश है और इस प्रकार की गुफा का उत्तम उदाहरण है। सुदामा गुफा के आगे

उत्तर दिशा में सुप्रिया गुफा है जो एक कक्ष की संरचना है जिसकी छत गुंबद के आकार जैसी है और द्वार छोटा है।

पाँच पांडवों की गुफाएँ, बराबर की गुफाओं का दूसरा समूह है। महाभारत काल में पाँच पांडवों ने अपने निर्वासन केदौरान इन गुफाओं का उपयोग किया था। ये आकार में छोटी हैं।

बराबर की गुफाएँ झोपड़ी के आकार जैसी हैं जो एक तरफ से खुली हैं और अन्य तरफ पत्थर की दीवार हैं। ये गुफाएँ अंदर से चिकनी और शामक हैं। इसके अलावा, ये गुफाएँ जैन और बौद्ध भिक्षुओं के लिए निवास स्थल के रूप में कार्य करती थीं। बौद्ध गुफाओं में, लोमस ऋषि गुफा विश्व प्रसिद्ध भारतीय चैत्य तोरण शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बराबर की गुफाओं का प्रवेश द्वार - गया

यह फाल्गु नदी के तट पर स्थित है और हिन्दुओं के साथ-साथ बौद्धों के लिए भी एक पूजनीय स्थल है। यहाँ बुद्ध ने जीवन की वास्तविकता का बोधगया में उपदेश दिया था और भगवान विष्णु ने मृत्यु की वास्तविकता का उपदेश दिया था।

अन्य गुफा आकर्षण

स्वर्ण भंडार- यह राजगीर में जुड़वां शैलकर्त्त गुफाओं के रूप में विख्यात है और एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। इसमें दो गुफा कक्षों को एक विशाल चट्टान को खोखला कर बनाया गया है जिनमें से एक को सुरक्षा कर्मियों (सैनिकों) के कक्ष के रूप में जाना जाता है। प्रवेश द्वार पर एक क्षैतिज रेखा और दो सीधी रेखाएं चट्टान पर विभाजित होती हैं तथा राजा बिम्बिसार के खजाने तक मार्गदर्शन करती हैं। शंखलिपि में दीवार पर उत्कीर्ण अभिलेखों का आज तक अर्थ नहीं निकाला जा सका है और इसे स्वर्ण भंडार को खोलने की चाबी माना जाता है।

अध्याय -8

भारत के अन्य बौद्ध स्थल

बहुत सारे बौद्ध स्थल आपकी भारत यात्रा पर, आपको मंत्रमुग्ध करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। शायद ये उन प्रमुख स्थलों में से न हो जिन पर आप देश की अपनी बौद्ध यात्रा के दौरान जाना चाहते हों लेकिन उनके पास एक आंतरिक आकर्षण है जो आपको अपनी आकर्षित करेगा। इसके अतिरिक्त, प्रमुख बौद्ध स्थलों की भांति इनकी एक यात्रा से विगत युग के बौद्ध धर्म के विषय में बहुत कुछ पता चलता है।

अन्य बौद्ध स्थलों पर आधारित यह खंड आपको ऐसे स्थलों से परिचित कराता है जिनकी एक यात्रा प्रमुख बौद्ध स्थलों की तरह ही लाभदायक होगी। इसमें गाँवों, कस्बों और छोटे शहरों के बौद्ध स्थल शामिल हैं। इसमें आपको बौद्ध स्थलों की स्थिति, इतिहास, महत्त्व, आसपास के अन्य आकर्षणों के साथ-साथ पहुँचने के मार्गों की भी जानकारी मिलेगी। इस खंड में दी गई जानकारी आपको बौद्ध स्थलों पर जाने के लिए विस्तार से योजना बनाने में सहायता करेगी।

इसलिए देश के इन बौद्ध स्थलों की यात्रा पर जाने के लिए तैयार हो जाएं। अपनी यात्रा की समाप्ति पर, आप महसूस करेंगे कि आपने बौद्ध धर्म के विषय में कितना अधिक ज्ञान प्राप्त किया है। यात्रा आनंददायक के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी रहेगी।

अर्दुरू, आंध्र प्रदेश

अर्दुरू गाँव गोदावरी नदी की वैनतेय धारा के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह आंध्र प्रदेश में गोदावरी जिले के रज़ोल तालुका का एक गाँव है और नागाराम गाँव के पास है। यह स्थान एक स्तूप के लिए जाना जाता है जो स्थानीय लोगों के बीच दुबराजु गुड़ी के नाम से प्रसिद्ध हैं। वर्ष 1953 में किए गए उत्खनन से जमीन से एक स्तूप निकला जिसका व्यास 17 फीट है। इसके चारों ओर एक ऊँचा चबूतरा है। खुदाई से मिट्टी के घड़े, नाँद, चीनी मिट्टी के बर्तन और दानपात्र के टुकड़े भी प्राप्त हुए। यह स्थल 2.04 एकड़ के क्षेत्र को घेरे हुए है और आपकी बौद्ध यात्रा को सार्थक बनाता है।

आसपास के अन्य आकर्षण

अमलापुरम- यह एक छोटा सा शहर है जो अर्दुरु गाँव से 30 किलोमीटर दूर है और प्रकृति प्रेमियों को आनंदित करने वाला स्थान है। यहाँ ताड़ और नारियल के वृक्षों से हरे-भरे मैदान हैं जो छोटी-छोटी नहरों से आड़े-तिरछे काटे हुए हैं। इसका प्रमुख आकर्षण राजस्व मंडल कार्यालय है जो संसद की तरह बनाया गया है। इसके अतिरिक्त, श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी देवस्थानम मंदिर है जो पर्यटकों के बीच प्रसिद्ध है।

ऐनावल्ली- यह अमलापुरम से 14 किलोमीटर दूर स्थित है और सिद्धि विनायक मंदिर के लिए जाना जाता है। इस स्थान का *शिवपुराण* में उल्लेख मिलता है राजा दक्ष प्रजापति ने यज्ञ के सफल समापन के लिए इस स्थान पर सिद्धि विनायक की पूजा की थी।

बाविकोंडा, आंध्र प्रदेश

तेलगु में बाविकोंडा शब्द का अर्थ है- कुओं की पहाड़ी। अपने नाम के अनुसार बाविकोंडा एक पहाड़ी है जिसमें वर्षा के जल के संग्रह के लिए कुएं बने हुए हैं। बाविकोंडा, आंध्र प्रदेश में विशाखापट्टनम से 15 किलोमीटर दूर है और एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध स्थल है।

सन् 1982-87 में किए गए उत्खनन से एक बौद्ध परिसर का पता चला जिसमें एक महाचैत्य, अवशेष सहित मंजूषा, एक बड़ा विहार, अनेक संकल्पित स्तूप, प्रस्तर स्तंभों सहित एक सभा भवन, आयताकार हॉल, एक भोजनालय आदि शामिल हैं। स्थल से कई कलाकृतियों को खोजा गया जिनमें रोमन और सातवाहन काल के सिक्के और मिट्टी के बर्तन भी शामिल हैं। यहाँ खुदाई में एक महत्त्वपूर्ण कलश मिला जिसमें अस्थि का एक अंश रखा हुआ है। व्यापक रूप से, इस अस्थि को बुद्ध का नश्वर अवशेष माना जाता है। इसके अलावा, कलश में बड़ी मात्रा में राख रखी है।

आज बाविकोंडा एशिया के सबसे पुराने और अत्यधिक पवित्र स्थलों में से एक गिना जाता है। इस स्थल के अवशेष उस महान बौद्ध सभ्यता की याद दिलाते हैं जो कभी भारत के दक्षिणी भाग में मौजूद थी। वास्तव में, स्थल आंगतुकों को इंडोनेशिया के बोरोबुदुर मंदिर की भी याद दिलाता है।

आसपास के अन्य आकर्षण

विशाखापट्टनम- यह 'नियति के शहर' के रूप में भी प्रसिद्ध है तथा बंगाल की खाड़ी के तट तक फैला हुआ है। यह पर्यटकों के लिए झीलों से लेकर शांत बीचों, खूबसूरत पर्वत श्रृंखलाओं, गुफाओं और घाटियों के बाड़े जैसे कई आकर्षण प्रस्तुत करता है। इंदिरा गांधी प्राणी उद्यान, रामकृष्ण बीच, ऋषिकोंडा बीच, बुडा पार्क, कैलासगिरि आदि विशाखापट्टनम में ध्यान आकर्षित करने वाले नामों में से कुछेक हैं।

थोत्लाकोंड़ा- यह बौद्ध परिसर, विशाखापट्टनम से 16 किलोमीटर दूर है और पर्वत के शिखर पर स्थित है। यह स्थल 120 एकड़ क्षेत्र को घेरे हुए है तथा आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा घोषित एक संरक्षित स्मारक है। यहाँ किए गए उत्खन्न कार्य से भूमि से तीन प्रकार के संरनात्मक अवशेष निकले-धार्मिक, धर्मनिरपेक्ष और नागरिक। अधिकतर इमारतें ठीक हैं जिनमें एक महाचैत्य, 16 संकल्पित स्तूप, प्रस्तर स्तंभों सहित एक सभा भवन, 11 शैलकर्त्त कुंड, प्रस्तर के मार्ग, एक अर्द्धगोलाकार चैत्यगृह, 3 वृत्ताकार चैत्यगृह, दो संकल्पित चबूतरे, 10 विहार, तीन हॉल सहित एक रसोईघर, एक भोजन कक्ष आदि शामिल हैं। इन संरचनाओं के अतिरिक्त, यहाँ की खुदाई से प्राप्त बौद्ध खजाने में 9 सातवाहन और 5 रोमन काल के चाँदी के सिक्के, टेराकोटा टाइलें, प्लास्टर के टुकड़े, मूर्तियों के भाग, पत्थर पर लघु स्तूप के नमूने, अष्टमंडल प्रतीक के रूप में चित्रित बुद्धपाद और मिट्टी के बर्तन शामिल हैं।

पावुरलकोंडा- यह विशाखापट्टनम से 24 किलोमीटर दूर है तथा एक बौद्ध बस्ती के अवशेषों को संरक्षण प्रदान करता है। स्थल पर 16 कुंड हैं जो वर्षा के जल को संचित करते हैं।

गोपालपट्टनम- यह तांडव नदी के किनारे पर स्थित एक गाँव है जिसके आसपास कई बौद्ध अवशेष हैं। इन अवशेषों में ईंटों से बने स्तूप, विहार और अन्य अवशेष शामिल हैं। इस क्षेत्र की खुदाई से मिट्टी के बर्तन भी प्राप्त हुए हैं।

अनकापल्ली- यह कई बौद्ध स्मारकों के अवशेषों के अलावा एक विहार के भग्नावशेष के लिए भी जाना जाता है।

भाट्टिप्रोलु, आंध्र प्रदेश

यह गुंटूर जिले में एक छोटा सा गाँव है और पूर्ववर्ती युग में प्रतिपालपुरा के नाम से प्रसिद्ध था। उस समय, यह साल साम्राज्य के अधीन एक प्रसिद्ध बौद्ध नगर था। भाट्टिप्रोलु अपने स्तूप, चिन्ना लांजा डिब्बा और विक्रामार्क कोटा डिब्बा के लिए जाना जाता है। वर्ष 1870 में हुई खुदाई से तीन टीले निकले थे जबकि वर्ष 1892 की खुदाई में एक टीले सहित प्रस्तर की तीन उत्कीर्ण मंजूषाओं का पता चला जिसमें पारदर्शी मंजूषाएं, बुद्ध के अवशेष और रत्न रखे थे। स्तूप का व्यास लगभग 40 मीटर है इसका आधार 2.4 मीटर चौड़ा है। स्तूपों के केन्द्रीय समूह से सबसे महत्त्वपूर्ण खोज, बुद्ध के शारीरिक अवशेष की पारदर्शी मंजूषा है।

आसपास के अन्य आकर्षण

अमरावती स्तूप- यह गुंटूर से लगभग 32 किलोमीटर दूर कृष्णा नदी के किनारे पर स्थित है और अपने स्तूप के लिए जाना जाता है जो आंध्र प्रदेश में सबसे बड़ा है। इसके अतिरिक्त, पुरातत्त्व संग्रहालय और अमरेश्वर स्वामी का मंदिर भी देखने लायक हैं।

बापतला बीच- यह मनोहर समुद्री तट (बीच) गुंटूर से लगभग 7 किलोमीटर दूर स्थित है और अगर आप कुछ शांत पलों का आनंद लेना चाहते हैं तो यह सही स्थान है। यहाँ आप समुद्री भोजन का भी आनंद ले सकते हैं।

वद्दमानु गाँव- गुंटूर शहर में वद्दमानु नामक एक छोटा सा गाँव है। यहाँ किए गए उत्खनन कार्य से एक महास्तूप, दो संकल्पित स्तूप एवं चबूतरे, चित्रित स्तंभ, महारथी और सातवाहन काल के सिक्के और मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए। यहाँ पाए गए स्तंभ नागार्जुनकोंडा के मठों से अद्वितीय समानता रखते हैं।

चंपानगर, बिहार

यह भागलपुर जिले में स्थित है जिसकी गौतम बुद्ध ने यात्रा की थी। यहाँ बुद्ध ने *मज्झिम निकाय* के कण्डारक सुत्त का उपदेश दिया था। यह भी माना जाता है कि चंपानगर

सबसे पूर्वी स्थान था, जब बुद्ध अपने जीवनकाल में धर्मोपदेश के लिए गए। नगर का यह नाम चंपक के पौधों की अनेक प्रकार की प्रजातियों के कारण पड़ा जो इसके आसपास उगते हैं और अपने फूलों की तेज सुगंध चारों ओर फैलाते हैं।

बौद्ध आकर्षण

कमल सरोवर- तालाब को पहले घग्गर की कमल झील के रूप में जाना जाता था और अब यह कमल के सुन्दर फूलों के लिए प्रसिद्ध है। यह माना जाता है कि चंपक के पौधों से युक्त इस तालाब का तट बुद्ध का प्रिय स्थल था जहाँ वे नगर की यात्रा के दौरान ठहरते और उपदेश देते थे। 1900 के प्रारंभिक वर्षों में, झील को साफ करने की एक परियोजना के कारण कई मूर्तियाँ प्राप्त हुईं। इनके विषय में ज्यादा कुछ ज्ञात नहीं है।

आसपास के अन्य आकर्षण

जैन मंदिर- चंपानगर जैन समुदाय के लिए एक प्रमुख स्थल है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यहाँ तीर्थंकर महावीर ने अपने भ्रमण के दौरान तीन वर्षावास व्यतीत किए। यहाँ के दो जैन मंदिर 12वें जैन तीर्थंकर वासुपूज्य को समर्पित हैं जो केवल चंपनगर में पैदा ही नहीं हुए, बल्कि प्रचलित जैन पंरपरा के अनुसार यहाँ सभी पाँच संस्कार भी प्राप्त किए थे।

कर्ण का महल- यह महल चंपानगर को, इसका दूसरा नाम कर्णगढ़ प्रदान करता है।

चंदावरम, आंध्र प्रदेश

यह गुंडला कम्मा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है और आंध्र प्रदेश में प्रकाशम जिले का एक गाँव है। यह जिला 17626 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को घेरे हुए है और इसका मुख्यालय ओंगोल में स्थित है जो 75 किलोमीटर दूर है। विजयवाड़ा, चंदावरम से लगभग 150 किलोमीटर दूर है।

चंदावरम एक प्रमुख बौद्ध स्थल होने के कारण विख्यात है। यहाँ किए गए उत्खनन कार्य से पहाड़ी पर दो सीढ़ीदार महास्तूप का पता चला है। स्थानीय लोग इस पहाड़ी को सिंगारकोंडा कहते हैं। चंदावरम में अयाका स्तंभों की अनुपस्थिति दर्शाती है कि बौद्ध धर्म का थेरवाद संप्रदाय विगत युग में इस क्षेत्र में प्रचलित था। इसके पास एक अन्य स्तूप है।

इसके अतिरिक्त, इसके पास एक मठ परिसर का खंडहर है जहाँ 1.6 मीटर ऊँचा एक महाचैत्य और 60 सेंटीमीटर चौड़ा एक ढोल तथा नागार्जुनकोंडा के अपारशिला विहार की भांति एक तीन मंजिला विहार भी है। दो अन्य विहारों के अवशेष की देखे जा सकते हैं। यदि आप और भी कुछ देखना चाहते हैं तो स्थल पर एक संग्रहालय है जो मूर्तियों और अन्य अवशेषों को प्रदर्शित करता है।

आसपास के अन्य आकर्षण

दोड्डावरम - यह गाँव प्रकाशम जिले में स्थित है जो रेड्डी शासकों के शासनकाल में वीर नरसिम्हा पुरी अग्रहारम के नाम से विख्यात था। यहाँ कई मंदिर हैं जिनमें शिवालयम, श्री रामलयम, श्री नरसिम्हा स्वामी अलयम, अंकम्मा गुडी, चिन्ना अंकम्मा गुड़ी, पोलेरम्मा गुडी, वीर ब्रह्मेन्द्र स्वामी गुडी आदि प्रमुख हैं। अंकम्मा थिरूनाल उत्सव प्रत्येक वर्ष मार्च के अंतिम सप्ताह में मनाया जाता है, जो आसपास के क्षेत्रों से असंख्य ग्रामीणों को आकर्षित करता है। मई के महीने में बैलों की दौड़ की राज्य स्तरीय प्रतियोगिता, प्रतिभागियों को आंध्र प्रदेश के प्रत्येक भाग से आकर्षित करती है।

मरकापुर- इसका महत्त्व भारत के मुख्य स्लेट उत्पादक शहर के रूप में निहित है। इसके अलावा भगवान चेन्नाकसवा का ऐतिहासिक मंदिर, इसका एक अन्य आकर्षण है।

आंगोल- यह प्रकाशम का जिला मुख्यालय है और बैलों की एक नस्ल के लिए जाना जाता है जो श्रेष्ठ पौरुषेय के लिए जाने जाते हैं। वह दुनिया के प्रमुख ज़ेबू नस्लों में से एक है।

दोन गाँव, बिहार

यह बिहार में सिवान जिले के दरौली खंड में स्थित है। यह प्रमुख रूप से बौद्ध धर्म से जुड़ा हुआ है। बुद्ध का महापरिनिर्वाण कुशीनगर में हुआ था, बिना कोई निर्देश छोड़े कि उनके पार्थिव शरीर का क्या किया जाए। महापरिनिर्वाण के बाद, कुशीनगर के मल्ल एकत्रित हुए और स्वयं उनके अंत्येष्टि विधान का कार्य पूर्ण किया। 6 दिनों तक सम्मान प्रकट किया गया और उसके बाद पार्थिव शरीर का दाह संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार के बाद, अवशेषों के बंटवारे को लेकर मल्लों और अन्य कुल के प्रमुखों के बीच विवाद शुरू हो

गया। उसका दोण नामक ब्राह्मण के हस्तक्षेप से समाधान हुआ। उसने आठ दावेदारों की संतुष्टि के लिए अवशेषों को समान रूप से वितरित किया।

सभी दावेदारों ने खुशी और कृतज्ञता से दोण को वह पात्र दिया जिसमें बुद्ध के शारीरिक अवशेष एकत्रित किए गए। दोण ने घोषणा की कि वह अपने भाग पर स्तूप निर्मित करेगा जिसमें पवित्र अवशेष को स्थापित करेगा। बाद में, यह स्तूप एक महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थल बन गया।

इस स्तूप के अवशेषों का संदर्भ ह्वेनसांग के यात्रा विवरण में मिलता है। आज, यह स्तूप हिन्दू मंदिर के पास घास के टीले से अधिक कुछ नहीं है जो दोन गाँव के बाहर स्थित है। जिसमें देवी तारा की मूर्ति है, जिसकी अब हिन्दू देवी के रूप में पूजा की जाती है। ऐसा कहा जाता है कि यह प्रतिमा 9वीं शताब्दी ई. की है।

गया, बिहार

यह बिहार राज्य के सबसे प्रसिद्ध स्थलों से एक है और तीन पहाड़ियों ब्रह्मयोनि, प्रेतशिला और रामशिला से घिरा हुआ है। गया हिंदु समुदाय के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके प्रति देश के बौद्ध भी श्रद्धा रखते हैं। हिन्दुओं का मानना है कि यदि विष्णुपाद मंदिर के अक्षयवट के नीचे मृतक का दाह संस्कार किया जाता है तो आत्मा सीधे स्वर्ग में चली जाती है। बौद्ध भी मानते हैं कि यह स्थान उनके लिए बहुत महत्त्व रखता है।

बौद्ध आकर्षण

गया संग्रहालय- यह प्रस्तर की मूर्तियों और अन्य कलाकृतियों के अपने समृद्ध संग्रह के कारण देखने लायक है। संग्रहालय का मुख्य आकर्षण कांस्य की प्रतिमाएँ हैं। बुद्ध की प्रतिमाओं और स्तंभों का छोटा सा संग्रह भी आकर्षक है। संग्रहालय सोमवार को छोड़कर प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहता है।

ब्रह्मयोनि पहाड़ी- यह पहाड़ी विष्णुपाद मंदिर से एक किलोमीटर दूर है और इसकी चोटी से शहर के कुछ मनोरम दृश्य दिखाई देते हैं। इसके अतिरिक्त, चोटी पर दो संकीर्ण गुफाएँ हैं- बह्मयोनि एंव मैत्रेयोनि। यह माना जाता है कि इन गुफाओं से गुजरने वाले को पुनर्जन्म का अनुभव नहीं होगा। चोटी पर एक मंदिर है जो अष्टभुजा देवी और अन्य देवियों

को समर्पित है। चोटी तक पहुँचने के लिए आपको 424 पत्थर की सीढियाँ चढ़ने के लिए 40 से 60 मिनट की कठिन पैदल यात्रा करनी होगी।

टंकी मंच- बौद्ध महत्त्व का स्थान है और अब यह एक विशाल टैंक है जो सुजीकुण्ड के रूप में प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि यहाँ बुद्ध ने सूचिलोमा नामक बुरी आत्मा से संवाद और विमर्श किया था। सूचिलोमा का संदर्भ *सुत्त निपात* में दिया गया है। टैंक पत्थर की बड़ी-बड़ी दीवारों से घिरा हुआ है और इसके उत्तरी किनारे पर कुछ बौद्ध स्तूप और मूर्तियाँ हैं।

आसपास के अन्य आकर्षण

विष्णुपाद मंदिर- यह मंदिर फल्गु नदी के तट पर स्थित है और शहर से 3 किलोमीटर दूर है। इसका निर्माण शोभबाजार, कोलाकाता के राजा राधाकांत देव ने करवाया था और पुनरुद्धार इंदौर की रानी अहिल्याबाई द्वारा किया गया था। मंदिर में एक 30 मीटर ऊँचा टावर है जो चाँदी से सुसज्जित स्तंभों की 8 पंक्तियों पर टिका हुआ है। मंदिर के अंदर 16 इंच लंबे और 6 इंच चौड़े भगवान विष्णु के चरण कमल 48 इंच व्यास की एक ठोस चट्टान पर अंकित है। पदचिह्न मंदिर में मुख्य पूजा स्थल है जिनके ऊपर चाँदी की परत चढ़ी हुई है। भक्त अपने पूर्वजों की ओर से प्रस्तर के पदचिह्न पर जल चढ़ाते हैं। मंदिर परिसर के भीतर अक्षयवट भी है जहाँ किसी मृत व्यक्ति का दाह संस्कार हिन्दू रीति-रिवाज के अनुसार किया जाता है। यह भी माना जाता है कि बुद्ध ने बोधगया जाने और संबोधि प्राप्ति से पूर्व, इस वृक्ष के नीचे ध्यान साधना की थी।

रामशिला पहाड़ी- यह विष्णुपाद मंदिर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और इसमें सीता, राम और लक्ष्मण का मंदिर है तथा इसके शीर्ष पर पालेश्वर मंदिर है। रामकुंड में पिंड दान किया जाता है।

प्रेतशिला पहाड़ी- यह रामशिला पहाड़ी से 3 किलोमीटर आगे है जिसकी तलहटी में एक कुंड है। यहाँ दुर्घटनाओं में मरने वाले व्यक्ति का पिंड-दान किया जाता है।

देव सूर्य मंदिर- यह मंदिर सोन नदी के तट पर विष्णुपाद मंदिर के पास स्थित है, जो गया से लगभग 20 किलोमीटर दूर है। यहाँ का सूर्य मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। छठ पूजा के उत्सव के दौरान तीर्थयात्री नदी के पानी में खड़े होते हैं और प्रार्थना के साथ-साथ नए

अनाज, फल और घर से बनी मिठाइयाँ भगवान सूर्य को अर्पित करते हैं। इस पूजा के दौरान यहाँ एक मेला भी लगता है।

घंटशाल गाँव, आंध्र प्रदेश

कृष्णा जिला, आंध्र प्रदेश के 23 जिलों में से एक है और इसका मुख्यालय मछलीपट्टनम में स्थित है। घंटशाल इस जिले का एक गाँव है और मछलीपट्टनम से लगभग 21 किलोमीटर दूर दिवि तालुका में स्थित है। विजयवाड़ा इस जिले का सबसे बड़ा शहर है जो लगभग 60 किलोमीटर दूर है। आंध्र प्रदेश सरकार ने राज्य के पर्यटकों, विशेष रूप से बौद्ध पर्यटकों के लिए घंटशाल गाँव को मुख्य पर्यटक स्थलों में से एक के रूप में मान्यता दे रखी है।

इसका कारण एक बौद्ध स्तूप और बौद्ध मूर्तियों के अवशेषों की मौजूदगी है। ये बौद्ध आकर्षण वर्ष 1919-20 में खोजे गए थे और अब बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यहाँ खोजा गया स्तूप अपनी बनावट में अद्वितीय है। यह 12 राशियों के चक्र को प्रदर्शित करने वाली ईंटों से बनी एक घनाकार संरचना है। किसी समय तथागत के जीवन की घटनाओं को दर्शाने के लिए स्तूप के गुंबद को लगभग 47 स्लैबों से सजाया गया था। दिलचस्प बात यह है कि इनमें से कुछ स्लैब आज पेरिस के संग्रहालयों की अलमारियों की शोभा बढ़ा रहे हैं। हालांकि, अभी भी घंटशाल गाँव के संग्रहालय में बौद्ध कला और मूर्तियों का एक सराहनीय संग्रह है।

घोसावान गाँव, बिहार

यह एक छोटा सा गाँव है जहाँ पहले एक विहार था। संभवतः यह वह विहार था जिसका भारत यात्रा के दौरान ह्वेनसांग ने भ्रमण किया गया था। तब विहार का नाम कपोतक विहार था। आज, यह बौद्ध पर्यटकों को आकर्षित करता है जो इस गाँव में महात्मा बुद्ध की 10 फीट ऊँची चमकदार काले पत्थर की प्रतिमा को देखने आते हैं। प्रतिमा गाँव के बाहर स्थापित है। इसके नजदीक एक अन्य गाँव है जिसका नाम तेत्रवान है जो बौद्ध पर्यटकों के लिए आकर्षक स्थान है क्योंकि यहाँ शाक्यमुनि और बोधिसत्त्वों की मूर्तियों का अद्भुत संकलन है।

आसपास के अन्य आकर्षण

नवादा- यह एक छोटे से संग्रहालय का घर है जिसमें क्षेत्र की खुदाई से प्राप्त बुद्ध की प्रतिमाएँ रखी हैं। सोमवार के अलावा, संग्रहालय प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहता है।

पावापुरी- यह घोस्रावान से 5 किलोमीटर दूर है और जैन समुदाय के लिए एक धार्मिक स्थल है। अंतिम तीर्थंकर और जैन धर्म के संस्थापक भगवान महावीर को इस स्थान पर मोक्ष प्राप्त हुआ था। अंतिम संस्कार के बाद, उनके शारीरिक अवशेषों को प्राप्त करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी। भीड़ इतनी अधिक की जिस स्थान पर उनका अंत्येष्टि विधान किया गया था, स्थल की मिट्टी लेकर प्रत्येक उपासक ने अपने सिर पर लगाई जिससे वहाँ एक गड्ढा गया जिसमें जल भरने पर तालाब बन गया। बाद में, इस तालाब के बीच में संगमरमर का जलमंदिर बनवाया गया था। इसके साथ एक अन्य जैन मंदिर, समोशरण है जो बड़ी संख्या में जैन धर्मावलंबियों को आकर्षित करता है।

गुंतुपल्ली, आंध्र प्रदेश

दक्षिणी भारतीय राज्य, आंध्र प्रदेश के पश्चिमी गोदावरी जिले की सीमा पूर्व और उत्तर में पूर्वी गोदावरी जिले से, दक्षिण में कृष्णा जिले और बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में कृष्णा और खम्मम जिलों से लगती है। पश्चिमी गोदावरी जिले का मुख्यालय एलुरू में स्थित है। गुंतुपल्ली इस जिले का एक गाँव है और कमावारापुकोता के पास है। विजयवाड़ा से गुंतुपल्ली की दूरी लगभग 85 किलोमीटर और एलुरू से 40 किलोमीटर है।

आंध्र प्रदेश में प्रत्येक बौद्ध पर्यटक को गुंतुपल्ली की यात्रा की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है क्योंकि यह क्षेत्र के सबसे आकर्षक बौद्ध स्थलों में से एक होने के लिए व्यापक रूप से प्रशंसित है। यह स्थल एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है और इसमें आपके देखने के लिए शैलकर्त्त चैत्य, मन्नत स्तूप और विहार और बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ हैं। ऐसी मान्यता है कि यह बौद्ध खजाना महाराष्ट्र की विश्व प्रसिद्ध अजंता और एलोरा की गुफाओं से भी पूर्व का है। यह भी माना जाता है कि बौद्ध तर्कशास्त्री दिङ्नाग ने कुछ समय यहाँ निवास किया था।

आसपास के अन्य आकर्षण

कोल्लेरू झील- यह पश्चिमी गोदावरी और कृष्णा दोनों जिलों में कृष्णा नदी के डेल्टा के बीच 308 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है और प्रमुख आकर्षणों में से एक है जिसे आपको गुंतुपल्ली की अपनी यात्रा के दौरान देखना नहीं भूलना चाहिए। झील भारत की बड़ी झीलों में से एक है और जिसकी बुडामेरू और तम्मिलेरू जैसी मौसमी नदियों द्वारा प्रत्यक्ष आपूर्ति की जाती है। अभ्यारण्य में जीवों और वनस्पतियों की बहुलता है और उत्तरी एशिया तथा पूर्वी यूरोप से बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षी अक्तूबर और मार्च के महीने के दौरान यहाँ आते हैं। इन पक्षियों में लाल कलगी बत्तख, ब्लैकविंग्ड स्टिल्ट, एवोसेट्स, कॉमन रेडशैंक, विजियन, गेडवाल और जलकाक, गार्गेनी, बगुला, राजहंस और अन्य शामिल हैं। निवासी पक्षियों में ग्रे पेलिकन, एशियाई सारस, रंगी सारस, चमकदार आइबिस, चैती, पिंटेल, शॉवर्लस, शामिल हैं। नवम्बर,1999 में झील को वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित किया गया था।

पलाकोल- यह पश्चिमी गोदावरी जिले के सबसे महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक केन्द्रों में से एक है और इसकी आबादी लगभग 57171 है। यहाँ का प्रमुख आकर्षण क्षीर राम लिंगेश्वर स्वामी मंदिर है जिसमें भगवान शिव मुख्य देवता हैं। यह मंदिर 15वीं शताब्दी से पूर्व का है और आज, इसे आंध्र प्रदेश में सबसे ऊँचे मंदिरों में गिना जाता है। इसका एक अन्य आकर्षण अष्टभुजा लक्ष्मी नारायण स्वामी मंदिर है जो अपने त्यौहारों, विशेष रूप से ब्रह्मोत्सवम के लिए प्रसिद्ध है।

भीमावरम- यह पश्चिमी गोदावरी जिले का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, जो गोदावरी जिले के वाणिज्यिक मुख्यालय के रूप में चिन्हित है। यहाँ के देखने लायक मंदिरों में गुनुपुड़ी श्री सोमेस्वर मंदिर, श्री मवुल्लामा बारी मंदिर, श्री वरदा दत्ता क्षेत्रं मंदिर, श्री सब्बरयुदु मंदिर, श्री भीमेश्वर स्वामी मंदिर, श्री वेंकटेश्वर मंदिर और जैन मंदिर (पेड्डा अभिराम) शामिल हैं।

द्वारका तिरुमाला- यह एक छोटा सा गाँव है तथा एलुरु से लगभग 40 किलोमीटर दूर स्थित है। गाँव अपने मंदिर के लिए प्रसिद्ध है जो भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है। यह स्थान चिन्ना तिरूपति के रूप में प्रसिद्ध है।

एलुरु- यह पश्चिमी गोदावरी जिले का मुख्यालय है और इसमें आपके देखने और आनंद लेने के लिए कई ऐतिहासिक स्मारक हैं। उदाहरण के लिए, एलुरु क़िला जिसका निर्माण मुस्लिम शासकों द्वारा किया गया था जिसमें वेंगी के मंदिरों के पत्थर लगाए गए। इसके अलावा, शहर में श्री जनार्धन स्वामी मंदिर और श्री जलापहरेश्वर स्वामी मंदिर भी देखने योग्य हैं।

गुरपा, बिहार

तथागत के महापरिनिर्वाण के बाद महाकश्यप उनका परवर्ती था। जब महाकश्यप को पता चला कि उसके जीवन का अंत करीब है तो उन्होंने कुक्कुटपदगिरि की ओर प्रस्थान किया जो उनका प्रिय स्थल था। उन्हें यात्रा के दौरान मार्ग में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा जैसे- ऊँचे-ऊँचे पहाड़। जो उनकी यात्रा में निरंतर बाधा पैदा करते थे। हालांकि, उन्होंने इन सभी पहाड़ों को अपने साथियों के साथ पार किया जिन्होंने उनकी यात्रा के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

जब वे चोटी पर पहुँचे तो चट्टान में एक गुफा बनाई। उन्होंने इसमें प्रवेश किया और गहन ध्यान साधना में लीन हो गए। उनके चारों तरफ की चट्टानें बंद हो गईं। यह माना जाता है कि जब भविष्य में मैत्रेय प्रकट होंगे और जब वे पहली बार कुक्कटपदगिरि की यात्रा करेंगे तो महाकश्यप प्रकट होंगे और उनसे बुद्ध का चीवर धारण करेंगे और फिर अपना नया धार्मिक विधान शुरू करेंगे। पवित्र पर्वत अब गुरपा के नाम से जाना जाता है तथा बिहार राज्य में इसी नाम से एक गाँव है।

पहाड़ के तल से एक उबड़-खाबड़ और खड़ी ढलान वाले रास्ते का तब तक अनुसरण करें जब तक आप उस चट्टान के आधार तक नहीं पहुँच जाते हैं जिसमें बड़ी संकरी दरार है। इस दरार से आगे बढ़ें और तब तक बढ़ते रहें जब तक आप फिर से प्रकाश में नहीं आ जाते। यहाँ, आपको एक और गुफा मिलेगी। इस गुफा के विषय में कहा जाता है कि यहाँ असंग ने अपने जीवन के कई वर्ष ध्यान साधना में व्यतीत किए थे। इस गुफा की छानबीन करने के बाद, आगे बढ़ें और चोटी पर पहुँचे। इस स्थान पर कई हिंदू मंदिर और बौद्ध पुरावशेष हैं। चोटी से शानदार दृश्य दिखाई देते हैं और यहाँ वातावरण बहुत शांत है जो नियमित ध्यान के लिए उत्तम स्थल है।

आसपास के अन्य आकर्षण

गया- बौद्धों की तुलना में हिन्दुओं के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है। लेकिन फिर भी बौद्ध स्थलों की सूची में अंकित है क्योंकि यहाँ तथागत ने अग्नि सुत्त का उपदेश दिया था और यहाँ ठहरे थे। आज, इस शहर में बहुत कम बौद्ध आकर्षण हैं।

हाजीपुर, बिहार

यह पटना के पास स्थित है और प्राचीन काल में उच्चकला के नाम से विख्यात था। यह पहला गाँव था जहाँ से कोई व्यक्ति पटना से पवित्र गंगा को पार कर पहुँचा था। यहाँ बुद्ध ने *मज्झिम निकाय* के चुल गोपालक सुत्त का उपदेश दिया था। आज भी इस स्थान का बौद्ध समुदाय के लिए बहुत महत्त्व है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस शहर में बुद्ध के निजी परिचारक (20 वर्षों तक) आनंद की राख एक स्तूप में रखी है। ऐसा माना जाता है कि जब आनंद को यह पता चला कि उसके जीवन का अंत करीब है तो उन्होंने राजगीर छोड़ दिया और उत्तर की ओर चल दिए। जब राजा अजातशत्रु को इसका पता चला तो उन्होंने अपनी प्रजा के साथ अनंद का अनुगमन किया ताकि उनसे वापस आने का अनुरोध कर सके। वैशाली के लोगों ने भी आनंद के अपने क्षेत्र में आगमन की बात सुनी तो उनका स्वागत करने के लिए गंगा के तट पर एकत्रित हुए।

जब अजातशत्रु ने आनंद को देखा तो वे नदी के बीच में अपनी नाव पर सवार थे। नदी के दोनों किनारों पर भीड़ जमा हो गई और सभी आनंद को अपने पक्ष में आने का अनुरोध कर रहे थे। आनंद किसी भी पक्ष को निराश नहीं करना चाहते थे। इसलिए वे हवा में उछले और आग के गोला की लपेटों में विलीन हो गए। उनकी राख का एक हिस्सा नदी के एक किनारे पर गिरा जबकि दूसरा अन्य किनारे पर गिरा था। नदी के दोनों किनारों पर स्तूप स्थापित किए गए, जहाँ उनकी शरीर की राख गिरी थी।

दक्षिणी तट पर स्थित स्तूप बहुत पहले नष्ट हो गया लेकिन उत्तरी तट का स्तूप आज भी मौजूद है। यह हाजीपुर शहर के बाहरी क्षेत्र में स्थित है और इसके शीर्ष पर रामचौरा मंदिर के साथ एक घास का टीला भी है।

आसपास के अन्य आकर्षण

वैशाली- महात्मा बुद्ध उपदेश देने के लिए अक्सर वैशाली की यात्रा करते थे। इस स्थान के बौद्ध आकर्षणों में अशोक स्तंभ, बौद्ध स्तूप 1 तथा 2 और शांति स्तूप शामिल हैं।

अन्य आकर्षणों में राजा विशाल का गढ़, राज्याभिषेक सरोवर, कुंडलपुर, बावन पोखर मंदिर, चौमुखी महादेव मंदिर, विश्व शांति पगोडा, वैशाली संग्रहालय आदि शामिल हैं।

सोनपुर- यह हाजीपुर के पास एक छोटा सा शहर है जो प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर गतिशील होता है जब एशिया के सबसे बड़े पशु मेलों में से एक का आयोजन होता है। भारत और विदेश दोनों जगह से बहुत सारे लोग इस मेले में भाग लेने के लिए आते हैं। बिहार राज्य पर्यटन विभाग पर्यटकों के लिए पारंपरिक झोपड़ियों में ठहरने की व्यवस्था करता है।

मुजफ्फरपुर- यह माना जाता है कि प्राचीन काल में मुजफ्फरपुर के साथ-साथ चंपारण और दरभंगा जैसे आधुनिक जिलों से लिच्छवि साम्राज्य का गठन हुआ था। आज, यह उत्तरी बिहार के प्रमुख शहरों में से एक है और इसके आसपास घूमने के लिए बहुत सारे ऐतिहासिक स्थल हैं।

हाजो, असम

यह असम में गुवाहाटी से लगभग 24 किलोमीटर दूर ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित है और हिन्दू, मुस्लिम एवं बौद्ध समुदाय के लिए एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थल है। हाजो की भूमि पर मंदिर और मस्जिद जैसे कई धार्मिक स्थल हैं। उनमें से हयग्रीव महादेव मंदिर प्रमुख है।

यह मंदिर हिन्दू और बौद्ध दोनों समुदायों के लिए महत्त्वपूर्ण है। इसके अंदर भगवान विष्णु की एक प्रतिमा है जो ओडिसा में पुरी के जगन्नाथ मंदिर की प्रतिमा के जैसी है। यह हाजो क्षेत्र के बौद्ध समुदाय के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उनका मत है कि यहाँ बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था। मंदिर को कालापहाड़ (एक ब्राह्मण जो बाद में मुसलमान बना) के हाथों विनाश का सामना करना पड़ा जो भारत में कई मंदिरों को नष्ट करने के लिए भी उत्तरदायी था। बाद में, 16वीं शताब्दी के मध्य में राजा रघुदेव ने मंदिर को पुनः निर्मित किया। इसके पास एक अन्य मंदिर है जिसको अहोम राजा प्रमत्त सिंह ने बनवाया था। इस मंदिर में डौल महोत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। श्री हयग्रीव महादेव मंदिर तक पत्थर की सीढियाँ चढ़कर पहुँचा जा सकता है, जिसके तल में एक तालाब है। इस तालाब में एक बहुत बड़ा कछुआ रहता है।

प्रमुख आकर्षण

पोवा मक्का- हाजो मुस्लिमों के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। पोवा-मक्का दरगाह शरीफ़ की चारदीवारी के लेख बताते हैं कि इसका निर्माण मुगल बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान 1657 ई. में मीर लुतुफुल्लाह-ई-शिराजी द्वारा करवाया गया था। मस्जिद के सामने ग्यासुद्दीन औलिया का मकबरा है जिसने प्रारंभ में यहाँ इस्लाम का प्रचार किया था। ऐसा माना जाता है कि इस मस्जिद को मक्का से लायी गई मिट्टी के आधार पर बनाया गया था।

हाजो का प्रवेश द्वार - गुवाहाटी

हाजो में ठहरने के लिए अच्छे स्थल नहीं हैं। इसलिए आपको हमेशा गुवाहाटी में ठहरना होगा। गुवाहाटी में पर्यटकों के आकर्षण के लिए कामाख्या मंदिर, वशिष्ट आश्रम, भुवनेश्वरी मंदिर, शिव मंदिर, नवग्रह मंदिर, गुवाहाटी चिड़ियाघर आदि शामिल हैं। इसके अलावा, गुवाहाटी वह आधार है जहाँ से आप पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की यात्रा कर सकते हैं।

पटना, बिहार

पटना शहर का इतिहास और विरासत वैभवशाली रहे हैं। छठी शताब्दी के आरंभ में, मगध के राजा अजातशत्रु ने पहली बार गंगा के तट पर पाटलिग्राम में एक छोटा सा क़िला बनवाया था। तब से, यह स्थान इतिहास में निरंतर अभिलिखित है। यहाँ तक कि आज यह दुनिया के उन कुछ प्राचीन शहरों में गिना जाता है जिनका एक अखंड इतिहास रहा है। इसके अलावा, इस शहर को अतीत में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता रहा है जैसे- कुसुमपुर, पुष्पपुर और पाटलिपुत्र।

बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट होने वाले पर्यटकों के लिए पटना से यात्रा शुरू करना एक अच्छा आधार है। इसके अलावा, बुद्ध ने शहर का भ्रमण किया था जो इसे पाटलिग्राम के रूप में जानते थे। कई अवसरों पर, वे इस शहर से होकर अन्य स्थान पर गए थे। इसमें उनका कुशीनगर का अंतिम अल्पावास भी शामिल है जहाँ उन्होंने एक उपदेश दिया जो रात भर

चला था। बाद में, सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और पटना को तीसरी बौद्ध संगीति का आयोजन स्थल बनाया था। आज शहर में कुछ ही आकर्षण हैं जो बौद्ध पर्यटकों को पसंद हैं।

बौद्ध आकर्षण

पटना संग्रहालय- यह संग्रहालय बुद्ध मार्ग पर स्थित है और इसकी एक यात्रा प्रत्येक बौद्ध पर्यटक को अवश्य करनी चाहिए। संग्रहालय 8वीं से 12वीं शताब्दी तक की बौद्ध कला के संग्रह का प्रदर्शन करता है जो अधिकतर पाल युग की है। मुख्य गैलरी में बोद्धिसत्त्वों की सुंदर मूर्तियाँ ध्यान आकर्षित करती हैं। मूर्तियों के सिर एक तरफ झुके हुए हैं और उनके मुख पर एक मधुर मुस्कान है। प्रतिमाएँ करुणा के उस आदर्श को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं जिसके लिए उनका निर्माण हुआ है। ऊपरी गैलरी में आप कर्किहर की खुदाई से प्राप्त मूर्तियों को देख सकते हैं।

कुम्हरार- यह पटना रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर दूर है और प्राचीन शहर पाटलिपुत्र का स्थान है। आज, सम्राट अशोक के महल को छोड़कर प्राचीन शहर के बहुत कम अवशेष बचे हैं। हॉल 80 बलुआ पत्थर के स्तंभों पर टिका है। सोमवार को छोड़कर, प्रतिदिन सुबह 9 बजे से शाम 5.30 बजे के मध्य कम्हरार की यात्रा की जा सकती है।

आसपास अन्य आकर्षण

गोलघर-1770 ई. के अकाल के बाद, जॉन गार्सिन ने 1786 ई. में गोलघर अन्न भंडार का निर्माण किया था। अन्न भंडार का अर्थ था- ब्रिटिश सेना के लिए अनाज का भंडारण करना। इसकी संरचना 29 मीटर ऊँची दिखाई देती है। इसके आधार पर दीवारें 3.6 मीटर चौड़ी हैं। घुमावदार सीढियाँ स्मारक के शीर्ष तक जाती हैं जहाँ से शहर और गंगा नदी के अद्भुत दृश्य दिखाई देते हैं।

शहीद स्मारक- यह स्मारक सात स्वतंत्रता सेनानियों को समर्पित है, जिन्होंने सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय ध्वज फहराने के प्रयास में अपनी जान गंवा दी थी। स्मारक सात शहीदों की एक जीवंत मूर्ति है जो पटना में सचिवालय भवन के बाहर स्थित है।

तख्त श्री हर मंदिर- बौद्ध और हिन्दुओं के अलावा, पटना सिख समुदाय के लिए भी विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ सिखों के दसवें गुरु गोविंद सिंह का 1660 ई. में जन्म हुआ था। तख्त श्री हर मंदिर उनके जन्म स्थल पर स्थित है और सिखों के चार धार्मिक स्थलों में से एक है। गुरुद्वारे में ग्रंथी के साथ पवित्र गुरुग्रन्थ साहिब भी हैं।

पत्थर की मस्जिद- इस मस्जिद का निर्माण जहाँगीर के पुत्र परवेज शाह ने करवाया था, जिस समय वह बिहार के सूबेदार के रूप में कार्यरत था। पत्थर की मस्जिद तख्त श्री हर मंदिर के पास और गंगा नदी के तट पर स्थित है। मस्जिद को सैफ खान की मस्जिद, चिम्मी घाट मस्जिद और सांगी मस्जिद के नाम से भी जाना जाता है।

शेरशाह सूरी मस्जिद-1545 ई. में शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित यह मस्जिद पटना के सबसे महत्त्वपूर्ण आकर्षणों में से एक है। मस्जिद अफगान स्थापत्य शैली में निर्मित है और बहुत खूबसूरत है।

खुदाबक्श ओरिएण्टल पुस्तकालय- इसकी स्थापना सन् 1990 में की गई थी और यह भारत के राष्ट्रीय पुस्तकालयों में से एक है। पुस्तकालय के संचय में दुर्लभ अरबी और फारसी पांडुलिपियों के संग्रह के साथ-साथ राजपूत और मुगलकाल के चित्र भी शामिल हैं। स्पेन के कोर्डोबा विश्वविद्यालय से नई और पुरानी पुस्तकों के संकलन के साथ-साथ 25 मि.मी. चौडी एक पुस्तक में कुरान की आयतें उत्कीर्ण हैं। पुस्तकालय उन पुस्तकों का मालिक होने पर भी गौरवान्वित है जो मूरों (मुस्लिम शासक) के कारण हुए विनाश से बची हैं।

सदाकत आश्रम- यह बिहार विद्यापीठ का मुख्यालय है और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के सेवानिवृत्ति के बाद उनका निवास स्थल भी रहा। यहाँ एक छोटा सा संग्रहालय उनके निजी सामान को प्रदर्शित करता है।

अगम कुआँ- यह पटना के प्रारंभिक पुरातात्त्विक अवशेषों में से एक है। यह गुलजारबाग रेलवे स्टेशन के पास स्थित है और अशोककालीन माना जाता है।

गांधी पुल- यह गंगा नदी पर बना है और सड़कमार्ग पर एशिया का सबसे लंबा पुल माना जाता है।

पादरी की हवेली- इस स्थान पर शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार विजेता और प्यार एवं करूणा की प्रतीक मदर टेरेसा ने अपना प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

जैविक उद्यान- यह उद्यान संजय गांधी जैविक उद्यान के नाम से भी प्रसिद्ध है तथा वयस्कों और बच्चों में समान रूप से लोकप्रिय है। पशु-पक्षियों के अलावा, हाथी और नौका विहार के साथ मिनी ट्रेन की सवारी पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण हैं।

आधुनिक तारामंडल- हाल ही में निर्मित पटना तारामंडल, इंदिरा गांधी विज्ञान परिसर पटना के सबसे लोकप्रिय स्थानों में से एक है। यह देश के तारामंडलों में से एक है।

जेठियन, बिहार

यह एक छोटा सा गाँव है जो पूर्व में लातीवन के रूप में भी प्रसिद्ध था। बिहार में राजगीर शहर के पास स्थित है। इतिहास के अनुसार, बुद्ध ने सारनाथ में प्रथम उपदेश दिया और फिर बोधगया लौट गए। यहाँ उन्होंने न केवल उपदेश दिया बल्कि तीन कस्सपा भाईयों सहित उनके 1000 अनुयायियों का भी धर्मांतरण किया। इसके बाद, वे गया गए और अग्नि सुत्त का उपदेश दिया। इसके बाद, बुद्ध ने राजगीर की ओर प्रस्थान किया और राजा बिम्बिसार से मिलने का फैसला किया। जब राजा बिम्बिसार को पता चला कि बुद्ध उनसे मिलने आ रहे हैं तो वे बुद्ध का अभिवादन करने के लिए अपनी प्रजा के साथ नगर से बाहर आए। दो महापुरुषों के मिलन का वह स्थान, एक छोटा सा गाँव था जिसे आज हम जेठियन के नाम से जानते हैं। बाद में, लगभग 7वीं शताब्दी के आसपास जेठियन प्रसिद्ध संत जयसेन का घर बना, जिसने इस स्थान पर ह्वेनसांग को लगभग 2 वर्षों तक पढ़ाया था।

यहाँ के बौद्ध आकर्षणों में सुपतित्था चैत्य के ऊपर बने एक स्तूप के भग्नावशेष हैं। अवशेषों में एक घास का टीला शामिल है जिसके पास एक टैंक है। यह वह स्थान है जहाँ जेठियन में बुद्ध ठहरे थे। टीले के पास बुद्ध की एक बड़ी प्रतिमा है। इस स्थान से आगे बढ़ते हुए, आप सर्वोदय स्कूल पहुँचेगे जहाँ आज भी बुद्ध की एक अन्य प्रतिमा पद्मपाणि के साथ है।

जेठियन के अन्य आकर्षण में एक बड़ी गुफा शामिल है जो राजपिंड के रूप में प्रसिद्ध है और चंदु पहाड़ी से 3 किलोमीटर दूर है। ऐसी मान्यता है कि यह वह गुफा है जिसका संदर्भ त्रिपिटक में दिया गया है। गुफा के अंदर अंधेरा है और बड़ी संख्या में कबूतरों को आश्रय प्रदान करती है। इस कारण, यह माना जाता है कि यह कबूतर गुफा, कपोतकंदरा है जहाँ कई अवसरों पर सारीपुत्त ठहरे थे।

बौद्ध आकर्षण

राजगीर- यह प्रमुख बौद्ध स्थलों में गिना जाता है। यहाँ देखने लायक आकर्षणों में जरासंध का अखाड़ा, जीवक आम उपवन, अजातशत्रु क़िला, साइक्लोपियन दीवार, करंडा टैंक, स्वर्ण भंडार की गुफाएँ और बिम्बिसार की जेल शामिल हैं। शहर के अन्य आकर्षणों में वीरायतन संग्रहालय, जैन मंदिर, रथ चक्र के निशान, गर्म पानी के झरने, पिप्पला गुफा, स्वर्ण भंडार, गृद्धकूट चोटी, बिम्बिसार मार्ग, मनियार मठ, सप्तर्णी गुफा, पोप्पला पत्थर आदि शामिल हैं।

नालंदा- यह राजगीर के पास स्थित है। शहर का नाम 'न-अलं-दा' से लिया गया है, जिसका अर्थ है- वह स्थान जहाँ विद्या के क्षेत्र में अंत नहीं होता था। यह उन नामों में से एक है जो बुद्ध के साथ जुडे हुए हैं। इसके अलावा, यहाँ ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी ई. में अध्ययन किया था। नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण हैं। इस स्थल पर ह्वेनसांग की याद में आज एक स्मारक स्थित है। नालंदा संग्रहालय, थाई मंदिर, नव नालंदा महाविहार आदि स्थल से 2 किलोमीटर दूर हैं।

केसरिया, बिहार

यह वैशाली से लगभग 55 किलोमीटर दूर स्थित है। बुद्ध के समय में, यह केसपुत्त के नाम से प्रसिद्ध था। यहाँ बुद्ध ने अपने प्रसिद्ध कालाम सुत्त का कालाम लोगों को उपदेश दिया था। इस प्रवचन के माध्यम से बुद्ध ने अपने अनुयायियों से उन्हें स्वीकार करने से पहले उनकी शिक्षाओं का अच्छी तरह से विश्लेषण करने को कहा था। बुद्ध के कालाम सुत्त का विवरण *अंगुत्तर निकाय* में दिया गया है।

दंतकथाओं के अनुसार, बुद्ध अपने जीवन के अंतिम दिनों में वैशाली को छोड़, कुशीनगर चले गए थे। जब, उन्होंने अपनी यात्रा शुरू की तो वज्जियों का एक समूह उनके साथ चल दिया और उन्हें आगे जाने के लिए मना किया। जब वे केसपुत्त पहुँचे तो बुद्ध ने उन्हें छोड़कर जाने के लिए आश्वस्त कर लिया। लोग बहुत दुखी थे, इसलिए उन्हें खुश करने के लिए बुद्ध ने अपना दानपात्र दे दिया। बाद में, इस स्थान पर उस घटना की याद में एक स्तूप बनाया गया। स्तूप का फाह्यान और ह्वेनसांग द्वारा भ्रमण किया गया और यात्रा के

अनुभवों का अपने-अपने यात्रावृत्तांत में विवरण दिया। स्तूप में पाँच बड़े कक्ष हैं जिनमें से प्रत्येक आकार में भिन्न हैं और भगवान बुद्ध की मूर्ति स्थापित है। ऊपर से देखने पर स्तूप एक मंडल का आभास देता है। जब कनिंघम ने स्तूप को मापा तो पाया कि इसकी परिधि 1400 फीट जबकि ऊँचाई 51 फीट थी। उन्होंने बताया था कि मूल स्तूप का गुंबद 70 फीट ऊँचा रहा होगा। स्तूप की खुदाई तथा पुनरुद्धार का कार्य अभी भी निर्माणाधीन है।

आसपास के अन्य आकर्षण

वैशाली- यह गंडक नदी के तट पर स्थित है और इसका अत्यधिक ऐतिहासिक महत्त्व है। बुद्ध ने इस छोटे से शहर में अनेक उपदेश दिए। इस शहर में विश्व शांति स्तूप और बौद्ध स्तूपों का बहुत महत्त्व है। इनके अतिरिक्त, आप वैशाली संग्रहालय की भी यात्रा कर सकते हैं जो इस स्थान पर खोजे गए पुरातात्त्विक अवशेषों को प्रदर्शित करता है।

हाजीपुर- यह वैशाली और पटना के पास स्थित है। यहाँ बुद्ध के शिष्य आनंद की राख एक स्तूप में रखी है। आज, स्तूप के पास रामचौरा नामक एक मंदिर स्थित है।

पटना- यह गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह विश्व के उन पुराने शहरों में से एक है, जिनका शाही महानगर के रूप में अखंड इतिहास रहा है। इस स्थान पर कई आकर्षण हैं जैसे- गोलघर, खुदाबक्श पुस्तकालय, सदाकत आश्रम, शेरशाह सूरी मस्जिद, शहीद स्मारक, तख्त श्री हर मंदिर और पटना संग्रहालय। पटना, बिहार के अन्य पर्यटन स्थलों से भी अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। इसलिए उनकी यात्रा करने के लिए इसे आधार बनाया जा सकता है।

कुर्किहर, बिहार

यह एक छोटा सा गाँव है जो वजीरगंज गाँव से थोड़ा आगे स्थित है। गाँव एक टीले पर बसा हुआ है जो पहले एक बौद्ध मठ था। वर्ष 1930 में गाँव तब सुर्खियों में आया जब 148 कांस्य की कलाकृतियां इस टीले की खुदाई से निकाली गई थीं। इन कलाकृतियों में बुद्ध, बोधिसत्त्व, स्तूप, घंटियाँ और अनुष्ठान की वस्तुएँ आदि शामिल थीं। आज, ये कलाकृतियां पटना संग्रहालय के एक विशेष कक्ष के शेल्फ में सुशोभित हैं। यहाँ क उत्खनन से प्राप्त मूर्तियों को कोलकाता के भारतीय संग्रहालय में रखा गया है।

हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि इस छोटे से गाँव में देखने लायक कुछ भी नहीं है। यहाँ दो हिन्दू मंदिर हैं जिनमें से एक में अभी भी आसपास की खुदाई से प्राप्त मूर्तियों का एक सराहनीय संग्रह रखा है। इनमें अक्षोभ्य बुद्ध की उत्कृष्ट मूर्ति प्रमुख है जो मंदिर के मुख्य द्वार पर स्थापित है। इसके अतिरिक्त, चौदह नक्काशीदार स्तंभ देखने योग्य हैं जो 9वीं शताब्दी ई. के हैं।

एक बड़े सरोवर के किनारे पर विभिन्न आकार के संकल्पित (मन्नत) स्तूप भी देखे जा सकते हैं। इसके अलावा, यहाँ से कई मूर्तियों को स्थानीय जमींदार अपने घर ले गए। इनमें सबसे रोचक एक चट्टान के ताक में दो महिला परिचारिकाओं के मध्य आसीन बोधिसत्त्व का प्रतिनिधित्व करने वाली उभारदार मूर्ति है। ऊपर की चित्रवल्लरी में उपासकों को भेंट सहित स्तूप की तरफ आते हुए दिखाया गया है जबकि शीर्ष भाग में पाँच बोधिसत्त्व दिखाई देते हैं, जिनमें से प्रत्येक एक छोटे से स्थान (ताक) में स्थापित है।

कुर्किहर गाँव से लगभग 3 मील की दूरी पर पुनवान गाँव में अनेक बौद्ध अवशेष देखे जा सकते हैं। किन्तु दुर्भाग्य से, उन्हें अच्छी तरह से संरक्षित नहीं किया गया है और इनका अधिकांश भाग ग्रामीण द्वारा की गई खुदाई से नष्ट हो गया है। इसके अतिरिक्त, यहाँ कभी त्रिलोकनाथ के नाम से एक मंदिर था जिसे ग्रामीणों ने ईंटों के निजी प्रयोग के कारण नष्ट कर दिया।

बौद्ध आकर्षण

गया- यह बोधगया के पास स्थित है और यहाँ बुद्ध ने प्रसिद्ध अग्नि सुत्त उपदेश दिया था। आज, गया संग्रहालय में बौद्ध कलाकृतियों का आकर्षक संग्रह रखा है।

लौरिया नंदनगढ़, बिहार

यह शिकारपुर से 14 किलोमीटर और बेतिया से 24 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गाँव है और बौद्ध पर्यटकों की यात्रा को मनोरंजक बनाता है। यहाँ सम्राट अशोक ने लगभग 40 स्तंभ बनवाए थे। हालांकि, आज उनमें से केवल एक ही अपनी संपूर्णता के साथ खड़ा है।

बौद्ध आकर्षण

नंदनगढ़- यह छोटा सा गाँव अपने बड़े स्तूप के लिए जाना जाता है, जिसे नंदनगढ़ स्तूप कहा जाता है। जो 26 मीटर ऊँचा है और ईंटों का बना है। ऐसा कहा जाता है कि इसमें भगवान बुद्ध की राख रखी है।

अशोक स्तंभ- यह स्तंभ गाँव से मुश्किल से आधा किलोमीटर दूर खड़ा है जिसकी 32 फीट ऊँचाई है। आधार पर मोटाई 35.5 इंच है जबकि शीर्ष पर 26.21 इंच है। स्तंभ एक बलुआ पत्थर की संरचना है जिसका शीर्ष भाग घंटी के आकार जैसा है। एक वृताकार फलक, जिसमें पंक्ति में दाना ले जाते हुए हंसों के समूह को चित्रित किया गया है और शीर्ष पर एक शेर की प्रतिमा है। जब इस स्तंभ की तुलना बाखरा और अरेराज के स्तंभ के साथ की जाती है तो यह बहुत पतला, हल्का, सुन्दर के साथ-साथ मनोहर लगता है। स्तंभ पर स्पष्ट और सुन्दर पात्रों का वर्णन किया गया है।

अन्य आकर्षण

लौरिया अरेराज- यह मोतिहारी से लगभग 31 किलोमीटर दूर स्थित है और एक प्रस्तर के स्तंभ के लिए प्रसिद्ध है जिसे सम्राट अशोक ने तीसरी ई.पू. में स्थापित स्थापित किया था। स्तंभ की ऊँचाई 11.5 मीटर है और इसे पॉलिश किए गए बलुआ पत्थर के टुकड़े से तराशा गया है। स्तंभ पर सम्राट अशोक के छह अभिलेख उत्कीर्ण हैं।

केसरिया- यहाँ बुद्ध ने प्रसिद्ध कालाम सुत्त का उपदेश दिया था। यहाँ एक स्तूप देखने लायक है जो उस घटना की याद दिलाता है, जब तथागत ने अपने अनुयायियों को घर वापस जाने का आग्रह किया था और आगे कुशीनगर जाने के लिए उनका अनुगमन न करें।

मथुरा, उत्तर प्रदेश

मथुरा हिन्दुओं का एक प्रमुख पवित्र स्थल है। इसका कारण भगवान कृष्ण हैं, जो हिन्दुओं के अत्यधिक पूजनीय देवता हैं। यह माना जाता है कि यहाँ उनका जन्म हुआ था। यह नगर भगवान राम के छोटे भाई द्वारा स्थापित किया गया था। बाद के युग में यहाँ श्रीकृष्ण के मामा कंस का शासन हुआ। भविष्यवाणी द्वारा कंस से कहा गया कि वह उसकी बहन देवकी के 8वें पुत्र द्वारा मारा जाएगा। अपना जीवन बचाने के लिए कंस ने पैदा होते

ही देवकी के पुत्रों को मार डाला, किन्तु श्री कृष्ण बच गए और अंत में अपने क्रूर मामा का वध किया।

बौद्ध धर्म में मथुरा का प्रमुख स्थान है क्योंकि तथागत ने एक बार इस नगर की यात्रा की थी। यह यात्रा बहुत अधिक आनंददायक नहीं थी। इसे बुद्ध शायद ही पसंद करते थे। उन्होंने मथुरा को पाँच दोषों से ग्रस्त बताया था जैसे- ऊबड़-खाबड़ जमीन, धूल-मिट्टी, भोजन की कमी, जंगली कुत्ते एवं बुरी आत्माएं। इसका उल्लेख *अंगुत्तर निकाय* में मिलता है जो *सुत्त पिटक* का ग्रन्थ है।

इस तथ्य के बावजूद, आज भी यह शहर बिलकुल वैसी ही समस्याओं से ग्रस्त है। प्रत्येक बौद्ध पर्यटक को इसकी एक यात्रा अवश्य करनी चाहिए, इसका कारण यह है कि मथुरा बौद्ध कला का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। करीब हजार वर्ष तक, मथुरा बौद्ध कला का केन्द्र बना रहा और कई कलाकारों ने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ सृजन किया है।

नागार्जुन सागर, आंध्र प्रदेश

यह आंध्र प्रदेश के सबसे महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में से एक है। यह राज्य के नलगोंडा जिले में स्थित है। यह हैदराबाद से 150 किलोमीटर दूर है। इस आधुनिक शहर के इतिहास को जानने के बाद, आपको पता चलेगा कि प्राचीन काल में इसे विजयपुरी कहा जाता था। इक्ष्वाकु शासकों ने यहाँ पर 100 वर्षों तक शासन किया और वे बौद्ध धर्म के संरक्षक थे। उनकी प्रसिद्धि और उनके साथ, बौद्ध धर्म की ख्याति सीमाओं को पार कर श्रीलंका, म्यांमार, इंडोनेशिया, थाईलैंड और चीन तक पहुँच गई। आज नागार्जुन सागर में तीन बस्तियां हैं- विजयपुरी, पीलोन कॉलोनी तथा हिल कॉलोनी।

इंदसाल गुफा, बिहार

यह राजगीर के पास एक चट्टान के तल पर स्थित है और गिरियक पर्वत से लगभग आधे मार्ग में है। राजगीर से आधे दिन की यात्रा के दौरान यहाँ भी घूमा जा सकता है। गुफा का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि यह वह स्थान था जहाँ सक्क ने बुद्ध से अपने आठ प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए आग्रह किया था जिसके परिणामस्वरूप अंत में, बुद्ध ने अपने सबसे

महत्त्वपूर्ण विमर्शों में से एक सक्कपञ्ञ सुत्त का प्रवचन दिया था। इसके अलावा, बुद्ध ने अपने निवास के दौरान धम्मपद के 206, 207 और 208 श्लोक का उपदेश दिया। तिब्बती बौद्धों के लिए, गुफा इसलिए भी महत्त्व रखती है क्योंकि इसने *गुह्यसमाज तंत्र* के प्रसिद्ध टीकाकार, बुद्धसृजन के निवास के रूप में सेवा की थी।

इस गुफा के पास कुछ अन्य आकर्षण भी हैं। पर्वत के अंत में एक गुफा है जिसमें एक स्वामी का निवास है जो अंग्रेजी में दक्ष नहीं हैं, फिर भी आंगतुकों का मधुरता से स्वागत करते हैं और आगे बढ़ते हुए, आपको पर्वत के शीर्ष पर एक स्तूप मिलेगा जो हंसा स्तूप के रूप में प्रसिद्ध है। इसे भारत में मौजूदा स्तूपों में से सबसे पूर्ण माना जाता है। स्तूप तक पहुँचना थोड़ा कठिन है क्योंकि कांटेदार झाड़ियों के कारण आपको चोट लगने का डर रहता है। हालांकि, एक बार जब आप शीर्ष पर पहुँच जाते हैं तो आसपास के दृश्य आपको तुरंत मंत्रमुग्ध कर देंगे। इस स्तूप का विवरण ह्वेनसांग के यात्रावृत्तांत में मिलता है जो इसके निर्माण के पीछे एक बहुत सुन्दर कहानी बताते हैं। सक्कपञ्ञ सुत्त के विषय में जानने के इच्छुक लोगों के लिए सिर्फ बौद्ध धर्म का *दीघ निकाय* ग्रंथ ही सही विकल्प है। आपको यह सलाह दी जाती है कि अंधेरा होने से पहले अपनी यात्रा को समाप्त कर लें क्योंकि उसके बाद, यह क्षेत्र सुरक्षित नहीं है।

प्रभाषगिरि, उत्तर प्रदेश

यह कौशांबी के पास एक पहाड़ी है जो बौद्ध समुदाय का एक पवित्र स्थल है। प्राचीन काल में, यह पहाड़ी मनकुल के नाम से प्रसिद्ध थी। बुद्ध ने अपना छठा वर्षावास इस पहाड़ी पर व्यतीत किया था। ध्यान देने लायक यह है कि बुद्ध ने यहाँ कोई उपदेश नहीं दिया था। यह कुछ लोगों को बहुत अजीब लग सकता है, लेकिन प्रभाषगिरि की एक यात्रा सभी संदेहों को दूर कर सकती है। यह एक बहुत शांत जगह है और एकांत में स्थित है।

जब ह्वेनसांग अपनी यात्रा के समय प्रभाषगिरि गए थे तो उन्होंने वहाँ एक स्तूप देखा जिसे सम्राट अशोक ने स्थापित किया था। आज, आपको वह स्तूप नहीं मिलेगा। हालांकि, आपको वहाँ कई गुफाएँ और शैल आश्रय मिल जाएंगे। इनमें से अधिकांश गुफाएँ और शैल आश्रय पहाड़ी की उत्तर दिशा में मिलेंगे जो दोनों प्रकार तीव्र ढलान के साथ-साथ पथरीले भी हैं।

इन सभी गुफाओं में सीता की गुफा प्रमुख है। यह गुफा केवल सभी गुफाओं में सबसे बड़ी ही नहीं है बल्कि यह माना जाता है कि यह वह स्थल है जहाँ बुद्ध प्रवास के दौरान ठहरे थे। पहाड़ी की चोटी से, आप प्रभाष शहर और यमुना नदी के मनोहर दृश्य देख सकते हैं।

परवर्ती काल में, प्रभाष जैन धर्म का केन्द्र बन गया। वास्तव में, आज यह जैन समुदाय के सबसे प्रमुख स्थलों में से एक माना जाता है। प्राचीन काल में, पहाड़ी के ऊपर एक जैन मंदिर स्तापित किया गया तथा बाद में इसे नष्ट कर दिया गया और फिर 1824 ई. में पुनः निर्मित किया गया। इसके अलावा, यहाँ गुप्त काल से पहले की एक गुफा है। यह वह स्थान है जहाँ जैनियों के छठे तीर्थंकर, पद्म प्रभु ने अपने जीवन के काफी दिन व्यतीत किए थे।

आसपास के अन्य आकर्षण

इलाहाबाद- यह कौशांबी से लगभग 50 किलोमीटर दूर है और भारत की तीन सबसे महत्त्वपूर्ण और पवित्र नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर स्थित है। इस संगम पर स्नान के लिए प्रत्येक वर्ष तीर्थयात्री आते हैं। शहर के अन्य आकर्षणों में इलाहाबाद संग्रहालय, आनंद भवन, भारद्वाज आश्रम, हनुमान मंदिर और पातालपुरी मंदिर शामिल हैं। हरिद्वार, उज्जैन और नासिक के अलावा इलाहबाद भी प्रसिद्ध कुम्भ मेले का आयोजन स्थल है।

प्रागबोधि, बिहार

सिद्धार्थ गौतम का जन्म कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के घर हुआ था। आरंभ में, उन्होंने महल के अंदर विलासता का जीवन व्यतीत किया और दुनिया के कष्टों से अनभिज्ञ थे। हालांकि, एक बार महल से बाहर यात्रा के दौरान उन्होंने लोगों के कष्ट देखे और पश्चाताप से भर गए। उनके मन में कई प्रश्न उठने लगे और उनके उत्तर की खोज में उन्होंने राजकुमार वाला विलासी जीवन त्याग दिया और सत्य की खोज में निकल गए।

उन्होंने लगभग छह वर्षों तक संन्यासी जीवन व्यतीत किया और विभिन्न स्थानों पर ठहरे। इनमें एक पर्वत था जिसे आज हम डुंगेश्वर के नाम से जानते हैं। इस पर्वत पर लगभग

आधे मार्ग में, सिद्धार्थ गौतम ने एक गुफा में शरण ली। इसके बाद, यह पर्वत प्रागबोधि (ज्ञान प्राप्ति से पहले) के रूप में जाना जाने लगा। आज गुफा के पास एक मंदिर है जो तिब्बती बौद्ध भिक्षुओं के संरक्षण में है। यदि आप पहाड़ के ऊपर चोटी तक अपनी यात्रा जारी रखते हैं तो आप कई प्राचीन स्तूपों के खंडहर देख सकते हैं और आसपास के मनोहर दृश्यों को कभी भूल नहीं सकते। महाबोधि मंदिर का शिखर भी इस पर्वत की चोटी से दिखाई देता है।

आप कुछ दिनों के लिए प्रागबोधि में ठहर सकते हैं। आवास के लिए चिंता न करें क्योंकि भिक्षुओं को यह सेवा प्रदान करने में खुशी होगी। हालांकि, इस बात का ध्यान रखें कि आप पानी साथ लेकर जाएं क्योंकि यहाँ पानी का अभाव है।

संकाराम, आंध्र प्रदेश

यह आंध्र प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध स्थल है और विशाखापट्टनम से लगभग 41 किलोमीटर दूर है। संकाराम नाम संघाराम शब्द से निकला है। संकाराम पहली शताब्दी ई. के अनेक संकल्पित स्तूपों, शैलकर्त्त गुफाओं, ईटों से निर्मित संरचनाओं, प्राचीन मिट्टी के बर्तनों और प्रथम शताब्दी ई. के सातवाहन काल के सिक्कों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ, मुख्य स्तूप को प्रारंभ में चट्टान से काट कर बनाया गया था और फिर ईंटों से ढक दिया गया था।

बोज्जनाकोंडा पास में स्थित एक अन्य महत्त्वपूर्ण बौद्ध स्थल है, जहाँ आप गुफाओं के अंदर उत्कीर्ण मूर्तियों को देख सकते हैं। लिंगलामेत्ता में, सैकड़ों अखंड शैलकर्त्त स्तूप पंक्तियों में बने हुए हैं जो संपूर्ण पहाड़ी पर फैले हुए हैं। यहाँ के अन्य बौद्ध आकर्षणों में मंजूषा, तीन चैत्य गृह, संकल्पित स्तूप एवं उनके चबूतरे और वज्रयान की मूर्तियाँ शामिल हैं। विहार लगभग एक सहस्त्राब्दी से क्रियाशील है जिसने बौद्ध धर्म के थेरवाद संप्रदाय ही नहीं बल्कि महायान और वज्रयान संप्रदाय के क्रमिक विकास को भी देखा था।

संकिसा, उत्तर प्रदेश

यह फर्रूखाबाद जिले में कन्नौज से लगभग 40 किलोमीटर दूर है। किंवदंतियों के अनुसार, यह स्थल बुद्ध से संबंधित है। यह माना जाता है कि स्वर्ग में अपनी माता और अन्य देवी-देवताओं को उपदेश देने के बाद बुद्ध धरती पर जिस स्थान पर लौटे थे और जिसे मानव

निवास का शहर माना गया, वह संकिसा है। इस कारण, संकिसा को बौद्धों के तीर्थस्थलों में गिना जाता है। इस शहर का संदर्भ *रामायण* महाकाव्य में भी मिलता है।

प्रमुख बौद्ध आकर्षण

बुद्ध मंदिर- यह संकिसा का मुख्य आकर्षण है और उस स्थान पर खड़ा है जहाँ बुद्ध तुशिता स्वर्ग से अपने निवास के बाद धरती पर उतरे थे। मंदिर में भगवान बुद्ध की प्रतिमा स्थापित है।

माया देवी मंदिर- यह एक छोटा सा मंदिर है। माया देवी को लोग मातृत्व की देवी मानते हैं। मंदिर की दीवारों के आलों में महायान युग की बौद्ध मूर्तियाँ भी देखी जा सकती हैं।

अशोककालीन हाथी स्तंभ के अवशेष- यह इस छोटे से शहर का एक अन्य आकर्षण है। स्पष्ट रूप से, स्तंभ की विशेषता शेरों के बजाय हाथियों की मौजूदी है। यह माना जाता है कि हाथी, सफेद हाथी का प्रतीक है जो माया देवी को सिद्धार्थ गौतम के जन्म के समय दिखाई दिया था।

भगवान बुद्ध की अखंड प्रतिमा, आंध्र प्रदेश

हैदराबाद मूसी नदी के तट पर स्थित है। इस शहर के संग्रहालयों, स्मारकों और व्यंजनों का आनंद लेने के लिए प्रत्येक वर्ष असंख्य पर्यटक घूमने आते हैं। हुसैन सागर झील, हैदराबाद के प्रमुख पर्यटक आकर्षणों में से एक हैं और टैंकबुंद के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह झील बेगुमपेट के पास स्थित है और हैदराबाद को इसके जुडवां शहर, सिकंदराबाद से अलग करती है। झील का निर्माण इब्राहिम-कुली-कुतुब शाह के दामाद हुसैन शाह की देखरेख में किया गया था। आज, यह असंख्य पर्यटकों को आकर्षित करती है जो यहाँ भगवान बुद्ध की अखंड प्रतिमा को देखने के लिए आते हैं जो झील के बीच में जिब्राल्टर चट्टान पर स्थापित है।

बुद्ध की 17.5 मीटर ऊँची प्रतिमा को विश्व की सबसे बड़ी अखंड प्रतिमाओं में गिना जाता है। इसका वजन लगभग 350 टन है और इसे सफेद ग्रेनाइट पत्थर से तराश कर बनाया गया है। इस मूर्ति के निर्माण में करीब 200 मूर्तिकार शामिल थे जिन्हें इसे पूर्ण करने में दो वर्ष लगे। प्रतिमा को सन् 1985 में बुद्ध पूर्णिमा परियोजना के एक भाग के रूप में

चट्टान से तराश कर बनाया गया था, लेकिन कुछ वर्ष बाद, झील में ले जाने के दौरान इसे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा अर्थात् यह झील में गिर गई। अंत में, इसे झील से बाहर निकाला गया और फिर 12 अप्रैल, 1992 को झील के किनारे निर्मित किया गया। आज, यह अखंड प्रतिमा झील के मध्य में स्थापित है। इसके साथ ही, लुम्बिनी उद्यान का फव्वारों सहित उद्घाटन किया गया। अखंड प्रतिमा तक पहुँचने के लिए आप लुम्बिनी उद्यान से नाव की सवारी कर सकते हैं।

हुसैन सागर झील के निकट एक चौड़ी सड़क है जो 33 प्रसिद्ध हस्तियों की प्रतिमाओं और उद्यान से सुसज्जित है। झील भी पर्यटकों के बीच प्रसिद्ध है क्योंकि यह जल क्रीड़ा के आनंद का अवसर प्रदान करती है।

आसपास के अन्य आकर्षण

चारमीनार- यह हैदराबाद शहर के संस्थापक मोहम्मद कुली कुतुब शाह द्वारा 1591 ई. में महामारी से बचाव के लिए बनाई गई थी जो उस समय एक बहुत बड़ी आपदा थी। आज यह हैदराबाद की यात्रा करने वाले पर्यटकों के लिए का एक प्रमुख आकर्षण है। इमारत में लंबी और पतली मीनारें शामिल हैं जो इसकी छत से 20 मीटर ऊँची हैं और चारकमानों से जुड़ी हैं जिनमें शाही बाजार है। इस बाजार में कई दुकाने हैं। इमारत को प्लास्टर से सजाया गया है जो विशेष कुतुब शाही शैली है। चार मीनारों की घुमावदार सीढियाँ पहली मंजिल पर स्थित मदरसे और दूसरी मंजिल पर स्थित मस्जिद तक जाती हैं। प्रत्येक शाम इमारत प्रकाशमान और सुन्दर दिखाई देती है।

गोलकुंडा क़िला- यह भारत के सबसे अच्छे क़िलो में से एक है और शहर से लगभग 11 किलोमीटर दूर है। क़िला मूल रूप से वारंगल के ककातीय राजाओं ने बनवाया था और तब यह मिट्टी की एक संरचना थी। बाद में, कुतुब शाह वंश द्वारा इसमें महत्त्वपूर्ण परिवर्धन किए गए। 17वीं शताब्दी में, यह औरंगजेब के अधिकार क्षेत्र में आ गया और बड़े पैमाने पर विनाश हुआ। हालांकि, आज जो क़िला खड़ा हुआ है, वह आपको उस युग में वापस ले जाने में सक्षम है जब इसका निर्माण किया गया था। आप प्रतिदिन प्रस्तुत किए जाने वाले साउंड और लाइट के सुन्दर शॉ को देखकर भी समय पर पुनः अपना मार्ग खोज सकते हैं। शॉ का

समय सर्दियों (6.30-7.30PM) और गर्मियों (7.00-8.00PM)में भिन्न होता है। क़िला प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक खुला रहता है।

कुतुब शाही मकबरे- गोलकुंडा क़िले से कुछ दूरी पर उत्तर- पश्चिम में कुतुब शाही में नवाबों और उनकी बेगमों के मकबरे स्थित हैं। प्याज जैसे गुम्बद आकार के मकबरों को हैदराबाद शहर के सबसे प्राचीन ऐतिहासिक स्मारकों में से एक माना जाता है। इन मकबरों की वास्तुकला किसी एक शैली में निर्मित नहीं है बल्कि फारसी, पठान और हिन्दू स्थापत्य शैली का मिश्रण है। यह जगह दुनिया में एकमात्र ऐसी जगह है जहाँ एक पूरे शाही वंश को दफनाया गया है।

मक्का मस्जिद- इस मस्जिद का आरंभिक निर्माण कुतुब शाहों ने पवित्र मक्का से लायी गई मिट्टी से किया था। हालांकि, वे इसे पूरा न कर सके और 1694 ई. में इस कार्य को औरंगजेब ने पूर्ण किया। मस्जिद में एक हॉल है जो 67 मीटर लंबा और 54 मीटर ऊँचा है। मुख्य हॉल की छत को संभालने के लिए 15 आर्च (मेहराब) लगे हुए हैं।

बिरला मंदिर- यह मंदिर काला पहाड़ पर स्थित है और भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है। इसमें स्थापित प्रतिमा, तिरूपति मंदिर की किसी प्रतिमा जैसी लगती है।

सालार जंग संग्रहालय- यह संग्रहालय हैदराबाद में स्थित है और सालार जंग III या मीर युसुफ खान द्वारा एकत्रित प्राचीन कलाकृतियों को प्रदर्शित करता है। इसमें फारसी और मुगलकालीन लघुचित्र, चीनी मिट्टी के बर्तन, जापानी लैकरबेयर, पारदर्शी हरा पत्थर, रानी नूरजहाँ, शाहजहाँ और जहाँगीर से संबंधित खंजर, औरंगजेब की तलवार और कई सुन्दर वस्तुएँ शामिल हैं।

राज्य पुरातत्त्व संग्रहालय, आंध्र प्रदेश- यह संग्रहालय प्राचीन वस्तुओं और कलाकृतियों का खजाना है। इसे सन् 1920 में निजाम vii द्वारा बनवाया गया था और इसमें बौद्ध गैलरी, हिन्दू गैलरी, जैन गैलरी, कांस्य गैलरी, आयुध गैलरी, मुद्राशास्त्र गैलरी, अंजता गैलरी आदि शामिल हैं। संग्रहालय भवन अपने आप में कला प्रेमियों के लिए खुशी की बात है क्योंकि यह उनके लिए सबसे सुन्दर हिंद-इस्लामिक वास्तुकला शैली प्रस्तुत करता है।

निजाम संग्रहालय- यह संग्रहालय पुरानी हवेली में स्थित है जिसका स्वामित्व दूसरे निजाम के पास था। संग्रहालय का मुख्य आकर्षण सन् 1937 के रजत जयंती समारोह पर अंतिम निजाम को दिए गए उपहार और स्मृति चिह्न हैं। इसके अलावा, संग्रहालय के अन्य आकर्षणों में सन् 1930 की रॉल्स रॉयस, पैकर्ड अमेरिकी कार और वी चिह्न वाली जगुआर, शहर की सभी महत्त्वपूर्ण संरचनाओं के मॉडल का संग्रह, हीरे जड़े हुए टिफिन बॉक्स और रजत मंडप का एक स्वर्ण मॉडल आदि शामिल हैं।

उंडवल्ली की गुफाएँ, आंध्र प्रदेश

ये गुफाएँ शैलकर्त्त वास्तुकला के उत्कृष्ट नमूनों में से एक है, जिन्हें आप उंडवल्ली गाँव में देख सकते हैं। चौथी और पाँचवीं शताब्दी के मध्य काल में उंडवल्ली की उत्कृष्ट गुफाओं को ठोस चट्टान से तराश कर बनाया गया था और आज ये भगवान बुद्ध की 5 मीटर लंबी मृत्यु शैय्या की मूर्ति के लिए जानी जाती हैं। इसके अलावा, भगवान विष्णु की मृत्यु शैय्या की मूर्ति है जो ग्रेनाइट के पत्थर से तराश कर बनायी गयी है।

ये गुफाएँ अनंतपद्मनाभ स्वामी और नरसिम्हा स्वामी को समर्पित हैं। गुफा मंदिर भगवान ब्रह्मा और शिव को समर्पित हैं। गुफाएँ मूलतः चार मंजिला संरचनाएं हैं जो कृष्णा नदी के ऊपर एक पहाड़ी पर स्थित हैं।

उंडवल्ली की छान-बीन के लिए आप विजयवाड़ा को अपना आधार बना सकते हैं। विजयवाड़ा, उंडवल्ली से लगभग 6 किलोमीटर दूर है और राज्य के शेष भागों से जुड़ा हुआ है। यह आंध्र प्रदेश का तीसरा सबसे बड़ा शहर है। शहर के आसपास पर्यटकों के लिए अनेक आकर्षण हैं जैसे- भवानी द्वीप, गांधी पहाड़ी, हजरतबल मस्जिद, कनक दुर्गा मंदिर और कोंडापल्ली क़िला। आप उंडवल्ली गुफाओं की अपनी यात्रा के दौरान इन्हें भी देख सकते हैं।

आसपास के अन्य आकर्षण

गुंटूर शहर- यह उंडवल्ली की गुफाओं से 22 किलोमीटर दूर है और इसमें चर्च, मंदिर एवं प्राकृतिक उद्यानों जैसे अनेक आकर्षण हैं। इनमें से चतुर्मुख ब्रह्मा लिंगेश्वर का मंदिर, भगवान ब्रह्मा और पश्चिम पैरिश चर्च, संत मैथ्यू को समर्पित है। शहर कई परेड़ों, स्ट्रीट फेस्टीवलों और जलूसों का एक आयोजन स्थल है।

अमरावती- यह प्रमुख बौद्ध स्थल है। अमरावती महाचैत्य का घर है जिसे बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं को दर्शाने के लिए नक्काशी से सजाया गया है।

केसनापल्ली- यह प्रत्येक बौद्ध पर्यटक के लिए एक दर्शनीय स्थल है। यहाँ पुरातात्त्विक खोजों से एक स्तूप और विहार के पुरावशेष प्राप्त हुए। इसके अलावा, कई चूना पत्थर की पूर्ण और अर्द्ध कमल पदक को दर्शाती पट्टियां प्राप्त हुई हैं।

विक्रमशिला महाविहार, बिहार

बौद्ध स्रोतों से ज्ञात होता है कि तथागत ने कभी विक्रमशिला का भ्रमण नहीं किया था। फिर भी, यह स्थान बौद्धों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योकिं विगत युग में यह नालंदा विश्वविद्यालय के अलावा भारत में उच्च शिक्षा के सबसे महत्त्वपूर्ण केन्द्रों में से एक था। वास्तव में, यह तब स्थापित किया गया था जब नालंदा महाविहार एक शिक्षा केन्द्र के रूप में अपना महत्त्व खो रहा था। वह 8वीं शताब्दी का समय था और इसे स्थापित करने वाला व्यक्ति बंगाल का राजा धर्मपाल था। विश्वविद्यालय ने क्रमिक रूप से प्रतिष्ठा को प्राप्त किया और तंत्रयान का केन्द्र बन गया। 11वीं शताब्दी तक, जब राजा रामपाल का शासन था तो उस समय विश्वविद्यालय में लगभग 160 शिक्षक और 1000 छात्र थे और छात्रावास शिक्षा का एक फलता-फूलता केन्द्र था।

इसके छह द्वार थे तथा मुख्य प्रवेश द्वार पर नागार्जुन और अतीश का पहरा था। अतीश महाविहार के सबसे प्रतिष्ठित द्वारपाल थे। इसके प्रवेश द्वारों पर रत्नाकरशांति, जेतरि, रत्नवज्र, ज्ञानश्रीमित्र और नारोपा जैसे प्रसिद्ध विद्वानों का पहरा था।

12वीं शताब्दी में मुस्लिम आक्रांताओं और सेना वंश के बीच हुए युद्ध से क़िलेदार विक्रमशिला को विनाश का सामना करना पड़ा था। आज, आप इस गौरवशाली विश्वविद्यालय के खंडहरों को अन्तिचक गाँव और बटेश्वर स्थान पर देख सकते हैं। विश्वविद्यालय की खुदाई का कार्य अभी भी जारी है।

इसका परिसर 4 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को घेरे हुए है। जैसे ही, आप स्थल को खोजना आरंभ करते हैं तो आपको एक तिब्बती छात्रावास के खंडहर मिलेंगे। यह छात्रावास 60 फीट चौड़े चबूतरे पर स्थित है। छात्रावास ईंटों के क्षरीय होने के कारण बहुत अच्छी स्थिति में

नहीं है। इसके कई स्तंभ नष्ट हो चुके हैं। इसके पास एक ध्यान केन्द्र है जो और भी बदतर स्थिति में है। वास्तव में, यह कहना गलत नहीं होगा कि यह पूरी तरह से खंडहर है। परिसर के चारों ओर घास उग चुकी है और यह धूल की मोटी परत से ढका हुआ है। दीवार पर टेराकोटा चित्रों का क्षय हो रहा है।

300 फीट चौड़े चबूतरे पर निर्मित 60 फीट का स्तूप सबसे खराब स्थिति में है। इसके तीनों प्रवेश द्वार मिट्टी की परत से ढके हैं जिन्हें साफ करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, स्तूप के आसपास के छात्रावासों की भी अभी तक खुदाई नहीं हुई है।

अध्याय-9

भारत में मनाए जाने वाले बौद्ध त्यौहार

भारत विभिन्न त्यौहारों का देश है। साल भर देश में कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। इनमें से कुछ त्यौहार देश भर में मनाए जाते हैं जबकि कुछ विशेष राज्य, क्षेत्र या गाँव में मनाए जाते हैं। ये त्यौहार देश की महान संस्कृति में गतिशीलता लाते हैं और इनमें भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

भारत के बौद्ध त्यौहार इनका अपवाद नहीं हैं। बुद्ध की भूमि होने के कारण भारत उन सभी दिवसों को त्यौहार के रूप में मनाता है जो तथागत के जीवन में महत्त्वपूर्ण दिवस के रूप में चिह्नित हैं। इनके अलावा भी, कुछ त्यौहार बौद्ध धर्म गुरुओं की याद में मनाए जाते हैं।

बौद्ध त्यौहार भारत में बौद्ध समुदाय के लिए आनंदित होने का समय है। उनके लिए यह नृत्य एवं प्रसन्नता का समय है। आप भी देश के इन उत्सवों का हिस्सा बन सकते हैं, यदि आप इन त्यौहारों की तिथि के आसपास अपनी यात्रा की योजना बनाते हैं। बौद्ध त्यौहारों पर आधारित, इस खंड का उद्देश्य आपको इन सभी त्यौहारों से परिचित कराना है। यह भाग आपको इन त्यौहारों की जानकारी प्रदान करता है कि ये त्यौहार क्यों और कैसे मनाए जाते हैं तथा त्यौहार की आगामी तिथि से भी अवगत कराता है। इसलिए आप अपनी आगामी छुट्टियों में इन त्यौहारों का हिस्सा बन सकते हैं। आप केवल आनंदित ही नहीं होंगे बल्कि बौद्ध धर्म के विषय में भी बहुत कुछ जानेंगे।

बुद्ध पूर्णिमा

भारत में बुद्ध पूर्णिमा उत्सव बुद्ध के जन्म, ज्ञान प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। यद्यपि यह त्यौहार सारे संसार में भिन्न-भिन्न नामों से मनाया जाता है। इन सभी के विषय में सबसे सामान्य बात वैशाख महीना है। भारत में, यह त्यौहार बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह वह भूमि है जहाँ सिद्धार्थ गौतम ने मानव जीवन के दुखों को देखा और अपने सांसारिक सुखों को त्यागा और संबोधि प्राप्त की तथा फिर बुद्ध बने।

देश में त्यौहार का आनंद लेने के लिए बोधगया एवं सारनाथ दो सबसे उत्तम स्थल हैं। यद्यपि उत्सव अन्य स्थानों पर भी मनाया जाता है जहाँ बौद्ध समुदाय का निवास है।

बोधगया में उत्सव

बोधगया में जिस स्थान पर बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया, उस स्थान पर मनाए जाने वाले उत्सव में भाग लेने के लिए दुनियाभर से असंख्य लोग आते हैं। इस स्थल पर दिन भर प्रार्थना सभा, बुद्ध के जीवन पर उपदेश, धार्मिक प्रवचन, सामूहिक ध्यान, शोभायात्रा, संगोष्ठी आदि आयोजित किए जाते हैं। महाबोधि मंदिर को इस विशेष अवसर पर चिह्नित करने के लिए सजाया जाता है।

सारनाथ में उत्सव

यहाँ बुद्ध ने प्रथम उपदेश दिया था। बुद्ध पूर्णिमा के दिन सारनाथ में एक मेले का आयोजन होता है जो असंख्य लोगों को आकर्षित करता है। एक शोभायात्रा में बुद्ध के अवशेषों को लोगों को दिखाने के लिए बाहर निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त, उपासक सारनाथ के विहारों में प्रार्थना के लिए पंक्ति बनाकर आगे बढ़ते हैं और फिर प्रार्थना करते हैं। वे शाक्यमुनि की प्रतिमा के सामने फल, फूल, मोमबत्ती आदि अर्पित करते हैं और बौद्ध परंपराओं में अपने विश्वास की पुनः पुष्टि करते हैं। भिक्षु महान बौद्ध धर्म गुरुओं के प्रति अपना सम्मान प्रकट करते हैं और प्रार्थना, उपदेश, बौद्ध ग्रन्थों के पाठ जैसी महत्त्वपूर्ण धार्मिक क्रियाओं में भाग लेते हैं।

लोसर त्यौहार

लोसर तिब्बती बौद्धों के सबसे महत्त्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है जो तिब्बती नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। लोसर तिब्बती भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है। लो का अर्थ है- नया तथा सर का अर्थ है- वर्ष। तिब्बत में लोसर 15 दिनों तक मनाया जाता है जबकि भारत में उत्सव 3 दिनों से अधिक नहीं मनाया जाता है। भारत में लोसर वहाँ मनाया जाता है, जहाँ बौद्ध समुदाय का निवास है। भारत में लोसर कैसे मनाया जाता है, इसको आगे बताया गया है।

लद्दाख में लोसर

लद्दाख में बौद्धों द्वारा लोसर त्यौहार ग्यारहवें चन्द्र महीने के प्रथम दिन मनाया जाता है। इसका कारण यह है इस परम्परा को 17वीं शताब्दी में राजा जामयांग नामग्याल ने शुरू किया था। अपने शासन के दौरान उसने बाल्टी सेना के विरुद्ध सैन्य अभियान का नेतृत्व करने का फैसला किया। हालांकि, राजा को सलाह दी गई कि वे ऐसा कुछ भी न करे क्योंकि नव वर्ष आने वाला था। राजा नामग्याल अपने उद्देश्य के साथ आगे बढ़ता है और जो उसने लोगों की खुशी के लिए किया, वह अधिक दिलचस्प था। उसने नव वर्ष को वास्तविक तिथि से दो महीने पहले परिवर्तित कर दिया।

इसलिए, लद्दाख में अब नव वर्ष ग्यारहवें चन्द्र महीने के प्रथम दिन मनाया जाता है। दसवें चन्द्र महीने के 29वें दिन तैयारियां शुरू हो जाती हैं। लोग सगे-संबंधियों के साथ शाम की दावत के लिए खाद्य सामग्री का संचय करते हैं जिसमें भेड़, बकरी तथा अनाज शामिल हैं। रात में दीप मालाओं के प्रकाश से मठ और घर जगमगा उठते हैं। नव वर्ष के दिन, लोग जंगली बकरी की मूर्ति रसोई एवं घर की दीवारों एवं खिड़कियों पर टांगते हैं जो मातृत्व की प्रतीक है। इसके अलावा, लोई (गूंथा हुआ आटा) से बनी जंगली बकरी की प्रतिमाएँ रसोई के शेल्फ पर भी रखी जाती हैं ताकि सौभाग्य की प्राप्ति हो।

लोग घरों में बोद्धिसत्त्वों की पूजा करते हैं तथा मठों में दान करते हैं और परिवार के बड़े सदस्यों को उपहार देते हैं। परिवार के युवा क्षेत्र में सगे-संबंधियों के पास आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जाते हैं जबकि परिवार के बड़े सदस्य घर पर रहते हैं और अपने सगे संबंधियों से खतक गुलूबन्द (अनुष्ठानिक) जैसा उपहार प्राप्त करते हैं। लेह के मुसलमानों और ईसाइयों को लोसर की पूर्व संध्या पर अपने बौद्ध मित्रों से मिलने जाते हैं। शाम के समय एक जुलूस निकाला जाता है जिसे मेथो कहते हैं। लेह की गलियां और बाजार चमक उठते हैं जब ग्रामीण जलती हुई मशालों के साथ नारे लगाते हुए जाते हैं। ये नारे बुरी आत्माओं तथा भूतों से बचाते हैं। पुराने वर्ष के समापन तथा नव वर्ष के स्वागत की घोषणा के साथ मशालों को क्षेत्र से बाहर फेंक दिया जाता है तथा इसके साथ ही जुलूस का समापन होता है।

हिमाचल प्रदेश में लोसर

लोसर उत्सव हिमाचल प्रदेश में बौद्ध बहुल क्षेत्रों में मनाया जाता है। राज्य के लाहौल जिले में स्थित मठ उत्सव का आनंद लेने के लिए सबसे उत्तम स्थलों में से एक हैं।

मठों में अद्भुत अभिनय प्रदर्शित किया जाता है जिसमें छाम नृत्य प्रमुख है। जब भिक्षु सजावटी पोशाकें तथा मुखौटे पहने होते हैं और बुराई पर अच्छाई की जीत का दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

सिक्किम में लोसर

लोसूंग उत्सव सिक्किम में फसल की कटाई और तिब्बती वर्ष के दसवें महीने के समापन का प्रतीक है। दिसम्बर-जनवरी के महीने के दौरान सिक्किम में सोनम लोसर या कृषि नव वर्ष मनाया जाता है। मौसम सुहावना होता है तथा चावल एवं अनाज की बहुलता होती है जो फरवरी में नव वर्ष के ठीक विपरीत है जब मौसम बहुत ठंडा होता है। वास्तविक नव वर्ष ग्याल्पो लोसर के रूप में प्रसिद्ध है जो आमोद-प्रमोद तथा खान-पान का प्रतीक है। पेमयांगत्से मठ में, लोसर से दो दिन पहले छाम या शैतान नृत्य आयोजित किया जाता है और यह काफी हद तक लोसूंग के जैसा ही होता है।

हेमिस त्यौहार

त्यौहार का महत्त्व

भारत में हेमिस उत्सव बौद्धों के महत्त्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। यह गुरु पद्मसंभव के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है और उन्हें बुद्ध का अवतार माना जाता है। तिब्बती बौद्ध कैलेंडर के अनुसार उनका जन्म वानर वर्ष के पाँचवें महीने के दसवें दिन हुआ था। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने स्वयं को शाक्यमुनि बुद्ध घोषित किया था। गुरु पद्संभव का मुख्य उद्देश्य जनसाधारण के आध्यात्मिक कल्याण में सुधार करना था। उन्होंने तिब्बत में बौद्ध मत का प्रसार किया और फिर वहाँ से विश्व के अन्य भागों में फैला।

आयोजन स्थल- हेमिस मठ

यह उत्सव हेमिस मठ में मनाया जाता है। मठ चांग चुब सामलिंग के नाम से विख्यात है तथा जिसका निर्माण 1630 ई. में ग्यात्सो ने करवाया था। लद्दाख के राजा सेनग्ये नांग्याल ने सटेग्संग रास्पा नवांग ग्यात्सो को आमंत्रित किया था, जिन्हें केवल भू संपत्ति ही दान नहीं की बल्कि उन्हें अपना गुरु भी स्वीकार किया। मठ के अन्दर शाक्यमुनि बुद्ध की नीले बालों वाली प्रतिमा और स्टेग्संग रास्पा की प्रतिमा प्रमुख आकर्षण हैं।

हेमिस त्यौहार के अनुष्ठान

हेमिस उत्सव दो दिनों तक मनाया जाता है तथा यह न केवल आसपास के क्षेत्रों, बल्कि पूरे राज्य और देश में रहने वाले बौद्धों के लिए खुशी का समय होता है। इस त्यौहार में भाग लेने के लिए असंख्य पर्यटक आते हैं। स्थानीय लोग रंग-बिरंगी पोशाकों में सज-धज कर आते हैं और अपने मित्रों एवं सगे संबंधियों से मिलते हैं जबकि विदेशी अपनी यात्रा को और मनोरंजक बनाने के लिए अधिक-से-अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं।

उत्सव के मुख्य कार्यक्रम मठ के प्रांगण में एक निश्चित स्थान पर आयोजित होते हैं। प्रांगन खुला और चौड़ा होता है जिसमें एक सभा मंच होता है जिसके मध्य में प्रत्येक तीन फीट पर एक खंभा खड़ा होता है। एक छोटी सी तिब्बती मेज पर आनुष्ठानिक वस्तुएँ रखी होती हैं जैसे- पवित्र जल से भरा लोटा, कच्चे चावल, तोरमा तथा अगरबत्तियाँ। यहाँ एक स्थान पर संगीतकार अपने परंपरागत संगीत कार्यक्रम प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा, एक छोटा सा स्थान होता है जो लामाओं के बैठने के लिए आरक्षित है।

उत्सव प्रातः कालीन अनुष्ठान से आरंभ होता है जो गोंपा के शिखर पर संचालित होता है। इस उत्सव में ढोल की छाप, झांझ की आवाज तथा वाद्ययंत्रों के आध्यात्मिक गीतों के बीच रिग्यालश्रास रिम्पोचे का चित्र प्रदर्शित किया जाता है। यह चित्र अत्यधिक पूजनीय माना जाता है तथा आसपास के क्षेत्रों से उपासक इसके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए आते हैं।

बाद में, उत्सव का सबसे महत्त्वपूर्ण आकर्षण मुखौटा नृत्य प्रदर्शित किया जाता है। मुखौटा नृत्य का उन मठों में विशेष स्थान है जो तांत्रिक वज्रयान की शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं तथा इसे छाम नृत्य भी कहते हैं। नृत्य बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है। दुखांग मंदिर का उपयोग कलाकारों के लिए हरे कक्ष के रूप में किया जाता है।

उलम्बाना त्यौहार (पूर्वज दिवस)

उलम्बाना त्यौहार मुख्य रूप से महायान मत को मानने वाले देशों में मनाया जाता है। हालांकि, कई थेरवादी देश भी इसे मनाते हैं। यह त्यौहार चंद्र कैलेंडर के सातवें महीने के पहले से पंद्रहवें दिन तक मनाया जाता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर में यह अगस्त महीने में आता है।

त्यौहार की कहानी

त्यौहार की कहानी बुद्ध के समय की है। मौद्गल्यायन ध्यान में लीन था तथा उसने अपनी माता को नरक में दुखों से पीड़ित देखा। इस विषय पर उसने बुद्ध से विचार-विमर्श किया क्योंकि वह अपनी माता को दुखों से मुक्त करना चाहता था। बुद्ध उसे सलाह देते हैं कि अपनी दिवंगत माता को भोजन अर्पित करो। यह सफल सिद्ध हुआ जिससे मौद्गल्यायन न केवल अपनी माता की आत्मा बल्कि अन्य आत्माओं के भी कष्ट दूर करने में सफल हुआ। अपने कार्य के सफल समापन पर, वह उत्तेजित होकर खुशी से नृत्य करने लगा। उलम्बाना या पूर्वज दिवस उत्सव, उस घटना की याद में मनाया जाता है। इस दिन पूर्वजों के लिए पूजा की जाती है ताकि उनकी आत्मा को शांति मिले। उलम्बाना शब्द संस्कृत से लिया गया है जिसका अर्थ है- दुखों से मुक्ति।

त्यौहार

ऐसा माना जाता है कि जब नर्क का द्वार खुलता है तो उसे उत्सव का प्रथम दिन माना जाता है और प्रेत आत्माओं को अगले 15 दिनों तक धरती पर भ्रमण का अवसर मिलता है। 15 दिनों तक पूर्वज दिवस मनाया जाता है और अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए परिवार समाधि स्थल पर जाते हैं। इसके अलावा, इस त्यौहार के दौरान लोग पूर्वजों को भोजन अर्पित करते हैं।

जापान में उलम्बाना उत्सव

उराबून, उलम्बाना का जापानी लिप्यंतरण है तथा उबोन इसका संक्षिप्त भाषांतरण है। देश में उबोन उत्सव 500 से अधिक वर्षों से मनाया जा रहा है। यद्यपि, एक क्षेत्र के उत्सव का समय दूसरे से भिन्न होता है। पूर्वी क्षेत्र में यह त्यौहार जुलाई के महीने में मनाया जाता है जबकि पश्चिमी क्षेत्र में यह अगस्त के महीने में मनाया जाता है। उबोन के विषय में, यह विशेष है कि यह तीन दिनों तक मनाया जाता है, यद्यपि समय भिन्न होता है। प्रथम दिन उबोन उत्सव के स्वागत का होता है और अंतिम दिन इसके समापन का होता है।

उबोन उत्सव ने जापान में अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त कर ली है। अब यह न केवल पूर्वजों का सम्मान करने और पीड़ित आत्माओं को राहत देने का समय है बल्कि इस समय पारिवारिक समारोह के लिए अवकाश भी होता है। जापान के सभी क्षेत्रों से लोग अपना

कार्य छोड़ कर, अपने परिवार के साथ उत्सव मनाने के लिए अपने गृहनगर की यात्रा करते हैं। वे अपने पूर्वजों के समाधि स्थलों पर जाते हैं और उन्हें साफ करते हैं। घरों और मंदिरों में पूर्वजों को भोजन अर्पित किया जाता है। कागज की लालटेन बनाई जाती हैं और घरों को सजाने के लिए उपयोग की जाती हैं। उन्हें समाधि स्थलों पर रखा जाता है ताकि प्रेत आत्माएं त्यौहार के समापन पर समाधि में वापस लौट सकें। जापान के कुछ क्षेत्रों में, आत्माओं का मार्ग रोशन करने के लिए नदी और समुद्र के पानी में लालटेन के साथ मोमबत्तियों को छोड़ा जाता है। यह त्यौहार के समापन का प्रतीक है जिसे तोरो नागाशी कहा जाता है।

माघ पूजा या संघ दिवस

सारनाथ के मृगदाव में प्रथम वर्षावास के बाद, बुद्ध राजगीर नगर पहुँचे। यहाँ बिना उनकी अनुमति के सारीपुत्र और मौद्गल्यायन सहित 1250 अर्हत वेलुवन विहार में उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए एकत्रित हुए। यहाँ उन्होनें पातिमोक्ख सुत्त का पाठ किया। आज, इस घटना की याद में माघ पूजा दिवस मनाया जाता है, जो बुद्ध के समय में घटित हुई थी। क्यों इसे माघ पूजा या संघ दिवस कहा जाता है?

इस सभा की चार प्रमुख विशेषताएँ थी-

- सभा के सभी 1250 सदस्य अर्हत थे।
- उन सभी का स्वयं बुद्ध ने अभिषेक किया था।
- वे सभी बुद्ध से बिना किसी पूर्व नियंत्रण के स्वयं एकत्रित हुए थे।
- माघ महीने की पूर्णिमा के दिन निश्चित स्थान पर एकत्रित हुए थे। इन विशेषताओं के कारण यह त्यौहार माघ पूजा या संघ दिवस के रूप में प्रसिद्ध है।

उत्सव का महत्त्व

यह बौद्ध समुदाय द्वारा मनाये जाने वाले प्रमुख त्यौहारों में से एक है। त्यौहार बौद्ध संघ के सम्मान में मनाया जाता है तथा लोगों को बौद्ध व्यवहारों और परंपराओं के प्रति अपनी आस्था और प्रतिबद्धता की पुष्टि करने का अवसर प्रदान करता है। बौद्ध धर्म में संघ बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बौद्ध धर्म के त्रिरत्न में से एक है।

त्यौहार के अनुष्ठान

त्यौहार के अवसर पर अभिषिक्त भिक्षु आयोजन स्थल पर एकत्रित होते हैं और शाक्यमुनि की शिक्षाओं पर सभाओं में विचार-विमर्श करते हैं जिसमें सामूहिक ध्यान तथा वरिष्ठ भिक्षुओं के प्रवचन शामिल हैं। संघ दिवस के अवसर पर उपहारों और लालटेनों का आदान-प्रदान होता है। एक देश के उत्सव के अनुष्ठान दूसरे देश से भिन्न हो सकते हैं। हालांकि, पश्चिम में इस त्यौहार को बहुत महत्त्व दिया जाता है।

उत्सव का समय

त्यौहार तीसरे चंद्र महीने की पूर्णिमा के अवसर पर मनाया जाता है।

असल्हा पूजा या धम्म दिवस

पृष्ठभूमि और महत्त्व

असल्हा पूजा थेरवादी बौद्धों के प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक है और बुद्ध के प्रथम उपदेश के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसकी विस्तार से व्याख्या करते हैं। बुद्ध को वेशाख महीने की पूर्णिमा के दिन निर्वाण प्राप्त हुआ था। इसके बाद भी, उन्होंने कोई उपदेश नहीं दिया किन्तु अपने साथियों के आग्रह पर जिन्होंने उनके साथ कई वर्ष गंगा के मैदानी क्षेत्र की यात्रा में व्यतीत किए, उन्होंने बनारस जाने का फैसला किया। गया से बनारस की दूसरी लगभग 150 मील थी, जहाँ उनके साथी रहते थे। वहाँ पहुँचने में उन्हें लगभग 2 महीने का समय लगा। बनारस पहुँचने पर उन्होंने सारनाथ में प्रथम उपदेश दिया, जिसमें भावी उपदेशों का सार था। बुद्ध के उपदेश के सार को उनके पाँच साथियों में से कौण्डिण्य ने शीघ्र समझ लिया तथा वह बुद्ध से विनती करता है कि उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करें। तत्पश्चात, अभिषेक की प्रक्रिया का संचालन किया गया, यहाँ से भिक्षु संघ का उदय हुआ। तथागत ने जो धर्मोपदेश दिया, वह धर्मचक्र प्रवर्तन के रूप में उल्लिखित है। इसमें चार आर्य सत्य शामिल हैं। सारे संसार में, किसी भी बौद्ध संप्रदाय के लिए आज भी चार आर्य सत्य मुख्य सिद्धांत हैं।

असल्हा पूजा उत्सव भारतीय कैलेंडर के आठवें चन्द्र महीने की पूर्णिमा के अवसर पर मनाया जाता है। असल्हा पूजा मानसून के आगमन का भी महीना है। इस अवधि के दौरान,

बुद्ध और भिक्षु व भिक्षुणी भ्रमण नहीं करते थे। आज भी मठों में तीन महीने की अवधि में वर्षावास मनाया जाता है जो धम्म दिवस से शुरू होता है और पवारना दिवस पर समाप्त होता है। वे सभी लोग जो धम्म में शामिल होने की इच्छा तो रखते हैं किन्तु अपने पारिवारिक जीवन को त्याग नहीं सकते, वे भी संघ के विधान के अनुसार इस लघु अवधि में भिक्षु के रूप में शामिल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, धम्म दिवस का एक अन्य महत्त्व है कि इस महीने में बुद्ध के पुत्र राहुल का जन्म हुआ था। जिसके बाद उन्होनें सभी राजकीय सुख-सुविधाओं को जीवन के सत्य की खोज के लिए त्याग दिया था।

पवारना दिवस

पृष्ठभूमि और महत्त्व

वर्षावास जो असल्हा दिवस की पूर्णिमा के दिन आरंभ होता है और पवारना दिवस पर समाप्त होता है। पवारना का शाब्दिक अर्थ है- किसी को सलाह देने के लिए, दूसरों को आमंत्रित करना। इसका नाम दिन के इतिहास से निकटता से संबंधित है। इतिहास के अनुसार, कुछ भिक्षुओं ने बरसात के तीन महीनों के दौरान आवास के लिए आश्रय मांगा था। संघ में आपस में किसी भी मतभेद से बचने के लिए, इन भिक्षुओं ने पूरे तीन महीने मौन रखने का निर्णय लिया। जब बुद्ध को भिक्षुओं के मौन के विषय में पता चलता तो उन्होंने इसे तुरन्त अस्वीकृत कर दिया और कहा कि यह किसी भी समुदाय के लिए हितकारी नहीं है। इसके बजाय, उन्होंने भिक्षुओं को सलाह दी कि वे मठावासीय जीवन के विषय में जो पसंद या नापसंद करते हैं, उसके विषय में खुलकर बताएं ताकि मठ के नियमों में सुधार किया जा सके।

यह पवारना दिवस के आरंभ का प्रतीक है। इस दिन प्रत्येक मठ में आवासीय भिक्षु आमंत्रित होते हैं और एक-दूसरे की आलोचना करते हैं तथा मठावासीय जीवन के अच्छे और बुरे बिन्दुओं पर विचार-विमर्श करते हैं। एक-दूसरे की आलोचना प्यार एवं करूणा के साथ तार्किक ढंग से की जाती है। विमर्श के विषय पर दोनों पक्षों द्वारा सहमति व्यक्त की जाती है तथा किसी विषय पर असहमति को चर्चा के द्वारा हल किया जाता था। समारोह अपेक्षित परिवर्तन लाने में सहायता करता है और एकता को बढ़ावा देता है। इसलिए बिना किसी संदेह के समुदाय की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए।

बुद्ध के स्वर्ग से वापस आने की खुशी में स्वागत समारोह के रूप में भी यह उत्सव मनाया जाता है। इसके पीछे भी एक कहानी है ऐसा माना जाता है संबोधि के बाद, तथागत ने सातवें वर्षावास के तीन महीने तावतिंस स्वर्ग में अपनी माता माया देवी और अन्य देवताओं को अभिधम्म का उपेदश दिया था। पवारना दिवस के अवसर पर, वे रत्न जड़ित सीढ़ियों की सहायता से स्वर्ग से धरती पर वापस आये थे। जब वे आपस आते हैं तो बड़ी संख्या में लोग उनका स्वागत करने के लिए आते हैं। स्वर्ग से बुद्ध की वापस आने की यह घटना पालि भाषा और थाई भाषा में 'देवरोहन' के रूप में उल्लिखित है। जहाँ बुद्ध स्वर्ग से धरती पर उतरे थे, वह संकिसा था। इस कारण से संकिसा आज आठ प्रमुख बौद्ध स्थलों में से एक है। इस दिन उपासक बौद्ध मंदिरों का भ्रमण करते हैं और भिक्षुओं को खाना खिलाते हैं तथा दान देते हैं। कुछ महायान देश वर्षावास को नहीं मानते हैं जो पवारना दिवस के साथ समाप्त होता है।

चौथा अध्याय

बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया के हिन्दी अनुवाद का विश्लेषण

पाठ की प्रकृति

बुद्धिस्ट टूरिज्म इन इंडिया बौद्ध पर्यटन पर लिखित एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें बौद्ध पर्यटन के अलावा प्राचीन इतिहास की भी संक्षिप्त जानकारी दी गई है। यह हमें बौद्ध स्थलों के इतिहास, कला और संस्कृति की सूचना प्रदान करती है तथा स्थलों तक पहुँचने के विभिन्न मार्गों की भी सूचना देती है जैसे- सड़कमार्ग, रेलमार्ग एवं वायुमार्ग।

पाठ में पालि और संस्कृत भाषाओं के शब्दों का संदर्भ के अनुसार प्रयोग किया गया है। ये तत्कालीन समाज की प्रमुख भाषाएं थीं। संस्कृत उच्च वर्ग की भाषा थी तो पालि आम जन की भाषा थी। पाठ में पालि भाषा के भी शब्द हैं जैसे- इसिपतन।

इसमें बौद्ध कला के भिन्न-भिन्न रूपों का विवरण दिया गया है जैसे- मूर्तिकला, चित्रकला एवं वास्तुकला। इसमें तथागत का प्रतीक एवं मानव आकृति के रूप में चित्रण किया गया है। इसमें बौद्ध वास्तुकला के विभिन्न रूपों को वर्णित किया गया है जिसमें मठ, मंदिर, स्तूप, चैत्य, गुफा आदि शामिल हैं।

पर्यटन साहित्य मूलतः सूचना प्रधान प्रकृति का होता है। क्योंकि इसका मौलिक उद्देश्य सूचना प्रदान करना और पर्यटकों को आकर्षित करना है। इसलिए इसमें स्थल की सामान्य जानकारी के साथ-साथ प्राकृतिक सुन्दरता (नदी, पहाड़, वन), सांस्कृतिक (त्यौहार आदि) सूचना का भी उल्लेख होता है।

पर्यटन साहित्य अंतर्विषयक प्रकृति का होता है। इसमें स्थल की कला एवं वास्तुकला, इतिहास, समाज, संस्कृति और भूगोल का वर्णन होता है। इसमें स्थल के आरंभिक इतिहास से लेकर वर्तमान स्वरूप का उल्लेख होता है। वहाँ के समाज के रीति-रिवाजों का वर्णन होता है। आसपास के प्राकृतिक दृश्यों का भी वर्णन किया जाता है जैसे- नदी, पर्वत तथा उद्यान।

अनुवाद कार्य में प्रयुक्त पद्धति

अनुवाद कार्य समतुल्यता का सिद्धांत और संप्रेषणपरक सिद्धांत के आधार पर किया गया है।

समतुल्यता का सिद्धांत[49]

नाइडा अनुवाद को एक वैज्ञानिक तकनीक मानते हैं। नाइडा ने अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण माने हैं:-

1. विश्लेषण
2. अंतरण और
3. पुनर्गठन

अनुवाद

स्रोत भाषा		लक्ष्य भाषा
↓		↑
मूल पाठ		अनूदित पाठ
↓		↑
विश्लेषण →	अंतरण→	पुनर्गठन

नाइडा द्वारा सुझाए गए अनुवाद प्रक्रिया के इन तीनों चरणों में एक निश्चित क्रमबद्धता देखने को मिलती है। स्रोत भाषा में लिखित मूल पाठ के संदेश के अर्थ को ग्रहण करने के लिए अनुवादक सबसे पहले मूलपाठ का विश्लेषण करता है। चूँकि मूल पाठ भाषाबद्ध होता है। इसलिए इसमें निहित संदेश को भाषिक संरचना द्वारा संप्रेषित किया जाता है। यही कारण है कि नाइडा मूल पाठ के विश्लेषण के लिए भाषा सिद्धांत में प्रयुक्त विश्लेषण तकनीक के उपयोग पर अधिक बल देते हैं। इस संदर्भ में नाइडा का कहना है कि प्रत्येक भाषिक संरचना के दो स्तर होते हैं- गहन तथा बाह्य। गहन संरचना (Deep Structure) भाषा के सार्वभौमिक पक्ष से संबंधित होती है जबकि बाह्य संरचना (Surface Structure) भाषा-विशेष की व्याकरणिक व्यवस्था के साथ रहती है। गहन संरचना के स्तर पर मूल पाठ

---

[49] गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2008

का संदेश स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के लिए समान होता है जबकि बाह्य संरचना स्तर पर समान संदेश को अभिव्यक्त करने के लिए दो भाषाएँ, दो भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति-प्रणालियों का प्रयोग करती हैं। इसलिए अनुवादक के लिए यह आवश्यक है कि वह बाह्य स्तर पर स्थित भाषिक संरचना का विश्लेषण करते हुए तथा उसके गहन स्तर पर स्थित संदेश को समझते हुए मूल पाठ का अर्थग्रहण करें।

अनुवादक प्रथम स्तर पर स्रोत भाषा के संदेश का स्पष्ट एवं सरल भाषिक रूपों में विश्लेषण करता है और इसका अर्थ ग्रहण करता है। मूल पाठ के संदेश का विषयगत और भाषागत विश्लेषण द्वारा अर्थग्रहण हो जाने के बाद संदेश का लक्ष्य भाषा में अंतरण होता है। इसके पश्चात् अनुवादक मूल संदेश का लक्ष्य भाषा में पुनर्गठन करता है।

नाइडा ने अनुवाद के बहुआयामी और बहुस्तरीय रूप को में देखते हुए दो समतुल्य बताएं हैं-

1.रूपपरक समतुल्यता

2.गत्यात्मक समतुल्यता

1.**रूपपरक समतुल्यता-** इसमें कथ्य के रूप और मंतव्य पर ध्यान दिया जाता है।

2.**गत्यात्मक समतुल्यता -** इसमें इस बात ध्यान दिया जाता है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के पाठ को पढ़ने के बाद पाठक पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

नाइडा ने समतुल्यता के चार प्रकारों का सुझाव दिया है-

1. भाषापरक समतुल्यता
2. भावपरक समतुल्यता
3. शैलीपरक समतुल्यता
4. पाठपरक समतुल्यता

- **भाषापरक समतुल्यता-** इसका आधार भाषिक सामग्री है। इसमें स्रोत भाषा के पाठ के शब्दों, पदबंधों और वाक्यों के समतुल्य लक्ष्य भाषा के शब्दों, पदबंधों और वाक्यों का चयन किया जाता है। यहाँ एक तरह से शब्दानुवाद होता है। उदाहरण के लिए:

(क) **शब्द के स्तर पर**

मूल पाठ या कृति	**शब्द**	**अनुवाद**
पृष्ठ संख्या 1	Buddhism	बौद्ध धर्म
पृष्ठ संख्या 13	Vaisakh	वैशाख
पृष्ठ संख्या 40	Vrindawan	वृंदावन
पृष्ठ संख्या 83	Nalanda	नालंदा
पृष्ठ संख्या 101	Monastery	मठ

(ख) **पदबंध के स्तर पर**

मूल कृति	**पदबंध**	**अनुवाद**
पृष्ठ संख्या 1	East Asia	पूर्वी एशिया
पृष्ठ संख्या 3	Theravada Buddhism	थेरवाद बौद्ध धर्म
पृष्ठ संख्या 6	Mauryan Empire	मौर्य साम्राज्य
पृष्ठ संख्या 10	Mahabodhi Society	महाबोधि सभा
पृष्ठ संख्या 11	Tibetan Buddhism	तिब्बती बौद्ध धर्म
पृष्ठ संख्या 16	Mahabodhi Temple	महाबोधि मंदिर
पृष्ठ संख्या 101	Tibetan Monastery	तिब्बती मठ

पृष्ठ संख्या 109	Hemis Monastery	हेमिस मठ
पृष्ठ संख्या 201	Buddhist Monuments	बौद्ध स्मारक
पृष्ठ संख्या 211	Amravati Stupa	अमरावती स्तूप

वाक्य के स्तर पर

मूल कृति पृष्ठ संख्या 101

वाक्य : This section provides you detail on all the important Buddhist monasteries of Bihar.

अनुवाद : यह भाग आपको बिहार के सभी महत्त्वपूर्ण मठों का विवरण प्रदान करता है।

- **भावपरक समतुल्यता-** यह व्यवहार परक होती है जो स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच सामंजस्य स्थापित करती है। इसमें भाषिक अभिव्यक्ति के स्थान पर संप्रेष्य कथ्य पर बल दिया जाता है। जैसे -

मूल कृति पृष्ठ संख्या 2

वाक्य : Buddhism has been reemerging in India since the past century, due to its adoption by many Indian intellectuals, the migration of Buddhist Tibetan exiles and the mass conversion of hundreds of thousands of Hindu Dalits.

अनुवाद : भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूद्धार कई भारतीय विद्वानों द्वारा इसके अंगीकरण, निर्वासित तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा एवं उनके अनुयायियों के स्थानांतरण और लाखों हिन्दू दलितों के सामूहिक धर्मांतरण के कारण हुआ।

- **शैलीपरक समतुल्यता-** यह समतुल्यता व्यापक परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत आती है जिसमें सामान्य (औपचारिक एवं अनौपचारिक), वस्तु तथा विधा आदि सभी प्रकार की शैलियाँ शामिल हैं। जैसे-

मूल कृति पृष्ठ संख्या 249

वाक्य : The section includes small town and cities, caves and also statues.

अनुवाद : इस खण्ड में गाँवों, कस्बों और छोटे शहरों के बौद्ध स्थल शामिल हैं।

- **पाठपरक समतुल्यता-** इस समतुल्यता में प्रतीकात्मक, लक्षणात्मक और व्यंजनात्मक अर्थ का विवेचन किया जाता है। जैसे -

मूल कृति पृष्ठ संख्या 101

वाक्य : Indian monk Atisha, holder of the mind training teachings, is considered an indirect founder of the Geluk School of Tibetan Buddhism.

अनुवाद : ध्यान पद्धति के विशेषज्ञ भारतीय भिक्षु अतीश को तिब्बत में गेलुक संप्रदाय का अप्रत्यक्ष संस्थापक माना जाता है।

प्रथम तीन प्रकारों को नाइडा द्वारा प्रतिपादित रूपपरक समतुल्यता के अंतर्गत रखा जा सकता है क्योंकि इनमें रूप और कथ्य के भीतर संदेश निहित होता है। पाठपरक समतुल्यता में लक्ष्य भाषा के पाठक और अनूदित कृति के संदेश के बीच जो संबंध स्थापित होता है, वही संबंध स्रोत भाषा के पाठक और मूल कृति में थोड़ा बहुत समान होता है।

संप्रेषणपरक सिद्धांत[50]

इस सिद्धांत से तात्पर्य ऐसी द्विभाषिक संप्रेषण प्रक्रिया से है जिसमें अनुवादक मूलपाठ के अर्थ को ग्रहण करके उसे लक्ष्य भाषा में संप्रेषित करता है। अनुवाद का यह

---

[50] पांडे, हेमचंद्र, *अनुवादशास्त्र : व्यवहार से सिद्धांत की ओर*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, 2008

सिद्धांत जर्मन अनुवादशास्त्री ओ-कादे ने प्रस्तुत किया था। इस सिद्धांत में संप्रेषण को तीन अवस्थाओं में बांटा गया है -

पहली अवस्था में प्रेषक और अनुवादक के बीच संप्रेषण होता है। इस अवस्था में अनुवादक मूलपाठ का प्राप्तकर्त्ता होता है। दूसरी अवस्था में अनुवादक मूलपाठ का कूटान्तरण करता है अर्थात् एक भाषा (भाषा1) के पाठ को दूसरी (भाषा2) में बदलता है। तीसरी अवस्था में अनुवादक और प्राप्तकर्ता के बीच संप्रेषण होता है। अब अनुवादक की भूमिका प्रेषक की हो जाती है।

प्रेषक (भाषा1) प्राप्तकर्ता - कूटांतरण - प्रेषक (भाषा2) अनुवादक

इस सिद्धांत में अनुवादक मूलपाठ का प्राप्तकर्ता और अनूदित पाठ का प्रेषक है। इस पूरी प्रक्रिया में कूटान्तरण सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि कूटांतरण सही हुआ है तो संप्रेषण सही होगा। कूटान्तरण सही होने के लिए यह आवश्यक है कि प्राप्तकर्ता के रूप में अनुवादक मूल पाठ को उचित रूप से ग्रहण करे और उसका कूटान्तरण करते समय प्रेषक के रूप में उचित भाषिक साधनों का प्रयोग करे। संप्रेषण की सफलता के लिए लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार भाषिक साधनों का चयन करें। तभी मूलपाठ और अनूदित पाठ में तुल्यता स्थापित हो सकेगी। इस सिद्धांत के आधार पर स्रोत भाषा के पाठ को कूटान्तरण के सही चुनाव से लक्ष्य में संप्रेषित किया जाता है। जैसे-

मूल कृति पृष्ठ संख्या 288

अनुच्छेद : The first day of the festival is considered the one when the gates of hell open and the ghosts are permitted to visit the earth for the next 15 days. The fifteenth day is the ancestors day and has the familes visiting cementries to pay respect to their ancestors. People also make food offerings to the wondering sprit during this festival.

अनुवाद : ऐसा माना जाता है कि जब नरक का द्वार खुलता है तो उसे उत्सव का प्रथम दिन माना जाता है और प्रेत आत्माओं को अगले पंद्रह दिनों तक धरती पर भ्रमण का अवसर मिलता है। पंद्रहवें दिन पूर्वज दिवस मनाया जाता है और परिवार के सदस्य अपने

पूर्वजों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए समाधि स्थल पर जाते हैं। इसके अलावा, इस त्यौहार के दौरान लोग अपने पूर्वजों को भोजन अर्पित करते हैं।

हिन्दी अनुवाद की भाषिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियाँ

भाषिक एवं पाठपरक चुनौतियाँ और उनका समाधान

प्रत्येक पाठ की अपनी भाषा होती है और उस भाषा का एक व्याकरण होता है। व्याकरण का वाक्य विन्यास तथा प्रतीक व्यवस्था होती है। इसी प्रकार भाषा की एक संस्कृति होती और उस संस्कृति के विशेष शब्द होते हैं जो अनुवाद कार्य में समस्या पैदा करते हैं। इनमें पाठ के पारिभाषिक शब्दों, वाक्यों, शीर्षकों, नामपरक शब्दों की चुनौतियाँ शामिल हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए शब्दानुवाद, भावानुवाद, लिप्यंतरण, पाद टिप्पणी आदि युक्तियों का प्रयोग किया गया है।

पारिभाषिक शब्दों के चयन की समस्या और उनका समाधान

मूल कृति पृष्ठ संख्या 23

शब्द : Parinirvana

अनुवाद : इसका अनुवाद महापरिनिर्वाण किया है क्योंकि यह शब्द बुद्ध के महापरिनिर्वाण के लिए प्रयुक्त किया गया है।

जटिल वाक्यों की समस्या और समाधान

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 32

वाक्य : So, go through these states and plan your trip for the coming vacation.

अनुवाद : इसलिए, आगामी छुट्टियों के लिए अपनी यात्रा की योजना बनाओ और इन राज्यों की यात्रा करो। यहाँ go का अनुवाद जाना न करके यात्रा किया गया है।

मूलपाठ पृष्ठ संख्या 86

वाक्य: If the monks had some business, they would assemble to discuss the mater.

अनुवाद : यदि भिक्षुओं को कोई समस्या होती थी तो वे उस विषय पर विचार-विमर्श के लिए एकत्रित होते थे। इस वाक्य में Bussiness का अनुवाद व्यापार न करके समस्या किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 283

वाक्य : India is the land of colourful festivals.

अनुवाद : भारत विभिन्न त्यौहारों का देश है।

यहाँ वाक्य में प्रयुक्त Colourful का अनुवाद रंगीन न करके विभिन्न किया गया है क्योंकि त्यौहार अपनी प्रकृति में रंगीन ही होते हैं। इसी तरह land का अनुवाद भूमि या क्षेत्र न करके देश किया गया जोकि वाक्य में प्रयुक्त भारत के साथ सटीक अर्थ प्रकट करता है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 77

अनुच्छेद : Near the coronation tank is Stupa 1 or the Relic Stupa. Here the Lichchavis reverentially encased one of the eight portions of the Master's relics, which they received after the Mahaparinirvana. After his last discourse the Awakened One set out for Kushinagar, but the Licchavis kept following him. Buddha gave them his alms bowl but they still refused to return. The Master created an illusion of a river in spate which compelled them to go back. This site can be identified with Deora in modern Kesariya village, where Ashoka later built a stupa. Ananda,

the favourite disciple of the Buddha, attained Nirvana in the midst of the Ganges outside Vaishali.

अनुवाद : शारीरिक स्तूप या स्तूप नं. 1 पुष्कर्णी सरोवर के पास स्थित है। यहाँ बुद्ध के शरीर के आठ धातु अवशेषों में से एक पर लिच्छवियों ने स्तूप बनवाया था जो उन्होंने तथागत के महापरिनिर्वाण के बाद प्राप्त किया। अंतिम उपदेश देने के बाद बुद्ध ने कुशीनगर का भ्रमण किया परन्तु लिच्छवियों ने उनका अनुगमन किया। तब बुद्ध ने उन्हें अपना दान-पात्र भेंट किया, फिर भी उन्होंने वापस जाने से इंकार कर दिया। बुद्ध ने नदी में बाढ़ का भ्रम उत्पन्न किया जिसने उन्हें वापस जाने के लिए विवश कर दिया। इस स्थान की पहचान वर्तमान केसरिया गाँव के रूप में हुई, जहाँ सम्राट अशोक ने स्तूप बनवाया था। बुद्ध के शिष्य आनंद ने वैशाली के बाहर गंगा के पास परिनिर्वाण प्राप्त किया था।

यहाँ Master और Awakened One पद बुद्ध के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। इसलिए इनका अनुवाद स्वामी या मालिक और जागृत न करके बुद्ध किया गया है।

शीर्षकों तथा उप शीर्षकों के अनुवाद की समस्याएँ और उनका समाधान

पाठ के अनुवाद कार्य के दौरान शीर्षकों और उप-शीर्षकों के अनुवाद की समस्याओं का सामना करना पड़ा। पाठ में कुछ शीर्षक ऐसे है जिनका अनुवाद अत्यंत जटिल है। शीर्षकों का अनुवाद चार प्रकार से किया गया है-

1. मूल शीर्षक का शब्दानुवाद
2. मूल शीर्षक का भावानुवाद
3. मूल शीर्षक से हटकर अन्य नाम
4. मूल का लिप्यंतण

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 1

अध्याय-1 शीर्षक : Introduction

अनुवाद : बौद्ध धर्म का परिचय

इस शीर्षक का मूल नाम से हटकर अन्य नाम दिया गया है क्योंकि अध्याय को पढ़ने के बाद शीर्षक का अनुवाद परिचय करने से पूर्ण अर्थ प्रकट नहीं होता है। इसलिए शीर्षक का यह नाम रखा गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 13

अध्याय-2 शीर्षक : Four Sacared Buddhist Places

अनुवाद : चार प्रमुख धार्मिक बौद्ध स्थल

इस अध्याय के शीर्षक का भावानुवाद किया गया है। यहाँ चार धार्मिक बौद्ध स्थल के स्थान पर चार प्रमुख धार्मिक बौद्ध स्थल अनुवाद किया गया है। इनमें जन्मस्थल (लुम्बिनी), संबोधि स्थल (बोधगया), प्रथम उपदेश स्थल (सारनाथ), महापरिनिर्वाण स्थल (कुशीनगर) आदि शामिल हैं।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 32

अध्याय-3 शीर्षक : The Major Buddhist destinations in India

अनुवाद : भारत में राज्यवार स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल

इस शीर्षक का भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद भारत में राज्यवार स्थित बौद्ध स्थल किया गया है। क्योंकि इसमें बौद्ध स्थलों का राज्यवार वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 63

अध्याय-4 शीर्षक : Buddhist Pilgrimage in India

अनुवाद : भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल

इस शीर्षक का अनुवाद भारत में बौद्ध तीर्थस्थल न करके भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल किया गया है। क्योंकि इन स्थलों की बुद्ध द्वारा यात्राएँ की गई थीं जैसे- वैशाली, श्रावस्ती एवं राजगीर। इनके अतिरिक्त नालंदा और धर्मशाला का भी उल्लेख है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 100

अध्याय-5 शीर्षक : Buddhist Monasteries in India

अनुवाद : भारत में राज्यवार स्थित बौद्ध मठ

इस शीर्षक का भारत में बौद्ध मठ शब्दानुवाद है जबकि भारत में राज्यवार स्थित बौद्ध मठ भावानुवाद है। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि इसमें बौद्ध मठों का राज्यवार वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 201

अध्याय-6 शीर्षक : Buddhist Temples and Monuments

अनुवाद : बौद्ध स्मारक

इस शीर्षक का भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद बौद्ध मंदिर और स्मारक न करके बौद्ध स्मारक किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 230

अध्याय-7 शीर्षक : Buddhist Caves

अनुवाद : बौद्ध गुफाएँ

इस शीर्षक का शब्दानुवाद किया गया है। इसमें अजंता, एलोरा, भाजा, कार्ले, बराबर की गुफाओं का वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 249

अध्याय-8 शीर्षक : Buddhist Site in India

अनुवाद : भारत के अन्य बौद्ध स्थल

इस शीर्षक का भावानुवाद किया गया है क्योंकि अध्याय को पढ़ने के बाद पता चलता है कि इसमें भारत के गाँवों, कस्बों तथा छोटे शहरों में स्थित बौद्ध स्थलों का उल्लेख किया गया है। ये स्थल प्रमुख स्थलों की भांति प्रसिद्ध नहीं हैं।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 283

अध्याय - 9 शीर्षक : Buddhist Festivals in India

अनुवाद : भारत में मनाए जाने वाले बौद्ध त्यौहार

इस शीर्षक का अनुवाद भारत में बौद्ध त्यौहार न करके भारत में मनाए जाने वाले बौद्ध त्यौहार किया गया है। यहाँ भी भावानुवाद किया गया है। यह अध्याय भारत में मनाए जाने वाले बौद्ध त्यौहारों से संबंधित है जिसमें बुद्ध पूर्णिमा, हेमिस, लोसर, धम्म दिवस प्रमुख हैं।

उप-शीर्षकों के अनुवाद समस्याएँ और उनका समाधान

मूलपाठ पृष्ठ संख्या 2

उप-शीर्षक : Buddhist Movements

अनुवाद : बौद्ध संगीतियाँ

इसका भावानुवाद किया गया है क्योंकि पाठ में बौद्ध संगीतियों का वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 3

उप-शीर्षक : Early Buddhism Schools

अनुवाद : आरंभिक बौद्ध संप्रदाय

इसका भावानुवाद किया गया है, यहाँ स्कूल से तात्पर्य विद्यालय से न होकर बौद्ध मत के संप्रदायों से है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 5

उप-शीर्षक : Strengthening of Buddhism in India

अनुवाद : भारत में बौद्ध धर्म का उत्थान

इसका अनुवाद भारत में बौद्ध धर्म का उत्थान किया गया है क्योंकि उस समय यह अपने उत्कर्ष पर था।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 7

उप-शीर्षक : Dharma Masters

अनुवाद : बौद्ध धर्म गुरु

इसका भावानुवाद किया गया है। इनमें Dharma Masters का अनुवाद स्वामी या मालिक न करके बौद्ध धर्म गुरु किया गया है क्योंकि पाठ में बौद्ध धर्म गुरुओं का विवरण दिया गया है जैसे-गुरु पद्मसंभव। धर्म से तात्पर्य बौद्ध धर्म से है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 10

उप-शीर्षक : The White Hun Invasions

अनुवाद : हूणों के आक्रमण

इसका शब्दानुवाद किया गया है क्योंकि हूणों के आक्रमण से पूर्ण अर्थ प्रकट हो जाता है। गोरे (वाईट) तो उनकी विशेषता के लिए लगाया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 10

उप-शीर्षक : Turkish Muslim Conquerors

अनुवाद : तुर्कों के आक्रमण

इसका भावानुवाद किया गया है क्योंकि तत्कालीन समय में भारत पर विभिन्न देशों के शासक आक्रमण कर रहे थे। इसलिए तुर्क मुस्लिम आक्रांताओं या विजेताओं के स्थान पर तुर्कों के आक्रमण भाषांतरण किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 11

उप-शीर्षक : Neo Buddhist Movement

अनुवाद : नव बौद्ध आंदोलन

इसका शब्दानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 14

उप-शीर्षक : Present-Day

अनुवाद : वर्तमान लुम्बिनी

इसका भावानुवाद किया गया है क्योंकि इसमें वर्तमान लुम्बिनी का वर्णन किया गया है। इसलिए इसका अनुवाद वर्तमान लुम्बिनी किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 15

उप-शीर्षक : Attractions

अनुवाद : प्रमुख बौद्ध आकर्षण

इसका भी भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद आकर्षण न करके प्रमुख बौद्ध आकर्षण किया गया है क्योंकि इसमें लुम्बिनी परिसर में स्थित बौद्ध आकर्षणों का वर्णन किया गया है जैसे- मुख्य मंदिर।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 18

उप-शीर्षक : Origin of Names

अनुवाद : इसिपतन के साहित्यिक स्रोत

इसका अनुवाद नाम का उद्भव या इसिपतन नाम के स्रोत न करके इसिपतन के साहित्यिक स्रोत किया गया है। इसका भी भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 22

उप-शीर्षक : Current Features of Isipatana

अनुवाद : वर्तमान इसिपतन के आकर्षण

इसका भावानुवाद किया गया है। यहाँ इसिपतन की वर्तमान विशेषता न करके वर्तमान इसिपतन के आकर्षण भाषांतरण किया गया है क्योंकि इसमें इसिपतन के वर्तमान स्मारकों का वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 27

उप-शीर्षक : More Buddhist Places

अनुवाद : अन्य प्रमुख बौद्ध स्थल

इसका भी भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद अधिक बौद्ध स्थल न करके अन्य प्रमुख बौद्ध स्थल किया गया है क्योंकि इसमें कपिलवस्तु और साँची का वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 31

उप-शीर्षक : Later Period

अनुवाद : परवर्ती काल

इसका अनुवाद बाद की अवधि या समय न करके परवर्ती काल किया है क्योंकि इसका सातवाहन काल के बाद के समय के लिए प्रयोग किया गया है। इसलिए इसका भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 31

उप-शीर्षक : Western rediscovery

अनुवाद : पश्चिमी विद्वानों द्वारा साँची स्तूप की पुनः खोज

यहाँ अनुवाद पश्चिमी पुनः खोज न करके पश्चिमी विद्वानों द्वारा साँची स्तूप की पुनः खोज किया गया है क्योंकि ये खोजें जनरल टेलर और सर जॉन मार्शल के निर्देशन में हुई थीं। इसलिए इसका भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 33

उप-शीर्षक : Major Buddhist Places in Bihar

अनुवाद : बिहार में स्थित प्रमुख बौद्ध स्थल।

इसका शब्दानुवाद किया गया है। इसमें बिहार के प्रमुख बौद्ध स्थलों का विवरण दिया गया है जैसे- बोधगया, नालंदा तथा राजगीर।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 34

उप-शीर्षक : Major Buddhist Monuments in Bihar

अनुवाद : बिहार में प्रमुख बौद्ध स्मारक

इसका शब्दानुवाद किया गया है क्योंकि इसमें बिहार के प्रमुख स्मारकों का विवरण दिया गया है जैसे – महाबोधि मंदिर परिसर तथा नालंदा मठावासीय विश्वविद्यालय।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 49

उप-शीर्षक : Major Buddhist Places in Sikkim

अनुवाद : सिक्किम में प्रमुख बौद्ध स्मारक

इसका भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद सिक्किम में प्रमुख बौद्ध स्थल न करके, सिक्किम में प्रमुख बौद्ध स्मारक किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 77

उप-शीर्षक : Visits of the Buddha to vaishali

अनुवाद : बुद्ध की वैशाली की यात्राएँ

इसका शब्दानुवाद किया गया है और तथागत की वैशाली की यात्राओं का उल्लेख किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 82

उप-शीर्षक : Nalanda

लिप्यंतरण : नालंदा

इसका लिप्यंतरण किया गया है। यह शब्द संस्कृत से ज्यों का त्यों लिया गया है। यह शब्द संस्कृत के तीन शब्द 'ना +आलम +दा' के संधि-विच्छेद से बना है। इसका अर्थ है वह स्थान जहाँ विद्या के क्षेत्र में अंत नहीं होता था।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 101

उप-शीर्षक : Famous Buddhist Monasteries in Bihar

अनुवाद : बिहार में स्थित प्रसिद्ध बौद्ध मठ

इसका शब्दानुवाद किया गया है क्योंकि इसमें महाबोधि मंदिर के आसपास स्थित बौद्ध मठों का वर्णन किया गया है जैसे – तिब्बती मठ, जापानी मठ, थाई मठ तथा चीनी मठ।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 109

उप-शीर्षक : Inside

अनुवाद : मठ परिसर के मंदिर

इस शीर्षक का मूल से हटकर अन्य नाम दिया गया है क्योंकि आंतरिक से अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। इसलिए पाठ के सन्दर्भ में मठ परिसर के मंदिर अनुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 110

उप-शीर्षक : Leh-The Gateway to Hemis

अनुवाद : लेह-हेमिस का प्रवेश द्वार

इसका शब्दानुवाद किया गया है। इसमें लद्दाख के मठों का उल्लेख किया गया है। इन मठों तक लेह से होकर ही पहुँचा जा सकता है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 112

उप-शीर्षक : The Structures of Complex

अनुवाद : मठ परिसर के मंदिर

इसका अनुवाद परिसर की संरचनाएं या भवन न करके मठ परिसर के मंदिर किया गया है क्योंकि इसमें संरचनाओं के स्थान पर परिसर के मंदिरों का विवरण दिया गया है जैसे –दुखांग मंदिर, मंजुश्री का मंदिर तथा लखांग सोमा मंदिर। इसका भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 120

उप-शीर्षक : Matho Monastery, J&K

अनुवाद : माथो मठ, जम्मू-कश्मीर

इसका शब्दानुवाद किया गया है। इसमें माथो मठ तथा इसके आकर्षणों का वर्णन किया गया है जैसे – दुखांग मंदिर, गोंखांग मंदिर तथा लखांग सोमा मंदिर।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 131

उप-शीर्षक : Structure and layout

अनुवाद : मठ परिसर के मंदिर और भवन

इसका भावानुवाद किया गया है। यहाँ अनुवाद संरचना और खाका न करके मठ परिसर के मंदिर और भवन किया गया है। क्योंकि इसमें मंदिरों और अन्य भवनों का विवरण दिया है जिसमें मंडल मंदिर, सभा भवन, पवित्र कक्ष, थीन चेन मंदिर शामिल हैं।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 132

उप-शीर्षक : Julichen Nunnery

अनुवाद : जूलीचेन भिक्षुणी आवास

इसका शब्दानुवाद किया गया है। यह भिक्षुणी आवास मुख्य मठ के अधीन कार्य करता है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 135

उप-शीर्षक : Inside

अनुवाद : मठ परिसर के मंदिर

इसका भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद आंतरिक न करके, मठ परिसर के मंदिर किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 137

उप-शीर्षक : Leh-The base to Lamayuru Monastery

अनुवाद : लेह-लामायुरू मठ का प्रवेश द्वार

यहाँ Base का अनुवाद आधार न करके प्रवेश द्वार किया गया है क्योंकि लेह शहर लद्दाख के मठों का प्रवेश द्वार है। इसका भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 203

उप-शीर्षक : Other attractions

अनुवाद : अन्य बौद्ध आकर्षण

इसका भावानुवाद किया गया है क्योंकि इसमें उदयगिरि बौद्ध परिसर के पास स्थित रत्नागिरि तथा ललितगिरि के बौद्ध आकर्षणों का वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 207

उप-शीर्षक : Kushan sites : Taxila, Harwan

अनुवाद : कुषाण बौद्ध स्थल, तक्षशिला (पाकिस्तान)

इसका भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद कुषाण स्थल तक्षशिला न करके, कुषाण बौद्ध स्थल किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 212

उप-शीर्षक : Pithalkhora, Maharashtra

अनुवाद : पितलखोरा की गुफाएँ, महाराष्ट्र

इसका भावानुवाद किया गया है क्योंकि इसमें पितलखोरा की गुफाओं का उल्लेख किया गया है न कि पितलखोरा स्थल का।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 220

उप-शीर्षक : Archaeological Nalanda Museum

अनुवाद : नालंदा संग्रहालय

इसका शब्दानुवाद किया गया है। इसमें नालंदा संग्रहालय का वर्णन किया गया है जिसमें मिट्टी, प्रस्तर तथा धातु की कलाकृतियाँ संरक्षित हैं।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 226

उप-शीर्षक : Itanagar Buddhist Temple

अनुवाद : ईटानगर बौद्ध मंदिर

इसका शब्दानुवाद किया गया है। इसमें ईटानगर बौद्ध मंदिर का विवरण दिया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 232

उप-शीर्षक : Nearby cave attractions

अनुवाद : आसपास की बौद्ध गुफाएँ

इसका भावानुवाद किया गया है। इसका अनुवाद आसपास के गुफा आकर्षण न करके, आसपास की बौद्ध गुफाएँ किया गया है क्योंकि इसमें अजंता की गुफाओं के पास स्थित अन्य बौद्ध गुफाओं का वर्णन किया गया है जैसे – एलोरा की गुफाएँ, कार्ले की गुफाएँ तथा भाजा की गुफाएँ।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 232

उप-शीर्षक : The Gateway to Ajanta

अनुवाद : औरंगाबाद - अजंता की गुफाओं का प्रवेश द्वार

इसका अनुवाद अजंता का प्रवेश द्वार न करके, औरंगाबाद-अजंता की गुफाओं का प्रवेश द्वार किया गया है जो सटीक अर्थ प्रकट करता है। यहाँ भी भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 236

उप-शीर्षक : The City of Ellora-Aurangabad

अनुवाद : औरंगाबाद - एलोरा की गुफाओं का प्रवेश द्वार

इसका अनुवाद औरंगाबाद-एलोरा का शहर न करके, एलोरा की गुफाओं का प्रवेश द्वार है। पहले आप औरंगाबाद पहुँचेंगे, फिर एलोरा की गुफाओं तक पहुँचेंगे।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 246

उप-शीर्षक : The gateway to Nagarjunkonda

अनुवाद : नागार्जुनकोंडा की गुफाओं का प्रवेश द्वार

इसका भावानुवाद किया गया है। इसमें नागार्जुनकोंडा की गुफाओं के प्रवेश द्वार विजयवाड़ा का उल्लेख किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 247

उप-शीर्षक : Barabar caves, Bihar

अनुवाद : बराबर की गुफाएँ, बिहार

इसका शब्दानुवाद किया गया है। इसमें बराबर की गुफाओं का वर्णन किया गया है जैसे – नागार्जुन की गुफाएँ, पाँच पांडवों की गुफाएँ तथा झोपड़ी के आकार की गुफाएँ।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 278

उप-शीर्षक : Statue of Lord Buddha, Andhra Pradesh

अनुवाद : भगवान बुद्ध की अखंड प्रतिमा, आंध्र प्रदेश

इसका भावानुवाद किया गया है क्योंकि इसमें भगवान बुद्ध की एक शिलाखंड से तराश कर बनायी गयी प्रतिमा का वर्णन किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 283

उप-शीर्षक : Buddha Jayanti

अनुवाद : बुद्ध पूर्णिमा

इसका शब्दानुवाद किया गया है। यह बौद्ध समुदाय का प्रमुख त्यौहार है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 286

उप-शीर्षक : Hemis Fair

अनुवाद : हेमिस त्यौहार

इसका अनुवाद हेमिस मेला न करके हेमिस त्यौहार किया गया है। इसका भावानुवाद किया गया है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 289

उप-शीर्षक : Magha Puja Day or Sangha Day

अनुवाद : माघ पूजा दिवस या संघ दिवस

इसका शब्दानुवाद किया गया है। यह बौद्ध समुदाय का प्रमुख त्यौहार है।

मूल पाठ पृष्ठ संख्या 290

उप-शीर्षक : Asalha Puja Day

अनुवाद : असल्हा पूजा दिवस

इसका भी शब्दानुवाद किया गया है। इसे धम्म दिवस भी कहते हैं।

पालि और संस्कृत भाषा के शब्दों की समस्या और उनका लिप्यंतरण

मूल पाठ	शब्द	लिप्यंतरण
पृष्ठ संख्या 1	Siddhattha Gautama (पालि)	सिद्धात्थ गोतम
पृष्ठ संख्या 7	Dharma (संस्कृत)	धर्म
पृष्ठ संख्या 18	Isipatana (पालि)	इसिपतन
पृष्ठ संख्या 18	Mrigadava (संस्कृत)	मृगदाव
पृष्ठ संख्या 18	Jataka (पालि)	जातक
पृष्ठ संख्या 18	Saranganath (संस्कृत)	सारंगनाथ
पृष्ठ संख्या 20	Mahathupa (पालि)	महाथूप
पृष्ठ संख्या 25	Kusinara (पालि)	कुसीनारा
पृष्ठ संख्या 29	Sanch (पालि)	सांच
पृष्ठ संख्या 29	Sanchi(संस्कृत)	साँची
पृष्ठ संख्या 34	Rajgriha (संस्कृत)	राजगृह
पृष्ठ संख्या 43	Padmasambhava (संस्कृत)	पद्मसंभव

सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियाँ और उनका समाधान

भाषा, समाज और संस्कृति एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक भाषा की एक संस्कृति होती है। संस्कृति की पहचान समाज से होती है और भाषा द्वारा प्रचारित होती है। प्रत्येक संस्कृति के अपने पारिभाषिक शब्द होते हैं जो अनुवाद कार्य में चुनौती उत्पन्न करते हैं। पाठ के अनुवाद के दौरान बौद्ध संस्कृति के पारिभाषिक शब्दों की चुनौतियों का सामना करना

पड़ा। यह पाठ बहु-विषयक प्रकृति का है। इसमें बौद्ध कला, इतिहास, धर्म के साथ-साथ भूगोल, परिस्थितिकी तथा पर्यटन के भी पारिभाषिक शब्द शामिल हैं। इसलिए इसके अनुवाद में अनेक चुनौतियाँ प्रकट हुई हैं। पहली समस्या नामपरक शब्दों के अनुवाद की है जिसमें व्यक्तियों, स्थानों, खानपान, त्यौहारों के नाम शामिल हैं। इनका अनुवाद समानार्थी पर्याय, भावानुवाद, लिप्यंतरण और पाद टिप्पणी द्वारा किया गया है। दूसरी चुनौती बौद्धों रीति-रिवाजों से संबंधित पारिभाषिक शब्दों की है।

सांस्कृतिक स्तर पर अनुवाद करते समय परिस्थितिकी संस्कृति (परिवेश) के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्दों की चुनौतियाँ प्रमुख हैं। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों की असंख्य प्रजातियों तथा उनके व्यवहार को बताने वाली अभिव्यक्तियां अनुवाद में समस्या पैदा करती हैं।

नामपरक शब्दों की चुनौती और समाधान

मूल पाठ	शब्द	अनुवाद
पृष्ठ संख्या 1	Enlightened One	प्रबुद्ध (बुद्ध)
पृष्ठ संख्या 1	Awakened One	जागृत (बुद्ध)
पृष्ठ संख्या 8	Guru Rinpoche	गुरु पद्मसंभव
पृष्ठ संख्या 23	Kusinara	कुशीनगर
पृष्ठ संख्या 68	Ambapali	आम्रपाली
पृष्ठ संख्या 77	Master	बुद्ध
पृष्ठ संख्या 86	Xuanzang	ह्वेनसांग
पृष्ठ संख्या 86	Yijing	इत्सिंग
पृष्ठ संख्या 287	Ullambana	उलम्बाना, पूर्वज दिवस (त्यौहार)

बौद्ध धर्म के रीति रिवाज और व्यवहार से संबंधित पारिभाषिक शब्दों की समस्या और समाधान

मूल पाठ	शब्द	अनुवाद
पृष्ठ संख्या 2	Ascetism	संन्यास
पृष्ठ संख्या 6	Milanda Panha	मिलिंद प्रश्न
पृष्ठ संख्या 77	Courtesan	गणिका
पृष्ठ संख्या 157	Nyingmapa Order	निंगमापा संप्रदाय
पृष्ठ संख्या 167	Chorten	स्तूप
पृष्ठ संख्या 171	Dhyana Buddha	वैरोचन
पृष्ठ संख्या 174	Gelukpa Order	गेलुक्पा संप्रदाय
पृष्ठ संख्या 193	Gompa	मठ

इस अध्याय में मूल पाठ के हिन्दी अनुवाद का विश्लेषण किया गया है। अनुवाद कार्य समतुल्यता का सिद्धांत तथा संप्रेषणपरक सिद्धांत के आधार पर किया गया है। अनुवाद के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिनका समाधान शब्दानुवाद, भावानुवाद,लिप्यंतरण एवं पाद टिप्पणी जैसी युक्तियों के आधार पर किया है।

उपसंहार

भारत बहु-सांस्कृतिक देश है। प्रत्येक संस्कृति के अपने प्रतीक हैं जैसे - खान-पान, रीति-रिवाज तथा स्मारक। बौद्ध स्मारक भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं जैसे –अजंता एवं एलोरा की गुफाएँ। भारत में बौद्ध स्थल पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण हैं। प्रत्येक स्थल की अलग पहचान है किन्तु संपूर्ण रूप में ये सभी बौद्ध संस्कृति को प्रस्तुत करते हैं।

इनमें चार स्थल अत्यधिक पवित्र माने जाते हैं जिसमें लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ तथा कुशीनगर प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त राजगीर, वैशाली, संकिसा तथा श्रावस्ती भी प्रमुख तीर्थस्थल हैं तथा बुद्ध के जीवनकाल से संबंध रखते हैं। तीसरी शताब्दी ई. पू. में सम्राट अशोक इन स्थलों की यात्रा पर गए और उसे धम्मयात्रा का नाम दिया था। विदेशी यात्रियों में चीनी भिक्षुओं के नाम प्रमुख हैं।

साँची स्तूप, तवांग मठ तथा अजंता एवं एलोरा की गुफाएँ अपनी कला के लिए विश्व विख्यात हैं। दीक्षाभूमि वह स्थान है जहाँ डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार किया, इसलिए यह तीर्थस्थल के रूप में प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त, धर्मशाला तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा का निवास स्थल होने के कारण विख्यात है। देश को अन्य भागों से बांधकर रखने में इन ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों की प्रमुख भूमिका है।

बौद्ध स्थलों पर अनेक यात्रावृत्तांत लिखे गए हैं जिनमें भारतीय तथा विदेशी विद्वान शामिल हैं। बौद्ध स्थलों पर सर्वप्रथम चीनी यात्रियों ने यात्रा विवरण लिखे। भारतीय विद्वानों में राहुल सांस्कृत्यायन का नाम प्रमुख है। इन्हें महापंडित भी कहा जाता है। इनके यात्रा साहित्य का केन्द्र बिन्दु बौद्ध स्थल रहे हैं जिनमें *मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी लद्दाख* यात्रा तथा *चीन में क्या देखा* आदि प्रमुख हैं।

बौद्ध स्थलों पर केन्द्रित अनेक गाइड पुस्तिकाएँ लिखी गई हैं। इनमें स्थल के इतिहास एवं स्मारकों का उल्लेख होता है। अंत में यात्रा से संबंधित सामान्य जानकारी होती है जैसे - यात्रा के लिए कब आना है, आवास, होटल एवं मार्ग। आजकल पर्यटन विभाग की साइट पर इन पुस्तिकाओं का डिजिटल संस्करण भी उपलब्ध होता है।

आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया ने बौद्ध स्थलों पर कई गाइड पुस्तिकाएँ प्रकाशित की हैं जैसे - *सारनाथ, कुशीनगर* एवं *साँची*। इसके अतिरिक्त सम्यक प्रकाशन से बौद्ध स्थलों

पर केन्द्रित कई पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें *लुम्बिनी, बोधगया* तथा *दीक्षाभूमि* आदि शामिल हैं। इन पुस्तकों एवं पुस्तिकाओं का उद्देश्य बौद्ध पर्यटन का प्रचार करना तथा पर्यटकों को आकर्षित करना है।

बौद्ध स्थलों एवं स्मारकों पर अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं जिनमें से अधिकतर प्रमुख बौद्ध स्थलों, किसी स्थल विशेष या राज्य विशेष के बौद्ध स्मारकों पर केन्द्रित हैं जैसे - *लुम्बिनी, राजगीर* तथा *बुद्धिस्ट पिलग्रिमेज* ये सभी पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी गई हैं तथा बौद्ध पर्यटन का पूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करती हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबंध आर. जैकब की कृति *बुद्धिस्ट टूरिज़्म इन इंडिया* के हिन्दी अनुवाद और विश्लेषण पर आधारित है। अनेक पुस्तकों के अध्ययन के बाद शोध कार्य के लिए इस कृति के चयन का प्रमुख कारण इसमें बौद्ध पर्यटन के विभिन्न रूपों का वर्णन है।

कृति में प्रमुख बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है। इसमें आधुनिक बौद्ध तीर्थस्थल धर्मशाला का भी उल्लेख किया गया है जो तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा का निवास स्थल है। इसमें भारत में राज्यवार स्थित प्रमुख बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है जिनमें बिहार, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के बौद्ध स्थल शामिल हैं। इनके अलावा, भारत के अन्य बौद्ध स्थलों की जानकारीदी गई है जैसे- हाजो (असम) और प्रागबोधि (बिहार)।

कृति में भारत में राज्यवार स्थित बौद्ध मठों का वर्णन किया गया है। इन मठों में तवांग सबसे प्रमुख है जो भारत का सबसे बड़ा मठ है। इसमें बौद्ध गुफाओं का विवरण दिया गया है जैसे - अजंता की गुफाएँ, बराबर की गुफाएँ तथा नागार्जुनकोंडा की गुफाएँ। इसमें बौद्ध अभिलेखों, संग्रहालयों, स्तूपों आदि का भी वर्णन किया गया है जैसे - शांति स्तूप (धौली), सारनाथ संग्रहालय (उ.प्र.), अशोक के शिलालेख (धौली)।

पुस्तक में कुछ कमियाँ भी हैं जिनका अनुवाद कार्य के दौरान पता चला। इसमें कई अध्यायों में एक ही उप-शीर्षक की बार-बार पुनरावृत्ति हुई है जैसे - अध्याय-2 के उप-शीर्षक - कुशीनगर (मूल पाठ पृष्ठ संख्या 24, 25, 26) की पुनरावृत्ति अध्याय-4 में (मूल पाठ पृष्ठ संख्या 94, 95, 96) देखी जा सकती है। इसी तरह की पुनरावृत्ति अध्याय-5, 6 और 7 में भी देखने को मिलती है।

अध्याय-4 का शीर्षक 'Four Sacred Buddhist Places' है। इसमें चार प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ तथा कुशीनगर के अलावा कपिलवस्तु, निग्रोधर्म एवं साँची का भी वर्णन किया गया है जिसकी शीर्षक के अनुसार आवश्यकता ही नहीं है। इस पुस्तक में प्रमुख बौद्ध स्थलों के साथ-साथ अन्य बौद्ध स्थलों का भी वर्णन किया गया है। यहाँ तक कि तिब्बती बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा के निवास स्थल धर्मशाला का भी उल्लेख किया गया है किन्तु किसी भी अध्याय में दीक्षाभूमि का वर्णन नहीं किया है।

पुस्तक के हिन्दी अनुवाद के दौरान अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिनमें भाषिक तथा सांस्कृतिक चुनौतियाँ प्रमुख हैं। भाषिक एवं विषयगत समस्याओं के अन्तर्गत पारिभाषिक शब्दों के चयन की समस्या, जटिल वाक्यों की समस्या, शीर्षकों एवं उप-शीर्षकों की समस्या तथा पालि एवं संस्कृति भाषा के शब्दों की समस्या शामिल है जैसे- Gompa और Thupa शब्द मठ और स्तूप के लिए प्रयुक्त किए गए हैं।

सांस्कृतिक चुनौतियों के अन्तर्गत नामपरक शब्दों की समस्या सम्मिलित है जैसे- Enlightened One, Awakened One, Sakyamuni, Master बुद्ध के लिए प्रयुक्त नाम हैं। इसी तरह Xuanzang और Hiouen Thsang नाम ह्वेनसांग के लिए प्रयुक्त किए गए हैं। इसके अलावा बौद्ध धर्म, दर्शन एवं साहित्य से संबंधित पारिभाषिक शब्दों की समस्या भी शामिल है जैसे- Gelukpa Order, Nyingmapa School का अनुवाद गेलुक्पा संप्रदाय और निंगमापा संप्रदाय किया गया है। यहाँ Order और School का अनुवाद आदेश तथा स्कूल न करके संप्रदाय किया गया है। इन चुनौतियों का समाधान शब्दानुवाद, भावानुवाद तथा लिप्यंतरण के आधार पर किया है।

कृति का अनुवाद हिन्दी भाषी क्षेत्र के पर्यटक, पाठक एवं शोधार्थी के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बौद्ध पर्यटन के विभिन्न पक्षों से अवगत कराती है जैसे- मठ, गुफा तथा त्यौहार। इसमें विभिन्न बौद्ध स्थलों का वर्णन किया गया है जैसे- बोधगया, सारनाथ, लौरिया नंदनगढ़ तथा प्रभाषगिरि। इसमें बौद्ध कला के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है जैसे – चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला तथा पुरावशेष।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

प्राथमिक स्रोत (Primary Source)

- Jacob, Robinet, *Buddhist Tourism in India,* Delhi, Abhijeet Publication, 2013

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

हिन्दी पुस्तकें

- अग्रवाल, वासुदेवशरण, *सारनाथ*, दिल्ली, आर्किलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, 1980
- उपाध्याय, वासुदेव, *प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर*, पटना, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, 1972
- गुप्त, गार्गी (सं.), *अनुवाद बोध*, दिल्ली भारतीय अनुवाद परिषद्, 2001
- गोस्वामी, कृष्ण कुमार, *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2012
- दीक्षित, के. के., जे. पी. गुप्ता, *पर्यटन के विविध आयाम*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, 2009
- नेगी, जगमोहन, *पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, 2007
- नेगी, जगमोहन, गौरव मनोहर जे., *सम्पूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल*, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन, 2015
- पाल, सुनीता, *बौद्धकालीन मूर्तिकला एवं वास्तुकला*, दिल्ली, रावत प्रकाशन, 2019
- पालीवाल, रीता रानी, *अनुवाद प्रक्रिया*, दिल्ली, साहित्य निधि, 1982
- पिपलायन, मधुकर, *लुम्बिनी*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2015

- बौद्ध, शांति स्वरूप, *सारनाथ*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2015
- बौद्ध, आचार्य जुगल किशोर, *कुशीनारा*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2008
- बौद्ध, आचार्य जुगल किशोर, *विपस्सना: दुख मुक्ति की ध्यान-साधना*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2018
- भारद्वाज, *निगम, नालंदा का पुरातात्विक वैभव*, दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2020
- रामस्वरूप राकेश, *प्राचीन बौद्ध स्थल*, दिल्ली, सम्यक साहित्य प्रकाशन, 1998
- विजयटुंगा, जे., बोधगया, दिल्ली, *पब्लिकेशन डिवीजन*, मिनिस्टरी ऑफ इन्फार्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग, 1956
- *स्थापत्य*, बी.टी.एस., अध्ययन सामग्री, दिल्ली,इग्नू, 2009
- सहाय, शिवस्वरूप, *संग्रहालय की ओर*, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास, 2019
- सिंह, प्रियसेन, *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल*, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2016
- श्रीकृष्ण आनंद, *भगवान बुद्ध: धम्म-सार व धम्म-चर्या*, मुंबई, समृद्ध भारत प्रकाशन, 2013
- श्रीवास्तव, गरिमा, *आशु अनुवाद*, दिल्ली, संजय प्रकाशन, 2003

अंग्रेजी पुस्तकें

- Barua, Dipal Kumar, *Viharas in Ancient India : A Survey of Buddhisht Monasteries*, Calcutta, Indian Publications, 1969
- Benoy, K., *The Ajanta Caves : Artistic Wonder of Ancient Buddhitst India*, New York, Harry N. Abrams, 1998
- Birnbaum, Raoul, *The Healing Buddha,* Boston, Shambhala, 1989

- Bond, George, *The Word of The Buddha : The Tipitaka and Its Interpretation in Thevavada Buddhism*, Colombo, Gunasena, 1982
- Cook, Elizabeth, *Holy Places of The Buddha*, Berkeley, Dharma Publishing, 1994
- Corsellis, Ann., *Public Service Interpreting : The First Step*, New York, Palgrave Macmillan, 2008
- Dallapiccola, Anna, *The Stupa : Its Religious, Historical and Architectual Significance*, Wiesbaden, Franz Steiner Verlag, 1980
- Dutta, Sukumar, *Buddhist Monk and Monasteries in India*, Delhi, Motilal Banarsidas, 1988
- Jayatileke, K.N., *The Message of The Buddha*, New York, Free Books, 1980
- Mitra, Debala, *Sanchi,* Delhi, ASI, 2003
- Mitra, Swati (Edited), *Walking with the Buddha: Buddhist Pligrimage im India*, Delhi, Goodearth Publications, 2009
- Mitra, Swati, *Buddhist Circuit in Central India*, Delhi, Goodearth Publication, 2010
- San, Chan Khoon, *Buddhist Pilgrimage,* Malaysia, Subany Jaya Buddhist Association, 2001
- Siny, R. P. B., *Where The Buddha Walked : A Campanion to The Buddhist Places in India*, Varanasi, Indica Books, 2003
- Suzuki, D. T. *The Essence of Buddhism*, London, The Buddhist Society, 1957

* Tilden, Freeman, *Interpreting Our Heritage*, Chapel Hill U. S. A., The University of North Carolina Press, 1957
* *The Scared Garden of Lumbini : Perception of Buddha's Birthplace,* Paris, UNESCO, 2013
* Thero, Pimbure Samitha, *Kushinagar-The Holy City of Lord Buddha's Maha Parinibbana*, Kushinagar, Japan-Sri Lanka Buddhist Temple, 1977
* Timothy, D. J., Boyd, S. W., *Heritage Toursim,* Pearson Publication, 2003

पत्र-पत्रिकाएँ

हिन्दी की पत्रिका

* सेठी, हरीश कुमार, *पर्यटन का क्षेत्र और अनुवाद की संभावनाएँ,* अनुवाद (त्रैमासिक), अंक- 112, पृष्ठ संख्या 58-62, 2002

अंग्रेजी की पत्रिकाएँ

* Agarwal, M., Himanshu Choudhary and Gaurav Tripathi, *Enhancing Buddhist Tourism in India : An Exploratory Study*, Worldwide Hospitality and Tourism Themes, Vol. 2, No. 4, P.P. 80-97, 2009
* Choudhary, M., *India Image as A Toursit Destionation a Perspective of Foreign Tourists*, Tourism Mangagement, Vol. 21, No. 3, P.P. 293-307, 2000

शब्दकोश

हिन्दी

- *पुरातत्त्व विज्ञान परिभाषा कोश*, दिल्ली, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, 1994
- बुल्के, फ़ादर कामिल, *अंग्रेजी-हिन्दी कोश*, रांची, कैथोलिक प्रेस, 2013

अंग्रेजी

- Jafari, J.(Ed.), *Encyclopedia of Toursim*, London and New York, Routledge, 2000

वेबसाइट

- हूबर्ट, एफ (1998), ट्रांसलेशन ऐज अ कम्युनिकेशन प्रोसेस,

  http://accurapid.com/journal/05theory.htm , November 1, 2006

- कौर, के., (2005), अ कम्पीटेंट ट्रांसलेट एंड इफेक्टिव नॉलेज ट्रान्सफर,

  http://accurapid.com/journal/05theory.htm , April 3, 2007

- मैकनामरा, जी., (2002), क्वालिटी वेबसाइट लैंग्वेज, आर्टिकल्स फॉर फ्री यूज,

  http://www,translateme.co-nz/Articles/Article16.htm. April 20. 2006

- टिआनमिन, एस. जे., (2000), ट्रांसलेशन इन कॉन्टेक्स्ट,

  http://accurapid.com/journal.36context.htm November 23. 2006